प्रस्तावना.

सर्वे जैनबंधुउने मालुम थाय जे, आ पंचम कालमां तीर्थंकर प्रनुउ आ नरतक्षेत्रमां विचरता नहीं होवाथी, तथा केवली महाराज पण नहीं होवाथी, आ अपार संसारसमुद्रथी तारवाने "श्री शत्रुंजय महातीर्थ" समर्थ बे, एम तीर्थंकर महाराजो पण कही गएला बे. ते महातीर्थनुं माहात्म्य श्री रुषजदेव प्रनुना वखतमां पुंडरिकजी गणधर महाराजे सवा लाख श्लोकनी रचना करीने बनाव्युं हतुं; तथा तेमांथी संक्षिप्त करीने श्री वीरप्रनुना समयमां सुधर्मास्वामि गणधर महाराजे चोवीस हजार श्लोकनी रचना करीने बनाव्युं हतुं; तेमांथी पण सार उधरीने वल्लनीपुरना श्री शिलादित्य राजाना आग्रहथी आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिजीए दश हजार श्लोकनी रचना करीने संस्कृत नाषामां बनावेलुं बे; तेमां ते आचार्य महाराजे महाकाव्यनी तुल्य अति उत्तम अने अलंकारोथी नरेली रचना करी बे. वली आ ग्रंथ आपणा जैनीउना अत्यंत प्राचीन ग्रंथ मांहेनो एक ग्रंथ बे; अने ते ग्रंथ बनावीने श्री धनेश्वरसूरिजी महाराजे आपणापर अवर्णनीय उपकार करेलो बे; केम के तेमां आ संसार समुद्रथी तारनारा "श्री शत्रुंजय महातीर्थनुं" माहात्म्य वर्णवेलुं बे, वली आ ग्रंथ मूल संस्कृत नाषामां होवाथी, अमोए तेना आ प्रथम खंडनुं गुजराती नाषांतर जामनगर निवासि पंडित श्रावक हीरालाल वि. हंसराज पासे करावी बपावी प्रसिद्ध कर्युं बे; आ ग्रंथमां श्री रुषजदेव प्रनुआदिक केटलाक तीर्थंकरोना पण चरित्रो आवेलां बे; आ ग्रंथना बे खंडो बे; तेमां आ प्रथम खंडमां श्री शत्रुंजय आदिक शिखरोनुं माहात्म्य वर्णवेलुं बे, तथा बीजा खंडमां श्री गिरनारजी आदिक शिखरोनुं वर्णन करेलुं बे. ते बीजा खंडनुं गुजराती नाषांतर पण थोडाज दिवसोमां अमारा तरफथी बपाइ बहार पडवानुं बे. आ ग्रंथमां श्री शत्रुंजय तीर्थाधिराजनो अपूर्व महिमा वर्णवेलो बे, तथा आ ग्रंथ जैनीउने माटे एटलो तो जरुरनो बे के, तेनुं आ जगोए ब्यान नहीं करतां, फक्त आद्यथी ते अंतसुधि ते वांची जवानी अमो अमारा जैनबंधुउने नलामण करीयें बीयें. आ तीर्थाधिराजनुं माहात्म्य वांचवाथी, तथा सांनलवाथी केटलुं पुण्य

उपार्जन थाय छे, तेनुं वर्णन आ ग्रंथज वांचवाथी जणाशे. माटे पोताना बन्ने नावना कल्याण इछनार, एवा दरेक जैनबंधुर्ज आ अमूल्य ग्रंथनो जरुर लान लेशे. इत्यलं विस्तरेण.

जीमसिंह माणेक.



અનુક્રમણિકા.

सर्ग त्रीजो.

सर्ग चोथो

सर्ग पांचमो.

सर्ग छठो.

सर्ग नवमो.

श्री जिनाय नमः

(श्रीधनेश्वर सूरिकृत)

श्रीशत्रुंजय माहात्म्यनुं गुजराती भाषांतर.



प्रथमःसर्गः प्रारभ्यते

ॐनमो विश्वनाथाय, विश्वस्थितिविधायिने ॥
अर्हतेऽव्यक्तरूपाय, युगादीशाय योगिने ॥ १ ॥

अर्थः—जगतना नाथ, तथा जगतनी स्थितिना करनारा, अने अप्रगट छे, रूप जेमनुं एवा, तथा योगी एवा श्री ऋषभदेवजी अरिहंत प्रते नमस्कार थाओ.

अर्हच्चक्रिश्रियःस्वामी, चामीकरसमप्रभः ॥
स्तुत्यःसत्कृत्यलाभाय, श्रीशांतिः शुभतांतिकृत् ॥ २ ॥

अर्थः—अरिहंत तथा चक्रीनी संपदानां स्वामी, तथा सोना सरखी कांति वाला, अने स्तुति करवा लायक एवा श्री शांतिनाथ भगवान मोक्षनां लाभने माटे मंगलनी वृद्धि करनारा थाओ.

हेलांदोलितदैत्यारि, र्जरासिंधप्रतापहृत् ॥
स्मरणीयं स्मरं कुर्वन्; श्रीमान्नेमिः पुनातु वः ॥ ३ ॥

अर्थः—क्रीडाथी हींचोलेल छे श्रीकृष्णने जेणे, तथा जरासिंधनां प्रतापने हरनारा, अने कामदेवने पण संभालवा योग्य करता, एवा श्री नेमिनाथ भगवान तमारुं रक्षण करो ?

यस्यदृष्टिसुधावृष्टि दानादहिरहीश्वरः
जातस्तापत्रयान्मुक्तः, स श्री पार्श्वो मुदेऽस्तुवः ॥ ४ ॥

अर्थः—जेनी दृष्टिरूपी अमृतनी वृष्टिनां दानथी सर्प पण धरणेंद्र तथा अतीत, अनागत, अने वर्तमान काल संबंधि पीडाथी मुक्त थयो, एवा ते श्री पार्श्वनाथ प्रभु तमारा हर्षने माटे थाओ ?

सुराद्रिं सुरनाथस्य, संशयापनयाय यः ॥
अकंपयत्रिधा वीरः, श्री विरः श्रेयसेऽस्तुवः ॥ ५ ॥

अर्थः– इंद्रनी शंकाने दूर करवा माटे जेणे मेरु पर्वतने पण कंपाव्यो छे. तथा त्रण प्रकारे शुरवीर एवा श्री वीरप्रजु तमारा कल्याणने अर्थे थाओ.

आदीश्वर प्रमुख जिनोनुं तथा पुंडरिक प्रमुख मुनिओनुं तथा शासनदेवीनुं ध्यान करीने आ शत्रुंजयमाहात्म्यनुं हुं वर्णन करुं छुं. श्री युगादि जिनेश्वरनी आज्ञाथी पुंडरिक गणधरे सवा लाख श्लोकनां प्रमाणवालुं, तथा नाना प्रकारनां आश्चर्यवालुं, तथा सघला तत्वोथी संपूर्ण, तथा देवोए पण पूजेलु एवुं शत्रुंजयमाहात्म्यनुं वर्णन, जगतनां हित माटे पूर्वे बनाव्युं हतुं. तेमांथी मथन करीने श्रीवीरप्रजुनी आज्ञाथी सुधर्मास्वामीए, लोकोने अल्प आयुष्यवाला जाणीने ते माहात्म्य संक्षेपथी चोविस हजार श्लोकनुं बनाव्युं. तेमांथी पण सारने उधरीने, स्याद्वादवाणीमय एवुं ते माहात्म्य, अष्टांग योगमां निपुण, तथा विषय आदिकमां निस्पृही, तथा नाना प्रकारनी लब्धिवाला, तथा राजगछनां मंडन रूप, तथा उत्तम चारित्रथी पवित्र अंगवाला, अने वैराग्यना समुद्र सरखा, अने, सर्व विद्याओमां निपुण एवा श्री धनेश्वर सूरीए, बौद्धोने मद रहित करतां थकां, शत्रुंजयनो उद्धार करनार, तथा अढार राजाओना स्वामी, तथा सुराष्ट्र देशनां राजा, एवा श्री शीलादित्यनां आग्रहथी वल्लजी नगरमां बनाव्युं; माटे हे लोको ! ते माहात्म्य तमो जक्तिपूर्वक सांजलो ?

हे जव्य लोको ! तप, जप, दान विगेरेनुं शुं प्रयोजन छे ? पण केवल शत्रुंजयमाहात्म्यज सांजलो ? वली धर्मनी वांछाथी सघली दिशाओमां जमवानुं शुं प्रयोजन छे ? फक्त शत्रुंजय तीर्थनी छायानो तमो स्पर्श करो ? वली आ मनुष्य जन्म पामीने, तथा अनेक शास्त्रो सांजलीने पण, आ शत्रुंजयमाहात्म्य सांजलीने जन्म सफल करो ? वली जो तत्वने जाणवानी इछा होय, अथवा धर्ममां वास्तविक बुद्धि होय, तो बीजुं सघलुं तजीने आ उत्तम गिरिवरनो आश्रय करो ? आ शत्रुंजय ती-

र्थ समान बीजुं कोइ उत्तम तीर्थ नथी, तथा तेना समान बीजो कोइ धर्म नथी, केम के, त्यां जइ जिननुं ध्यान करवुं, ते जगतने सुखनुं कारण छे. अशुभ परिणामथी, मन, वचन, अने कायाथी जे पाप बांध्युं होय, ते भयंकर पाप पण आ शत्रुंजय गिरिनां स्मरणथी नाशने प्राप्त थाय छे. वली आ शत्रुंजय पर्वतनां दर्शनथी सिंह, वाघ, सर्प, भील तथा हिंसक पक्षिओ पण स्वर्गगामी थाय छे. वली जेओए सुर, असुर, अने मनुष्यादि भवोमां पण आ शत्रुंजय पर्वत जोयो नथी, तेओने पशु सरखा जाणवा, अने तेओ मोक्षनां अधिकारी थता नथी. अन्य तीर्थोमां उत्तम ध्यान, शील, दान तथा पूजनथी जे फल मले छे, तेथी पण अधिक फल शत्रुंजयमाहात्म्य सांभल्याथी मले छे. माटे हे लोको! आ गिरिराजनुं माहात्म्य तमो महा भक्तिथी सांभलो? केम के, ते सांभलवा मात्रथीज संपदाओ प्राप्त थाय छे.

एक दहाडो घणां देवोथी वींटाएला एवा श्री महावीर स्वामी, द्रव्य भाव रूप शत्रुने जीतनारा एवा आ शत्रुंजय पर्वत प्रते आव्या. ते वखते जाणे जिनेश्वरोने नमस्कार करवा माटे उतावलज करतां होय नहीं, तेम इंद्रोनां आसनो एकदम कंपवा लाग्यां. त्यारे वीश भवनपतिनां इंद्रो, बत्रीश व्यंतरनां इंद्रो, बे ज्योतिषनां इंद्रो, तथा दश उर्ध्वलोकनां इंद्रो, एम सघला मली चोसठ इंद्रो, देवो सहित, प्रभुथी भूषित थएला ते शत्रुंजय पर्वत प्रते आव्या. आ लोकमां जोवा लायक एवा आ पर्वतने जोइ जोइने, मस्तक धुणावता थका, ते इंद्रादिक देवो, पोताना सेवकोने नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्या.

अहो! आ महान शोभावालो गिरिराज निरुपम किरणोवालां रत्नोयें करीने जाणे चित्रेलो होय नहीं!! तेवो शोभे छे; वली सोनानां शिखरो वडे करीने, जाणे सर्व पर्वतोनो स्वामी होवाथी, मुकुटोथी शोभतो होय नहीं जेम तेम आ पर्वत शोभे छे. वली ते आकाशमां पहोंचतां एवां सोनां, रूपा, अने रत्ननां शिखरोथी एकी वखते पृथ्वी अने स्वर्गने पवित्र करतो थको पापने हरनारो छे; वली आ पर्वत स्वर्णगिरि, ब्रह्मगिरि, उदयगिरि, तथा अर्बुदगिरि आदिक एकसोने आठ शिखरोथी अत्यंत शोभे छे. वली स्वर्गमंदिर सरखां अरिहंत प्रभुनां मंदि-

रोथी, तथा यक्षोनां मंदिरोथी अत्यंत शोन्ने छे. वली आ शत्रुंजय पर्वत यक्ष, किन्नर, गंधर्व, विद्याधर, तथा देवोनां समूहोथी, तथा अप्सराउंथी सेववा लायक थयो थको अत्यंत शोन्ने छे. वली आ पर्वतमां मोक्षनी इछा वाला योगीउं, विद्याधरो तथा नुवनपतिउं पवित्र गुफाउंमां रहिने श्री अरिहंत प्रनुनुं ध्यान धरे छे. वली आ शत्रुंजय पर्वत रसकुंपिका, रत्ननी खाणो, तथा दिव्य औषधिउंथी संपूर्ण थयो थको सघला पर्वतोनां गर्वने न्नेदनारो छे. वली आ पर्वत कस्तूरीआं मृगोनां टोलांउंथी, मयूरोथी, मदोन्मत्त हाथीउंथी, तथा चमरी गायोनां समूहोथी सर्व बाजुएथी शोन्ने छे. वली आ पर्वत मंदार, पारिजातक, संतान, हरिचंदन, चंपक, अशोक, तथा सालरी आदिक वृक्षोथी न्नरेलो छे. वली केतकीनां पुष्पोनी सुगंधिथी सुगंध युक्त करेल छे दिशाउंनां न्नागो जेणे, तथा ऊरता एवा पाणीनां ऊरणाथी वाचाल थएलो, तथा मालती, गुलाब, कृष्णागुरु, अने आंबा प्रमुखथी हमेशां पुष्प तथा फलवालो, एवो आ पर्वत अत्यंत शोन्ने छे. वली आ पर्वतपर कल्पवृक्षोनी घाटी छायामां बेठेली किन्नरीउं जिनेश्वर न्नगवाननां गुणोने गाय छे, अने तेथी पोताना पापोनो क्षय करे छे. वली ऊरता एवा पाणीना ऊरणानां बिंडुउंथी आ पर्वतरूपी स्वामी, पोतानी मुक्तिरूपी स्त्रीनां हार माटे जाणे मोतीउंने ऊरतो होय नहीं, तेम शोन्ने छे; वली अहीं एक बाजुपर, ऊरणामांथी पडता पाणीउंनां बिंडुउंने वर्षाद पडतो जाणीने, मयूरो प्रन्नुनी पासे नाच्या करे छे. वली एक बाजुए हजार फणाउंथी शोन्नतो एवो शेषनाग प्रन्नुनी आगल अहीं दीव्य नाटक करतो थको शोन्ने छे. वली अहीं एक बाजुए उत्तम वस्त्रोवाली, तथा उत्तम रागवाली एवी खेचरीउं हाथमां वीणाउं लेइने, अरिहंत न्नगवाननां गुणोने गाती थकी देखाय छे. पली जे प्राणीउंने जन्मथी मांडीने पण परस्पर वैर होय छे, एवा प्राणीउं पण पोतपोतानुं वैर तजीने अहीं जिननां मुखने जोता थका रमे छे. वली अहीं एक बाजुए पूर्व समुद्रमां जनारी एवी शत्रुंजयी नदी, जोनार तथा सांन्नलनाराउंनी जाणे पुण्यनी रेखाज होय नहीं, तेम शोन्ने छे. वली एक बाजुए अहीं तालध्वज (तलाजा) नामनां शिखरनां उत्संगमांथी गमन करती एवी तालध्वजी नदी शत्रुंजी नदीने

आवीने मले छे. वली अहींथी उत्तर दिशामां; स्वछ पाणीथी महा उदयवाली, इंद्रे बनावेली, तथा विकस्वर कमलोवाली "ऐंद्री" नामनी नदी वहे छे; तेने तमो जुर्ठ ? वली दीव्य जलनां मोजांर्ठथी शोन्नीती थएली, तथा कमलनी अंदर रहेला हंसोवाली, अने सारसथी सेवाएली एवी आ कपर्द्दिका नामनी नदीने तमो जुर्ठ ? वली हे देवो !! पश्चिम नागमां जगतनो उपकार करनारी, तथा वेहेता पाणीथी संपूर्ण, अने पापोनो नाश करनारी एवी आ ब्राह्मी नामनी नदी शोन्ने छे. वली हे देवो !! अहीं शेत्रुंजी, ऐंद्री, नागेंद्री, कपिला, यमला, तालध्वजी, यक्षांगा, ब्राह्मी, माहेश्वरी, साञ्रमती, शबला, वरतोया, उज्जयंती, तथा नद्रा नामनी चौद महा नदीर्ठ शोन्ने छे. वली हे देवो !! अहीं पूर्व दिशामां अत्यंत शोन्नावालुं सूर्योद्यान छे, तथा दक्षिण दिशामां नंदनवन सरखुं स्वर्गोद्यान छे, तथा पश्चिम दिशामां अत्यंत मनोहर चंद्रोद्यान छे, तथा उत्तर दिशामां आ लक्ष्मीलीलाविलास नामनुं उद्यान छे. एवी रीतनां, चार दिशार्ठमांथी आवती एवी लक्ष्मीनां चोटला सरखा चार उद्यानोथी आ शत्रुंजय पर्वत अत्यंत शोन्ने छे. वली अहीं सौधर्मेंद्रनां हुकमथी कुबेरे बनावेलो, तथा पापरूपी मेलने धोनारो एवो इंद्र नामनो कुंड शोन्ने छे. स्फुरायमान थती एवी चांदनी सरखा पाणीनां मोजांथी शोन्नतो, अने जाणे न्नरतनां यशोनो ढगलोज होय नहीं, एवो न्नारत नामनो कुंड अहीं शोन्ने छे. वली अहीं मंद मंद वाता एवा पवनथी चलायमान थता मोजानी पंक्तिथी शोन्नतो एवो कपर्दीयक्षनो कुंड कोने सुख करनारो नथी ? (अर्थात् सर्वेने सुख करनारो छे.) वली अहीं मुक्ति रूपी स्त्रीनुं मुख जोवा माटे दर्पण सरखो, तथा प्रीति उत्पन्न करनारो एवो हिल्लण मुनिनो कुंड तमो जुर्ठ ? वली सर्वतीर्थावतार छे नाम जेर्ठनुं, एवा चंद्रकुंड अने सूर्यकुंडने, तथा बीजा पण कुंडोने, हे देवो !! तमो अहीं जुर्ठ ?

वली हे देवो !! अहीं आ बाजुए उत्तम बुद्धिवान एवो आ मुनि तप तपे छे, तेनां विचित्र चरित्रनी वार्ता तमो कौतुकथी सांन्नलो ?

पूर्वे यम सरखो, तथा पापीर्ठनो स्वामी एवो, चंद्रपूरनो आ कंडु नामे राजा हतो. ते धननो मद राखीने देव, गुरु, वृद्ध, तथा मातपि-

ताने पण गणकारतो नहीं. (पूर्वनां पुण्यथी पापीउनी संपदा पण वृद्धि पामे छे, पण पाछलथी ते तणखलानी अग्निनी शिखानी पेठे मूल सहित विनाश पामे छे.) ते राजा सुतो थको पण परस्त्री, अने परधननी इच्छा करनारो हतो, तथा धन मेलववानी इच्छाथी लोकोने हमेशां दुःख देतो हतो; प्रजाते उठीने लोकोने बोलावीने, निर्जय थयो थको तेमनी पासेथी ते धन लेतो. (राजाउ प्रायें करीने पुण्यथी संपूर्ण संपदावाला थाय छे, अने पछी तेज पुण्यनो द्वेष करे छे, माटे तेउ दुर्गतिमां जाय छे.) एवी रीतें चक्रवाक प्रते चंद्रनी पेठे, लोकोने दुःख देइने, अंते क्षयनां रोगवालो थयो थको मित्रनी पेठे (सूर्यनी पेठे) ते धर्मने स्मरवा लाग्यो. (ज्यांसुधि सर्व बाजुथी सुखथी प्राप्ति होय छे, त्यांसुधि मूढ माणस अहंकारमांज रहे छे, पण मृत्यु काल आवते ते धर्मनुं स्मरण करे छे.) एक दहाडो ते राजा क्रूर सेवकोथी सेवायेलो तथा परना द्रोहनी चिंताथी दुष्टाशयवालो थयो थको जेवामां सज्ञामां बेठेलो छे, तेवामां आकाशमांथी कल्पवृक्षनां पत्रपर लखेलो एवो कोइके नाखेलो नीचेनो दिव्य श्लोक तेनी पासे आवीने पड्यो.

धर्मादधिगतैश्वर्यो, धर्ममेवनिहंति यः ॥
कथं शुभगतिर्भावी, स स्वामिद्रोहपातकी ॥ १ ॥

अर्थः– धर्मथी मलेलछे, संपदा जेने, एवो जे माणस तेज धर्मनो नाश करे छे, ते स्वामीद्रोहनां पापवालो माणस शुभ गतिवालो शी रीते थाय? (अर्थात् न थाय.)

एवी रीतनां श्लोकने ते राजाए हर्षथी वांच्यो, तथा तेनो अर्थ जाणीने ते मनमां नीचे प्रमाणे चिंतववा लाग्यो. अहो!! में महा मोह अने कपटवाला चित्तथी कष्ट पड्युं त्यांसुधि पण पापकार्य आचार्युं, अने ते हवे मने स्पष्टरीते फल्युं! वली मत्स्य जेम मांसने, तेम में संपदाने मेलवीने मारा आ आत्माने संसाररूपी जालमां फसाव्यो!!! वली जे राजा न्यायनां मार्गमां चाल्यो छे, ते बन्ने भवमां निर्भय थाय छे, तथा जे अन्यायने मार्गे चाले छे, ते प्रजा, कुल अने राज्यनो नाश करनारो थाय छे. एवी रीते चिंतातुर थइने ते महामूर्ख राजा रात्रियें राज्य त-

जीने ऊंपापातथी मरवानी इछावालो थयो थको चालवा लाग्यो. एवी रीते चालतां थकां जेटलामां ते गामनी बहार आव्यो, तेटलामां तेणे एक सुंदर अंगवाली गायने सामी आवती जोइ; पछी त्यां ते गाये अचानक पुंछडुं उंचुं करीने, क्रोधथी, वैरीनी पेठे तेने शींगडानां अग्र भागथी मार्यो. पछी पूर्वनां अनुभवथी ते राजा पण खड्ग कहाडीने, यम सरखो थयो थको, क्रोधथी तेनां तरफ दोड्यो; त्यारे ते गाय पण क्रोधायमान थइ थकी, तथा अत्यंत फुंफाटा मारती थकी तेनी सामे लडवाने दोडी; एवी रीते क्रोधथी सन्मुख आवती ते गायने राजाये तलवार मारीने तेनां बे टुकडा कर्या, त्यारे तेणीनां कलेवरमांथी एक स्त्री नीकली; भयंकर अंगवाली, तथा अत्यंत लाल आंखोवाली, अने हाथमां कातरने नचावती एवी ते स्त्रीए निष्टुर अक्षरवाली वाणीथी राजाने रणसंग्राम माटे बोलाव्यो; अने कह्युं के, रेदुष्ट! तें आ शस्त्रविनानी अने गरीबडी गायने मारी! माटे हवे जो तारामां शक्ति होय, तो मारी साथे लडवाने तैयार था? एवी रीतनुं तेनुं हेतुवालुं वचन सांभलीने, ते राजा पण पोतानां खड्गपर दृष्टि राखीने, आवी रीते अपवित्र वाणी बोलवा लाग्यो; अरे! तुं कोइ युवान, अने केलनां पात्रां सरखा कोमल अंगवाली स्त्री छो, अने हुं शस्त्रमां पंडित एवो शूरो क्षत्री छुं; माटे हे भानिनि? तुं कहे आपण बन्नेनुं युद्ध कंइ प्रशंसनीक कहेवाय? केमके, अहंकारी एवो सिंह कंइ हरणीनी साथे युद्ध करवानी याचना करे? (अपितु नज करे.) एवी रीते बोलता एवा ते राजाने ते स्त्री कहेवा लागी के, हे राजा? हुं कंइ तारी पेठे वाचाल नथी, माटे तुं लडवाने तैयार था? ते सांभलीने राजा हाथमां खड्ग लइने तेनी सामे दोड्यो, पण तेटलामां तेणे पोतानां शरीरने तेणीनी कातरथी विंधायेलुं जोयुं, अने तेमांथी रुधिर झरवा लाग्युं. पछी ते स्त्री तेने कहेवा लागी के, हे राजा? तें तारुं पराक्रम हवे जाण्युं? अने हजु पण जो तुं समर्थ होय, तो लडवाने तैयार था? एवी रीतनी तेनी वाणी सांभलीने कंडु राजा मनमां विचारवा लाग्यो के, अहो! मारुं कर्म उलटुं होवाथी आ स्त्रीए पण मने जीत्यो. (माटे ज्यांसुधि पूर्वनुं करेलुं पुण्य क्षय थतुं नथी, त्यांसुधिज माणसनुं बल, तेज, अने कीर्त्ति अखंडित रहे छे. माटे

प्राणीउने पुण्यज प्रमाणरूप छे, केमके क्षीण तेजवालो सूर्य पण केटलोक वखत चलकी शके?) वली पुण्यथीज प्राणीउने हमेशां सुख मले छे, अने तेज सुख पुण्यनो नाश थवाथी झेरनी पेठे दुःख आपे छे. वली जे हुं आगल हाथीउने पण एक चामरनी पेठे आकाशमां उछालतो, ते हुं आजे आ स्त्रीथी जीतायो!! एम विचारतां थकां तेने याद आव्युं के, अहो! में राज्यनो त्याग कर्यो, मने महारोग थयो, अने वली क्रोधथी में गायने मारी!! वली हुं मृत्यु माटे तो निकलेलो छुं, त्यारे वली हुं गायथी केम डर्यो? वली एवी रीतें प्रसंगथी मलतुं मरण मुकीने, कुगतिने देनारुं गौहत्यानुं में पाप आचर्युं. वली पुण्य मेलव्या विना प्राणी दुःखी थाय छे, केमके, मूडी विनां बुद्धिवान माणस पण दुःखी थाय छे, हवे तो हुं आ आपदारूपी समुद्रमां डुब्यो, माहे हवे हुं शुं करुं? केमके, आग लाग्या पछी कुवो खोदवाथी सुख थतुं नथी. एवी रीतें विचार करता एवा ते राजाने ते देवांगना कहेवा लागी के, अरे! महापापी मूढ! हवे दुःखी थयो थको तुं शुं चिंतवे छे? पेहेलां तो राज्यनां मदथी अंध थइ तें धर्मनो द्रोह कर्यो, अने हवे दुःख वखते तुं धर्मने संभाले छे! वली धर्मशिवाय बीजो कोइ पण प्रशंसवा लायक पदार्थ नथी, एम बुद्धिवानो माने छे, माटे अंतकाले पण धर्मनुं स्मरण करवाथी ते द्रोहीने पण तारे छे. वली हे मूढ! तारा चित्तमां धर्मबुद्धि नथी, पण रोगनी पीडाथी तुं पुण्यने याद करे छे, माटे में तारी परीक्षा करी छे; हुं तारी गोत्रदेवी अंबिका छुं, अने तारा सत्वनी परीक्षा माटे हुं गायनुं रूप करीने आवी हती; वली हे राजा! हजु पण तारुं मन क्रोधातुर छे, पण धर्मने रहेवा लायक, तथा समता रूपी अमृतथी भींजाएलुं नथी. माटे हवे तुं देशांतरोमां जइने तीर्थपर्यटन कर? अने तने धर्माराधननो वखत हुं निश्चयें करीने कहीश; एम कहीने ते देवी अंतर्ध्यान थइ, त्यारे कंडु राजा विचारवा लाग्यो के अहो! हजु पण मारुं भाग्य जागतुं छे! केमके गोत्रदेवी मने साक्षात नजरे पडी! माटे हवे मारा मन रूपी हाथीने वश करवा माटे हुं यत्न करुं, के जेथी मोक्षरूप लक्ष्मी मने प्रत्यक्ष थाय. एम विचारीने प्रभाते ते कोइक दिशाप्रते चालवा लाग्यो, अने स्वछ चित्तवालो होवाथी ते कंइ पण दुःख पाम्यो

नहीं. एवी रीते क्रोध रूपी अग्निने शमावीने पृथ्वीपर जमतो थको, तथा प्राणीउं प्रते समता सहित चित्तवालो थयो थको कोल्लाक नामनां पर्वत प्रते ते आव्यो. त्यां रात्रिने पाछले पहोरे, तेनो पूर्व नवनो वैरी यक्ष, द्वेष लावीने तेनी पासे आव्यो; जयंकर दृष्टिवालो, तथा हाथमां गदावालो, लाल मुखवालो, अने भ्रुकुटी जमावतो एवो, ते यक्ष क्रोधथी नीचे प्रमाणे वचन तेने कहेवा लाग्यो के, अरे दुष्ट ! कामांधपणाथी तें मने मारीने मारी स्त्रीने पण तें मारी छे, ते तने याद छे ? माटे हवे तुं तारा इष्ट देवनुं स्मरण कर ? केमके, मदांध माणस सुखनी इछाथी पापो करे छे, पण तेनुं वखत आव्ये जयंकर परिणाम निपजे छे, माटे हवे तुं लडवाने तैयार था ? एवी रीतनां तेनां वचनो सांजलीने राजा मौन रह्यो, त्यारे ते यक्ष तेने उपाडीने क्षणवारमां आकाशमां चडी गयो; तथा पर्वतनां मध्य जागमां रहेली गुफामां तेने लेइ जइने, त्यां तेणे तेने क्रोधथी विविध प्रकारना बंधनोथी बांध्यो. त्यां ते पाटुउथी ताडन पामवा, तथा उपाटोथी पीडावा लाग्यो, ते जाणे पूर्वे करेलां पापोनुं प्रायश्चितज संजालतो होय नहीं, तेम लाग्यो. पर्वतनां अग्र जागमां, समुद्रमां, कांटावाला वृक्षमां तथा गुफामां तेने फेंकी फेंकीने, ते यक्ष अंतर्ध्यान थयो. ते वखते ते पूर्वनां पुण्यथीज वच्यो, नहीतर तेवा मारथी तो त्रण लोक पण फाटी जाय; पछी ते राजा विचारवा लाग्यो के, अहो ! पूर्वनां पापरूपी वृक्षनुं आ तो हजु कुंपलीउं निकल्युं छे, पण नरक आदिकनी गतिरूप तेनां पुष्पो अने फलो तो हजु हवे थवानां छे. मदांध एवा अधम माणसो लीलामात्रथी पापोने बांधे छे, पण पछी रडतां पण तेथी पोतानो आत्मा छोडावी शकातो नथी. एवी रीते पोते करेलां पापोनो पस्तावो करतो थको, तथा तेनां क्षय माटे शुज्ञ ध्यानवालो थयो थको तीर्थने उद्देशीने ते चालवा लाग्यो. वली ते सर्व प्राणीउने पोतानी पेठे जोतो थको, द्वेष रहित थइने, पुण्य मेलववा माटे ज्यां त्यां जमवा लाग्यो.

एटलामां तेनी अंबा नामनी शासनदेवी पोतानां वचन प्रमाणे प्रसन्न थइने तेनी पासे आवीने कहेवा लागी के, हे वत्स ! हवे तुं शत्रुंजय पर्वत प्रते जा ? अने त्यां तारां हत्यादिक पापो नाश पामशे;

वळी तारा पूर्वजोनी भक्तिथी खुशी थइने में तने पहेलां पण शिखामण आपी हती, अने आजे पण हुं तने आ तीर्थ बतावुं छुं. वळी मुग्ध एवो संसारी जीव शा माटे बीजां तीर्थोमां भमे छे ? एकवार फक्त शत्रुंजय पर्वतनुं ते शामाटे स्मरण करतो नथी ? केमके, शत्रुंजय पर्वतने सारी रीते पूजवाथी, अथवा तेनुं स्मरण करवाथी, अथवा तेनी स्तुति करवाथी, अथवा तेने जोवाथी पण कर्मनो क्षय थाय छे. पापीओने शल्यरूप, धर्मीओने सर्व सुख आपनार, इच्छावालाओने इच्छित आपनार एवो आ शत्रुंजय गिरि जयवंतो वर्तो ? वळी तप दान अने पूजाविना पण शुभ भावथी केवल आ शत्रुंजयनो जे स्पर्श, ते मोक्ष सुखने देनारो छे; वळी तारुं आ निबिड कर्म नरकादिक गतिने देनारुं छे, माटे ते शत्रुंजय विना बीजा कशाथी पण क्षय थशे नहीं. वळी हे वत्स ! आटलो वखत तुं महाद्वेषी होवाथी में तारी उपेक्षा करी हती, पण हवे तो तुं आ तीर्थाधिराजने योग्य छे, माटे तने हुं कहुं छुं. जगतने पावन करनारी एवी एकवार करेली आ पर्वतनी सेवा पण, लाख भवमां उपार्जन करेलां पापोने दूर करे छे. वळी शत्रुंजय समान तीर्थ, आदिनाथ समान प्रभु, अने जीवरक्षा सरखो धर्म आ त्रणे दुनीआमां नथी. वळी मुक्तिरूपी स्त्रीनां विवाह माटे वेदिका सरखो, आ अद्भूत शत्रुंजय पर्वत जयवंतो वर्ते छे. संसाररूपी समुद्रमां डुबता एवा माणसोनां समूहने आश्रय भूत बेट समान, तथा मुक्तिरूपी कांठावालो एवो आ पर्वत शोभे छे. पापोने जीततो, धर्मने पुष्ट करतो, सुखने आपतो, तथा सघला लोकोने पवित्र करतो, एवो आ शाश्वतो शत्रुंजय पर्वत जयवंतो वर्ते छे. वळी हे राजा ! तुं पण त्यां समता रूपी जलमां स्नान करवाथी पवित्र थइने, तथा आत्मरमणतानुं आलंबन लेइने आ तीर्थनां योगथी मोक्ष प्रते जइश. एवी रीते देवीनां मुखरूपी कमलमांथी निकलता मकरंद सरखा शत्रुंजयनां महिमाने सांभलीने, ते राजा, जाणे अमृतथीज सींचाएलो होय नहीं, अथवा दूधथीज जाणे धोवाएलो होय नहीं, अथवा चांदनीथीज जाणे नाहेलो होय नहीं तेम उत्तम निर्मलपणाने पाम्यो. पछी ते राजा, जगतनी पण माता एवी ते अंबा देवीने नमस्कार करीने, शंख सरखा उज्ज्वल

मनवालो थयो थको, तथा उत्तम चारित्रनी इच्छावालो थयो थको शत्रुंजयने उद्देशीने चालवा लाग्यो; ते वखते तेणे शत्रुंजयप्रते पहों- चवा सुधि आहारना पच्चक्काण कर्यां; तथा पर्वतनां गुणोथी तेनुं मन पण हराइ गयुं; पछी एवी रीते चालतां थकां सात दिवसे तेणे शत्रुंजय गिरिनुं शिखर दीठुं; ते वखते तेनां दर्शनमां उत्कंठित एवी पोतानी बन्ने आंखोने ते कंडु राजा नीचे प्रमाणे कहेवा लाग्यो के, हे नेत्रो! त- मारां पुण्यनां समूहथी आ गिरिराजने में प्रत्यक्ष जोयो, माटे तमो तेने सारी रीते जुओ? एवी रीते अत्यंत हर्षित थयेलो एवो ते कंडु राजा, र- स्तामां कोइक महामुनिने जोइने, तेने नमस्कार करीने तथा तेनां मु- खसामी दृष्टि करीने तेनी पासे बेठो. ते वखते ज्ञानी, अने दयाथी उ- ज्ज्वल एवा ते मुनि पण, ते राजाने वैराग्य युक्त जाणीने आग्रह सहित देशनाथी नीचे प्रमाणे तेनापर अनुग्रह करवा लाग्या के, हे वत्स! तुं धर्ममां उत्सुक छे, अने वली शत्रुंजय पर्वत प्रते जाय छे, माटे तुं हवे चारित्रनुं लक्षण सांजल?

सर्वज्ञोए कर्मरूपी काष्टने छेदनारुं, तथा पंचमगतिने देनारुं, एवुं पां- च प्रकारनुं चारित्र कहेलुं छे, तेमां पेहेलुं सामायिक चारित्र, बीजुं छे- दोपस्थापनीय चारित्र, त्रीजुं सूक्ष्मसंपराय चारित्र, चोथुं परिहारविशु- द्धि नामनुं चारित्र, तथा पांचमुं यथाख्यात नामनुं चारित्र कहेलुं छे. चारित्रविनां ज्ञान अने दर्शन पांगलानी पेठे वृथा छे, तथा ते चा- रित्र पण ज्ञान अने दर्शन विना अंधनी पेठे निष्फल छे. वली जेम सु- वर्णनां कुंजमां अमृतनुं जरवुं, तथा सोनामां सुगंधि आववी, चंदने चं- दननो लेप करवो, तथा वींटीमां मणि जडवुं, तथा पर्वने दिवसे महा- दान देवुं, तथा दानमां जेम जाव लाववो, तेम शत्रुंजय पर्वतपर चा- रित्र सहित जे जिननुं ध्यान धरवुं, ते उत्तम फलने देनारुं जाणवुं. एवी रीते मुनिनी वाणीथी बुझेला एवा ते कंडु राजाए ते मुनिनी पासेथी दीक्षा लीधी, तथा द्रव्य अने जावथी परिग्रहनो त्याग करीने, प्रसन्न दृष्टिवालो थयो थको ते तीर्थप्रते पहोंच्यो; तथा त्यां शीलरूपी बखतरवालो, अने व्रतरूपी हथीयारवालो, तथा दयारूपी ढालवा- लो थयो थको पर्वतपर चडीने पापरूपी शत्रुने ते वेगथी हणवा ला-

ग्यो; वली त्यां आदीश्वर प्रभुनी प्रतिमाने जोइने तृप्ती नहि पामतो थको, रोमांच सहित ते पोतानां चक्षुने निमेष रहित करवा लग्यो. ते आ मुनि शिखरनां अग्र भागपर रहीने दुष्कर तप तपे छे, तथा हमणाज ते घाती कर्मनो क्षय करीने केवल ज्ञान पामशे. हे देवो ! हुं माहाविदेह क्षेत्रमां गयो हतो, त्यांथी आ सघलो व्रतांत में श्री मंदिरस्वामीनां मुखथी सांभल्यो छे, माटे महापापी माणस पण श्रीशत्रुंजयनी सेवाथी आ कंडु राजानी पेठे शुद्ध धर्मने भजनारो थाय छे.

हवे ते वखते बीजा देवताओ पण कांतिथी आकाशने दीपावता थका त्यां जिनेश्वरोने नमस्कार करवा माटे आव्या. वली त्यां सघला इंद्रोए, दुष्कर्मोने नाश करनारी,तथा भूतादिकनां दोषने दूर करनारी एवी रायणने प्रदक्षिणा देइने, श्री वीरप्रभुने नमस्कार कर्यो. वली तेओए त्यां नाना प्रकारनी लब्धिवाला, अष्टांग योगमां निपुण, प्रभावनाना उदयवाला, ध्यानमां मग्न आत्मावाला, मौनधारी, धर्मनुं माहात्म्य कहेनारा, जपमां तत्पर, जपमालानां मणकाओ फेरववामां तत्पर, मांहोमांहे धर्मकथा करनारा, कायोत्सर्ग करनारा, पद्मासन वारीने बेठेला, अनुकंपा वाला, हाथ जोडीने बेठेला, आदीश्वर प्रभुनां मुखरूपी कमलने जोवामां तत्पर, सूर्य सन्मुख राखेल छे दृष्टि जेओए एवा, हाथमां पुस्तकवाला, तप तपता, तीर्थसेवा करता, सघला सिद्धांतनां तत्वनी विद्यामां निपुण, श्वेत वस्त्रने धारण करनारा, परिषहोने सहन करनारा, अंतरंग शत्रुने जीतवामां शूरा, प्राणीओपर उपकार करनारा, चौद उपकरणोनुं पडिलेहण करता, मूर्तिवंत जाणे शांतरसोज होय नहीं एवा, तथा देहधारी जाणे धर्मोज होय नहीं एवा, वीर भगवाननी आसपास रहेला केटलाक मुनिओने पण वांद्या.

हवे अहीं मांहोमांहे स्पर्धा करता थका देवो उत्तम रत्नोथी नीचे प्रमाणे समवसरणनी रचना करवा लाग्या. त्यां वायुकुमारो सुगंधि वायु वींझवा लाग्या; तथा मेघकुमारो अत्यंत सुगंधि जलनी वृष्टि करवा लाग्या. ते वखते पाणीथी सींचायेली शत्रुंजय पर्वत उपरनी भूमि, मंगलरूप फलने उत्पन्न करनारा पुण्यरूपी वृक्षने उगाडवामाटेज जाणे तैयार करेली होय नहीं, तेम शोभवा लागी; वली त्यां देवोये एक

योजनसुधि घुटणपुर, नीचे रहेलां डींटीआंवाली पुष्पनी श्रेणि पाथरी; वली त्यां व्यंतरोये रत्नो साथे बांधीने पचरंगी पुष्पोने विखेर्यां. एवी रीते त्यां पृथ्वीपर विखरायेलां विचित्र पुष्पो, जाणे प्रभुनी पासे कामदेवे पोतानां हाथीयारो छोड्यां होय नहीं, तेम शोभवा लाग्यां. वली त्यां व्यंतरेंद्रोये चारे दिशाउंमां लाल तोरणो बनाव्यां; के जेथी सूर्यथी जेम, तेम दिशाउंनां मुखो रंगयुक्त शोभवा लाग्यां. वली त्यां भुवनपतिनां इंद्रोये बहारनां भागमां रूपानो गढ बनाव्यो, ते जाणे मूर्तिमान एवो प्रभुनां शुभ्र ध्याननो भंडारज होय नहीं, तेम शोभवा लाग्यो; वली एक योजन सुधि पृथ्वीपर व्यापीने रहेलो, चंद्र सरखी कांतिवालो तथा बत्रीस अंगुल सहित तेंत्रीश धनुषनां प्रमाणवालो उंचाइमां पांचसें धनुषनां मानवालो, कुंडल सरखा आकारवालो, तथा सोनानां कोंगरांथी शोभतो एवो ते गढ पृथ्वीपर शोभतो हतो. ते गढनी अंतरमां पंदरशो धनुष्य जेटली भूमि छोडीने, ज्योतिष देवताउंये उत्तम सोनानो गढ बनाव्यो. उपर कहेला रूपानां गढ सरखाज उंचा अने विस्तारवाला एवा आ गढ उपरे मनोहर रत्नमय कोंगरां शोभतां हतां. ते गढनी वच्चे वैमानिक देवोये विचित्र प्रकारनां रत्नोवालो, उपर जेवडोज रत्ननो गढ बनाव्यो. ते गढपर विविध प्रकारनां दिव्य प्रभाववालां रत्नोनां कोंगरांउंनी श्रेणि अत्यंत शोभवा लागी. वली त्यां रहेली रंगबेरंगी पताकाउं, जगतमां भ्रमणथी संतापने प्राप्त थयेला एवा प्राणीउंनां पसीनाने जाणे दूर करवा माटेज होय नहीं, तेम फरकवा लागी. वली ते पर सोनानी घुघरीउंनां अवाजथी वाचाल करेल छे दिशाउंनां मुख जेणे, एवो रत्नमय महाध्वज शोभतो हतो. वली त्यां दरेक गढोमां, उत्तम बारणांवाला चार दरवाजाउं अत्यंत कांतिवाला रत्नोथी शोभता हता; ते जाणे चारे दिशाउंनी लक्ष्मीने प्रवेश करवा माटेज होय नहीं, तेम लागता हता. वली ज्यां इंद्रनीलमणीनां (पानानां) बनावेलां तोरणो, युवान एवा गढोनी जाणे डाढीमुछोज उगेली होय नहीं, तेम देवोने भ्रम उपजावता हता. वली त्यां दरेक बारणापासे, स्फुरायमान थता एवा जे धूपधाणां, तेमांथी निकलता धुंवाडायें करीने व्याप्त करेल छे दिशाउंनां मुखो जेणे, एवा ते महान् गढो, जाणे अंधकारने नसाडताज होय नहीं, तेम शोभता हता. वली

त्यां देवोये दरेक द्वारप्रते सोनेरी कमलोथी शणगारेली, तथा उत्तम पाणीथी नरेली, एवी वावो, अरिहंत प्रजुने नमनाराउने स्नान करवामाटे बनावी. वली त्यां देवोये पेहेला अने बेला गढनी वच्चे, प्रजुने विश्रांति आपनारो, "देवछंद" ईशानसन्मुख बनाव्यो. वली ते रत्नना गढनी अंदर मध्य जागे देवोये मणीनी पीठीकावालुं सत्तावीश धनुष उंचुं चैत्यवृक्ष बनाव्युं. तेनी नीचे उत्तम पादपीठमां जडेला मणिउथी सूर्यनां बिंबनी पेठे सोनानुं सिंहासन शोजतुं हतुं. वली जक्तिथी दीपता एवा देवोये ते सिंहासन पर, त्रण जगतनां प्रजुपणाने जणावनारां त्रण छत्रो धारण कर्यां. वली त्यां एक हजार जोजन उंचो तथा मोक्षमां चडवाने निसरणी सरखो सोनानो धर्मध्वज शोजतो हतो. वली त्यां दरेक गढनां दरेक द्वारप्रते तुंबरुं प्रमुख, उत्तम शृंगारवाला पोलीआउ शोजता हता. एवी रीते लक्ष्मीनां स्थानक सरखा समवसरणने करीने, बाकीनुं सघलुं कार्य व्यंतरेंद्रोये संपूर्ण कर्युं. पछी देवोये मुकेलां सुवर्णनां कमलोप्रते स्थापेल छे चरण कमल जेणे एवा, तथा नवतत्वोनां स्वामी, अने नवनिधाननां देनारा, तथा याचकोयें करीने वाक्योथी स्तुति कराता, मनथी चिंतवन कराता, कानथी श्रवण कराता, अने क्रोडो आंखोथी जोवाता, तथा जगतनां जीवित सरखा तथा धर्मीउनां सर्वस्व सरखा, एवा श्रीवीरप्रजु पूर्वद्वारथी समवसरणमां दाखल थया. वली धर्मनां चक्रवर्ती एवा ते प्रजुनी अगाडी, सोनेरी कमलपर रहेलुं, तथा पापरूपी अंधकारनो नाश करवामां सूर्यनां मंडलसरखुं एवुं धर्मचक्र रहेतुं हतुं. वली प्रजुनी प्रदक्षिणाने पामीने चैत्यवृक्ष पण क्षण वारमां जाणे अहंकारने पाम्युं होय नहीं तेम नवपल्लव अने पुष्पोवालुं थयुं. पछी धर्मचक्री तथा तत्वने जाणनारा एवा ते प्रजु "तीर्थायनमः" एवी रीतनो उंचेथी उच्चार करीते पूर्व दिशासन्मुख सिंहानपर बेठा. वली ते वखते व्यंतरोये बीजी दिशाउमां पण प्रजुनां रूपो कर्यां; अने तेउ पण प्रजुनां मुखसरखांज शोजवा लाग्यां; आ सघलो महिमा प्रजुनो जाणवो. पछी त्यां पूर्व तरफनां द्वारथी साधुउ आव्या, तथा रत्नना गढमां रहेला प्रजुने प्रदक्षिणा देइने, तथा नमस्कार करीने, अने जक्तिथी तेनी स्तुति करीने, अग्निखुणामां प्रजुनी सन्मुख बेठां; तथा पछी त्यां वैमानिक देवांगनाउ आ-

वी, अने तेउंनी पछाडी साधवीउं बेठी. वली त्यां अनुक्रमे ज्ञवनपति, ज्योतिषी, अने व्यंतरनी स्त्रीउं दक्षिण द्वारेथी आवीने तथा प्रज्ञुने नमीने नैरुत्य खुणामां बेठी. वली त्यां ज्योतिषी, ज्ञवनपति, अने व्यंतर देवताउं, पश्चिम द्वारेथी प्रवेश करीने, तथा प्रज्ञुने नमीने, वायव्य खुणामां बेठा. वली त्यां वैमानिक देवो, पुरुषो, तथा स्त्रीउं उत्तर द्वारथी आवीने, तथा प्रज्ञुने नमीने इशान दिशामां बेठा. हवे बीजा गढमां हरिण, सिंह, पाडा विगेरे, प्रज्ञुना दर्शननां माहात्म्यथी मत्सरनो त्याग करीने बेठा. तथा छेल्ला गढमां देव, असुर अने मनुष्योनां सघलां वाहनो रह्यां, केम के, एवी रीतनो जिनमतनो अनुक्रम छे; वली त्यां बीजा सिद्ध, गंधर्व, किन्नर विगेरे पण यथायोग्य स्थानके, प्रज्ञुनां वचनरूपी अमृतने पीवाने उद्यमवंत थया थका बेठा. वली ते एक योजन प्रमाणवाला समवसरणमां पण क्रोडो गमे मनुष्य, ज्ञुवनपति, देव विगेरे माया, ते सघलो प्रज्ञाव प्रज्ञुनो जाणवो. हवे त्यां सिंहासनपर बेठेला, तथा त्रण छत्रोथी शोज्ञता. चामरोथी वीजाता, अने सर्व अतिशयोथी शोज्ञता, सौम्य, कांतिनां समूहथी त्रणे जगतने व्याप्त करता, केवलज्ञानथी लोकोने जोनारा, त्रण लोकनां ऐश्वर्यथी सुंदर, सघला प्राणीउंनुं हित करनारा, तथा दीव्य प्रज्ञावथी कीर्तिवंत थयेला एवा ते प्रज्ञुने जोइने सघला देवो अवच नीय हर्षने पाम्या. वली ते वखते केटलाको मस्तक धुणाववा लाग्या, केटलाको प्रज्ञुनां लुंछणां उतारवा लाग्या, तथा केटलाको प्रज्ञुनी स्तुति करवा लाग्या. एटलामां सुराष्ट्देशनां राजानो पुत्र, यादवकुलवालो, रिपुमल्ल नामे जीर्णदुर्गनो (जुनागढनो) स्वामी त्यां आव्यो. ते वखते हर्षनां अश्रुथी ज्ञरेली छे, आंखो जेनी, तथा रोमांचरूपी कुंचुकने धारण करनारो, अने स्फुरायमान थयेल छे, ज्ञक्ति जेनी एवो सौधर्मेंद्र नीचे प्रमाणे प्रज्ञुनी स्तुति करवा लाग्यो. हे सामान्य केवलीउंनां स्वामी, तथा जगतनां प्रज्ञु, त्रण जगतमां तिलक समान, तथा संसारथी तारनारा तमो जयवंता वर्तो ? वली हे देवाधिदेव, पूजनीक, करुणानां समुद्र, शरणे आवेला संसारीनुं रक्षण करनार, तथा करुणानी खाण समान तमो जयवंता वर्तो ? वली हे जंगम कल्पवृक्ष सरखा, अरिहंत, परमेश्वर, परमेष्टी, मृत्युरहित, प्रकट, तथा निरंजन एवा तमो जयवंता वर्तो ? वली हे सिद्ध,

स्वयंबुद्ध, तत्वोनां समुद्र सरखा, सर्व सुखोना घर सरखा; तथा महेश्वर एवा तमो जयवंता वर्तो.? वली हे प्रभु ! तमो अनादि, अनंत, अव्यक्त, तथा स्वरूपने धारण करनारा छो, अने सुर, असुर तथा राजाउं तमोनेज नमस्कार करे छे. वली हे जगतनां स्वामी ! आपनाथीज हुं आ जगतने धन्य मानुं छुं, तथा अन्य पाखंडिउंनां तर्क अने कुयुक्तिउंथी क्षोभ नहीं पामता एवा तमो प्रते नमस्कार थाउं? वली हे प्रभु ! तमारा पासेथी हुं मोक्ष सुखनी इछा राखुं छुं, अने तमारा अतुल्य महिमाने देवो पण जाणी शकता नथी. वली हे देव ! तथा सर्व तत्वोनां जाणनार ! उत्कृष्ट ज्ञान आपमां रहेलुं छे, केम के, मोक्ष हमेशां आपने आधिन छे, एम ज्ञानीउं कहे छे. वली हे ईश्वर ! तमोये जगतनो उद्धार करवा माटे मनुष्यनुं रूप धारण करेलुं छे, नहींतर आ जगत अजगतज कहेवात. वली सर्व देवोने विषे देवपणुं पण तमारा अंशथीज प्राप्त थयेलुं छे, केमके अन्यदर्शनीउं पण वीतरागपणानेज मुक्ति कहे छे. वली हे जगतनां पूज्य, निश्चयें करीने तमोज परमेश्वर छे, केमके, रागद्वेषें करीने सहितने तत्वथी परमेश्वरपणुं घटी शकतुं नथी. वली भाग्यहीन माणसो अन्य देवनी पेठे आपने जोइ शकता नथी, केमके, बीजां रत्नोनी पेठे चिंतामणी रत्न कंइं सुलभ होतुं नथी. वली हे प्रभु ! तमारेविषे प्रभावनी रिद्धि जेवी छे, तेवी अन्य देवोमां नथी, केमके ताराउंमां सूर्यनी प्रभा क्यांथी होय? वली हे प्रभु ! ज्यां तमो विहार करो छो, त्यां सो जोजनसुधि कंइं पण उपद्रव थतो नथी, अहो ! मोटाउंनो प्रभाव पण मोटोज होय छे ! ! वली हे भगवन्, ज्योतिरूप एवा तमोज योगीउंने ध्यान धरवा लायक छो, वली आठ कर्मोनो नाश करवामाटे आपे अष्टांगयोग करेलो छे. वली स्वामीनां पण स्वामी, गुरुनां पण गुरु, अने देवोनां पण देव, एवा तमो प्रते नमस्कार थाउं ? वली जलमां, अग्निमां, वनमां, शत्रुनां संकटमां, तथा सिंह, सर्प अने रोग आदिकनी विपदामां तमोज मारा शरणभूत छे; एवी रीते सुधर्मेंद्र, प्रभुनी स्तुति करीने, भक्तिपूर्वक, बपैयो जेम पाणीने, तेम प्रभुनां वचननुं पान करवाने बेठो. पछी त्रणे जगतनां स्वामी एवा ते प्रभु, जगतनां हर्षमाटे सर्व भाषामां समान अर्थवाली, सर्व प्राणीउंनुं हित करनारी, सर्व अतिशयोथी संपूर्ण, सर्व

प्रकारे शोभनिक, तात्विक अर्थथी मनोहर, शांत, तथा एक योजनसुधि संभलाय तेवी वाणी बोलवा लाग्या. जेम कस्तुरी पोतानां सुगंधपणाथी अमूल्यपणाने पामी छे, तेम आ शरीर पण धर्मथी उत्तमपणाने पामे. वली आ शरीरनी अंदर मलीन एवी सात धातुउ रहेली छे, तेम ते बहारथी पण अशुचि छे, माटे ते सर्वथा प्रकारे निरर्थकज छे. एवुं जाणीने पण मूढ एवो प्राणी कर्मने वश थइ, अहंकारयुक्त थयो थको पोताने अजरामर मानीने इछा प्रमाणे संचरे छे. वली आ कायाने आ संसारमां नाना प्रकारनां शस्त्रोथी, अग्निथी, स्थावर अने जंगम फेरथी, शत्रुउथी, तीव्र रोगोथी, अकाल मृत्युथी, टाढ तडकाथी, घडपणथी, इष्टनां वियोगोथी, इत्यादि महादोषोथी, अत्यंत क्लेश थाय छे; माटे एवी रीतनां आ असार देहने पामीने हे लोको! तमो जगतमां सारभूत, तथा पूजनिक एवा धर्मने करो? वली काचनां समूहोथी ज्यारे चिंतामणी रत्न मले, तथा रजथी सुवर्ण मले, पाणीनां बिंदुथी अमृतसमुद्र मले, तथा घर मात्रथी ज्यारे राज्य मले, त्यारे तेवुं कार्य तत्वने विचारनार कयो माणस न करे.? वली धर्मविना, माता, पिता, भाइ, मित्र तथा राजा पण प्राणीनुं आ संसारजालथी रक्षण करी शकता नथी, माटे ते धर्मनेज सेववो. वली ते धर्मप्रवृत्ति, काल आदिक उपायोथी, उचित आचारथी, ज्ञानगर्भित क्रियाथी, तथा मनुष्यजन्मथी बुद्धिवानो प्रते प्रशंसनीक थाय छे. वली धर्मज प्रगट रीते तीर्थंकरनी पदवीने योग्य छे, केमके तेनी अनुज्ञा प्रमाणे चालनारा लोको त्रिभुवननां पण स्वामी थाय छे. वली राजा आदिकनी सेवाथी शामाटे आत्माने दुःखी करवो जोइयें? केमके जे धर्मे तेउ प्रते पण राजापणुं दीधुं, ते धर्मनोज आश्रय करो? वली हे भव्य लोको! तमो विचारो के, धर्मविनां कोइ पण जगोयें कंइ पण मली शकतुं नथी, केमके, आ दुनिआमां केटलाको दुःखी अने केटलाको सुखी देखाय छे. वली हे भव्य लोको! रागादिकोने कोइ वखते पण वश थवुं नहीं, केम के, तेउ जरा सुख आपीने पाछा नरकादिकमां फेंकी दे छे. वली तमो विचारो के, विषयो सरखा आत्मानुं अहित करनारा बीजा कोइ पदार्थो नथी, केमके, तेउ संसारी जीवोने पापकार्योमां प्रवर्तावीने ज्ञानादिकनो नाश करे छे. ज्यांसुधि अ-

त्यंत तेजस्वी धर्मरूपी सूर्य प्रकाशतो नथी, त्यांसुधि ते विषयो अंधकारनी पेठे अटकाव रहित सर्व जगोये फेलाय छे. वली प्रमादरूप पापोथी अंध थयेल छे नावनेत्रो जेउनां, एवा कुमार्गीउं, दुःखनां समूहरूपी जंगली प्राणीउंथी व्याकुल एवा नरकरूपी वनमां पडे छे; स्वरूपमात्रथी जाणता एवा संसारी जीवो प्रत्यक्ष इष्टनां लोने करीने उज्ज्वल धर्मनां महिमाने जाणता नथी; वली दिवस, रात्रि, सुख, दुःख, जागरण, तथा निद्रादिकनां दृष्टांतथी पुण्य पापनुं फल प्रत्यक्ष जणाय छे. वली क्षुद्र एवा राक्षस, सिंह, सर्प आदिको पण जे उपद्रव नथी करता, ते सघलुं स्पष्ट रीते धर्मनुं माहात्म्य जाणवुं. वली धर्मनो द्वेष करनार, तथा महाबलवंत एवो प्रमाद सर्वथा तजवो, केम के, जो धर्मनो नाश थाय, तो शरीरमां व्याधि, बंध आदिकनी आपदाउं लागु पडे छे. माटे एवी रीते चित्तथी पुण्यपापनुं प्रगट फल जाणीने, जेथी कल्याणनी सिद्धि थाय छे, ते धर्मने नजवो. एवी रीते धर्मरूपी अमृतने करनारा प्रभुनां वचनने अत्यंत पीने, लोको अखंड आनंद पाम्या. वली ते वखते सन्नानां लोको जाणे, अमृतथी तृप्त थया होय नहीं, तथा चांदनीथी जाणे धोवाया होय नहीं, तथा जाणे निधाननी लब्धिने प्राप्त थया होय नहीं, तेवा थया. वली केटलाकोये तो त्यां संयम लीधुं, तथा केटलाको सम्यक्त्व पाम्या, तथा केटलाको त्यां हर्षथी नद्रकनावने पाम्या. वली त्यां शत्रुंजय प्रते प्रभुने आवेला जाणीने सौधर्मेंद्र अत्यंत हर्ष पूर्वक पुण्य कार्योंमां नक्तिवंत थयो. वली त्यां नणे जगतोनां माणसोथी पूजायेली आदीश्वर प्रभुनी प्रतिमाने, तथा दूधने करती रायणने, अने तेनी नीचे रहेलां प्रभुनां पगलांने, तथा नदी, तलाव, कुंड, शिखरो, वृक्षो, वनो, अने नगरोने जोइने, तथा प्रभुनां चरणने नमीने, हर्षित थयेलो सुधर्मेंद्र, मस्तकपर हाथ जोडीने, रोमांचित थयो थको, अमृत सरखी, तथा पर्षदाने हर्ष उपजावनारी, तथा उत्तम गुणोथी गर्जित थयेली वाणीयें करीने, जगतनां स्वामी एवा प्रभुने कहेवा लाग्यो के, हे जगतनां आधारनूत एवा नगवन्, तमोज आ जगतमां तीर्थरूप छो, अने आपनाथी अधिष्टित थयेलो आ शत्रुंजय पर्वत विशेषें करीने पवित्र थयेलो छे. वली हे प्रभु! आ तीर्थमां शुं तप तपा-

य.? शुं व्रत? शुं जप? तथा अहीं कइ सिद्धिओ छे? वली शुं फल मले? अहीं शुं ध्यान धरवुं? अहीं शुं शुभ कार्य करवुं? तथा आ पर्वत क्यारे अने शामाटे थयो.? तथा तेनी केटली स्थिति छे? तथा आ नवीन प्रासाद कोणे कराव्यो? तथा आ चांदनी सरखी मनोहर प्रतिमा कोणे करावी? तथा प्रभुनी पासे तलवारने धारण करीने द्वारमां आ बन्ने देवो कोण उभा छे? तथा डाबी अने जमणी बाजुये कोणनी मूर्ति छे? अने बीजा देवो पण कोण छे? तेम आ रायणनुं वृक्ष शुं छे? तथा तेनी नीचे कोना पगलां छे? तथा ए मयूरप्रतिमा कोनी छे? अने अहीं आ यक्ष कोण उभो छे? वली अहीं कइ देवी क्रीडा करे छे? अने अहीं आ मुनिओ कोण रहेला छे? अने आ मोटी नदीओ कइ छे? तेम आ उत्तम फलोवाला वृक्षो कोण छे? तथा कया मुनिनुं आ तलाव छे? तथा हे जगतनां प्रभु! आ कुंडो कया छे? तथा रसकुंपिका अने रत्ननी खाण शुं प्रभाववाली छे? तथा कइ कइ गुफाओ छे? हे स्वामी! लेपथी बनावेला स्त्री सहित आ पांच माणसो कोण छे? तथा त्रणे जगतनुं उल्लंघन करे एवा ऋषभ प्रभुनां गुणोने अहीं आ कोण गाय छे? तथा दक्षिण दिशामां आ कयो पर्वत छे? अने तेनो शुं प्रभाव छे? वली अहीं शिखरो कया कया छे? तथा चारे दिशाओमां कयां कयां नगरो छे? तथा अहीं समुद्र केम आवेलो छे? अने अहीं कोण उत्तम पुरुषो थया छे? वली अहीं केटला वखतसुधि प्राणीओ सिद्धि पामशे, तथा आ पर्वत केटला प्रमाणवालो छे? तेम हे प्रभु! अहीं सम्यग्दृष्टिओनां केटला उद्धारो थशे? इत्यादि सघलुं व्रतांत, हे प्रभु आपे कृपा करीने कहेवुं; केमके, जगत्पूज्यो आश्रित प्राणीओप्रते पोतानी मेलेज उपकार करनारा होय छे.
एवी रीतनी सुधर्मेंद्रनां मुखरुपी कमलमांथी निकलेली वाणी सांभलीने, तीर्थनां प्रभावनी वृद्धि माटे, तथा भव्य जीवोने बोध थवा माटे, अने सांभलनाराओनां पापोनो नाश थवा माटे भगवान श्री वीरप्रभु गंभीर वाणीथी, नही अति संक्षिप्त तेम नही अति विस्तारवालुं एवुं श्री शत्रुंजय तीर्थनुं माहात्म्य कहेवा लाग्या के, हे सौधर्मेंद्र! सर्व तीर्थोमां राजा समान एवा आ शत्रुंजय पर्वतनी कथा कहेनार अने सांभलनार बन्नेने पुण्य अर्थे थाय छे, माटे ते तुं प्रगट रीते सांभल?

एक लाख योजननां विस्तारवालो, तथा पूर्णिमानां चंद्र सरखी आकृतिवालो, अने लक्ष्मीथी निरूपम जंबूद्वीप नामे द्वीप छे. जे जंबूद्वीपमां, मारी शाखापर जिननां मंदिरो छे, एवी रीतनां हर्षथीज होय नहीं जेम, तेम जंबूवृक्षनां पल्लवोनो समूह हमेशां नाच्या करे छे. ते जंबूद्वीपमां भरत, हैमवंत, हरिवर्ष, महाविदेह, रम्यक, तथा ऐरण्यवंत एम छ क्षेत्रो छे; तथा तेउमां अनुक्रमे हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नीलवंत, रूप्य, तथा शिखरी नामनां छ पर्वतो पूर्वथी पश्चिम समुद्र सुधि लंबाएला छे, तथा तेउ जिनमंदिरथी शोभी रह्यां छे. महाविदेह क्षेत्रनां मध्य भागमां, लाख शिखरोथी शोभतो, अने पृथ्वीनां मध्य भागमां रहेलो, सुवर्णनो मेरु पर्वत छे; ते पर्वत लाख योजन उंचो, वननी श्रेणिउथी शोभतो, तथा शाश्वता जिनमंदिरोनां शिखरपर रहेलां चलकतां रत्नोनां किरणोथी देदीप्यमान लागे छे. हवे भरत क्षेत्रने अमो पुण्यथी भरेलुं मानीयें छीयें, केम के ते क्षेत्रनां माणसो दुःखमकालमां पण पुण्यशालीउ होय छे. ते भरत क्षेत्रमां नाश थएल छे दुर्नीति तथा उपद्रव जेमांथी, अने प्रीति युक्त छे माणसो ज्यां अने सघला देशोमां मुख्य, एवो आ सुराष्ट्र देश कहेवाय छे. आ देशमां अल्प पाणीथी पण धान्य पाके छे, तथा थोडां पुण्यथी पण उत्तम फल मले छे. अने स्वल्प उपायथी पण कषायोनो नाश थाय छे. वली आ देशनां पाणी निर्दोष छे, तथा पर्वतो पण पवित्र छे, अने अहींनी पृथ्वी पण हमेशां रसाल अने सर्व धातुमय तथा उत्तम छे. वली अहीं पगले पगले सर्व पापोने हरनारां तीर्थो छे, तथा पवित्र पाणीनां समूहवाली नदीउ छे, अने उत्तम प्रभाववाला ह्रदो छे; वली अहीं चारे कोरे विकस्वर पामेला सुगंधि कमलोवालां तलावो छे, तथा टाढा अने उना पाणीथी शोभता कुंडो छे. वली अहीं पगले पगले निधानो छे, तथा पर्वते पर्वते रसकुंपीकाउ, महा प्रभाववाली औषधीउ, तथा हमेशां फलतां वृक्षो छे. वली अहीं पूर्वे जाणे वावेलुंज होय नहीं तेम पोतानी मेलेज घणुं धान्य नीपजे छे, तथा ज्यांनी पवित्र माटी तीर्थस्नाननां फलने देनारी छे. वली अहीं श्री ऋषभ प्रभुनी पूजा माटे हीरा, पुखराज, सूर्यकांत मणि, मोती, तथा पानां आदिकनां समूहो पोतानी मेलेज उत्पन्न थाय छे. वली

अहीं स्फुरायमान एवां रत्नोयें करीने, आ देशनां गुणोनेज जाणे प्रगट करतो होय नहीं, तथा प्रभुनी भक्तिमां तत्पर थइने मोजांरूपी हाथो- थी नाचतो तथा गर्जना करतो होय नहीं जेम, तेम समुद्र शोभे छे. आ तीर्थनी रक्षामाटे मने अहीं सगर चक्रवर्ती लावेलो छे, एवा हर्षथी जाणे फीणनां समूहनां मिशथी हसतो होय नहीं, तेम ते समुद्र शोभे छे. व- ली अहीं देवोथी पूजायेला चोवीस तीर्थंकरो, चक्रवर्तिउ, वासुदेवो, त- था बलदेव प्रमुखोये पण विहार कर्यो छे. वली अहीं अनंत मुनिउ सि- द्ध थया छे, तथा घणा सिद्ध थशे, तथा अहीं घणा धर्मधुरंधुर संघप- तिउ थयेला छे. वली अहीं जरासिंधादिकने मारीने कृष्णादिके जय मे- लव्यो छे, तथा बीजा पण नीतिनिपुणो अहीं घणा राजाउ थयेला छे; वली अहीं केटलाक राजाउ प्रजानां प्रतिपालनथी तथा शत्रुनो नाश क- रवाथी कीर्तिवाला, त्यागी, धर्मकार्यनां आधारभूत तथा सर्व जगोये स- मदृष्टिवाला थयेला छे- वली अहीं हमेशां सरल स्वभावी, प्रसन्न मुखवा- ला, विवेकी, संतोषी, हमेशां आनंदी, तथा निंदा अने मात्सर्य विनानां, पोतानीज स्त्रीउमां संतोषी, परस्त्रीउथी विरक्त, सत्य बोलनारा, पुण्यशा- ली, परद्रोहनी बुद्धिविनानां, कदाग्रह अने वैरविनानां, कपट अने लो- भविनानां, उदार, निर्दोष आचारवाला, तथा सुखी लोको वसे छे. वली ब्रह्मचर्य गुणें करीने मनोहर, पतिनी सेवामां तत्पर, हसमुखी, रूपाली, परिवारनुं हित करनारी, मातपितानी भक्ति करनारी, भर्तार प्रते प्रीति- वाली, सर्व लोकने वल्लभ, भाग्यथी भासुर, बहु पुत्रोथी शोभती, लज्जा- युक्त, कमल सरखां नेत्रोवाली, कौतुकवाली, स्वल्प क्रोधवाली, उत्तम पे- हेरवेषवाली, सरल बुद्धिवाली, मीष्ट वचनोवाली, गंभीर, अने गुणो छे प्रिय जेउने एवी स्त्रीउ अहीं वसे छे. वली अहीं पुत्रो मातपिता प्रते भ- क्तिवाला, हमेशां मातपितानी आज्ञा पालनारा, कलाउमां कुशल, शांत अने सुशीलो छे. वली अहीं चाकरो शेठप्रते उत्तम भक्तिवाला, कार्य वखते याचना नहिं करनारा, शूरा, स्वल्पमां पण संतोपी, स्नेही, भलुं करना- रा शेठनां अभिप्रायने जाणनारा, सभाने योग्य, उत्तम वचनवाला, अ- त्यंत प्रीतिवाला, शेठनां वैरी प्रते वैरवाला, तथा शेठनां मीत्र प्रते मित्रा- इवाला छे. वली अहीं क्षत्रिउ आस्तिकपणामां तथा उचितपणामां चतु-

र, क्षमा अने डाहापणथी मनोहर, बये दर्शनप्रते समदृष्टिवाला अने पराक्रमी बे. वली अहीं पुष्ट, तथा बहु दूधवाली गायो बे, तथा जेंसो पण महा बलवान, शींगडांवाली, बंधनविनानी, तथा कोइ चोरी के हरी न शके एवी बे. वली अहीं घोडाउ उंचा, तथा चपल गतिवाला बे, वलदो खांधोयें करीने मनोहर बे, तथा संग्रामरूपी समुद्रमां वेट सरखा हाथीउ पण अहीं शोजे बे. वली अहीं बीजा तिर्यंचो पण महाबलवान् थया थका परजातिनो मत्सर करनारा नथी, तेम तेउ जयथी उद्विग्न थयेलां नथी. वली अहींना नगरो मोटा अने उंचा किल्लाउथी शोजितां थएलां बे, अने त्यां अरिहंत जगवाननां चैत्योपर रहेली धजाउ तो आकाशने स्पर्श करे बे. वली अहींनां लोको जैन साधुनां मुखरूपी कमलमांथी निकलेला सिद्धांतनां सारथी पाप रहित, पवित्र तथा लक्ष्मीवंत बे. वली अहीं मनोहर तथा सघली वस्तुउथी जरपुर, मेहेलो बे, तथा लाज मेलवता एवा त्यां वेपारीउ पण बे. ते सुराष्ट्र देशने मुकुट समान, तथा स्मरण करवाथीज पापोनो नाश करनारो, आ शत्रुंजय पर्वत बे. आनुं माहात्म्य केवलज्ञानथी जणाय, पण कही शकाय नहीं, तो पण हे देवेंद्र! तारा पुबवाथी हुं ते तने कहुं बुं. वली ते माहात्म्य जाणीने, अने शक्ति बतां पण, जो मौन करवामां आवे, तो मुंगानां रसनां स्वादसरखुं थाय. वली त्रणे लोकनां ऐश्वर्यनां घर सरखा एवा आ तीर्थनां नाममात्रथी पण जेम पार्श्वनाथनां नामथी सर्पनुं ऊेर जाय, तेम पापोनो नाश थाय. शत्रुंजय, पुंडरिक सिद्धक्षेत्र, महाचल, सुरशैल, विमलाद्रि, पुण्यराशि, श्रीयः पद, पर्वतेंद्र, सुजद्र, दृढशक्ति, अकर्म, मुक्तिगेह, महातीर्थ, शाश्वत, सर्वकामद, पुष्पदंत, महापद्म, पृथ्वीपीठ, प्रजुपद, पातालमूल, कैलास, क्षितिमंडलमंडन, इत्यादि आ पर्वतनां एकसोने आठ नामो बे, ते सुधर्मास्वामीये बनावेला सपादलक्ष माहात्म्यथी जाणी लेवां. एवी रीतनां आ महातीर्थनां नामो, जे माणस प्रजातमां जणे बे, अथवा सांजले बे, तेने संपदाउ मले बे, अने तेनी आपदाउ नाश पामे बे. वली आ शत्रुंजय पर्वत सघला तीर्थोमां उत्तम तीर्थ, सघला पर्वतोमां उत्तम पर्वत, तथा सघलां क्षेत्रोमां उत्तम क्षेत्र बे. युगनी आदिमां मोक्षने देनारुं आ पेहेलुं तीर्थ बे, अने बीजां तीर्थो तो तेनी पबी-

नां छे. वली हे इंद्र! आ त्रणे लोकमां जेटलां पवित्र तीर्थो छे, ते सघलां आ शत्रुंजय तीर्थनां दर्शनथी आवी जाय छे- वली पंदर कर्मभूमीउमां नाना प्रकारनां तीर्थो छे, पण शत्रुंजय समान वीजुं कोइ पण तीर्थ पापोने हरनारुं नथी. वीजां कृत्रिम एवां तीर्थोमां, नगरोमां, उद्यानमां, तथा पर्वतोमां जप, तप, नियम, दान अने ध्यानथी जे पुण्य उत्पन्न थाय छे, तेथी दशगणुं पुण्य कल्याणिक तीर्थोमां थाय छे, अने जंबु वृक्षमां रहेलां जिनतीर्थोमां तेथी सोगणुं पुण्य थाय छे. वली शाश्वता एवा धातुकी वृक्षमां तेथी हजारगणुं, तथा पुष्करद्वीपनां चैत्योमां, रुचकगिरिमां, अने अंजनगिरिमां अनुक्रमे तेथी दशगणुं पुण्य थाय छे, तथा नंदीश्वरे, कुंडलाद्रिमां, मानुषोत्तर पर्वतमां, वैजार पर्वतमां, सम्मेत शिखरमां, वैताढ्यमां, मेरुपर्वतमां, रेवताचलमां, अने अष्टापदमां अनुक्रमे तेथी क्रोडगणुं पुण्य थाय छे; अने शत्रुंजय पर्वतनां देखवा मात्रथीज अनंतगणुं पुण्य थाय छे, अने हे इंद्र ! आ तीर्थनी सेवाथी जे पुण्य थाय छे, ते तो वचनथी पण कही शकाय तेम नथी. वली पेहेला आरामां ते एंसी योजननां विस्तारवालो, वीजा आरामां सित्तेर योजननो, त्रीजामां साठ योजननो, चोथामां पचाश योजननो, तथा आ पांचमा आरामां वार योजननो छे, अने छठ्ठा आरामां ते सात हाथनो रहेशे, पण तेनो महिमा घणो थशे. वली आ अवसर्पिणीमां जेम ते तीर्थनां विस्तारनी अनुक्रमे हानि थाय छे, तथा उत्सर्पिणीमां तेनी वृद्धि थशे, पण तेना महिमानी हानि कोइ पण वखते थशे नहीं. वली श्रीऋषभदेव प्रभु ज्यारे आ पर्वतपर तप करता हता, ते वखते हे इंद्र! आ पर्वतनां मूलनो विस्तार पचास जोजननो, उपरना भागमां दश योजननो, तथा उंचाइमां आठ योजननो हतो. एवी रीतनो आ पर्वत प्रलयकाले पण नाश पामनारो नथी, अने तेनो आश्रय करीने रहेला लोको मोक्ष सुखने मेलवे छे. वली आ पर्वतनां शत्रुंजय, रैवतगिरि, सिद्ध क्षेत्र, सुतीर्थराज, ढंक, कपर्दी, लोहित्य, तालध्वज, कदंबक, वाहुवलि, मरुदेव, सहस्त्र, भगीरथ, अष्टोत्तरशतकूट, नागेंद्र, शतपत्रक, सिद्धराज, सहस्त्रपत्र, पुण्यराशि, सुरप्रिय, अने कामद, एवी रीतनां एकवीश मुख्य शिखरो छे. एवी रीतनां प्रत्येक शिखरोनो महिमा कहेवामां तो अनेक वर्षो चाल्यां

जाय; माटे तेमांथी प्रगट महिमावाला केटलाक शिखरोनो किंचित महिमा अहीं कहुं छुं. मुख्य शिखर शत्रुंजयनुं तथा सिद्धक्षेत्रनुं छे, के जेपर चढ्याथी यत्नविना मोक्षमां जइ शकाय छे. वली मेरु आदिक पर्वतो करतां पण आ पर्वत गुणोयें करीने वधारे उत्तम छे, एम हुं मानुं छुं, केमके, तेपर चढ्याथी माणसो तुरत मोक्षमां जाय छे. वली आ शत्रुंजय पर्वतपर मेरु, सम्मेतशिखर, वैनार, रुचकगिरि तथा अष्टापदादिक सर्व तीर्थोनां अवतारो छे. वली त्रणे भूवनोमां तीर्थाधिराज सरखा आ पर्वतने सद्भतिनी इछाथी इंद्रादिक देवो तथा देवीउं पण सेवे छे. वली पोताने घेर बेठा पण आ तीर्थनां स्मरणथी प्राणीउं यात्रानुं फल मेलवे छे, एवा तीर्थनां राजा सरखा, तथा सर्वतीर्थमय आ शत्रुंजय पर्वत प्रते नमस्कार थाउं? वली क्रोडपूर्व सुधि शुभध्याने करीने शुद्धबुद्धि प्राणी बीजां तीर्थोमां जे शुभ कर्म बांधे छे, तेज शुभ कर्म आ तीर्थमां एक मुहुर्तवारमां बांधे छे. वली जेणे शत्रुंजय पर्वतनुं स्मरण करेलुं छे, तेणे सघलां तीर्थो, पवित्र पर्वो, तप, अने अनेक प्रकारनां दानोनुं आराधन करेलुं जाणवुं. वली हे इंद्र! त्रणे जगतमां आना खरखुं कोइ उत्तम तीर्थ नथी, केमके, आ तीर्थनुं केवल नाममात्र सांभलवाथी पण पापोनो क्षय थाय छे. वली आ तीर्थनी आसपासनी पचाश योजननी भूमिनो स्पर्श करवाथी पण मोक्ष मले छे, अने तेनुं आ मुख्य शिखर तो स्मरण मात्रथीज हत्या आदिकनां पापोनो नाश करे छे; माटे आ मनुष्य जन्म पामीने, तथा सद्गुरु पासेथी ज्ञान पामीने, जेणे आ तीर्थनी पूजा करी नथी, तेनुं सघलुं कार्य निरर्थक छे. वली ज्यांसुधि जे माणसे आ शत्रुंजय तीर्थनी सेवा करी नथी, त्यांसुधि तेने गर्भावासमांज रहेलो जाणवो, माटे तेने धर्म तो वेगलोज जाणवो. वली वृषभनुं रुप धरीने श्री आदिनाथ प्रभुनां चरणमां रहेलो धर्म, अहीं आवेला माणसने भावथी सेवे छे.वली हे मूढ प्राणी! शा माटे तुं "अहीं धर्म छे, अहीं धर्म छे" एम कहेतो थको भभ्या करे छे? फक्त एकज वेला आ शत्रुंजय पर्वतनुं तुं दर्शन कर? वली जे माणसे आ शत्रुंजय पर्वतपर यात्रा करीने ऋषभदेव प्रभुने पूज्या नथी, तेने पोतानो सकल जन्म निरर्थकज गुमाव्यो छे. वली कादव सरखा कर्मोथी प्राणीउंने निर्मल करवाथी जे

"विमलाद्रि" कहेवाय छे, एवो पापोने हरनारो आ पर्वत कल्याण माटे थाओ? वली अन्य तीर्थोमां सेंकडो यात्राओ करवाथी माणसोने जे पुण्य थाय छे, ते पुण्य आ शत्रुंजय पर्वतनी मात्र एक यात्रा करवाथी थाय छे. वली हे इंद्र! आ पुंडरिकगिरिने तुं जो? तेनुं नाम लीधाथी, तथा सांभलवाथी स्त्री भरतारनां पापोनो नाश थयो छे. वली जे माणस हमेशां उत्तम श्रद्धाथी पुंडरिकगिरिनुं ध्यान धरे, ते माणस संसारनां तापने छेदीने मोक्षपद मेलवे छे. वली एक पुंडरीकथी (सफेद कमलथी) पण जगत ज्यारे ताप रहित थाय छे, त्यारे पुंडरिक गणधर, अने पुंडरिकगिरि, आ बन्नेथी तो अद्वीतीय सुखनी प्राप्ति थाय, तेमां शुं आश्चर्य छे? वली आ एकज पुंडरिकगिरिने जे माणस एकाग्र चित्तथी सेवे छे, तेने परमानंदमय मोक्षनुं सुख मले छे. वली ज्यारे तलाव, समुद्र, शेषनाग विगेरे एक दिशाने पण हर्ष करवाने समर्थ नथी, त्यारे आ पुंडरिकगिरिनुं एकज शिखर समस्त जगतने हर्ष करनारुं छे. वली जेओ आ पुंडरिकगिरिने (कमलने) आश्रीने रहेला छे, तेओ संसारमां भ्रमण करनारा (भ्रमरो) होता नथी, अने जेओ आने सेवता नथी, तेओने पापोयें करीने मलीन जाणवा. जे प्राणीओ त्रिपदी पामीने आ पुंडरिकगिरिनो आश्रय करीने रहेला छे, तेओ पाणीथी (जडथी) उत्पन्न थयेला, तथा भमराओथी आश्रित थयेला (हिंसादिरूप) पुंडरिकने (कमलने) हसी कहाडे छे. वली आ जगतमां सद्द्रव्य, सुकुलमां जन्म, सिद्धक्षेत्र, समाधि, अने चतुर्विध संघ, ए पांच सकारो दुर्लभ छे; तेम पुंडरिक पर्वत, पात्र, प्रथम तीर्थंकर, परमेष्टी अने पर्युषण, ए पांच पकारो पण दुर्लभ छे; तेम शत्रुंजय, शिवपुर, शत्रुंजयी नदी, शांतिनाथ प्रभु अने शमता, ए पांच शकारो पण दुर्लभ छे. एकवार पण महान पुरुषोयें ज्यां स्पर्श करेलो होय, ते तीर्थ कहेवाय, पण आ तीर्थपर तो अनंता तीर्थंकरो आवेला छे, माटे ते महान् तीर्थ कहेवाय छे. वली हे इंद्र! अहीं अनंत तीर्थंकरो अने सिद्धो आवेला छे, तेम असंख्याता मुनिओ पण अहीं आवेला छे, माटे ते महान तीर्थ छे. वली आ पर्वतपर जे चराचर जीवो हमेशां रहे छे, तेओने धन्य छे!!! वली हे इंद्र! आ पर्वतपर श्री जिनेश्वर प्रभुनां दर्शनथी, मोर, सर्प, तथा सिंहआदिक हिंसक प्राणीओ पण मोक्षे

गयेला छे, मोक्षे जाय छे, तथा मोक्षमां जशे. वली आ शत्रुंजय पर्वतनां स्पर्शथी पण, बालकपणामां, यौवनपणामां, वृद्ध अवस्थामां, तथा तिर्यंचना जवमां पण जे पाप बांध्युं होय, तेनो नाश थाय छे. वली एकज शत्रुंजय तीर्थनी जे सेवा करवी, तेज दान, चारित्र, शील, तप, तथा मन वचन अने कायाथी ध्यान छे. वली आ उत्तम क्षेत्रमां लेशमात्र धननुं दान देवाथी महाफल मले छे; तथा तेथी जे पुण्य बंधाय छे, तेने कहेवाने ज्ञानी शिवाय बीजो कोइ समर्थ नथी. वली आ तीर्थमां जिनेश्वर प्रजुनी पूजामां जे माणसो लाखो पैसा खरचे छे, तेउने उत्तम माणसो जाणवां. वली आ तीर्थनी यात्रा, पूजा, संघनी रक्षा, तथा यात्रालुउनो सत्कार जे माणस करे छे, ते माणस पोतानां कुटुंब सहित देवलोकमां पूजाय छे. वली जे माणसो आ तीर्थनां यात्रालुउने डुःख दे छे, तथा तेउनुं धन चोरी ले छे, तेउ पापनां समूहथी कुटुंबसहित जयंकर नरकमां पडे छे. वली पोतानां जन्मनी सफलता इछनार, तथा सुखनां इछनार माणसे आ तीर्थनां यात्रालुउनुं मनथी पण अहित चिंतववुं नहीं. अन्य तीर्थोमां करेलुं पाप तो एकज जवसुधि नडे छे, पण शत्रुंजय तीर्थपर करेलुं पाप जवजवप्रते वृद्धि पामे छे. वली हे इंद्र! देवलोकमां आ पृथ्वीपर, अने पातलमां जेटलां जिनबिंबो छे, तेउनी पूजा करतां पण आ तीर्थमां जिननी पूजा करवाथी अधिक फल थाय छे. वली हाथमां चिंतामणि रत्न होय तो शुं दरिद्रतानो जय थाय? अने सूर्य उग्याथी माणसोने शुं अंधारुं होय? वली वरसाद वरसते छते शुं दावानल वनने बाली शके? अने अग्नि होते छते शुं टाढनी बीक होय? अने पासे सिंह होते छते शुं हरिणनी बीक होय? वली जो पासे गरुड होय, तो सर्पो कंइ पराजव करी शके? अने आंगणामांज जो कल्पवृक्ष उग्युं होय, तो शुं तडकानो जय होय? तेम शत्रुंजय नामनुं महातीर्थ ज्यारे आपणी पासे होय, त्यारे नरकने देनारी एवी पापनी बीक चित्तमां क्यांथीज होय? वली ज्यांसुधि "शत्रुंजय" एवुं नाम गुरुनां मुखथी सांजल्युं नथी, त्यांसुधिज हत्या आदिक पापो रहे छे. वली प्रमादी माणसोए पापोथी डरवुंज नहीं; फक्त एक वखतज श्री शत्रुंजय तीर्थनुं माहात्म्य सांजलवुं. आ शत्रुंजय पर्वतपर एकज दिवस प्रजुनी सेवा करवी, ते स-

वैथी उत्तम छे, अने बीजा तीर्थोमां जे भ्रमण करवुं, ते तो क्लेशनुं कारण छे. वली आ शत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करवाने इच्छता एवा माणसोनां क्रोडो भवोमां उपार्जन करेलां पापो पण पगले पगले नाश पामे छे. वली आ शत्रुंजय पर्वत प्रते एक एक पगले पण, क्रोडो भवोमां करेलां पापोथी प्राणी मुकाय छे. वली शत्रुंजय तीर्थनो स्पर्श करनाराउने रोग, संताप, दुःख, वियोग, दुर्गति, के शोक थतां नथी. वली मोक्षने इच्छनार एवा सुबुद्धि माणसे, आ तीर्थनां पाषाण छेदवा नहीं, आ तीर्थनी भूमि खोदवी नहीं, तेम अहीं विष्टा के मूत्र करवां नहीं. वली आ पर्वतज तीर्थरूप छे, माटे तेनां दर्शन, अने स्पर्शथी ते मुक्तिसुखने देनारो छे, तेथी ते कोनाथी सेवातो नथी ? (सर्वथी सेवाय छे.) वली आ उत्तम पर्वत श्री ऋषभदेव प्रभुथी विशेषें करीने भूषित थएलो छे. तथा ते, तप जेम दुःकर्मोने, तेम निबिड पापोने नाश करे छे. वली जो आकरो तप तपाणो होय, तथा उत्तम सुपात्रे दान देवायुं होय, अने जो जिनेश्वर प्रभु प्रसन्न थया होय, तोज आ तीर्थनी सेवानो अवसर मली शके छे. वली आ पृथ्वीतलपर रहेला बीजा सर्व तीर्थोनुं माहात्म्य उंचे प्रकारे वचनोथी कही शकाय छे. पण आ तीर्थाधिराजनुं महात्म्य तो केवली पण जाणतां छतां कही शके तेम नथी. वली आ तीर्थपर रहेला श्री ऋषभदेव प्रभुनां चरण कमलनी सेवाथी समग्र प्राणीउ निष्पापी थया थका जगतने वंदनीक तथा पूजनीक थाय छे. वली जे प्राणीउ शीतल अने सुगंधी पाणीथी श्री ऋषभदेव प्रभुनुं स्नात्र करे छे, ते प्राणीउ शुभ कर्मोयें करीने निर्मल थाय छे. वली जेउ आ त्रण जगतनां ईश्वरनुं पंचामृतथी स्नान करे छे, तेउ केवलज्ञान पामीने मोक्ष मेलवे छे. आ जगतमां श्रेष्ट, तथा नाश करेल छे, अंतरंग शत्रुउ जेणे एवा जे माणसो, कस्तुरी, अगर, कुंकुम, तथा चंदनथी आ तीर्थमां तीर्थंकर महाराजनी पूजा करे छे, तेउ अखंड लक्ष्मीना सहायवाला थया थका कीर्त्तिनां विस्तारने भजनारा थाय छे. वली हे इंद्र ! जे माणसो आ तीर्थमां जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करे छे, तेउ आ जगतमां कीर्त्तिवंत थया थका आ लोक अने परलोकमां पण पापरहित थाय छे. वली जे माणसो आदर पूर्वक जिनेश्वर भगवानने आ तीर्थमां सुगंधि

पुष्पोथी पूजे छे, ते माणसो सुगंधियुक्त देहवाला थया थका त्रणे लोकनां प्राणीयोने पूजनीक थाय छे. वली बीजी पण सुगंधि वस्तुओथी हर्षे करीने जे श्रावको अहीं जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करे छे, तेओ सम्यक्त्व सहित थया थका शुक्ल ध्यानथी मोक्ष मेलवे छे, वली अहीं प्रभुनी धूपपूजाथी पंदर दिवसनां उपवासनुं फल मले छे, तथा वरासनी पूजाथी एक मासनां उपवासनुं फल मले छे. वली हे इंद्र! अहीं जे माणसो वासक्षेपथी तथा वस्त्रोथी जिनेश्वर प्रभुनी पूजा करे छे, तेओ देवोथी पण पूजाय छे. वली अहीं अखंड चोखाओथी पूजा करवाथी अखंड सुखनी संपदावाला, तथा उचित काले चडावेला फलोथी इच्छित फलोनां भोगवनारा थाय छे. वली अहीं प्रभुनी स्तुति करवाथी माणसो स्तवनीय थाय छे, दीपकपूजाथी कांतियुक्त शरीरवाला, तथा नैवेद्यपूजा करवाथी अत्यंत हर्षवाला थाय छे. वली अहीं प्रभुनी आरती उतारवाथी माणसोने यश, लक्ष्मी, अने सुखो मले छे, तथा तेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने तुरत मेलवीने माणसो मानसिक, पीडा पामता नथी. वली जेओ अहीं प्रभुने नमस्कार करे छे, तेओ त्रण जगतथी नमाय छे, तथा जेओ गीतपूजा करे छे, तेओना गुणो गवाय छे; अर्थात् अहीं जे क्रिया प्रभुप्रते कराय छे, तेवुं फल प्राणीओने मले छे. वली अहीं प्रभुनी पासे दीपक कर्याथी माणसोनुं भवसंबंधि अज्ञान नाश पामे छे, तथा मंगल दीवो करवाथी द्रव्य अने भावमंगलो थाय छे, वली जे माणसो अहीं प्रभुने अलंकारो पहेरावे छे, तेओ पवित्र थया थका त्रणे भुवनोनां अलंकार रूप थाय छे. वली अहीं प्रभुनी रथयात्रा माटे जेओ रथ आपे छे, तेओने चक्रवर्त्तिनी लक्ष्मी पोतानी मेले आवीने वरे छे. वली अहीं प्रभुनी नीराजना (आरती) करवाथी माणसोने निष्पापपणुं प्राप्त थाय छे, तथा तेओ प्रतापथी शत्रुओनो जय करे छे. वली आ तीर्थमां घोडानुं दान देवाथी सर्व जगोएथी, लक्ष्मीओ आवीने मले छे. अने हाथी देवाथी गजगामिनी अने शीलवंत स्त्रीयो मले छे. वली अहीं प्रभुनां पंचामृत स्नात्र माटे जे गायनुं दान आपे छे, ते माणस हाथीओ सहित समस्त पृथ्वीनो राजा थाय छे. वली अहीं जे माणसो चंदरवा, छत्र, सिंहासन, तथा चामरनुं दान आपे छे, तेओने, जाणे थापणज मुकी होय नहीं, तेम ते वस्तुओ म-

ले छे. वली जे माणस अहीं गुरुनी आज्ञाथी महाध्वजनुं दान आपे छे, ते अनुत्तर विमाननुं सुख भोगवीने छेवटे मोक्ष मेलवे छे. वली जे माणस आ तीर्थमां पवित्र वस्त्र आदिकथी प्रभुनी आंगी रचावे छे, ते आखा जगतमां शोभनिक थाय छे. वली जे माणस आ तीर्थमां सोना, रुपा, पीतल विगेरेनां कलशो करावीने आपे छे, तेउने स्वप्नमां पण दुःख थतुं नथी, अने मोक्षपद मले छे. वली जे माणस आ तीर्थमां प्रभुनी सेवा माटे भावसहित भूमिनुं दान करे छे, ते ऋद्धिनो भोक्ता थाय छे, तथा अहीं गाम, वगीचा विगेरेनां दानथी प्राणी ज्ञान सहित चक्रवर्ती थाय छे. वली जे माणस अहीं माला पेहेरीने विधिपूर्वक प्रभुनी आरती करे छे, ते माणस देवोने पण चाकररूप करीने स्वर्गनी संपदा भोगवे छे. वली अहीं प्रभुनी दश पुष्पमालाथी पूजा करवाथी एक उपवासनुं, तथा तेथी दशगणी मालाउथी अनुक्रमे छठ, अठम, तथा पासखमणनुं फल मले छे. वली आ तीर्थमां जिनपूजा करवाथी मासखमणनुं फल मले छे; वली बीजां तीर्थोमां सुवर्ण, भूमि, तथा आभूषणो देवाथी जे पुण्य थाय छे, ते पुण्य आ तीर्थमां फक्त एक उपवास करवाथीज थाय छे. वली अन्य तीर्थमां घणा कालसुधि उग्र तपथी, तथा ब्रह्मचर्य पालवाथी जे फल मले छे, ते फल आ तीर्थमां एक उपवास करवाथी पण मले छे. वली आ तीर्थमां नोकारसी प्रमुख दश प्रकारनां पच्चखाण करीने, पुंडरिक गणधरनुं स्मरण करतां थकां माणस विघ्नरहित सर्व इच्छित अर्थने मेलवे छे. वली अहीं छठनो तप करवाथी मलेलां पुण्यथी प्राणी सर्व संपदाउ मेलवे छे, तथा अठमनो तप करवाथी आठ कर्मोनो क्षय करी मोक्षने मेलवे छे. वली अन्य तीर्थमां सूर्य तरफ दृष्टि राखीने, तथा पृथ्वीपर टचली आंगलीथी स्पर्श करीने रह्याथी, ब्रह्मचर्य पूर्वक एक मासनां उपवासथी जे फल मले छे, ते फल आ शत्रुंजय तीर्थमां एक मुहुर्तवारज सर्व आहारनो त्याग करवाथी मले छे. वली आ तीर्थमां रागद्वेषथी रहित थइने, आठ उपवासथी जे अरिहंत प्रभुनुं ध्यान धरे छे, ते माणस स्त्रीहत्यानां पापथी मुक्त थाय छे. वली जे माणसो अहीं पासखमणनो तप करे छे, तेउने बालहत्यानुं पाप तो क्यांथीज होय? मासखमणनो तप करवाथी ब्रह्मचारिनी हत्यानुं पाप नाश पामे छे. वली

लाख आदिकनां करजथी पण, अहीं एक आदि उपवास करवाथी प्राणी मुकाय छे, तथा मोक्षसुखने देनारुं सम्यक्त्व पामे छे. वली अहींनां जिनमंदिरमां प्रमार्जन, विलेपन, तथा मालारोपण करवाथी प्राणी, सो, हजार, अने लाख रुपीआनां दानथी थता फलने पामे छे. वली हे इंद्र! आ तीर्थमां भक्तिपूर्वक गीतगान करवाथी जे पुण्य थाय छे, ते तो कही पण शकाय तेम नथी. वली शत्रुंजयनुं नाम सांभल्याथी जे पुण्य थाय छे, तेथी क्रोडगणुं पुण्य तेनी समीप गयाथी थाय छे, तथा तेथी अनंतुं पुण्य तेने नजरे जोयाथी थाय छे. वली आ तीर्थने जोतां अथवा न जोतां पण जे माणसो त्यां जता संघनी पूजामां तत्पर होय छे, तेउ मोक्षपर्यंत महा पुण्यने मेलवे छे. वली त्रिकरण शुद्धिथी आ तीर्थमां साधुने अन्नादिक आपवाथी कार्तिक मासनां तपनुं उत्तम फल मले छे. वली आ शत्रुंजय तीर्थमां जेउये मुनिउनी पूजा नथी करी, तेउनो जन्म, धन, अने जीवित पण निरर्थक छे. वली आ शत्रुंजयादिक तीर्थोमां यात्रामां, अने जैनपर्वोमां जे माणसो मुनिउने पूजे छे, तेउ त्रणे लोकनां ऐश्वर्यने भजनारा थाय छे. वली मुनि छे ते, पंडितोने पूजनिक, सेवनीक, अने माननीक छे, वली मुनिनां आराधनथीज यात्रा सफल थाय छे, अने मुनिविनानी यात्रा निष्फल जाणवी. वली वीतरागपणामां पण पूर्व भवमां सांभलेली एवी गुरुनी वाणीज कारणरुप छे, माटे देव तत्वथी पण गुरुतत्व मोटुं जाणवुं. वली सुपात्र प्रते जे दान आपवुं, ते हमेशां महापुण्यने अर्थे थाय छे, तेमां पण आ तीर्थमां आवी सुपात्र प्रते जे दान आपवुं, ते तो सुवर्णमां सुगंधि मलवा जेवुं छे. वली आ तीर्थमां जे माणसो मुनिउने, अन्न, पाणी, वस्त्र, स्थानक, आसन, तथा पात्रोथी पूजे, तेउ लक्ष्मीयें करीने देवोने पण जीती जाय छे. वली जे सुखी माणस अन्न अने वस्त्रादिकथी गुरुनुं पूजन करे छे, ते शुद्ध थयो थको तत्वथी त्रीजे भवे मोक्ष पामे छे. वली जे धनथी जगतनां पूजनिक एवा मुनीउ भक्तिपूर्वक पूजाय छे, तेज धन वखाणवा लायक छे, तथा तेज परम तत्व, तथा तेज पुण्यनी बुद्धि छे. वली जे माणसो गुरुने साक्षीरूप करीने, जिनेश्वर प्रभुने पूजे छे, तेउ आ लोक अने परलोकमां चक्री आदिकनी पदवी मेलवीने उत्तम गतिमां जाय छे. वली आ तीर्थमां ह-

जारो अने लाखो एवा शुद्ध श्रावकोने जमाडवाथी जे पुण्य उत्पन्न थाय छे, तेथी पण अधिक पुण्य अहीं मुनिने दान देवाथी थाय छे. गमे तेवो पण चारित्रयुक्त मुनि, समकीती डाह्या माणसोये आ तीर्थमां गौतम गणधरनी पेठे पूजवो. कर्मरूपी व्याधिथी पीडायेला माणसोये, शोजाविनानां, मनने क्लेश करनारा, तथा शास्त्रार्थरूपी रस विनानां मुनिने पण, उत्तम औषधनी पेठे आ तीर्थमां सेववो. गुरुनां आराधनथी स्वर्ग मले छे, तथा तेनां विराधनथी नर्क मले छे, एवी रीते बन्ने गतीउ गुरुथी मले छे, माटे पोतानी इछा प्रमाणे प्राणीउये ग्रहण करवी. वली बीजां दानो तो कीर्ति, लक्ष्मी तथा सुख आदिकोने आपे छे, पण अन्नयदाननुं फल तो मुखथी कह्युं जाय तेम नथी. वली दीन आदिको प्रते आ तीर्थमां जे दान आपवुं, ते स्वर्गनां सुखमाटे थाय छे, तथा जव प्रते अखंड लक्ष्मीनां कारणरूप मनुष्य जन्मने ते देनारुं छे; वली ते दानथी आ लोकमां सम्यक्त्व सहित राज्यनां लाजरूप फल थाय छे, तथा ते पुण्यानुबंधि पुण्य आपे छे, अने विशेष प्रकारे मोक्षनां लाजने पण करे छे. वली अन्य स्थानकमां करेलुं पाप, उत्तम जाववालो प्राणी अहीं त्याग करे छे, पण आ तीर्थमां करेलुं जे कर्म ते तो वज्रलेप सरखुं थाय छे. वली आ तीर्थमां आवीने कोइनी निंदा, तथा परना डोहनुं चिंतवन करवुं नहीं, तथा परस्त्रीनी लोलता राखवी नहीं, तेम परद्रव्य हरवानी बुद्धि पण राखवी नहीं; तेम मिथ्यात्विउनो संग करवो नहीं, तेउनां वचनपर श्रद्धा करवी नहीं, तेम तेउनी निंदा पण करवी नहीं, अने तेउनां शास्त्रोनो आदर पण करवो नहीं; वली अहीं वैरी प्रते वैर जाव राखवो नहीं, तथा कोइने मारी नांखवानी इछा करवी नहीं, तथा घृत आदिक नव विगयोमां आसक्ति राखवी नहीं. कुलेश्यानुं चिंतवन करवुं नही. एवी रीते सघलां पापकार्योने जाणीने, बुद्धिज छे, धन जेउनुं एवा माणसोये, स्तुति करवा लायक एवां पुण्यनी इछाथी अहीं जीवहिंसा करवी नहीं. वली जिनतीर्थादिनो योग होते छते, मिथ्यात्वमिश्रित जे क्रियाउ करे, तेने महापापी जाणवो, माटे तेने पुण्यनी प्राप्ति तो क्यांथीज होय? वली मोक्षसुख मेलववामां उद्यमवंत थयेला माणसोये महातीर्थमां अनर्थ दंडोथी विरति, तत्वचिंतनमां आसक्ति, प्रजु-

मां ज्रक्ति, मुनिमां रक्तपणुं, दानमां हमेशनी वृत्ति, उत्तम आचारनुं चिंतवन, पंच नमस्कारनुं स्मरण, पुण्य ज्रंडारोनुं ज्ररवापणुं, ज्रवरूपी समुद्रथी तरवापणुं, उत्तम ध्यान, देव पूजन, तथा तप आदिक उत्तम कार्यो करवां. वली अहीं चतुर्विध संघसहित यात्रा करवाथी माणसो तीर्थंकरनी पदवीरूप लोकोत्तर फल मेलवे ठे. आ तीर्थमां यात्राथी उत्पन्न थयेला पसीनाने जेउ लुठे ठे, तेउज निष्पापी एवा निर्मल देहने पामे ठे. वली आ तीर्थमां जे माणसो यात्रालु लोकोने, ज्रक्तिपूर्वक अन्न तथा वस्त्रादिकथी पूजे ठे, तेउ विस्तीर्ण लक्ष्मीनां सुखने ज्रोगवीने अंते मोक्षने ज्रजनारा थाय ठे. वली आ तीर्थमां जे माणसो जरा पण संकोच राख्याविनां घणुं इच्छित दान आपे ठे, तेउ आनंदपूर्वक उंचे प्रकारे सुखी थाय ठे. वली आ तीर्थमां पोतानी शक्ति मुजब जे कंइ पुण्यनां कार्यो उत्तम बुद्धिवालाउ करे ठे, तेउ (कार्यो) कुकर्मोनो नाश करी, बन्ने ज्रवोनी शुद्धिने माटे थाय ठे. हे इंद्र! एवी रीते संक्षेपथी आ तीर्थमां करेलां दाननो महिमा कह्यो; हवे तीर्थज्रूत एवुं जे रायणनुं वृक्ष, तेनो महिमा तुं सांज्रल?

ऋषज्रदेव प्रज्रुथी ज्रूषित थयेली, तथा दूधनी धाराने झरती एवी आ शाश्वती रायण अज्ञानरूपी अंधकारनो क्षणमां नाश करो? आ रायणनी नीचे नाज्रिराजानां पुत्र श्री ऋषज्रदेवस्वामी समोसर्या हता, तेथी उत्तम तीर्थनी पेठे ते वंदनीक ठे. आ रायणनां दरेक फल, दरेक पांदडां, तथा दरेक डालांप्रते देवालयो ठे, माटे अजाणतां पण तेनां पत्रादिक ठेदवां नहीं. ज्रक्तिसहित चित्तवाला थइने, आनी प्रदक्षिणा करनार संघपतिनां मस्तकपर आ रायण हर्षथी दूधने वर्षे ठे; अने तेथी जाणवुं के, ते संघपतिने आगामी कालमां शुज्ररूप थइने बन्ने ज्रवोमां सुखकारी थशे; अने रीसथी जेनापर ते दूध वर्षती नथी, तेने हर्षादिकनी करनारी ते थती नथी. वली आ रायणनुं जो सुवर्ण, रुपुं, मोती, तथा चंदनादिकथी पूजन करवामां आवे, तो ते स्वप्नमां आवीने, सघलुं शुज्राशुज्र कही आपे ठे. वली शाकिनी, ज्रूत, वेताल तथा राक्षस आदिकथी ज्रयज्रीत थयेलो माणस, खरेखर आ रायणनी पूजा करीने ते दोषोथी मुक्त थाय ठे. वली जे माणस आ रायणनी पूजा करे ठे, तेने एकांतरीउ, तरिउ

के कालज्वर तथा झेर आदिक तेनां शरीरने पराभव करी शकतां नथी. वली पोतानी मेले जखरीने पडेलां आ रायणनां डालां, तथा पांदडांदिक लेइने, तेने जीवनी पेठे साचववां, केम के, ते सर्व दुःखोने नाश करनारां छे. वली जे बे मित्रो आ रायणने साक्षीरूप करीने पोतानी मित्राइ बांधे छे, तेओ राज्यादिक सुखोने मेलवीने मोक्ष पदमां जाय छे. आ रायणनां पश्चिम दिशानां भागमां दुर्लभ एवी रसकुंपिका छे, के जेनां रसनां गंधथी लोढुं क्रोड सोनामोहोर जेटलुं थाय छे. वली पूजा, नमस्कार अने भावने भजनारो कोइक माणस अठमनो तप करीने आ रायणनां प्रसादथी ते रसकुंपिकानां रसने मेलवे छे. वली कल्पवृक्षो, दिव्य औषधीओ, अने आठ सिद्धिओनी शी जरूर छे? फक्त एक आ रायणज माणसप्रते प्रसन्न थाओ? वली आ रायणनी नीचे, जग तनां लोकोथी पूजायेलां, तथा महासिद्धि अने सुखने देनारां श्री ऋषभदेव भगवाननां पगलां छे. वली तेनी डावी अने जमणी बाजुये ऋषभदेव प्रभुनां पेहेला गणधर श्रीपुंडरिकस्वामीनी बन्ने भवोमां सुख करनारी मूर्तिओ छे. वली श्रीमरुदेवानां शिखरपर क्रोडो देवोथी सेवनीक एवा श्रीशांतिनाथ प्रभु संघनी शांतिनेमाटे थाओ? करेलुं छे, मंगल जेओये एवा माणसोज श्री आदिनाथ प्रभुप्रते, पुंडरिक गणधरप्रते, रायणप्रते, पगलांओ प्रते, तथा शांतिनाथ प्रभु प्रते, सूरिमंत्रथी मंत्रेला, तथा शुद्ध पाणी, सुगंध, अने पुष्पोथी भरेला, एकसोने आठ कुंभोथी स्नात्र करे छे. वली ते स्थानकोनी सर्वदा सेवा करवाथी राज्य, बुद्धि, लक्ष्मी, कीर्ति, सर्वेनु वशपणुं, धननी प्राप्ति, स्त्री, पुत्र, संपत्ति, सौभाग्यपणुं, जय, सर्व इछित, आनंद, दोषनो नाश, तथा उत्तम भोगोनी प्राप्ति थाय छे. वली अहिं अष्टोत्तरीस्नात्रपूजा करवाथी शाकिनी, भूत, वेताल, तथा व्यंतर आदिकनां दोषोथी ग्रस्त थएला प्राणीओनां ते दोषोनो नाश थाय छे. वली अहीं स्नात्रपूजा करवाथी ज्येष्ठा, अश्लेषा, मघा, मूल, भरणी अने चित्रा आदिक नक्षत्रोमां थयेल छे, जन्म जेओनां, एवा माणसोनो विकार पण दूर जाय छे. वली आ तीर्थ निर्मल, मोक्ष लक्ष्मीनो संग करावनारुं, भूमिरूपी स्त्रीनां कपालमां तिलक समान, तथा ऋषभप्रभुरूपी उत्तम रत्न करीने शोभित थयेलुं छे. वली आ तीर्थ, अनंत मुक्तिनां धाम सरखुं, हमेशां स्थिर, निर्म-

ल, बाधाने नाश करनारुं एवुं जे केवल ज्ञान, तेना सरखुं दुरितनां समूहने तथा जवने नाश करनारुं ले, माटे उत्तम बुद्धिवाला माणसोये जगतनां स्वामि श्री रुषजदेव प्रजुमां चित्त राखीने ते तीर्थने सेववुं. वली आ तीर्थनी पूर्व तरफनी दिशानां जागने जूषित करनारुं, तथा दूषण रहित, अने देवोने पण प्रिय, एवुं सूर्योद्यान नामनुं उद्यान ले; जे उद्यानमां कल्पवृक्षनी श्रेणि, पर्वतरूपी लक्ष्मीनी जाणे वेणीज होय नहीं, तेम जगतनां इछितने पूरे ले, तथा जिननी सेवानी स्पर्धा करे ले; वली आ उद्यानमां किन्नरो पोतानी स्त्रीउ सहित जिनमंदिरमां आवीने नृत्यादिकथी गायन करे ले, तथा तेथी विद्याधरोने पण गम्मत उपजावे ले. तमाल, हिंताल, पलाश, तथा तालनां पत्रोनी पंक्ति, जंकार करता जमरनी मालाने प्रेरणा करे ले. वली आ उद्यालमां वसंत रुतुमां पत्रोनां समूहोथी युक्त थयेली वननी पंक्ति, ते जाणे कामदेवे, सूर्यनां किरणोथी स्पर्श थइ न शके, ते माटे लज्जायुक्त करी होय नहीं, तेम शोजती हती. वली आ वनमां वसंत रुतुमां आम्रनां वृक्षपर रहेली कोकिल आनंद आपनारा पंचम स्वरथी गाय ले, अने तेथी ते एम जणावे ले के, गुणीनां संगथी निर्गुणी पण गुणयुक्त थाय, एवी वाणी निष्फल ले; वली अहीं रागी माणसोने रंगनां तरंगो उपजावनारी वाणी पक्षिउ बोले ले, के जे वाणीनी मीठाश अमृतनां रसनी धाराने पण दूर करे ले. वली अहीं क्याराउमां वलयाकारने प्राप्त थयेलुं, तथा मार्गे चालती पशुउनी श्रेणिउथी शोजतुं, नीकोमां पाणी वहे ले. वली अहीं मधुपान करवामां लीन थयेला जमराउनीश्रेणिथी मनोहर लागती, तथा उगता सूर्यनी कांतिसरखी लाल, अने धारण करेल ले, पृथ्वी प्रते अग्नि सरखी लाल लाया जेणे, एवी आंबानी कलिका, मदोन्मत्त कुतकीउनी श्रेणिनी तुलनाने जजे ले. आंबानी मनोहर मांजर, के जेनापर मनोहर कोकिल मनोहर शब्द करे ले, अने ते कामी वियोगीउनां मनमां आपदा उत्पन्न करे ले. माणसोने पीडती एवी जे तापनी श्रेणि, तेने दूर करवाने, उत्तम स्त्री जेम विंजणाथी पवन नांखे ले, तेम आ वन केलनां पांदडांउरूपी वींजणाउथी पवन नांखे ले. वली अहीं सर्व रुतुउ पण हमेशां एकी वखतेज होय ले, त-

था तेथी हसता एवा जे वृक्षोनां समुहो, ते पोतानां पुष्पोनी श्रेणिथी विलासयुक्त थया थका सुखेहुउने अनुपम सुख आपे ठे. वली अहीं जिननी दृष्टिरूपी अमृतथी सिंचायेला, तथा विकस्वर थयेलां कमलोनी श्रेणिथी शोजता, तथा विविध प्रकारनां वृक्षोनी रचनाथी देदीप्यमान देवो वनलक्ष्मीनी पेठे शोजे ठे. वली अहीं हंसनी पंक्तिउथी सहित ठे, श्रेणिउ जेनी, एवां विकस्वर थयेलां कमलोथी मनोहर थयेलुं आ तलाव ठे, के जे अढार जातनां कुष्टोनो नाश करे ठे. वली हे इंद्र! शत्रुंजय पर्वतनी पासे रहेलुं, तथा त्रणे लोकोनां प्राणीउथी सेवायेलुं, तथा तमारी दिशाने मंडन करनारुं, आ वन कोने आनंदकारक नथी?

एवी रीते आचार्य श्री धनेश्वरसूरिये रचेला, महातीर्थ श्री शत्रुंजयनां माहात्म्यमां पर्वत, कंडुमुनि, प्रजुनुं समवसरण, देशना, अने उद्याननां वर्णनरूप पेहेलो सर्ग समाप्त थयो.

द्वीतीयः सर्गः प्रारज्यते.

देव तथा असुरोनां मस्तकपर रहेलां रत्नोनी कांतिथी रोमांचित थयेल ठे चरणो जेमनां तथा जगतनां नाथ, अने कर्मोनो नाश करनारा श्री आदिनाथ प्रजु तमारुं रक्षण करो? एवी रीते श्री जगवाननी वाणीने सांजलीने, सुधर्मेंद्र, प्रणाम करीने, तथा हाथ जोडीने प्रजुने विनती करवा लाग्यो के, हे जगवन्, आपे जे आ तीर्थाधिराजनो महिमा कह्यो, ते मने अत्यंत आनंद उपजावनारो थयो, हवे मने आ सूर्योद्यानमां रहेला तलावनी कथा सांजलवानी इछा ठे. त्यारे जगवान पण इंद्रोने जव्य जाणीने तीर्थनां माहात्म्यने वृद्धि करनारी, ते कुंडनी कथा कहेवा लाग्या. आ सूर्यावर्त नामनो उत्तम कुंड जवरूपी जाडाने हरनारो ठे, तथा तेनी सेवाथी पण अढारे कुष्टोनो नाश थाय ठे. वली आ कुंडनुं पाणी प्रजुनां चरणपर सींचवाथी, तत्वथी जेम मिथ्यात्व, तेम सघला दोषो नाश पामे ठे. ते नीचे प्रमाणे.

श्री सुराष्ट्र नामनां देशमां विशाल किल्लाथी शोजितुं, तथा लक्ष्मीने विलास करवानां घररूप एवा घणा लोकोथी विजूषित थयेलुं, वाव, कुवा,

तलाव, तथा मोटां उद्यान आदिकथी घेरायेलुं, दानशालाउंथी जरेलुं, इंद्रनी नगरी सरखुं, तथा जिनवचननी श्रेणिरूप मोक्षनी नीसरणीथी मंडित थयेलुं "गिरिडुर्गपुर" नामनुं नगर गिरनार पर्वतनी तलेटीमां रहेलुं ठे. ते नगरमां रहेनारा लोको जरा पण निर्धन, चाडीआ, मूर्खा, अविवेकी, दीन के पराधीन नथी. वली त्यांनां लोको देवपूजन करनारा, जक्तिपूर्वक तपस्वीउंने दान देनारा, मागणोने दान देनारा, तथा डुःखीउं प्रते दयालु ठे; तेम त्यांनां वेपारीउं राजनां मानीता, कविउं सत्कारवाला, तथा चाकरो शेठो तरफथी इनाम मेलवनारा ठे. ते नगरमां समुद्रविजय राजानां वंशनो तथा घणां जाग्योथी शोजतो, अने अरिहंत प्रजु तथा मुनिमां जक्तिवालो, सूर्यमल्ल नामे राजा हतो. ते राजाये वैरीरूप अंधकारने हरीने समस्त पृथ्वीने आनंदयुक्त करी. वली यादववंशमां जूषण समान एवा ते राजाये क्रिडामात्रमांज, रणसंग्राममां लाखो वैरीउंनां मस्तकपर पग मुक्यो. वली तेनां प्रतापरूपी सूर्यनां तापथी माखणसरखी शत्रुनी कीर्ति गली गइ. सूर्यने विषे जेम कमलीनी, तेम आ राजामां प्रीतिवाली, कमलसरखां मुखवाली, तथा शुज कार्योमां तत्पर तेनी शशिलेखा नामनी पटराणी हती. सूर्यमल्लनी ते स्त्री हती, ठतां सूर्यने ते जोती नहोती, तथा श्री नेमनाथ प्रजुनां चरण कमलने सेवनारी हती. पुण्यमां आदरवाला, शांत, तथा सुखरूपी समुद्रमां काचबानां जोडां सरखा, ते बन्ने स्त्री पुरुषो सुखेथी पोतानो काल निर्गमन करता हता. एक वखते राजा प्रजुनी यात्रा करवामाटे गयो हतो, ते वखते राणीये, पोतानां बालकोने रमाडती एव मयूरीने जोइ. ते वखते ते राणी पोते पुत्रहीन होवाथी, पोतान आत्माप्रते शोक करवा लागी; त्यां राजाये आवीने, तेणीने धीरज आपीने कह्युं के, ते कार्यमाटे तुं प्रजुनी सेवा कर? पठी जगतनी माता सरखी एवी अंबा देवीनां प्रसादथी तेणीने प्रख्यात देवपाल अने महीपाल नामनां बे पुत्रो थया; तेउं बन्ने कलाउंनां समूहवाला, उत्तम पक्षवाला, मिष्ट वचनो बोलनारा, सर्व लोकोनी उन्नतिमां प्रीतिवाला तथा सर्वपर समदृष्टि राखनाराउं हता; वली तेउंये पोताना हृदयरूपी पृथ्वीमां उत्तम आचारणोने धारण कर्यां हतां; वली बुद्धिना जंडाररूप

एवा तेउंये गुरुने तो फक्त शाक्षीरूपज करीने शास्त्राभ्यास, तथा विविध प्रकारनो शस्त्राभ्यास कर्यो. वली तुल्य वयवाला तेउं क्रीडा करता थका, तथा लोकोने खुशी करता थका अनुक्रमे यौवन अवस्थाने पाम्या. पछी मातपिताये घणां हर्षपूर्वक तेउंने घणी राजकुमारीउं परणावी. हवे तेउंमां महीपाल छे ते, मानी, यशस्वी, तेजस्वी, विनयी, तथा नीतीने जाणनारो हतो, तेथी देवपालथी घणां गुणोयें करीने ते जुदो पडतो हतो. एक दिवसें महीपाल पाछली रात्रें निद्रारहित थयो थको, अचानक पोताने, वनपशुउंथी व्याकुल वनमां देखवा लाग्यो. त्यां तेणे कोइ जगोये भुंडोनां टोलां, तो कोइ जगोये हाथीउंनां टोलां, अने कोइ जगोये तो वली सिंहोनो संचार जोयो. त्यारे ते विचारवा लाग्यो के आ ते शुं विभ्रम छे! के स्वप्न छे! के चित्तनो विपर्यय थयो छे! के इंद्रजाल छे! के आ कोइ देवचरित्र छें!!! वली हुं तो गीतरसोनो स्वाद आपनारी स्त्रीउंनी क्रीडामां मग्न थयो थको चंद्रशालामां सूतो हतो, अने अहीं क्यांथी आव्यो!!! हशे! हुं आ वन तो जोउं! एम विचारि जेटलामां ते चालवा जाय छे, तेटलामां तेणे एवी वाणी सांभली के, हे मित्र! हुं तने अहीं लावेलो छुं, माटे डरीश नहीं. पण ते वाणीनां मार्गने नहीं जोवाथी, ते एक मेहेलमांथी जेम बीजा मेहेलमां तेम वृक्षोप्रते मार्गने शोधतो थको खेद पाम्याविनां भमवा लाग्यो. एवी रीते वनमां भमतां थकां तेणे, कोइ जगोये तो चंद्रकांत मणिउंनां किरणोथी शरद ऋतुनां वादलांउंनी शोभाने धारण करतो, तथा इंद्रनील मणिउंनी श्रेणिथी उत्तम वेणीनी शोभाने धारण करतो, पुखराजोथी कमलनां रंगनी देदीप्यमान कांतिने धारण करतो, सुवर्णनां कलशोथी मंगलपणाने धारण करतो, तथा हजारो झरुखाउंथी जाणे हजारो आंखोवालो थयेलो, तथा हीराउंनां किरणोनां समूहथी जय पामता राज्यपणाने धारण करतो, तथा रत्नोथी तापयुक्तपणायें करीने जाणे पताकाउंथी वींझातो होय नहीं, एवा एक मोटा मेहेलने तेणे ते वननां मध्य भागमां जोयो. जंगली जानवरोथी भरपूर वनमां आ मेहेल क्यांथी!!! एम आश्चर्य पामतो थको ते, ते मेहेल तरफ जोवा लाग्यो. पछी तेणे विचार्युं के, मारी आंखनां विनोद माटे प्रसंगथी मलेलो आ मेहेल हुं जोउं तो खरो! एम

तलाव, तथा मोटां उद्यान आदिकथी घेरायेलुं, दानशालाउंथी ज्ररेलुं, इंद्रनी नगरी सरखुं, तथा जिनवचननी श्रेणिरूप मोक्षनी नीसरणीथी मंडित थयेलुं "गिरिडुर्गपुर" नामनुं नगर गिरनार पर्वतनी तलेटीमां रहेलुं बे. ते नगरमां रहेनारा लोको जरा पण निर्धन, चाडीआ, मूर्खा, अविवेकी, दीन के पराधीन नथी. वली त्यांनां लोको देवपूजन करनारा, ज्ञक्तिपूर्वक तपस्वीउंने दान देनारा, मागणोने दान देनारा, तथा डुःखीउं प्रते दयालु बे; तेम त्यांनां वेपारीउं राजनां मानीता, कविउं सत्कारवाला, तथा चाकरो शेठो तरफथी इनाम मेलवनारा बे. ते नगरमां समुद्रविजय राजानां वंशनो तथा घणां ज्ञाग्योथी शोज्ञतो, अने अरिहंत प्रज्ञु तथा मुनिमां ज्ञक्तिवालो, सूर्यमल्ल नामे राजा हतो. ते राजाये वैरीरूप अंधकारने हरीने समस्त पृथ्वीने आनंदयुक्त करी. वली यादववंशमां ज्रूषण समान एवा ते राजाये क्रिडामात्रमांज, रणसंग्राममां लाखो वैरीउंनां मस्तकपर पग मुक्यो. वली तेनां प्रतापरूपी सूर्यनां तापथी माखणसरखी शत्रुनी कीर्ति गली गइ. सूर्यने विषे जेम कमलीनी, तेम आ राजामां प्रीतिवाली, कमलसरखां मुखवाली, तथा शुज्ञ कार्योमां तत्पर तेनी शशिलेखा नामनी पटराणी हती. सूर्यमल्लनी ते स्त्री हती, बतां सूर्यने ते जोती नहोती, तथा श्री नेमनाथ प्रज्ञुनां चरण कमलने सेवनारी हती. पुण्यमां आदरवाला, शांत, तथा सुखरूपी समुद्रमां काचबानां जोडां सरखा, ते बन्ने स्त्री पुरुषो सुखेथी पोतानो काल निर्गमन करता हता. एक वखते राजा प्रज्ञुनी यात्रा करवामाटे गयो हतो, ते वखते राणीये, पोतानां बालकोने रमाडती एक मयूरीने जोइ. ते वखते ते राणी पोते पुत्रहीन होवाथी, पोतानां आत्माप्रते शोक करवा लागी; त्यां राजाये आवीने, तेणीने धीरज आपीने कह्युं के, ते कार्यमाटे तुं प्रज्ञुनी सेवा कर? पढी जगतनी माता सरखी एवी अंबा देवीनां प्रसादथी तेणीने प्रख्यात देवपाल अने महीपाल नामनां बे पुत्रो थया; तेउं बन्ने कलाउंनां समूहवाला, उत्तम पक्षवाला, मिष्ट वचनो बोलनारा, सर्व लोकोनी उन्नतिमां प्रीतिवाला तथा सर्वपर समदृष्टि राखनाराउं हता; वली तेउंये पोताना हृदयरूपी पृथ्वीमां उत्तम आचरणोने धारण कर्यां हतां; वली बुद्धिना ज्ञंडाररूप

एवा तेउंये गुरुने तो फक्त शाक्षीरूपज करीने शास्त्राभ्यास, तथा विविध प्रकारनो शस्त्राभ्यास कर्यो. वली तुल्य वयवाला तेउं क्रीडा करता थका, तथा लोकोने खुशी करता थका अनुक्रमे यौवन अवस्थाने पाम्या. पछी मातपिताये घणां हर्षपूर्वक तेउंने घणी राजकुमारीउं परणावी. हवे तेउंमां महीपाल छे ते, मानी, यशस्वी, तेजस्वी, विनयी, तथा नीतीने जाणनारो हतो, तेथी देवपालथी घणां गुणोयें करीने ते जुदो पडतो हतो. एक दिवसें महीपाल पाछली रात्रें निद्रारहित थयो थको, अचानक पोताने, वनपशुउंथी व्याकुल वनमां देखवा लाग्यो. त्यां तेणे कोइ जगोये ज्रुंडोनां टोलां, तो कोइ जगोये हाथीउंनां टोलां, अने कोइ जगोये तो वली सिंहोनो संचार जोयो. त्यारे ते विचारवा लाग्यो के आ ते शुं विभ्रम छे! के स्वप्न छे! के चित्तनो विपर्यय थयो छे! के इंद्रजाल छे! के आ कोइ देवचरित्र छे!!! वली हुं तो गीतरसोनो स्वाद आपनारी स्त्रीउंनी क्रीडामां मग्न थयो थको चंद्रशालामां सूतो हतो, अने अहीं क्यांथी आव्यो!!! हशे! हुं आ वन तो जोउं! एम विचारि जेटलामां ते चालवा जाय छे, तेटलामां तेणे एवी वाणी सांजली के, हे मित्र! हुं तने अहीं लावेलो छुं, माटे डरीश नहीं. पण ते वाणीनां मार्गने नहीं जोवाथी, ते एक मेहेलमांथी जेम बीजा मेहेलमां तेम वृक्षोप्रते मार्गने शोधतो थको खेद पाम्याविनां ज्रमवा लाग्यो. एवी रीते वनमां ज्रमतां थकां तेणे, कोइ जगोये तो चंद्रकांत मणिउंनां किरणोथी शरद ऋतुनां वादलांउंनी शोजाने धारण करतो, तथा इंद्रनील मणिउंनी श्रेणिथी उत्तम वेणीनी शोजाने धारण करतो, पुखराजोथी कमलनां रंगनी देदीप्यमान कांतिने धारण करतो, सुवर्णनां कलशोथी मंगलपणाने धारण करतो, तथा हजारो ऊरुखाउंथी जाणे हजारो आंखोवालो थयेलो, तथा हीराउंनां किरणोनां समूहथी जय पामता राज्यपणाने धारण करतो, तथा रत्नोथी तापयुक्तपणायें करीने जाणे पताकाउंथी वींऊातो होय नहीं, एवा एक मोटा मेहेलने तेणे ते वननां मध्य ज्रागमां जोयो. जंगली जानवरोथी ज्ररपूर वनमां आ मेहेल क्यांथी!!! एम आश्चर्य पामतो थको ते, ते मेहेल तरफ जोवा लाग्यो. पछी तेणे विचार्युं के, मारी आंखनां विनोद माटे प्रसंगथी मलेलो आ मेहेल हुं जोउं तो खरो! एम

विचारि ते तेनी तरफ चालवा लाग्यो. आ मेहेलमां आ वस्तु बहु रमणीक छे! आ बहु रमणीक छे! एम विचारतो थको, ते तेनां मजलाउं पर चडवा लाग्यो. महापराक्रमी एवो ते एवी रीते चालतां थकां, जेवो चंद्रशालाप्रते आव्यो, तेवामां तेणे पद्मासन वारीने बेठेला एक योगीने जोयो. त्यारे तेणे विचार्युं के, संसार सरखा आ अरण्यमां संसारीनी पेठे भमता एवा में, प्रसंगथी जीवतां मुक्त थया सरखा आ योगीने जोया; एम विचारि पृथ्वीपर मस्तक अडाडीने, कल्याण करनारा, तथा दयाने पालनारा ते योगीने समतापूर्वक तेणे नमस्कार कर्यो. पंच महाव्रतो तथा यमोने समतापूर्वक धरनारो, आसनपर बेठेलो, महा प्राणायामने धारण करनारो, नियमोमां आदरयुक्त, पांच इंद्रिउं तथा मन, वचन अने कायानां योगने धरनारो, चार ज्ञानने धरनारो, तथा समाधित्रिकनां प्रजावथी अरिहंत संबंधी तेजनुं स्मरण करनारो, तथा दयालु एवो ते योगी तेने जोइने पोतानुं ध्यान छोडतो हवो; अने तेने कहेवा लाग्यो के, हे वत्स!! तुं सुखी तो छे ने? जले आव्यो! तारा शरीरने तो सुखसाता छेनी? अने तुं अहीं विघ्नरहित आव्यो छेनी? वली हे वत्स! तुं आश्चर्य नहीं पामजे? ताराप्रते विद्या आपीने गुरुपणानुं करज छोडवानी इछाथी हुं तने खरेखर अहीं लाव्यो छुं. “तुं जुख्यो होइश” एम कहीने दीव्य शक्तिथी मगावेली आश्चर्यकारक रसोइ, प्रीतिपूर्वक ते योगीये तेने जमाडी. पछी तेणे पण जोजन करीने, पूर्वपुण्यनुं फल जाणतां थकां, विनयपूर्वक ते योगीनी पासेथी खड्गसिद्धि नामनी विद्या मेलवी. पछी ते वखते योगी पण कमलासनपर बेसीने, तथा कांतिथी ते महेलने पण दीपायमान करतो थको, आकाश जेदीने पोतानां प्राणोने तजतो हवो. एवी रीते ते योगी स्वर्गमां गये छते, सारासारने जाणनारो ते राजकुमार, मेहेल के योगीने न जोवा लाग्यो; पण केवल वननेज जोवा लाग्यो; अने विचारवा लाग्यो के, अहो! योगनो महिमा केवो छे!!! जेथी जीवतां थकां पण आवी लक्ष्मी मले छे, तथा परजवमां तेथी मुक्ति मले छे. सारी रीते योगनो आश्रय करनाराउंने पापोनो नाश, मुक्तिनो संग, तथा सर्व सिद्धिउं प्राप्त थाय छे. एम विचारि त्यांथी उठीने, ते वनमां जमवा लाग्यो, त्यां तेणे उंचां वृक्षोवालो, तथा अंदर छे

बगलांनुं स्थानक ज्यां, एवो तेणे एक महा कुंड दीठो. पछी जेटलामां ते तेमां स्नान करवानी इच्छा करे छे, तेटलामां ते महाबुद्धिवाने "मा! मा!" एवी रीतनी वाणी सांभली; पण ते वचननां बोलनारने नहीं जोवाथी ते कुंडनां कांठापर गयो, तथा ते अवज्ञानुं वचन त्यां वारंवार सांभलवा लाग्यो. एवी रीते ते माणसरहित वनने जोतो थको जेटलामां आश्चर्य पामे छे, तेटलामां कोइक वांदरो तेनी सन्मुख प्रगट थइने कहेवा लाग्यो के, हे वीर! मने पशु जाणीने मारां वचननी तुं अवगणना करीश नहीं, केम के, वांदरनां वचनथी रामे पण राक्षसोने जीत्या छे. वली आ कुंडमां रहेला राक्षसे अहीं जे प्राणीउने मारी नांख्या छे, ते प्राणीउनां, पर्वतनां शिखरो सरखा हाडकांनां समूहोने तुं जो? अने तुं तो कोइ उत्तम आकृतिवालो तथा डाह्यो राजानो पुत्र जणाय छे, माटे अहींथी तुरत चाल्यो जा? नहींतर ते राक्षस तने मारी नांखशे. ते सांभली महीपाल जरा हसीने कहेवा लाग्यो के, अरे !पशु ! तुं खरुं कहे छे, पण मने राक्षसनो भय नथी, केम के सूर्यने अंधकारनो भय होतो नथी. ते सांभलीने वांदरो तेने कहेवा लाग्यो के, जो तारी शक्ति छे, तो तारी इच्छा प्रमाणे कर? अहीं भयंकर, क्रोधी, तथा श्याम कांतिवालो एक राक्षस वसे छे; एम कही ते वांदरो वनमां अदृश्य थयो. पछी ते राजपुत्र उत्तम विद्याथी विभूषित थयेलां खड्गने हाथमां लेइने, वेगथी कुंडप्रते आव्यो. पछी ते कुंडनां पाणीमां पडीने, जेटलामां ते वगलांनां स्थानकप्रते पहोंच्यो, तेटलामां क्रोधथी उंचां करेल छे, नेत्रो जेणे एवो राक्षस क्षणवारमां तेनी तरफ दोड्यो. पछी युद्धमां पारंगामी तथा महाबलवान तेउ बन्ने युद्ध करवा लाग्या, तथा पडता अने पाडता थका पृथ्वीने कंपाववा लाग्या. पछी खड्गविद्यानां प्रभावथी ते राक्षस राजपुत्रथी जीतायो अने तेनी सेवा करवा लाग्यो, केम के, साहसथी शुं कार्य सिद्ध थतुं नथी? पछी ते राक्षसे प्रतिज्ञा करी के, हे राजपुत्र! ज्यारे तुं मारुं स्मरण करीश, त्यारे हुं तने प्रत्युत्तर आपीश, तारा वैरीप्रते हुं वैरी थइश, तथा तारा मित्रप्रते हुं मित्र थइश. पछी ते राक्षसे ते राजकुमारने वेष वदलवानी, तथा घाने साजो करनारी एम वे औषधीउ आपी; अने तेनी पासेथी तेणे धर्म अंगीकार कर्यो. पछी कुमार तेने रजा आपीने,

तथा क्रीडाथी ते तलाव उतरीने, अखंड सुखवाली ते वननी शोजाने जोवा लाग्यो. ते कौतुकी राजकुमार जोवानी इछाथी कोइ जगोयेथी पुष्पो, तो कोइ जगोयेथी पल्लवो, तो कोइ जगोयेथी पाकेलां फलो लेवा लाग्यो. पछी त्यांथी ते श्रीनिवास नामनां वनमां गयो, त्यां मनोहर तोरणवालुं श्री नेमनाथ प्रजुनुं मंदिर तेने मल्युं. त्यां हर्षथी नेमनाथ प्रजुने नमीने, तथा तेनी स्तुति करीने ते बेठो, तथा निधाननी पेठे ध्यानने धरवा लाग्यो. त्यां चलायमान थता कुंडलथी घसायेलां छे, कपोलस्थलो जेणीनां, तथा पलाशनी पावडीपर चडेली, सुवर्णदंडने धारण करती, तथा हाथमां मनोहर वृक्षोनां फलोथी जरेलां पात्रने धारण करती, एक योगिनीने तेणे तुरत प्रजुनी पासे दीठी. त्यारे आ राजकुमार पण संभ्रम सहित उठीने तेणीनां चरणोने नम्यो, त्यारे ते योगिनीए पण तेना प्रते " जय, जीव " एवी रीतनी आशिष दीधी. रूप, लावण्य अने आजूषणोथी जूषित थएली ते योगिनीने साक्षात जोइने, खुशी थयो थको, तथा तेणीने देवांगना मानतो थको आदर सहित ते कहेवा लाग्यो के हे देवि! तुं खरेखर मारी गोत्रदेवी छे, केमके, आ वखते आ जंगली पशुउथी जरेला वनमां तुं प्रगट थइ छे. एवी रीतनी अमृतसरिखी तेनी वाणी सांजलीने ते योगिनी कहेवा लागी के, हे वत्स! हुं देवी नथी, पण तपस्या करती मानुषी छुं; वली हे वत्स! आजे पुण्यनां कारणरूप तुं मारो अतिथि तरिके आव्यो छुं, माटे मारी वाणीने तारे व्यर्थ करवी घटशे नहीं. वली हे उत्तम पुरुष! जेने घेरथी अतिथि निराश थइ चाल्यो जाय छे, तेनां पुण्यनो क्षय करी, तथा पापोनो उदय करीने ते जाय छे. पछी ते राजकुमारे ते वात कबुल राख्याथी, ते योगिनी दंडसहित पात्र लेइने जिनमंदिरमांथी निकली. हवे ते कुमार आश्चर्य सहित जोते छते, हाथमां पात्रवाली, तथा योगनां माहात्म्यवाली ते योगिनी वृक्षप्रते फलोनी याचना करवा लागी; तथा तेणीये नीचे पात्र धर्याथी ते वृक्षो फण फलो देवा लाग्यां, तथा एवी रीते घणुं दान देवाथी तेउ कल्पवृक्षनी तुलनां करवा लाग्यां. पछी ज्यारे ते पात्र फलोथी जराइ रह्युं, त्यारे तेणीये ते महीपालनी सन्मुख मुक्युं, त्यारे तेणे पण तेमांथी पोतानी इछा प्रमाणे खाधां. पछी ते प्रजुने नमीने ज्यारे जवानी इछा करवा ला-

ग्यो, त्यारे तेणीये कह्युं के, हे वत्स! तुं हवे क्यां जाय छे? तथा क्यांथी आ-
व्यो छुं? ते कहे? त्यारे तेणे कह्युं के, हे माता! हुं कोइ साथथी भ्रष्ट
थइने अहीं आव्यो छुं, तथा हवे नेमनाथ प्रभुने अने तमने नमीने मा-
रां नगरप्रते जइश. त्यारे ते दयालु योगिनी कहेवा लागी के हे वत्स!
आ आगल रहेला वनने तुं जो? अहीं महाकाल नामे यक्ष वसे छे, तथा
कालनी पेठे ते प्राणीओने हणे छे. वली ते यक्षे अहीं आवेला घणां लो-
कोने हण्या छे, माटे आ वनने दूर मुकीने तने जेम सुख उपजे तेम तुं
जजे. एवी रीते तेओ मांहोमांहें हर्षपूर्वक वात करे छे, तेटलामां अक-
स्मात, महा तेजस्वी कोइ मुनि आकाशमांथी उतर्या. तप अने शरीरथी
पण तेजस्वी एवा ते मुनिने जोइने, संभ्रांत थया थका तेओ बन्ने, पोता-
नां पुण्यने जेम, तेम तेने नमस्कार करता हवा. त्यारे मुनि पण आनंदयु-
क्त थया थका, तेओनां विघ्नरूपी हाथीओने नसाडवामां सिंह सरखी
धर्मलाभनी आशिष देता हवा. पछी तेओ तेने कहेवा लाग्या के, आजे
तमो जे अमारी दृष्टिये पड्या तेथी त्रण जगतनां नाथ एवा श्री नेमिना-
थ प्रभुनां चरणनां नमस्कारनुं फल अमारुं परिपक्व थयुं. वली आप तो
साक्षात समता रसनां समुद्र, तथा पुण्यनां ढगला समान छो, अने नि-
र्भाग्य लोकोने तो आप सरखानुं दर्शन पण दुर्लभ छे; माटे हे प्रभु! त-
मारे अमोने धर्म कहेवो योग्य छे, केम के, आपसरखा परोपकारमां रक्त
होय छे. एवी रीतनुं तेओनुं अमृतने झरनारुं वचन सांभलीने, मुनि पण
पांच दंडके देवोने नमस्कार करीने कहेवा लाग्या के, हे वत्सो! दान,
ध्यान, शील अने जीवदयाथी जे पुण्य थाय छे, ते सघलुं जिनपूजाथी
थाय छे. जिनपूजाथी माणसोने चक्रवर्तिपणुं, उत्तम बुद्धि, पुण्यनो संग्रह,
पापोनो नाश, तथा ग्रहपीडानो पण नाश थाय छे. वली जे माणस त्रि-
काल भक्तिथी उत्तम पुष्पोयें करीने, जिनने पूजे छे, तेज माणसने धन्य,
पुण्यशाली, तथा गुणवान जाणवो; माटे खेद आपनार प्रमादने त-
जीने, हमेशां उद्यमवंत थया थकां, पापोने नाश करनारी जिनपूजा
त्रिकाल करवी. एवी रीतनां मुनिनां वचनने सांभलीने हर्षयुक्त थयेला
एवा तेओ बन्ने महाकाल यक्षनुं चेष्टित पुछवा लाग्या के, हे भगवन्! धर्म-
थी देवपणुं पामीने, तेज धर्मप्रते शत्रुभूत एवी हिंसा, आ यक्ष स्वार्थथी

पराङ् मुख थयो थको केम करे छे.? वली सघली पुण्यबुद्धिने तजीने आ यक्ष माणसोप्रते द्वेषी केम बनेलो छे.? ते सघलुं हे पूज्य! आप अमोपर कृपा करीने कहो? एवी रीतनुं तेउनुं वचन सांभलीने मुनि पण, ज्ञाननां माहात्म्यथी ते यक्षनुं चरित्र जाणीने, अमृतथी पण अधिक वाणी बोलवा लाग्या. आ वननी अंदर अगाउ कोइक तापस हतो, ते चलकता सूर्यप्रते जेम घुवड, तेम जिनशासनप्रते द्वेष धरनारो हतो. ते तापस स्त्री सहित, जटाधारी, तथा कंदमूल अने फलने खानारो हतो, तथा उत्तम वक्कल पेहेरीने एक वनथी बीजा वनमां भमतो हतो. ते तापसथी, कचरामांथी जेम रत्न, तेम अति रूपवाली, पवित्र तथा तेजयुक्त कांतिवाली अने उत्तम लक्षणवाली एक पुत्री थइ. गुणोयें करीने उज्ज्वल एवी ते कन्या तेने प्राणथी पण वधारे वहाली हती, तथा तेणीनुं नाम शकुंतला हतुं, अने तेणीनां वाल मयूरनी कला सरखा हता. वसंत ऋतुने पामीने जेम वननी लक्ष्मी शोभे, तेम ते पण प्रकृतिथीज यौवनने पामीने मनोहर आकारवाली थइ थकी शोभवा लागी. एटलामां कामदेव सरखी आकृतिवाला भीम नामे राजाये क्रीडा माटे वनमां भमतां थकां देवांगनानी पेठे तेणीने जोइ. अत्यंत मनोहर एवी ते स्त्रीने जोइने, ते राजा चोकडुं खेंची घोडाने उभो राखी त्यां स्थिर रह्यो. पछी क्षणवार भ्रम पामीने, ज्यारे ते शुद्धिमां आव्यो, त्यारे तेणीने कन्या जाणीने, योगी जेम शाश्वती शक्तिने पामीने, तेम ते आनंद पाम्यो. पछी ते राजा ते मृगाक्षीनी नजदीक जइने, तेणीने कहेवा लाग्यो के, हे नितंबिनि! तुं परणेली छे के, नहीं? ते कहे? त्यारे कुमारिकाये कह्युं के, हे राजन्! हुं कुमारी छुं; एम कहेतांज ते प्रपंची राजा तेणीने घोडापर चडावी चालवा लाग्यो. एवी रीते पुत्रीनां वियोगथी दुःखी थयेलो ते तापस, दुर्बल शरीरवालो थयो थको, दुःखथी पोतानां दिवसो निर्गमन करवा लाग्यो. पछी क्षीण थयेल छे धातु जेनी, ईर्षालु, मरवानी इच्छावालो, अने चेतना रहित ते थयो; त्यारे तपस्वीउं पुण्यमाटे तेने आ जिनमंदिरमां लाव्या. ते तापस स्वभावथीज मत्सरवंत होवाथी जिनेश्वर प्रभुने नम्यो नहीं, पण जिननां दर्शनथी, आर्तध्यानथी मरीने यक्षपणाने प्राप्त थयो. जेम झेर चडेला माणसोने मृत्युनुंज शरणुं छे, तेम मिथ्या-

त्वथी मूढ थयेलां मनवालाओनी गति नरकज छे; पण आ विचाराने अंतकाले पण जे नेमिनाथ प्रभुनुं दर्शन थयुं, तेथी नरकगति मटीने तेने देवपणुं प्राप्त थयुं; केमके, स्मरण करायेला, दीठेला, स्तवेला, अथवा पूजेला जिनेश्वर प्रभु, स्वर्गादिक उत्तम गति आपे छे. अहो ! जिनेंद्र प्रभुनुं माहात्म्य केवुं छे ! ! के जेनां एकवार दर्शनथी पण तापस पापनां समूहने तजीने देवपणाने प्राप्त थयो. हवे ज्यारथी तेनी पुत्रीनुं हरण थयुं छे, त्यारथी ते मनुष्यप्रते द्वेषवालो थयो छे, माटे हजु पण ते अभ्यासथी माणसोने ते दुःख आपे छे. एम कहीने ते मुनि, कांतिनां समूहथी आकाश अने पृथ्वीने तेजस्वी करता थका, बीजां चैत्योने नमवामाटे आकाश मार्गे चाल्या गया. पछी दीव्य प्रभाववाली ते योगिनी पण पोताने स्थानके गइ, अने कुमारपण जिनपूजा कर्या बाद कालवनप्रते जवा लाग्यो. ते वखते नाशिकाने फोडी नाखे एवी दुर्गंध, त्यां पडेलां मुडदांओमांथी निकलवा लागी. हवे उत्तम पराक्रमवालो ते कुमार पण, ते गंधने अनुसारे, हाथमां तलवार नचावतो थको त्यां जवा लाग्यो. ते वखते शस्त्र सहित, तथा भयंकर एवा काल अने कंकालने तेणे जोया, तथा तेओ तेने क्रोधथी मारवा लाग्या. युद्धमां कुशल एवा ते राजकुमारे, मुनि जेम राग अने द्वेषने, तेम ते महाबलवान तथा दुर्गतिमां जनारा यक्षोने जीत्या. पछी एवी रीते जीत करीने, ते कुमार यक्षनां घरप्रते गयो, त्यारे तेणेज तेने मोटी गदाथी रोक्यो; अने ते यक्ष तेने कहेवा लाग्यो के, अरे मनुष्य! तुं कोइ नवीन छे, अने मारी पासे तारुं बल शुं हीसावमां छे? माटे हवे तारा इष्टदेवनुं स्मरण कर? केमके, हमणां तारुं मृत्यु थशे. त्यारे राजकुमार पण जरा हसीने साहसथी कहेवा लाग्यो के, हे यक्ष! वचनमात्रथी मने तुं शामाटे क्षोभ पमाडे छे? वली तुं क्रोध नहीं कर? पण जरा शांत था? अने हृदयमां विचार के, क्रोधने वश थइ तुं शामाटे निरपराधि प्राणीओने हणे छे? माटे तुं अमूल्य देवपणुं भोगव? अने मनुष्यवधनो त्याग कर ? केमके क्रोधांध माणसने आ भव अने परभवमां पण सुख नथी; कारणके, क्रोध छे ते, दयारूपी वेलडीने बालवामां दावानल सरखो, भवरूपी समुद्रने वधारनारो, कुगति आपनारो, तथा धर्मनो घात करनारो छे. वली क्रोध छे ते,

अग्निनी पेठे तीव्र तापने करनारो छे, तथा प्रथम पोतानुं स्थानकज बाले छे, अने पछी बीजुं स्थानक तो बाले, अथवा न पण बाले, माटे तेनो तुं त्याग कर? एवी रीतनुं तेनुं दूध सरखुं वाक्य पीने, नवा तावबालानी पेठे, ते यक्षेंद्र क्रोधथी बलवा लाग्यो, तथा हृदयमां रहेला क्रोधनेज जाणे कहाडतो होय नहीं, तेम होठने स्फुरायमान करीने, तथा भ्रुकुटी चडावीने कहेवा लाग्यो के, नथी बीजुं जेना सरखुं शरणुं, एवो जे धर्म, ते तारे विषेज स्फुरायमान थइ रहेलो छे, माटे ते धर्मनुं माहात्म्य मारे जोवुं छे, तेथी तुं मारी साथे युद्ध कर? एम कहीने, हाथमां मुद्गर लेइने ते महाकाल यक्ष कुमारप्रते दोड्यो. ते वखते महा पराक्रमी एवो ते कुमार पण खड्गविद्याथी पवित्र थयो थको, क्रोधथी खड्ग उगामीने युद्ध माटे तेनी तरफ दोड्यो. महामल्ल, महापराक्रमी, तथा महाभुजावाला, एवा तेओ बन्ने युद्ध करता थका वनदेवीओने आश्चर्य करवा लाग्या; महापराक्रमी एवा तेओ बन्ने कोइ वखत आकाशमां फाल देता, तो कोइ वखते पृथ्वीपर रहेता, तो कोइ वखते विचित्र प्रकारे गमन करता; वली तेओ भालां, मुद्गर, तथा तलवारथी एक बीजाओने वारंवार मारता हता. वली तेओ मुष्टीथी मल्लनी पेठे लडता थका, पगनां धबकाराथी पृथ्वीने पण अत्यंत कंपाववा लाग्या. हवे यक्षनां मारथी जर्जरित थयेला ते कुमारे, क्रोधथी खड्गविद्यानुं स्मरण कर्युं, तथा ते खड्ग हाथमां लीधुं. ज्वालानी श्रेणिवालुं, तणखाओनी पंक्तिथी युक्त थयेलुं, तथा मारवानी इच्छाथी "त्रट्त्रट्" शब्द करतुं, तथा प्रत्यक्ष कोपाग्निसरखुं ते खड्ग जोइने, ते यक्ष पण बीकथी अत्यंत क्षोभ पामवा लाग्यो. पछी महीपाले ते यक्षने कह्युं के, अरे यक्ष! मारा क्रोधथी तुं तारा देवपणानो शामाटे त्याग करे छे? माटे मारां चरणकमलनी तुं सेवा कर? तथा हिंसा तजीने दया कर? तथा सर्व जीवो प्रते समता राख? अने तारी संपदा भोगव.? एवी रीतनी ते राजकुमारनी शौर्यता, तथा वाक्यनी धीरताने सांभलीने, मनमां आश्चर्य पामी ते यक्ष कहेवा लाग्यो के, हे वत्स! हुं ताराथी जीतायो, माटे हवे तुं तुरत कंइक वरदान माग? तथा हे उत्तम लोचनवाला! तारा शिवाय बीजो कोइ पण वीरपुरुष आ पृथ्वीपर नथी. वली तें कह्युं के, धर्मथी निश्चयें करीने जय थाय छे, ते खरुं छे;

हुं तो हिंसक छुं, तथा तुं सर्वने अन्नयदान देनारो छुं. एवी रीतनुं यक्ष-नुं वचन सांभलीने, विवेकी एवो ते राजकुमार खड्गने मीयानमां नांखी-ने, धर्मनी रुचिवाला एवा ते यक्षने कहेवा लाग्यो के, हे यक्ष! धर्मने विषे तारी रुची हवे स्फुरे छे, एवी हुं तर्क बांधुं छुं; माटे हवे आपणे तारा मेहेलनां अग्र भागप्रते जइयें, अने त्यां आपणे वातो करीशुं. ए-वी रीते महा पराक्रमी एवा ते महीपाल अने महाकाल मेहेलमां जइ झरुखामां बेठा. पछी त्यां ते राजकुमार धर्मनां सर्वस्वं करीने मनोहर, गंभीर, तथा महिमाथी अधिक, अने मनने प्रीति करनारी वाणी बोलवा लाग्यो के, धर्मथी राज्य मले छे, देवपणुं प्राप्त थाय छे, तथा मो-क्ष पण मले छे, माटे डाह्या माणसोये धर्म सेववो; वली धर्म उत्कृष्ट मं-गलरूप छे, तथा स्वर्ग अने मोक्षने देनारो, अने संसाररूपी वनने उलं-घवामां मार्ग देखाडनारो छे; वली धर्म मातानी पेठे पोषण करे छे, पि-तानी पेठे रक्षण करे छे, मित्रनी पेठे खुशी करे छे, तथा बंधुनी पेठे स्ने-ह राखे छे. ते धर्मनी माता सरखी दया, सुरासुरोने पण माननीक छे; माटे ते दयानी वैरीरूप हिंसाने डाह्यो माणस अंगीकार करतो नथी. वली जे माणस हिंसानो त्याग करतो नथी, तेनुं दान, तप, देवपू-जा, शील, सत्य, तथा जप, ए सघलुं निष्फल छे. कांटाथी विंधायेलुं आपणुं शरीर पण ज्यारे दुःख पामे छे, त्यारे शस्त्रथी बीजा प्राणीनी हिंसा ते केम कराय? वली जे मूर्खनां सरदारो दया विनां धर्मने इंछे छे, ते हीज-डाउं वंध्या स्त्रीथी पुत्रोत्पत्तीनी इछा राखे छे; माटे दयाज उत्कृष्ट धर्म, तथा उत्कृष्ट ज्ञान छे, अने दयाविनानो सघलो धर्म निष्फल थाय छे. वली हे यक्षराज! कृतघ्नपणुं आदरवुं नहीं, पण कृतज्ञपणुं आदरवुं, तारो उप-कार करनारा धर्मप्रते तुं आदर कर? वली जीवदयावाला धर्मने अं-गीकार करीने, पूर्वे कोइ बगलाए स्वर्गसुख मेलव्युं छे, तथा पछी फरी-ने भव न करवा पडे, एवी ते मुक्ति पाम्यो छे. ते कथा नीचे प्रमाणे जाणवी.

श्रीद नामनां वनमां निर्मल पाणीवालुं, तथा कमलोथी शोभतुं एक तलाव छे. ते तलावमां मत्स्योनुं भक्षण करनारो, रौद्रध्यानी, तथा म-हाक्रूर, अने स्वेछाचारी एक बगलो रहेतो हतो; ते बगलो त्यां जल पीवामाटे आवता कागडा आदिक पक्षीउने पण मारी नांखतो. एट-

लामां साक्षात् देहधारी धर्मसरखा, तथा सकल प्राणीउने पोतानी पेठे-ज जोता, कोइक केवली मुनि त्यां आव्या; ते मुनि ते तलावने कांठे समोसर्या, तथा त्यां हरिण, सिंह आदिक पशुउ पण तुरत आव्यां. ते वखते पुष्ट थयेलो ते बगलो पण, केटलाक बगलांउथी वींटायो थको, मुनिनी वाणीरूपी अमृतने पीवानी इछाथी त्यां आव्यो. ते वखते ते मुनि पण तेउने बोध देवा माटे तेउनीज भाषाथी, दयापूर्वक, धर्मरूपी राज्यने शोभावनारी देशना देवा लाग्या के, आ संसारमां पांचे इंद्रिउनुं पटुपणुं, तथा ज्ञान दुर्लभ छे, तेमां पण विवेक रहित पशुउने तो उत्तम धर्म दुर्लभ छे. जे प्राणीउयें पूर्वे धर्मने विराध्यो छे, तेउने तिर्यंचगति मले छे, पण जे तिर्यंच गतिमां आवीने पण पाप करे छे, तेउ नरकमां जाय छे; त्यां तपावेलां लोखंड साथे आलिंगन, तपावेला सीसानुं पान, बंधन, छेदन, भेदन, तथा वज्र अने कांटानुं भोंकावापणुं थाय छे, माटे आर्त अने रौद्र ध्यान ध्याववां नहीं, तथा प्राणीवध करवो नहीं; अने सघला चराचर प्राणीउने पोतानी पेठे जोवां. एवी रीतनां ते मुनिनां वाक्यथी सिंह, वाघ आदिकोये परने पीडा करवानुं तजी दीधुं, तथा ते बगलो पण दयामां तत्पर थयो; तथा ते दिवसथी मांडीने दयामां तत्पर थयो थको ते पोतानो काल निर्गमन करवा लाग्यो, अने धर्मने स्मरतो थको ते देवलोकमां गयो; त्यांथी चवी वेपारीनां कुलमां उत्पन्न थइ, तथा पोताने हितकारी एवो धर्म करी, एकावतारी थयो थको ते मोक्ष पामशे. माटे हे यक्षराज! तें पण धर्मथीज आ देवपणुं मेलव्युं छे, माटे क्रोधयुक्त थयो थको तेज धर्मनो द्वेष करनारी एवी हिंसा तुं शामाटे करे छे? माटे हवे तुं हिंसाने तज? अने दया कर? तथा हमेशां धर्मने भज? तथा तारा देहथी पण प्राणीयोप्रते उपकार कर? उत्तम माणसोये धन, जीवित, विद्या अने बलें करीने, आ लोक अने परलोकमां हितकारी परोपकार करवो जोइये. वली आ पूर्व जन्मनां क्रोधनुं फल जोइने, तारे खरेखर, तारा पोतानाज हित माटे वैरीप्रते पण वैर करवुं नहीं. वली अंतकाले पण जे तें जिनेश्वर प्रभुनुं दर्शन कर्युं, तेथी तुं देवपणाने पाम्यो, माटे हवे तुं हमेशां नेमनाथ प्रभुने पूज? एवी रीते ते राजकुमारनां वचनथी खुशी थयेलो ते यक्ष,

चिंतामणि रत्न सरखा उज्ज्वल धर्मने पामीने गुणी एवा ते गुरुने नमतो हवो; अने कहेवा लाग्यो के, हवेथी मने जिन देव, परिग्रह रहित गुरु, तथा दयावालो धर्म थाउं? एवी रीतनो धर्म तेणे अंगीकार कर्यो, तथा गुरुपूजानां वदलामां तेणे राजकुमारने विद्या आपी. पछी ते राजकुमार हर्षथी ते यक्षने रजा आपीने, दया सहित मनवालो थयो थको चालवा लाग्यो; तथा विचारवा लाग्यो के, हवे मारां नगरप्रते जउं; पण नहीं! हुं प्रसंगेथी ज्यारे बहार आव्यो, त्यारे हवे नाना प्रकारना आश्चर्योथी भूषित थयेला विविध प्रकारनां देशोने मारे जोवा, के जेथी पोतानी शक्ति जणाशे, देशाचारनी परीक्षा थशे, उत्तम अधम माणसोनुं जाणपणुं थशे, तथा कलाउनो पण अभ्यास थशे, तेम तेथी नाना प्रकारनां माणसोनो, प्रसंग थशे, तथा विविध प्रकारनां तीर्थो पण जोवाशे; अने तेज हेतुथी डाह्या माणसो देशाटन करे छे. वली पुरुष ज्यां त्यां जइने, परथी तथा स्वजनोथी जे सन्मान मेलवे छे; तेमां पण पूर्वनां पुण्योनुंज कारण छे. एम विचारिने ते राजपुत्र पूर्वदिशा सन्मुख चालवा लाग्यो, तथा केटलाक नगरो अने वगीचा आदिकने उलंघी गयो. एम करतां केटलेक दिवसे ते सुंदर नामनां नगरप्रते पहोंच्यो, अने त्यां वृक्षोनी घटावाला वनमां गयो. त्यां अंबिकानां चैत्यमां जइ एक झरुखामां रह्यो, तथा देवगुरुनुं स्मरण करीने, रात्रिये निर्भय थइ सूतो; एटलामां तेणे, “हे तात! हे माता! हे भाइ! हे दयावंत शूरा लोको! यमनी पेठे निर्दय एवा आ पापीथी मारुं रक्षण करो?” एवी रीतनी कोइ स्त्रीनी दीन वाणी ते महीपाले वारंवार सांभली, अने ततक्षण जागी उठ्यो; तथा ज्यांथी ते शब्द आवतो हतो, ते तरफ निश्चल मनथी हाथमां तलवार लेइ, उतावलथी चालवा लाग्यो. त्यां तेणे पर्वतनी खीणमां ध्यानमां रहेला एक पुरुषने, व्याकुल थयेली एक स्त्रीने, तथा अग्निकुंडने जोयो; त्यारे तेणे विचार्युं के, कोइथी पण ठगायेलो, आ मुग्ध माणस आ स्त्रीने मारवानी इछावालो छे, माटे हवे तेणीनुं हुं रक्षण करुं, एम विचारी, ते, ते पुरुषने कहेवा लाग्यो के, अरे दुष्ट! आ तें पापनुं कार्य शुं आरंभ्युं छे? आ बालिकाने छोडी दे? नहींतर हमणा तने यमने घेर पहोंचतो करीश. ते सांभली संभ्रांत थयेलो तथा आक्षेपथी त्रासयुक्त थयेलो ते

विद्याधर बन्ने हाथोथी ते स्त्रीने उपाडीने, पवनथी पण अधिक गतिथी चालवा लाग्यो. त्यारे कुमार पण ते स्त्रीने मुकाववा माटे निश्चययुक्त थयो थको, खड्ग सहित तेनी पाछल दोड्यो. एवी रीते पाछल दोडता एवा ते राजकुमार तरफ दृष्टि राखीने, विद्याधर पण वेगथी पवनने पण जीततो थको चालवा लाग्यो. एवी रीते दोडतां थकां स्त्रीमांज रहेली छे बुद्धि जेनी, एवा ते विद्याधरे थाकी जवाथी, नरक सरखा भयंकर कुवामां तुरत झंपापात कर्यो; त्यारे दयालु, तथा महा पराक्रमी एवा ते राजकुमारे पण, तेने खेंची कहाडवानी इछाथी तेमां झंपापात कर्यो. त्यारे ते विद्याधर पण, दीधेलो छे ताप जेणे, एवा पापोयें करीने जाणे खेंचातो होय नहीं तेम अदृश्य थयो. पछी ते कुमार पण त्यां कुवानो केटलोक भाग उलंगी गयो; त्यां तेणे प्रकाश दीठो, तथा पछी त्यां तेणे वृक्षोनी पंक्ति जोइ. पछी अहीं तहीं भमतां, तथा वनोने जोतां थकां फरीने तेणे ते स्त्रीनां रडवानो शब्द सांभळ्यो; त्यारे वृक्षोमां संताइने, तथा धीरे धीरे चालीने अने मौन धरीने खड्ग लेइ तेणीनी पासे ते गयो; त्यां तेणे लाल चंदनथी लीप करेलां अंगवाली, लाल वस्त्र तथा लाल माला पेहेरेली, एवी ते स्त्रीने अग्निकुंडनी समीपे जोइ. पछी कुमार पण आकारगोपन करीने,तथा वस्त्रथी खड्गने आछादित करीने, क्रीडापूर्वक फरीने ते तेनी पासे आव्यो; अने तेने कहेवा लाग्यो के, हे महासत्व! आ तुं शुं करे छे? वली तुं गुरुनी आज्ञाथी, के पोतानी बुद्धिथी,के कुलक्रमथी आ कार्य करे छे? त्यारे विद्याधर पण कहेवा लाग्यो के, हे पंथि! हुं मारी इछा प्रमाणे करुं छुं, तुं तारे चाल्यो जा? सर्व माणसो पोतपोतामां तत्पर होय छे, तेमां बीजानी शिखामणनी कंइ पण जरूर होती नथी. ते वखते ते कुमारिका राजकुमारने कहेवा लागी के, हे महा परोपकारी! मने मारवामां तत्पर एवा आ पापीथी मारुं रक्षण कर? एवी रीते तेणीनुं दीन अक्षरोवालुं वचन सांभलीने, ते दयालु राजकुमार उत्तम रचनावालुं वचन ते विद्याधरने कहेवा लाग्यो के, हे विद्याधर! आ बीचारी उत्तम निराधार स्त्री छे, अने तुं तो क्षत्री वंशमां उत्पन्न थयेल छे, माटे आवुं कुकर्म करतां तने मनमां पण शुं लज्जा आवती नथी? वली "स्त्रीनां वधथी विद्या सधाय छे" एवो भ्रम तुं बिल-

कुल राखजे मां? केम के पापारंभथी तो शुभ कर्म पण पोतानी मेलेज नाश पामे छे. वली हे मुग्ध! कोइक तारा वैरीये तारी उन्नतिनो नाश करवा माटे, आ उपायथी खरेखर तने ठग्यो छे; माटे हे मुग्ध! मारुं कह्युं मान? अने आ स्त्रीने छोडी मेल? केम के स्त्रीहत्याथी माणसने दुर्गति मले छे. एवी रीतनां राजकुमारनां वचनने सांभलीने उलटो ते विद्याधर वधारे कोपायमान थयो; केम के, तपेला तेलमां जल नाखवाथी ते वधारे भडको लेइ उठे छे. पछी ते विद्याधर ते राजकुमारने कहेवा लाग्यो के, तुं विद्याने शामाटे निंदे छे? अने मारा गुरुने पण तुं शामाटे निंदे छे? माटे तुं तारे तारे मार्गे चाल्यो जा? नहींतर क्यांक माथुं पण कपाइ जशे!! एम कहीने हाथमां खड्ग लेइ, ते कुमारप्रते दोड्यो. पराक्रमी कुमार पण लडवाने सज्ज थयो. पछी तेओ बन्ने खड्गथी, तथा दंडथी अत्यंत लडवा लाग्या. पछी महा बलवान एवा ते कुमारे खड्गविद्यानां प्रभावथी ते विद्याधरने जीत्यो, त्यारे विद्याधर कहेवा लाग्यो के, विद्या अने शस्त्रमां पारंगामी देवोथी पण हुं अगाउ जीतायेलो नथी, पण महा पराक्रमी एवा तुंथी हुं जीतायो छुं, माटे हवे तुं कोण छे? ते कहे? वली हुं तो पापमां रक्त थयेलो छुं, अने तुं तो प्राणीओनुं हित करनारो छे, वली धर्मथी जय थाय छे, तथा अधर्मथी भंग थाय छे, तेमां संशय नथी. एम कहीने ते विद्याधर मौन रहेते छते ते राजपुत्र तेने कहेवा लाग्यो के, हवे तुं खेद कर नहीं? पण धर्मप्रते बुद्धि राख? वली स्त्रीवधनां पापथी नरकमां जवाय छे, अने विद्यानां समुद्रसरखो तुं, ते स्त्रीवधथी उत्तम फल मेलववाथी इछा राखे छे!! वली हे महा बुद्धिवान्! हजु पण तुं परनो द्वेष कर नहीं; पण जिनेश्वर प्रभुनुं आराधन करीने सुखी था? एवी रीतनी तेनी वाणी सांभलीने करेल छे नमस्कार, तथा जोडेल छे, हाथ जेणे एवा ते विद्याधरे तेनी पासे आवीने शिष्यनी पेठे शिखामण ग्रहण करवा पछी ते राजकुमारे तेने पुछ्युं के, आ कन्या कोण छे? त्यारे ते विद्याधर कहेवा लाग्यो के, कान्यकुब्ज नामनां देशमां कल्याणकटक नामे एक मोटुं नगर छे, ते नगरमां दीधेल छे, याचकोप्रते सुवर्ण जेणे, तथा मंगलनी श्रेणिथी शोभित थयेलो अने उत्तम बुद्धिवालो कल्याणसुंदर नामे राजा छे. ते राजाने, पतिनी भक्तिथी

पवित्र, तथा शीलरूपी अलंकारने धरनारी कल्याणसुंदरी नामनी राणी छे. तेनी कुक्षीमां रत्ननी पेठे उत्पन्न थयेली गुणसुंदरी नामनी आ कन्या छे; तेणीने में दुर्विनीते मोटी इच्छाथी अहीं आणी छे. वली हे कुमार! तें आ तारी शक्तिथी, आ कुमारिकाने जीवितदानथी, तथा मने नरकनां उद्धारथी, एम अमो बन्नेने चाकरनी पेठे खरीदी लीधां छे. वली आ कन्यानो स्वयंवर एक मासमां मोहोटो थवानो छे, पण जीतेल छे मुखथी कमल जेणीये, एवी आ कन्याने में तेनां घरथी त्याग करावी. एवी रीते महीपालने कहीने, ते विद्याधर तेनां वचनरूपी ज्योत्स्नाने पीवाने चकोरनी पेठे तेनी सन्मुख जोइने उभो. पछी ते कुमार पण उत्तम रसनां आश्रयवाली वाणी कहेवा लाग्यो के, आ कुमारीकाने तुं हवे तुरत तेनां पिताने घेर पहोंचाड? एवी रीतनी तेनी वाणीथी, ते विद्याधर, विद्यानी शक्तिथी, आकाशमार्गे ते कन्याने तेणीने पोताने स्थानके लेइ गयो. पछी विद्याधरे ते कुमारने शोल वीद्याउ आपी, अने कुमारे तेने जैनधर्म आप्यो. पछी पूर्व दिशामां तिलक समान एवा एक उंचा मेहेलने जोइने, कुमारे तेने पुछ्युं के, आ मेहेल कोनो देखाय छे? त्यारे विद्याधरे कंइक मनथी विचारिने कह्युं के, हे कृपालु कुमार? तुं मारी कथा आदरसहित सांभल? आ वैताढ्य पर्वत उपर रत्नपुर नामनुं नगर छे, त्यां शत्रुउने जीतनारो मणिचूड नामे राजा हतो. तेने विद्याविलासमां रसिक, तथा पितानी भक्तिथी पवित्र थयेला, एवा रत्नप्रभ तथा रत्नकांति नामनां बे पुत्रो हता. तेउमांथी रत्नप्रभे राज्यनां मदथी, मने रत्नकांतिने बलवान जाणीने, कंइक मिशथी नगरमांथी कहाडी मेल्यो. पछी मणिचूडे रत्नप्रभने राज्य सोंपी दीक्षा लीधी, तथा सर्व प्राणीउ प्रते समचित्तवालो थयो थको ते वनमां गयो. हवे ते भाइनां द्वेषथी में आ पातालमां, मोहोटा मेहेलोनी श्रेणिथी शोभावालुं नवुं शेहेर वसाव्युं. आ नगरनां नायक समान तथा महाप्रभाविक एवा श्रीशांतिनाथ प्रभु, सिद्धनां घरोथी विंटायेला आ प्रासादमां रहे छे. ते मारा भाइने जीतवामाटे, हे महीपाल! में आ कुविद्यानो उपाय कर्यो हतो, पण सारुं थयुं के, तें मने नरकमां पडतो वचाव्यो. माटे हवे चालो, आपणे जिनपूजामाटे आ चैत्यमां जइयें, एम कही तेउ विधिपूर्वक देवसेवा करवा लाग्या. पछी उ-

त्तम विनयवालो ते खेचर कुमारने मार्ग देखाडतो थको, पातालवनमां रहेला मुनिर्उने देखाडवा लाग्यो. त्यां जाणे पाषाणनी मूर्तिमयज होय नहीं, तेम ध्यानमां वेठेला, तथा जगतमां प्रख्यात एवा सर्वज्ञपुत्रोनी तुलना करता, संयमधारी तथा पवित्र मूर्तिवाला, ते मुनिर्उने जोइने कुमार अत्यंत आनंद पाम्यो. पढी अत्यंत ज्ञक्तिवंत एवो ते राजकुमार विधिपूर्वक तेर्उने नमीने, तेर्उनां मुखरूपी चंद्रप्रते दृष्टि राखीने त्यां वेठो. पढी सहज उपकारी एवा गुरुये पण तेर्उ बन्नेने ज्ञव्य जाणीने, चंद्र सरखो उज्ज्वल धर्मोपदेश कहेवा मांड्यो. कल्याणरूपी वेलडीर्उनां कंद समान, अने आपदारूपी कमलनीनो नाश करवामां हाथी समान, तथा लक्ष्मीनां कुलमंदिर सरखो धर्म आ डुनिआमां जयवंतो वर्ते ढे. हवे ते वखते त्यां चारित्रें करीने पवित्र, मनोहर आकृतिवाला, तथा पुण्यरूपी शृंगारवाला, वे साधुर्उ आव्या; तथा गुरुने नमस्कार करीने त्यां वेठा; त्यारे उत्तम बुद्धिवाला महीपाले तेर्उने पुढ्युं के, हे ज्ञगवन्, तमो बन्ने क्यांथी आव्या? त्यारे तेर्उ कहेवा लाग्या के, अमो बन्ने पुंडरिकगिरि, अने गिरनारनी हर्षथी यात्रा करीने, हमणा अहीं आव्या ढीयें. त्यारे विद्वानोमां शिरोमणि महीपाल, ते सांज्ञलीने तीर्थनी वार्ताथी पोताने धन्यमां शिरोमणि मानवा लाग्यो. पढी गुरु पण महीपालने धर्ममां अने तीर्थमां आदरयुक्त मानीने, हर्षथी, ते तीर्थनुं माहात्म्य कहेवाने, तेनापर कृपा करता हवा. जेम जिनोमां आदिनाथ, चक्रीर्उमां ज्ञरत, ज्ञवोमां मनुष्यज्ञव, अक्षरोमां ॐकार, देशोमां सोराष्ट्र, तथा व्रतोमां शील, मुख्य ढे, तेम सघला तीर्थोमां शत्रुंजयतीर्थ मुख्य कहेवाय ढे. ज्यां दारिद्र्यने नाश करनारो तथा जयवंतो सिद्धाचल पर्वत ढे, त्यां डुःख तथा पापोनो संज्ञवज क्यांथी होय? वली ते शत्रुंजय पर्वतनुं माहात्म्य तो जिनेश्वर प्रज्ञुज जाणी शके, केम के, समुद्रनी गंज्ञीरता मंदराचलज जाणी शके ढे, बीजो कोइ जाणी शकतो नथी. वली त्रणे ज्ञुवनोमां पण आ सिद्धाचल पर्वतज मुख्य तीर्थ ढे, केम के तेनां दर्शनमात्रथीज प्राणीर्उनां पापोनो समूह नाश पामे ढे. वली ते शत्रुंजय पर्वतनां शिखरपर, डुःखें करीने वारी शकाय एवो अज्ञानरूपी जे अंधकारनो समूह, तेने दूर करवाने सूर्य समान श्री नाज्ञिराजानां पुत्र -

षन्नदेव प्रभु बिराजे छे. एवी रीते त्रणे जगतमां अत्यंत अतिशयवाला ते बन्ने तीर्थोने जोइने, प्राणी सर्व हत्यादिक पापोथी मुकाय छे. हवे तेनी कथा कहे छे.

नरतक्षेत्रमां श्रावस्ती नामनी नगरीमां त्रिशंकुनो पुत्र त्रिविक्रम नामे राजा हतो. ते राजा एक दहाडो उद्यानमां फरतो थको एक वडनां वृक्षनी नीचे उन्नो, त्यां तेणे पोतानां मस्तकपर, क्रूर शब्द करता एक पक्षीने जोयो. कडवा शब्द बोलता ते पक्षीने राजाये उडाडवा मांड्यो, पण ते उड्यो नहीं, त्यारे तेणे क्रोधथी बाणे करीने तेने मार्यो. त्यारे ते पक्षी पृथ्वीपर शिथिल थइ तरफडवा लाग्यो, तेने जोइ राजा कंइक पश्चातापयुक्त थयो थको, पाछो वली नगरप्रते गयो. हवे ते पक्षी पीडाथी मृत्यु पामी कोइक न्निल्लनां कुलमां उत्पन्न थयो, त्यां वनने विषे बालपणाथीज पापरूपी ऋद्धिनी वृद्धि करनारो थयो. हवे एक दहाडो ते त्रिविक्रम राजाये धर्मरूचि नामनां मुनिपासेनी, नावसहित नीचे प्रमाणे दयामय धर्म सांनल्यो के, दयाज उत्कृष्टो धर्म, परम क्रिया, तथा परम तत्व छे, माटे हे नद्र ! ते दयानेज तमो नजो ? वली जो दया न होय, तो दान, ज्ञान, निर्ग्रंथपणुं तथा योगनी क्रिया पण व्यर्थ छे. काने अमृततुल्य एवुं मुनिनुं वचन सांनलीने दया उत्पन्न थवाथी राजा पोते मारेला जीवोनुं स्मरण करवा लाग्यो के, अहो ! में अज्ञानतानां वशथी अगाउ बहु दुष्कार्य कर्यां छे, तेथी मारे दुःखें सहन थाय एवा विविध प्रकारनां नवसंबंधि नावोने सहन करवा पडशे; माटे आ जीवीतनुं, तथा राज्यादिकनुं शुं प्रयोजन छे ? के जेथी आ लोकमां संताप, अने परलोकमां मने नरकनी गति मलशे; माटे हवे हुं, कादवमांथी जेम पद्मने तथा माटीमांथी जेम सुवर्णने, तेम आ शरीरथी व्रतने ग्रहण करीश. एम विचारि राजाये, मुनिने नमस्कार करी आदरसहित, व्रतनी याचना करी, त्यारे मुनिये पण तेने हर्षथी दीक्षा आपी. पछी नणेल छे सर्व सिद्धांतो जे, तथा नवे तत्वोने धरनारो ते त्रिविक्रम मुनि विधिपूर्वक उत्तम व्रत पालवा लाग्यो. एक दहाडो ते गुरु माहाराजनी रजा लेइने, एकाकी, सूर्य जेम आकाशमां, तेम संसाररूपी वनमां न्नमवा लाग्यो. उत्कृष्ट संयमवाला, तथा प्रतिमा धरीने उन्नेला, ते मुनिने, ते न्नील्ले

जोयो; त्यारे पूर्वनां वैरथी ते क्रोधायमान थयो; तथा लाकडी अने मुष्टी विगेरेथी, क्रोधें करीने अल्पबुद्धि जेम पोतानां जाग्यने, तेम ते तेने मारवा लाग्यो; त्यारे शांत मनवालो, तथा जितेंद्रिय, ते मुनि पण जयंकर मारथी पीडीत थयो थको, अरणिनां काष्टनी पेठे क्रोधथी बलवा लाग्यो; तथा ते जीलप्रते तेणे तेजोलेश्या मुकी, अने तेथी ते वृक्षनी पेठे बली गयो. एवी रीते ते जीलनो जीव मरीने जयंकर अटवीमां केसरी सिंह थयो, अने ते मुनि पण विहार करतो थको ते वनमां आव्यो, त्यारे ते सिंह तेने जोवाथी, आगला जवनां वैरथी तेने हणवाने दोड्यो; त्यारे मुनि पण धर्मनां साधनरूप देहनुं रक्षण करवामाटे जाग्यो. त्यारे करेलुं कर्म जेम प्राणीनी पाछल जाय छे, तेम ते सिंह पण तेनी पाछल दोड्यो, एवी रीते अति क्रोधायमान थयेला ते सिंहे मुनिने एटलो खेद पमाड्यो के मुनिये क्रोधायमान थइ, तेनापर तेजोलेश्या मुकी; तेथी मृत्यु पामी ते सिंह जयंकर वनमां अत्यंत क्रूर दीपडो थयो, अने त्यां पण कर्म योगे ते मुनि आव्यो; तथा जेटलामां ते मुनि स्थिर मनथी प्रतिमा धारीने रहे छे, तेटलामां पूर्व जवनां वैरथी ते दीपडो तेने मारवानी इच्छाथी त्यां आव्यो. ते वखते मुनि पण, जोके कषायोनुं जयंकर परिणाम जाणतो हतो, तो पण कर्मनां वशथी कोप पाम्यो. अत्यंत ज्ञाननी संपदावाला तथा मोक्षनी इच्छा राखनारा मुनिर्जनां चित्तमां पण ज्यारे अत्यंत क्रोध आवे छे, त्यारे बीजार्जनी तो वातज शी करवी? पछी ते मुनिये मुकेली तेजोलेश्याथी ते अत्यंत क्रोधी दीपडो मरीने कोइक जयंकर वनमां जंगली सांढ थयो, घणी रीते अराधेल छे, योगनुं अंग जेणे, तथा दैवयोगे त्यां पण आवेला, ते मुनिने ते सांढे उपद्रव कर्यो. त्यां पण ते मुनिये तेने प्रथमनी पेठेज मारी नांख्यो. त्यारे ते सांढनो जीव अवंति देशमां, उज्जयनी नगरीमां, सिद्धवडनां कोटरमां अत्यंत क्रोधी आशिविष सर्प थयो. अनुक्रमे ते त्रिविक्रम मुनि पण चालता थका, ते वडनीचे आवीने कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्या; त्यारे तुरत ते सर्पे पण तेने जोयो. पछी अत्यंत मत्सरथी पूर्व जवनां वैरी एवा ते मुनिने डंखवा माटे, दुष्ट आशयवालो, तथा विस्तारवाली फणावालो ते सर्प त्यां आव्यो. त्यारे मुनिए पण तेने आवतो जोइ क्रोध लावीने आगलनी पेठेज यमने मं-

दिरे मोकलावी दीधो. त्यां अकामनिर्जरानां योगथी कंइक कर्मोने छेदीने, ते सर्पनो जीव, कोइक गाममां एक दरिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे जइ उपनो; एक दहाडो ते मुनि पण विहार करतो थको तेज गाममां आव्यो. त्यां गामनी समीपे ते मुनिने ध्यानमां रहेलो जोइने, ते नीच ब्राह्मण पूर्वनां वैरथी, तेने मारवा दोड्यो; तथा निर्दय थइने, मूष्टी लाकडी आदिकथी अनेक प्रकारे ते तेने मारवा लाग्यो, त्यारे मुनिए पण क्रोधयुक्त थइ, आगलनी पेठेज तेने मारी नांख्यो. त्यारे अकामनिर्जराथी तथा किंचित् शुभनां उदयथी ते ब्राह्मणनो जीव वाराणसी नगरीमां महाबाहु नामे राजा थयो. त्यां तेणे उत्तम लीला आदिकथी घणो काल व्यतीत कर्यो. एक दहाडो ते मेहेलनां झरुखामां बेठेलो हतो, त्यारे मार्गमां एक निष्पापी मुनिने जतो तेणे जोयो; त्यारे ते विचारवा लाग्यो के, अहो! आ कोइक महात्मा बुद्धिवानोने पूजवा योग्य छे; तो पण मारुं मन तेना पर कंइक द्वेषयुक्त थाय छे; वली अगाउ पण आवा कोइक महात्माने में क्यांक पण जोया छे, एवी रीते ते राजा घणीवार सुधि विचारवा लाग्यो. एम विचारतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं, अने तेथी, साधुनां क्रोधरुपी अग्निनी ज्वालामां कवलरूप थएल छे जीवित जेमां, एवा पोतानां सात जन्मो तेने सांभल्या. तेथी राजाए नीचे प्रमाणे अरधो श्लोक रच्यो.

॥ विहंगः शबरः सिंहो, द्वीपी शंडः फणी द्विजः ॥

अर्थः– "पक्षी, भील्ल, सिंह, दीपडो, सांढ, सर्प अने ब्राह्मण." पछी तेणे लोकोमां कहेवराव्युं के, जे बुद्धिवान माणस आ समस्या पूरशे, तेने हुं लाख सोनामोहोरो आपीश. पछी गूढ तथा प्रौढ रहस्यवाली ते समस्या धननी इछाथी सर्व लोको बोलवा लाग्या. पछी त्यां चालता ते मुनिये एक गोवालीआनां मुखथी ते समस्या सांभली. त्यारे मुनिये तेनां नीचे प्रमाणे बे पदो पूर्यां.

॥ येनामी निहताः कोपा, त्सकथं भविता हहा॥

अर्थः–जे माणसे क्रोधथी तेउने मार्या छे, तेनी अरेरे!! शी गति थशे? एवी रीतनां मुनिनां वाक्यने सत्य मानीने, ते गोवालीये राजापासे

जइ, ते बन्ने पदो संजलाव्यां. त्यारे राजाये विचार्युं के, आ समस्या आ गोवालीउं पुरी शके नहीं, एवुं विचारि राजाये तेने पुछ्युं के, जे माणसे आ समस्या पुरी होय, तेने बताव? पछी राजाये तेने घणो आग्रह करवाथी, ते अक्षरोरूपी रत्नोने उत्पन्न करवामां खाण समान, तथा पापोने खोदवामां कोदाली सरखा वनमां आवेला ते मुनिनुं व्रतांत तेणे कही संजलाव्युं. त्यारे राजा पण अत्यंत उत्कंठित थयो थको वनमां ते मुनिपासे गयो; तथा त्यां जातिस्मरण ज्ञानथी ते मुनिने उलखी कहाडीने, तेने कहेवा लाग्यो के, हे मुनीश्वर! तमो मारा अपराध क्षमा करो? वली मने धिक्कार छे! के में ते ते जवोमां तमोने पीडा उपजावी छे; वली आप उपकारीनां दर्शनथी हुं आ राज पाम्यो बुं. वली में क्रोधरूपी चांडालने वश थइने, तमारा तपमां विघ्न कर्युं छे, माटे हवे मारा निमित्तनां क्रोधनो तमो त्याग करो? पछी त्यां मुनिये पण तेनां वचनरूपी अंकुशथी, पोतानां मनरूपी हाथीने, तेवी रीतनां व्यापाररूपी वनमांथी खेंची लीधो. अने कहेवा लाग्या के, हे राजन्! मने धिक्कार छे! के, साधु थइने पण, पापी एवा में ते ते जन्मोमां तने हण्यो; माटे अज्ञानयुक्त मारा अपराधोनी तुं पण क्षमा कर? एवी रीते तेउ बन्ने त्यां परस्पर जेटलामां वातो करे छे, तेटलामां तेउये आकाशमां दुंदुजिनो नाद सांजल्यो. आ शुं हशे!!! एम विचारतां थकां जेटलामां ते आकाशमां नजर करे छे, तेटलामां तेउये देवनां कहेवाथी वनमां रहेला केवली मुनिने जाण्या; त्यारे तेने जोवानी इछा माटे आदरयुक्त थया थका, तेउ मननां संशयनो नाश करनारा, तथा देवोथी पूजायेला, ते केवली पासे जइने, तेने नमता हवा. त्यां मुनिये पण तेउनां निष्पापी जावने जाणीने, जीवदयामय धर्मनुं माहात्म्य कहेवा मांड्युं. देवपदवीयें करीने मनोहर एवुं धर्मरूपी पाणी होय छे; पण क्रोधरूपी जेरथी उत्पन्न थता हिंसारूपी मेलथी ते मलीन थाय छे. वली पोतानां आत्मारूपी जीतपर करेली चारित्ररूपी चित्रनी रचना, क्रोधरूपी कूचामां चोंटेला हिंसारूपी काजलथी नाश पामे छे. वली जे माणस अज्ञानथी उत्पन्न थयेला अविवेकें करीने, मुनिने कदर्थना करे छे, तेनां सरखो बीजा कोइने पण पापी जाणवो नहीं. वली जे मूर्ख मुनि तीव्र तप तपतो थको पण क्रोध करे छे, ते चारित्ररूपी वृ-

इने बालीने, तेनी राख पोतानां आत्माप्रते नांखे छे. वली हे राजन्! तें जे पूर्व भवमां मुनीने गुस्सो चडाव्यो, तेथी तने अने मुनिने, बन्नेने कर्मबंध पड्यो. वली हे मुनि! तें पण अजाणतां थकां हिंसा करेली छे; माटे हवे सर्व पापोने नाश करनारा शत्रुंजय पर्वतप्रते तुं जा? अने त्यां तपस्या करतां थकां, तथा अरिहंत प्रभुनुं ध्यान धरतां थकां, केवलज्ञान पामी तुं मोक्षे जइश; वली हे मुनि! निविड एवुं आ तारुं कर्म, शत्रुंजय तीर्थविनां आकरा शीलादिकथी पण दूर थशे नहीं; वली हे राजन्! तुं पण आ मुनिने गुरुरूप मानीने, तथा तेने अगाडी करीने, माणसोनी साथे शत्रुंजय पर्वतप्रते जा? अने त्यां समतापूर्वक यात्रा कर? तथा यात्रा कर्या बाद सर्वविरति तथा स्थिर ब्रह्मचर्यमां तत्पर थइने, ते मुनिनी साथे त्यांज उत्तम तप कर? वली सुवर्ण जेम टंकणखारथी, तथा लुण जेम पाणीथी, तेम शत्रुंजयनां स्मरणथी कर्मरूपी कादव गली जाय छे. वली सूर्यथी जेम अंधकार, तथा पुण्यथी जेम दरिद्रपणुं, तेम शत्रुंजयनां स्मरणथी कुकर्मो नाश पामे छे; वली वज्रथी जेम पर्वत, तथा सिंहथी जेम हरिण नाश पामे छे, तेम शत्रुंजयनां स्मरणथी पूर्वनां कर्मो नाश पामे छे; वली अग्निथी जेम सघली वस्तुओ, तथा लोखंडथी जेम बीजी धातुओ, तेम शत्रुंजयनां स्मरणथी सघलुं अज्ञानरूपी अंधकार नाश पामे छे. एवी रीतनां ज्ञानीनां वचनने तेओ बन्ने हृदयमां धारीने, तथा भक्तिथी तेने नमीने, प्रीतिवाला थया थका, तथा संघप्रते अनुरक्त थया थका, तीहां यात्रा करीने, उत्सवनी रचनाथी रंजित करेल छे, सघलुं जगत जेओये, एवा थया थका, तीव्र तप तपीने, तथा पुण्यने प्रगट करीने, मुक्तिसुख मेलवता हवा. एवी रीते हे महीपाल! शत्रुंजय पर्वतपर सर्व हत्यानां पापो तुरत नाश पामे छे. एवी रीते आदिनाथ प्रभुये कहेला धर्मने गुरुपासेथी मेलवीने, पोताने धन्य मानतो थको, ते विद्याधरसहित त्यांथी उठ्यो. पछी त्यां विद्याधरथी सेवायेलो, ते महीपाल, शाश्वता प्रभुनां वंदनथी, तथा साधुओनी सेवाथी केटलोक काल सुखेथी रह्यो. पछी ते महिपाल खेचरनी रजा लेइने, तलवारयुक्त थयो थको तथा मार्गमां कौतुकनो आश्रय लेतो थको कल्याणकटक नगरप्रते चालवा लाग्यो. पछी ते राजकुमार आकाशगामिनी विद्यायें करीने आकाशमां चालतो थको

स्वयंवर जोवानी इच्छाथी कल्याणकटक नगरप्रते पहोंच्यो. त्यां जुदा जुदा देशोथी आवेला, तथा जुदी जुदी भाषाओमां निपुण, अने जुदा जुदा वेषने धारण करनारा एवा राजाओने तेणे जोया. त्यां उंचा मांचाओनी श्रेणि, तेवी रीतनां संघट्टथी पसीनावाली जाणे थइ होय नहीं, तेथी पताकाओनी श्रेणिथी वींझाती हती. त्यां आम तेम भमता महीपाले, लश्करथी वींटायेला पोतानां मोटा भाइ देवपालने जोयो. पछी त्यां महीपाले पोतानो वेष बदलावीने, जाणे कंइ वात जाणतो न होय नहीं, तेम तेनी समीप आवीने जोवा लाग्यो. पछी तेणे तेने पूछ्युं के, आ सघलां राजाओनां सैन्यो, आ उंचा मांचा, तथा अहीं तहीं दोडतो माणसोनो समूह, ते आ सघलुं शुं छे? वली हुं तो परदेशी छुं, तेथी हे मित्र! आ वृतांत हुं जाणतो नथी; माटे ते सघलुं तुं मारी आगल निवेदन कर.? त्यारे देवपाले कह्युं के, हे महासत्व! तुं सघली वार्ता सांभल? आ समृद्धिवालुं कल्याणकटक नामनुं नगर छे. तथा अहीं कल्याणसुंदर नामनो राजा छे, तेने गुणसुंदरी नामनी पुत्री छे, तेनो आश्चर्यकारक स्वयंवर महोत्सव आवती काले थवानो छे. वली ज्वालानी श्रेणिथी आकुल थयेला आ अग्निकुंडने तुं जो? तेनी अंदर घणां डालांओथी वींटायेलो आ अग्निवृक्ष छे; तेनी शिखारूपी शाखामां रहेलां फलोने जे साहसी माणस ग्रहण करशे, तेने आ कन्या स्वयंवरपूर्वक परणशे. एवी रीतनुं तेनुं वचन चित्तमां निश्चय करीने, ते महीपाल पण मांचाओनां एक भागमां जइने बेठो. पछी लग्नने दिवसे घणां आभूपणोथी शणगारेली थइ थकी, तथा विचित्र प्रकारनां रत्नोनी कांतिनां समूहोथी आकाशभागने पूरती, तथा चलायमान थती नेत्रनी कांतिमां परोवेलां छे, कानपरनां कमलो जेनां तथा लटकता कुंडलथी घसायेल छे, कपोलरूपी मणिनां आरिसा जेनां, तथा मनोहर हारनी कांतिरूपी जे चंद्रनी कला, तेथी स्फुरायमान छे किरणोनो समूह जेनो, वलयने धारण करती, तथा चोटलामां रहेला मालतीनां पुष्पोनी सुगंधिथी, मदोन्मत्त थयेला भमराओथी सेवायेली, तथा सेंकडो गमे सखीओए लावेला सुगंधि द्रव्योथी आदरयुक्त थयेली, तथा प्रकाशित थयेला चंद्रसरखी कांतिवाली, श्वेत वस्त्रोने धारण करती, एवी ते राजकुमारी वरमालासहित मनुष्योए उपा-

डेली पालखीमां बेसीने ते सन्नामां दाखल थइ. ते वखते सघला राजा-
उं, पडता कामदेवनां बाणोथी पीडीत थया थका, ते सुंदरीने जोइने
क्षोन्नायमान थया. पछी जगतने जीतवा माटे जाणे देहधारी कामदेव-
नी शक्तिज होय नहीं, एवी ते बालाने ते कुंडने किनारे लेइ गया. वली
त्यां महापराक्रमी, अने गर्वथी दुर्धर एवा पर्वतोज जाणे होय नहीं, एवा
ते विद्याधर अने राजानां कुंवरो पण आव्या; पण तेउ सघला ते अग्निकुंड-
नी पासे पण जइ शक्या नहीं, त्यारे ते वृक्षनां फलो लेवानी कुशलता तो
दूरज रही. वली करेलो छे, उपाय जेउंये एवा विद्याधरो पण, मिथ्यात्वि-
उं दुष्प्राप्य मुक्तिने जेम, तेम ते फलो मेलवी शक्या नहीं. अेवी
रीते सघला विद्याधरो तथा राजाओ थाकी गये छते, तथा “ हवे शुं
करवुं ? ” अेवा विचारमां जड होते छते, महिपाल नुजास्फोट करीने
त्यां आव्यो; तथा हाथो उंचा करीने कहेवा लाग्यो के, हे सघला परा-
क्रमी तथा विद्वान राजाओ ! तमो सघला सांनलो ? तमो अहीं
लाखोनी संख्यामां एकठा थया छो, पण तमो आ वृक्षनां फलो लेइ
शक्या नहीं; वली तमो तमारां बलने जाण्या विना अहीं शा माटे आ-
व्या ? केम के, वगरविचार्युं काम कोइ पण जगोए सुख माटे थतुं न-
थी. वली हजु पण जो तमारी कंइ पुरुषार्थने प्रगट करनारी शक्ति हो-
य, तो ते तमो हमणा प्रगट करो ? केम के आजे तेनो अवसर छे. अ-
ने जो तमारामां शक्ति न होय, तो तमारी समक्ष, बाहारनो आडंबर
राख्याविनां, आ गुणसुंदरी सहित फलोनी लुंब हुं लेइश. ते सांनलीने
लज्जाथी सघला राजाउंए नीचुं मुख कर्यें छते, तथा कौतुकथी लोको पो-
तांनां मस्तको धुणावते छते, ते राजकुमारे क्रीडा पूर्वक त्यां जइने, त-
था आकाशगामिनी विद्यानुं स्मरण करीने, फलोनी पंक्ति हाथेथी लेइने,
हर्षपूर्वक ते कुमारीकाने आपी. ते वखते ते राजाउंनां मुखरुपी कमलोने
संकोच करता एवा लोकोए जयजयनो शब्द कर्यो. वली ते वखते स्त्रीउं
तालीउं वगाडीने राजाउंनी हांसी करवा लागीउं, अने तेथी नरवर्मा-
दिक राजाउंनां मनमां क्रोध उत्पन्न थयो. पछी नर्तारनां चित्तनी अंदर
प्रवेश करवा माटे जाणे तोरणज बांधती होय नहीं, तेम रोमांच युक्त

थइ थकी, गुंजारव करता भमरानां झंकारथी मनोहर बनेली मालाने हाथमां लेइने, प्रेमबंधन पूर्वक तेणीए ते राजकुमारनां कंठमां नांखी. पछी कल्याणसुंदर राजा तेनी पासे आव्यो, तथा तेने कदरुपो जोइने ते विचारवा लाग्यो के, देखावमां आ कदरुपो छे, पण चरित्रथी उत्तम छे, माटे ते, जगतने उद्योत करनारुं छे तेज जेनुं, एवा भस्ममां छवाएला उत्तम रत्न सरखो छे. वली हुं एम जाणुं छुं के, गुणोयें करीने जगतने पण वंदन करवा लायक आनो वंश छे; केम के वादलांमां ढंकाएला सूर्यनुं तेज पण कोण धारी शकतुं नथी? वली पूर्ण थइ छे प्रतिज्ञा जेनी, एवी आ कन्याए आ वरने वर्यो, केम के, एवी रीतनो कुलकन्याउनो आचार जगतमां सर्व जगोए वर्ते छे. वली कुल, शील आदिकथी भूषित थएला आ राजाउनां देखतां, अजाण्युं छे कुलशील जेनुं एवा आ कुमार प्रते कन्या देतां थकां मने लज्जा आवे छे. माटे हवे तो मारा मननो खेद दूर करवा माटे आदरथी, तेनी पासे जइ, तेनुं कुलादिक हुं पुछुं. एम विचारिने, ते महाबुद्धिवान राजा तेनी पासे जइ, स्नेह युक्त अने गंभीर वाणीथी तेने पुछवा लाग्यो के, हे उत्तम पुरुष! तारा गुण, विनय अने शक्तिथी, तारी उत्तम जाति आदिक सर्व हुं जोके जाणी गयो छुं, तोपण दुनीआ बहारनां भपकाने जुवे छे, केम के, अंदर भींत गमे तेवी होय, तोपण बहारथी रंगेली भपकाबंध लागे छे; माटे हे कुमार! तुं कोइ विद्याधर, के देव, के मलेलुं छे वरदान जेने एवो पुरुष, के नागकुमार छे? ते कहीने मारा कान तुं पवित्र कर? राजाये एम कहेते थके, महा प्रभाविक एवा ते महीपाले, कंचुकनी पेठे क्षणवारमांज पोतानो कदरुपो वेष कहाडी नाख्यो. ते वखते वादलांउथी मुकायेला सूर्यनी पेठे, धुंवाडा विनानां अग्निनी पेठे, कादवरहित थयेला मणिनी पेठे, लांछन रहित थयेला चंद्रनी पेठे, छीपमांथी निकलेलां मोतीनी पेठे तथा माटीमांथी कहाडेलां सुवर्णनी पेठे ते महीपाल दीपवा लाग्यो. ते वखते लोकोयें चारेकोरेथी जय जय शब्द कर्यो; तथा तेनापर आकाशमांथी पुष्पवृष्टि थइ. वली ते वखते देवपाले, ते महीपालने यथास्थित जोइने, संभ्रमसहित उठीने हर्षथी आलिंगन कर्युं. वली त्यां ते देवपालनां परिवारे पण, आश्चर्यथी विकस्वर लोचनवाला थइने पृथ्वीपर काया नमावीने तेने नम-

स्कार कर्यो. ते वखते त्रणे जातिनां वाजांउ वागवा मांड्यां, तथा लोको हर्षथी नाचवा लाग्या; अने स्त्रीउनां मुखोथी उंचे प्रकारे धवलमंगलनो ध्वनि निकलवा लाग्यो. हवे महीपाले पूर्वे कहेलां वचनोथी थयेल ठे क्रोध जेउने, एवा सघला राजाउ एकठा थइने नरवर्मा राजाने कहेवा लाग्या के, आ महीपाले हाथथी जे फलो ग्रहण कर्यां, तेमां कंइ आश्चर्य नथी, केम के, इंद्रजाल विद्याथी शुं असाध्य ठे? वली आ महीपाल डुराचारी होवाथी तेना पिताये तेने पहेलांज घरमांथी कहाडी मेल्यो ठे, पण क्यांकथी चमत्कार पामीने, तेणे जे आ कार्य कर्युं, तेमां कंइ तेनुं बल नथी; वली स्त्रीउ तो स्वजावथीज नीचगामीनी होय ठे, अने तेथी आ मूर्ख कन्याये तेने वर्यो; माटे ते वर तरिके केम थाय? माटे आ अनुचित कार्य आपणे सहन करीशुं नहीं; अने तेटलामाटे दरिद्री पासेथी जेम रत्न, तेम तेनी पासेथी आ कन्याने आपणे ग्रहण करीशुं. एवी रीते बीजा राजाउनां वचनने सांजलीने नरवर्मा जरा विचार करीने, गंजीर वाणीथी कहेवा लाग्यो के, तमो थोडो काल सबुर करो? केम के आ कल्याणसुंदर राजा मारो मित्र ठे, माटे हे राजाउ! तमारे क्रोध करवो नहीं. वली हमणा तो आपणे आपणा क्रोधने समावीने, तथा एकमत थइने, उत्कृष्ट प्रीतिपूर्वक आ विवाह महोत्सव गुजारवो. वली मने मालुम ठे के, ए सौराष्ट्रनो राजा स्वल्प लश्करनां बलवालो ठे, माटे पर्वत जेम पाणीने, तेम आपणे तेनो मार्ग रोकीने बेसीशुं, माटे तेज विचार आपणे राखवो, बीजुं कंइ पण करवुं नहीं; केम के ज्यारे सूर्यनुं बिंब उगे ठे, त्यारे शुं अंधकार रही शके ठे? एम विचारिने सघला राजाउ गुप्त अदेखाइवाला थया, तथा सूर्यकांत मणिनी पेठे अंदर बलता थका उपरथी मीठाबोला थया.

हवे एटलामां देवपाल महीपाल पासे आवीने, हर्षयुक्त मनवालो थयो थको, स्नेहसहित तेने कहेवा लाग्यो के, हे वत्स! तारो वियोग थया बाद आपणा मातपिता फक्त शरीररुपज रहेलां ठे, पण तेउनो जीव तो तारामांज वलगेलो ठे;वली हुं अहीं स्वयंवर महोत्सव माटे बिलकुल आवेलो नथी, पण तुं अहीं आवीश, एवी शंकाथी हुं अहीं खरेखर आवेलो ढुं; माटे हवे तारुं आजसुधिनुं सघलुं व्रतांत तारे कहेवुं जोइयें. ए-

वी रीतनी प्रीतिरूपी अमृतथी जरेली पोताना जाइनी वाणी सांजलीने, ते महीपाल पोतानुं सघलुं व्रतांत कहेवा लाग्यो. पछी पोतानां जाइनुं महा आश्चर्यकारी ते व्रतांत सांजलीने देवपाल अत्यंत आनंदित थयो. पछी राजाये वाजिंत्रोनां नादोथी तेउनो अत्यंत मनोहर विवाह महोत्सव संपूर्ण कर्यो. वली त्यां ते महीपाले हस्तमोचनमां हाथी, घोडा, पालखी, तथा रत्न विगेरे राजापासेथी मेलव्युं. हवे ते स्वयंवरमां रत्नप्रज विद्याधर आव्यो हतो, तेनी वंदिलोकोनां मुखथी सूर्यमल्लनां पुत्रे कीर्ति सांजली. त्यारे ते तेने आवासे गयो, त्यां तेणे तेनुं सन्मान कर्युं; अने रत्नकांतनो तथा पोतानो व्रतांत तेने कही संजलाव्यो. पछी पोतानां बुद्धिबलथी तेने जाइनां स्नेहमां रक्त थयेलो जाणीने, तेउनी प्रीति वधारवामाटे तेणे कह्युं के, पूर्वनां पुण्ये करीनेंज पोतानां जाइनो मेलाप थायछे, माटे हमेशां सुखनां इछनाराउये वीजा हाथनी पेठे तेनुं रक्षण करवुं. वली संपदा अने स्त्रीउ तो जगो जगोये मले छे, पण मातानी कुक्षिविनां वीजी जगोये सहोदर मलतो नथी. वली लक्ष्मीनां लवमाटे जे मूर्ख माणसो जाइउपर द्वेष करे छे, ते निर्जाग्य माणसो कुतरानी तुलनाने धारण करे छे. वली जे जाग्यहीन माणसो राज्यादिकने माटे पोतानां जाइउने मारी नांखे छे, तेउ पोतानी मेलेज पोतानां पक्षनो नाश करे छे, एम हुं मानुं छुं. वली जे माणसो ग्रासनां लवथी गर्वित थया थका पोतानां जाइउने ठगे छे, तेउ कागडाउथी पण हांसीपात्र थाय छे. इत्यादि अमृतथी जरेली कुमारनी वाणी पीने रत्नप्रज पोतानी आंखोरूपी मणिउमांथी घणा बिंदुउने जरवा लाग्यो. एवी रीते निःश्वाससहित, तथा गलता आंसुउथी रोकाइ गयेल छे कंठ जेनो, एवो ते विद्याधर महीपालपासे जइने गदगद वाणीथी कहेवा लाग्यो के, ते मारो नानो जाइ स्वजावथीज उद्धत हतो, तोपण में तेने कंइ रोपित कर्यो नथी, पण ते पोतेज मनमां कंइक विकल्प करीने चाल्यो गयो छे, वली तेने मंत्रिउये पण हितकारी नीतिवाक्योथी वार्यो हतो, अने में पण तेने आग्रहसहित अटकाव्यो, पण ते नहीं मानतां चाल्यो गयो. वली हे बांधव! एकांगी सुखदुःखने देनारा मारा आ राज्यपणाने पण, तेना विनां हुं विषमिश्रित अमृत सरखुं मानुं छुं. पछी कुमारे तेने कह्युं के, हवे तुं खेद नहीं कर?

हवे हुं, कर्म जेम जीव अने शरीरनो, तेम तमारा बन्नेनो संगम करावीश. एवी रीतनुं कुमारनुं वचन अंगीकार करीने, भाइने मलवामां उत्सुक थयो थको, स्वछ मनथी ते त्यां रह्यो. हवे त्यां महीपाले, गीत, शास्त्र, तथा इष्ट जनना संगथी, राजपुत्रीनी साथे सुख भोगवतां थकां केटलाक दिवसो गाल्या. हवे अहीं पूर्वे करेलां कर्मोनां परिपाकथी महीपालने तापनी पीडा थइ, तथा अंगोपर फोडलाउ थया; अने तेथी तेने घणीज व्याधि थवा लागी. वली ते तापने दूर करवा माटे जे जे ठंडा उपायो करवामां आवता, तेथी तो तेनुं कमल सरखुं कोमल शरीर अत्यंत डुःख पामवा लाग्युं; एवी रीते अमृत सरखां औषधोथी तेनो उपाय करवा मांड्यो, तो पण शांत वचनोथी जेम डुर्जन, तेम तेनो व्याधि विशेष डुःखदायक थयो. वली तेनां रोगमाटे जे उपाय न कर्यो, तेवो कोइ पण उपाय के, विद्या के प्रपंच आ डुनिआमां हतोज नहीं, अर्थात् सघला इलाजो कर्या. एवी रीते एक माससुधि घणां वैद्योए विविध प्रकारनां औषधोथी उपायो कर्या, तो पण तेनो रोग मट्यो नहीं. पछी तो मीष्ट वचनोथी राजानी रजा लेइने, तथा पितानी पेठे तेने अने दिलगिर थता लोकोने पण शांत करीने, सेंकडो लश्करथी तथा विद्याधरोथी विंटायो थको, पिताने मलवानी उत्कंठाथी ते महीपाल चालतो थयो. गुणसुंदरी पण वृद्धोनी अनुज्ञा लेइने, तथा मातपितानां चरणोने नमीने पोतानां भर्तारनी साथे चाली. एटलामां पूर्वेनां मत्सरी राजाउए ते महीपालने मार्गमां रोक्यो; अने तेउ तेने केहेवा लाग्या के, अरे! रंक! अमो राजाउनां देखतां, छलविद्याथी आ कन्यारूपी रत्नने लेइने तुं क्यां जवानो छे? हमणा तने तेनुं फल मलशे. वली जे माणस अति लोभथी पोतानां परिमाणथी पण अधिक कार्य करे छे, तेने तुं जेम कुष्टी थयो, तेम प्रगट फल भोगववुं पडे छे. वली त्यां तुं जे जेम तेम बक्यो हतो, तेनुं तने हमणा फल मलशे. एम कहीने अत्यंत क्रोधायमान थएला ते राजाउए एकठा थइने, सघलां लश्करथी ते महीपालने घेरी लीधो. ते वखते शत्रुउ प्रते काल सरखा महीपाले पण रोगनी पीडाने नहीं गणीने, हाथमां तलवार लीधी. ते वखते हाथीउ दांतोथी, रथवालाउ बाणोथी, पालाउ तलवारोथी, तथा

घोडेस्वारो भालाउंथी लडवा लाग्या. एवी रीते बन्ने सैन्यो स्वपरनो विचार कर्या विनां दीनता रहित मांहों मांहें लडवा लाग्यां. ते वखते पोतानां स्वामिनां भक्त एवां बाणो, पण तेमनां यशथी पृथ्वीने व्याप्त थएली जोइने, जेटलामां ते यशनो स्वर्गमां विस्तार करवामाटे आकाशमां जवानो यत्न करे छे, तेटलामां त्यां पण किन्नरोथी गवाता ते यशने सांभलीने, पोतानां स्वामिनी स्तुति नहीं करता एवा वेरीउंपर आवीने पडवा लाग्यां. हवे ते वखते, उछलता चपल मोजांउंवाला समुद्रोथी जेम कांठो, तेम वैरीउंनां समूहोथी महीपालनुं सैन्य उपद्रव पाम्युं. त्यारे महा यशस्वी रत्नप्रभ, देवपाल, तथा महीपाल, अने वीजाउं पण तेउंनी साथे अत्यंत क्रोधथी लडवा लाग्या. वली तेउंए रवैया सरखा थइने शत्रुउंनी सेना रूपी दहींने वलोवीने, जगतनां तापने हरवा माटे यशरूपी माखण उंधरी कहाड्युं. ते वखते जगतमां सारभूत एवा ते महीपालनां विंबने सहन करवाने अशक्त थया थका, ते शत्रु राजाउं पोतानां लश्करो सहित दिशा दिशाउंमां नाशी गया. ते वखते यादवनां लश्करीउंए जयजयनो शब्द कर्यो, तथा तेमना पर देवोनां हाथोमांथी पुष्पोनी श्रेणिउं पडी. वलीमहाबलवानो कदापि पण तृणपर गुस्सो करता नथी. एवुं जाणी नरवर्मादिक राजाउंए त्यां मुखने विषे ते तृण लीधुं. वली आ पृथ्वीमां आ महीपाल महा सुगंधिवाला (कीर्तिवंत) छे, तेथी ते राजाउंए तेनी आगल आलोटीने, छलथी पण तेनां रजकणीआउंथी पोतानां शरीरपर लेपन कर्युं. वली तेनां चरणोंने नमता एवा ते राजाउंनी पीठपर महीपाले, स्फुरायमान थती एवी जे लक्ष्मी, तेनां पद्मरूप घरसमान पोतानो हाथ मेल्यो. ते वखते नरवर्मा राजाए देवकन्या सरखी पोतानी वनमाला नामनी कन्या देवपालने आपी. एवी रीते राजाउंने जीतीने, तथा देहधारी जयलक्ष्मी सरखी वनमालाने लेइने ते नगरप्रते चाल्यो. पछी तेनां पराक्रमथी आश्चर्य पामेला, ते नरवर्मादिक राजाउं, ते महीपालनी आज्ञा लेइने पोतपोताने स्थानके गया. हवे अहीं वनमां अपायने (दुःखने)करनारो वायु जेम जेम वावा लाग्यो, तेम तेम महीपालनो रोग पण अत्यंत वृद्धि पामवा लाग्यो. वली ते दुष्ट वायुनी पीडाथी अढारे जातिनां कोढो, लक्ष्मीनां घ-

र सरखा तेनां शरीरने अत्यंत कष्ट आपवा लाग्या. ते वखते वननी रमणिक भूमि तेने नरकनी पृथ्वी सरखी लागवा मांडी, तथा कमलोवालुं नदीनुं पाणी, तेने भयंकर लागवा मांड्युं; तेम वाजांउनो नाद यमनां वचन सरखो लागवा मांड्यो, तथा तेनुं वास मारतुं शरीर तेनां परिवारने पण दुःखदायक लागवा मांड्युं. वली तेने भोजन तो फेरसमान, तथा पाणी तपावेला सीसा सरखुं, अने वरास तो दुःखदायक लागवा मांड्यो; वली तेने गायन दुर्वाक्य सरखुं, तथा नाटिक सर्पनां वींटला सरखुं, अने पुष्पो यमनां बाणो सरखां लागवा मांड्यां. वली नरकथी पण अधिक दुःख पामता एवा ते महीपालने माणसो वच्चे, तेम एकांतमां पण चेन पडवा लाग्युं नहीं. एम करतां केटलेक दिवसे ते कुसुमोनां समूहवाला उद्यानमां पहोंच्यो, तथा त्यां तेणे मुकाम कर्यो; अने तेनां दुःखथी सैन्य पण दुःख पामवा लाग्युं. जेम जेम माणसोने पूर्वे करेलुं शुभाशुभ कर्म उदयमां आवतुं जाय छे, तेवी रीते परनां उपदेश विनानी तेमनी बुद्धि प्रवर्ते छे. वली कर्मोथी प्रेराएलो आ जीव,कुंभारनां चक्रनां स्वभावनी तुलनाने धारण करतो थको, सर्व जगोए भम्या करे छे. हवे एक दहाडो पूर्णिमाने दिवसे ते महीपाल कुमार रात्रिए सुखनी इछाथी अकाश प्रदेशमां सूतो. एटलामां त्यांथी विद्याधरो चैत्री पुनेमने दिवसे सिद्धगिरिपर आदिदेव प्रभुनां चरणकमलनी सेवा माटे जवा लाग्या. त्रणे लोकमां जेटलां तीर्थो छे, अने तेउनी यात्राथी जे फल मले, ते फल आ तीर्थनी एकज यात्रा आपे छे. तेमां पण चैत्री पुनमने दिवसे, आ पुंडरिक गिरिनी करेली स्तुति, स्वर्ग अने मोक्षनां सुखने हथेलीमां आपे छे. हवे ते आकाशगामी विद्याधरो, शक्तियें करीने नंदनवनमांथी लावेलां विचित्र पुष्पोथी श्री ऋषभदेव प्रभुनी सेवा करवा लाग्या, तथा नाना प्रकारनां अभिनयोथी भूषित, एवा संगीतने, अत्यंत प्रीतियुक्त चित्तवाला थया थका त्यां करवा लाग्या; वली विचित्र प्रकारनी भाषावालां, तथा वैराग्य गर्भित स्तवनोयें करीने, तेउ त्यां जिनेश्वर प्रभुने आराधवा लाग्या. पछी ते विद्याधरो त्यांथी उतरीने पोतानां स्थानकोप्रते चालवा लाग्या. ते वखते चंद्रचूड नामनां विद्याधरने तेनी स्त्री प्रिय वचनोथी कहेवा लागी के, हे नाथ ! आ पण

विनां आ बीजा सघला विद्याधरो चाले जाउ? केमके, श्रीऋषभदेव प्रभु मारा चित्तमां एवा तो वसी रह्या छे के, जेथी स्वर्ग अने मोक्षादिक सुखने पण हुं तेनी आगल तृणसमान लेखुं छुं. माटे हे स्वामी! आठ दिवससुधि आ पुंडरीकगिरिपर आपणे रहीयें, एवी कृपा करो.? के जेथी श्रीऋषभदेव प्रभुने हुं स्तवुं, तथा पूजुं. हवे ते विद्याधर पोते पण ते तीर्थप्रते अत्यंत भक्तिवालो हतो, अने वली तेणीये पण तेनी अत्यंत प्रार्थना करी, माटे ते त्यां रह्यो, केम के, इष्ट कहेलुं इष्ट वचन कोण उपेक्षी मेले? एवी रीते अत्यंत उत्कंठाथी चिरकालसुधी त्यां प्रभुने, पूजीने, अतृप्त थया छतां पण, तेउ जवाने इछवा लाग्या. पछी तेउ बन्ने अनुपम विमानमां बेसीने मार्गे चालतां थकां, पूर्वदिशामां रहेलां सूर्योद्याननें जोवा लाग्या, एवी रीते दूर करेल छे (शोभाथी) नंदनवन जेणे तथा अत्यंत पुष्पोवालां ते वनने जोइने, हरिणसरखां नेत्रोवाली ते स्त्री पोतानां स्वामीने कहेवा लागी के, हे नाथ! आ शत्रुंजयनी पासे घाटां वनने तमो जुउ? ते वन पुष्पोयें करीने, दिवसे पण तारासहित आकाशनां भ्रमने धारण करे छे; वली तेनां मध्य भागमां कमलोनां समूहथी शोभतो, तथा निर्मल पाणीरूपी अमृतथी भरेलो, आ मोटो कुंड छे. वली तेनी आसपास कांठाउपर चलायमान थता ध्वजनां कपडांउथी बींटेला छे, देवोने जेउये, एवा निर्मल प्रासादोने तमो जुउ? वली हे नाथ! जो तमो कृपा करो तो, शत्रुंजय गिरिनी सीमामां रहेली आ वननी शोभा मारी आंखोने क्षणवार सुख आपे. एवी रीते पोतानी स्त्रीनां मुखरूपी कमलमांथी निकलेली, तथा श्रवणने प्रीय लागे एवी. वाणी रूपी सुधाने पीने. ते विद्याधरे ते वनमां पोतानुं विमान उतार्युः तथा पोतानी स्त्रीने ते कहेवा लाग्यो के, हे हरिणसरखी आंखोवाली! आ सूर्योद्यान नामनुं वन छे. तथा सर्व कार्योमां उपयोग लागे. एवी दिव्य औषधिउ अहीं थाय छे. वली रोगोनी पीडाने नाश करनारो सूर्यावर्त नामनो आ कुंड छे. तेनां पाणीनां बिंदुथी अढारे कोढो नाश पामे छे. एवी रीते ते कुंडनो तथा वननो प्रभाव तेणीने कहेलो थको. ते विद्याधर तेनी साथे त्यां मनोहर जलाशयनां क्रीडा करवा लाग्यो. वली स्त्रीनां चपल लोचननां कटाक्षोथी लांछित थयो थको, ते

र सरखा तेनां शरीरने अत्यंत कष्ट आपवा लाग्या. ते वखते वननी रमणिक भूमि तेने नरकनी पृथ्वी सरखी लागवा मांडी, तथा कमलोवालुं नदीनुं पाणी, तेने भयंकर लागवा मांड्युं; तेम वाजांउनो नाद यमनां वचन सरखो लागवा मांड्यो, तथा तेनुं वास मारतुं शरीर तेनां परिवारने पण दुःखदायक लागवा मांड्युं. वली तेने भोजन तो फेरसमान, तथा पाणी तपावेला सीसा सरखुं, अने वरास तो दुःखदायक लागवा मांड्यो; वली तेने गायन दुर्वाक्य सरखुं, तथा नाटिक सर्पनां वींटला सरखुं, अने पुष्पो यमनां बाणो सरखां लागवा मांड्यां. वली नरकथी पण अधिक दुःख पामता एवा ते महीपालने माणसो वच्चे, तेम एकांतमां पण चेन पडवा लाग्युं नहीं. एम करतां केटलेक दिवसे ते कुसुमोनां समूहवाला उद्यानमां पहोंच्यो, तथा त्यां तेणे मुकाम कर्यो; अने तेनां दुःखथी सैन्य पण दुःख पामवा लाग्युं. जेम जेम माणसोने पूर्वे करेलुं शुभाशुभ कर्म उदयमां आवतुं जाय छे, तेवी रीते परनां उपदेश विनानी तेमनी बुद्धि प्रवर्ते छे. वली कर्मोथी प्रेराएलो आ जीव, कुंभारनां चक्रनां स्वभावनी तुलनाने धारण करतो थको, सर्व जगोए भम्या करे छे. हवे एक दहाडो पूर्णिमाने दिवसे ते महीपाल कुमार रात्रिए सुखनी इछाथी अकाश प्रदेशमां सूतो. एटलामां त्यांथी विद्याधरो चैत्री पुनेमने दिवसे सिद्धगिरिपर आदिदेव प्रभुनां चरणकमलनी सेवा माटे जवा लाग्या. त्रणे लोकमां जेटलां तीर्थो छे, अने तेउनी यात्राथी जे फल मले, ते फल आ तीर्थनी एकज यात्रा आपे छे. तेमां पण चैत्री पुनेमने दिवसे, आ पुंडरिक गिरिनी करेली स्तुति, स्वर्ग अने मोक्षनां सुखने हथेलीमां आपे छे. हवे ते आकाशगामी विद्याधरो, शक्तिं करीने नंदनवनमांथी लावेलां विचित्र पुष्पोथी श्री ऋषभदेव प्रभुनं सेवा करवा लाग्या, तथा नाना प्रकारनां अभिनयोथी भूषित, एवा सं गीतने, अत्यंत प्रीतियुक्त चित्तवाला थया थका त्यां करवा लाग्या; व ली विचित्र प्रकारनी भाषावालां, तथा वैराग्य गर्भित स्तवनोयें करीने तेउ त्यां जिनेश्वर प्रभुने आराधवा लाग्या. पछी ते विद्याधरो त्यांथी उ तरीने पोतानां स्थानकोप्रते चालवा लाग्या. ते वखते चंद्रचूड नामन विद्याधरने तेनी स्त्री प्रिय वचनोथी कहेवा लागी के, हे नाथ! आ प

विनां आ बीजा सघला विद्याधरो चले जाउ ? केमके, श्रीरुषभदेव प्रभु मारा चित्तमां एवा तो वसी रह्या छे के, जेथी स्वर्ग अने मोक्षादिक सुखने पण हुं तेनी आगल तृणसमान लेखुं छुं. माटे हे स्वामी ! आठ दिवससुधि आ पुंडरीकगिरिपर आपणे रहीयें, एवी कृपा करो. ? के जेथी श्रीरुषभदेव प्रभुने हुं स्तवुं, तथा पूजुं. हवे ते विद्याधर पोते पण ते तीर्थप्रते अत्यंत भक्तिवालो हतो, अने वली तेणीये पण तेनी अत्यंत प्रार्थना करी, माटे ते त्यां रह्यो, केम के, इष्ट कहेलुं इष्ट वचन कोण उपेक्षी मेले ? एवी रीते अत्यंत उत्कंठाथी चिरकालसुधी त्यां प्रभुने, पूजीने, अतृप्त थया छतां पण, तेउ जवाने इछवा लाग्या. पछी तेउ बन्ने अनुपम विमानमां बेसीने मार्गे चालतां थकां, पूर्वदिशामां रहेलां सूर्योद्यानने जोवा लाग्या, एवी रीते दूर करेल छे (शोभाथी) नंदनवन जेणे तथा अत्यंत पुष्पोवालां ते वनने जोइने, हरिणसरखां नेत्रोवाली ते स्त्री पोतानां स्वामीने कहेवा लागी के, हे नाथ ! आ शत्रुंजयनी पासे घाटां वनने तमो जुउ ? ते वन पुष्पोयें करीने, दिवसे पण तारासहित आकाशनां भ्रमने धारण करे छे; वली तेनां मध्य भागमां कमलोनां समूहथी शोभतो, तथा निर्मल पाणीरूपी अमृतथी भरेलो, आ मोटो कुंड छे. वली तेनी आसपास कांठाउपर चलायमान थता ध्वजनां कपडांउथी वींजेला छे, देवोने जेउये, एवा निर्मल प्रासादोने तमो जुउ ? वली हे नाथ ! जो तमो कृपा करो तो, शत्रुंजय गिरिनी सीमामां रहेली आ वननी शोभा मारी आंखोने क्षणवार सुख आपे. एवी रीते पोतानी स्त्रीनां मुखरूपी कमलमांथी निकलेली, तथा श्रवणने प्रीय लागे एवी, वाणी रूपी सुधाने पीने, ते विद्याधरे ते वनमां पोतानुं विमान उतार्युं; तथा पोतानी स्त्रीने ते कहेवा लाग्यो के, हे हरिणसरखी आंखोवाली ! आ सूर्योद्यान नामनुं वन छे, तथा सर्व कार्योमां उपयोग लागे, एवी दिव्य औषधिउ अहीं थाय छे. वली रोगोनी पीडाने नाश करनारो सूर्यावर्त नामनो आ कुंड छे, तेनां पाणीनां बिंदुथी अढारे कोढो नाश पामे छे. एवी रीते ते कुंडनो तथा वननो प्रभाव तेणीने कहेतो थको, ते विद्याधर तेनी साथे त्यां मनोहर लतागृहमां क्रीडा करवा लाग्यो. वली स्त्रीनां चपल लोचननां छेडाथी लाक्षित थयो थको, ते

युष्य, उत्तम कूल, तथा न्यायोपार्जित धन, एटलां साधनो छे. एवी रीते गुरुनां मुखरूपी चंद्रथी निकलेला देशना रूपी अमृतने पीने, पोतानां रोगसंबंधि व्रतांत महीपाले पुछ्यो. त्यारे गुरुए पण समाधिथी तेनां पूर्व भवनो व्रतांत जाणीने कह्युं के, हे महीपाल! जे रीते तें दुष्कर्म उपार्जन कर्युं हतुं, ते सघलुं तुं सांभल?

भरतक्षेत्रमां पुर नामनुं नगर छे, त्यां महागुणी श्रीनिवास नामे राजा हतो; ते राजा पितानी पेठे प्रजाने पालतो, तथा यमनी पेठे शत्रुउने हणतो, अने दानथी तो कामधेनु, चिंतामणि रत्न, तथा कल्पवृक्षोने पण दूर करतो. वली ते शीलादिक गुणोयें करीने युक्त हतो, तो पण तेने शिकारनो घणो शोक हतो; अने तेथी ते राजा (कलंक सहित) चंद्रनी तुलनाने धारण करतो. एक दहाडो ते राजा शिकारनो लोलुपी थयो थको, घोडापर बेसीने, तथा हाथमां धनुष्य धारीने, वनभूमिमां गयो. त्यां वेगवाला घोडायें करीने, हरिणनां टोलांने त्रास पमाडतो थको, ते राजा वरसादनी पेठे अविछिन्न रीते बाणोनो वरसाद वरसाववा लाग्यो. एवी रीते शिकारमां तल्लीन थयो थको, जे वस्तुउं दूर हती, तेने नजदीकमां, तथा जे नजदीक हती, तेने दूर करतो थको, ते पोतानां सैन्यथी छुटो पडी गयो. त्यां घाटा वनखंडमां कोइ प्राणीने रहेलां जाणीने, तेने मारवानी इछाथी, तेणे तीक्ष्ण बाणो मुक्यां; एटलामां तेणे "नमोऽर्हद्भ्यः" एवी रीतनी गदगद कंठनी वाणी सांभली; त्यारे तेनी उत्पत्ति जाणवाने ते जेटलामां दृष्टि फेंके छे, तेटलामां तेणे पोतानां बाणथी वींधाएला, तथा कायोत्सर्गमां रहेला, अने पृथ्वीपर पडता एक मुनिने जोया. एवी रीते हणाएला ते मुनिने जोइने, जाणे पोतानुं पुण्यरूपी वृक्ष छेदायुं होय नहीं तेम जाणीने ते खेद पामवा लाग्यो के अरे! आजे में आ शुं निबिड पाप उपार्जन कर्युं? खरेखर में आजे दुष्कर्मरूपी अग्नियें करीने बोधिबीजने बाली नांख्युं!' अरे! मारा जीवितव्यने पण धिक्कार छे!! केम के, एक जीवने हणवाथी पण माणसोने अत्यंत भयंकर नर्क मले छे. वली में दुष्टे मारुं व्यसन एटले सुधि वधार्युं के, जेथी मुनिनी हत्या मारे हाथे थइ. वली जेउए निरपराधी प्राणीउने दुःख देवारूप आ व्यसन मने शीखाव्युं,

तेउने पण धिक्कार छे. वली जेउए राजाउने एम कह्युं छे के, पापरूप एवो पण आ शिकार पापमाटे नथी, तेउनी विद्वता, तथा तेउनी तत्वबुद्धि क्षय पामो? वली अरेरे! पापी अने छकेल माणसो, आ घास अने पाणीथी तृप्त थएला निरपराधि जीवोने तीक्ष्ण बाणोथी हणे छे!! वली महायोगी, तथा देहधारी पुण्यनां राशिसरखा आ मुनिने में दुष्टे हण्यो! हवे हुं क्यां जउं? अने शुं करुं? एम कहीने, खेद पामतां थकां तेणे दुर्गति आपनार, तथा पापोनां मूल समान एवां धनुष्य अने बाणोने भांगी नांख्यां. पछी तुरत घोडापरथी उतरीने ते मुनिनी पासे आव्यो, तथा जाणे पोतानां पापोनुं प्रायश्चित लेतो होय नहीं जेम, तेम तेने तेणे नमस्कार कर्यो. वली श्वास लेता ते मुनिनां बन्ने पगो पोतानां हाथमां लेइने, नमेला एवा पोतानां मस्तकपर तेणे मुकुट रूपे कर्या; तथा पोतानां कुकर्मने निंदतो थको, ते एटलो तो रड्यो, के तेणे पडखे रहेला हरिण तथा पक्षि आदिकोने पण रडाव्यां. पछी ते कहेवा लाग्यो के, अरेरे! शिकारनां व्यसनी, तथा दुष्ट एवा में बहु दुष्कर्म कर्युं!! माटे हे देव! हवे मारे शुं करवुं? ते कहो? वली हे नाथ! में मारा निर्मल कुलमां कलंक लगाड्युं, तथा महा तेजस्वी एवा मारा पुण्यरूपी मेहेलमां में मशीनो कुचो फेरव्यो, दुराचारथी हणायेलुं छे, अंतःकरण जेनुं एवो जो कोइ पुत्र कुलमां उत्पन्न थाय, तो जाणवुं के, बापदादाउनां पुण्यरूपी वृक्षमां दावानल लाग्यो. वली कलंकी तथा तिर्यंच अने नरकमां जवा लायक एवा मने, हे भगवन्! हवे आ तमारा चरणोज शरणारूप छे. एवी रीते आंसुथी कलुषित थयेली छे आंखो जेनी, तथा पोताना आत्मानी निंदा करतो, एवो ते राजा वारंवार मुनिना चरणोने नमस्कार करवा लाग्यो. ते वखते ते मुनि पण अरिहंत प्रभुनुं स्मरण करतो थको, जाणे तेनां बाणोथीज खेंचायां होय नहीं, तेम कर्मोथी खेंचाएलां प्राणोने तजतो हवो. ते वखते ते राजा पण ते मुनिनां वधरूपी तलवारथी छेदायेला हृदयवालो थयो थको, फरीने पोकार करवा लाग्यो, तथा ते मुनिनां गुणोनी पंक्तिने याद करतो थको मूर्छा पाम्यो. एटलामां तेनां सैनिको त्यां आव्या, तथा तेने तेवी हालतमां जोइने, न्यायुक्त वचनोथी समजावीने, कंइक दुःखमांथी मुक्त

कर्यो. पछी त्यां राजाये मुनिनां देहनो अग्निसंस्कार कर्यो. तथा मनमां अत्यंत दुःखी थइने, ते पोताने घेर गयो. पछी ते राजाये मुनिहत्यादिक पापनी शांति माटे ते वनमां श्री शांतिनाथ प्रभुनुं चौमुख देरुं कराव्युं; तथा मुनिओने, सर्व पापोने नाश करनारां शुद्ध अन्न, वस्त्र आदिकनुं भक्ति पूर्वक दान देवा लाग्यो. एवो रीते त्रिकरण शुद्धिथी महाधर्म करतां थकां पण ते राजा, मुनिहत्यादिक पापोथी मुक्त थयो नहीं; अने तेज दुःखरूपी शल्यथी पीडीत थयो थको, ते श्रीनिवास राजा, महारोगथी मृत्यु पामीने सातमी नरके गयो; त्यां बंधन, छेदन आदिक महादुःख सहन करीने, तथा घणो काल त्यां नरकमां रहीने, तिर्यंच भवमां ते आव्यो. वली त्यां पण टाढ, तडको, महारोग, ताडन, क्षुधा, तृषा आदिक अज्ञानकष्ट सहन करीने, फरीने पण ते नरकमां गयो. एवी रीते नरक अने तीर्यंचमां तेणे अवतार कर्या; पछी छ भवो सुधि मनुष्यपणामां कुष्टी थइने ते मृत्यु पाम्यो. वली हे महीपाल ! आ भवमां पण पूर्वे करेली मुनिहत्यानां फलरूप तने कुष्ट थयो; वली हांसीथी पण जो मुनिनी विराधना करवामां आवे, तोपण ते दुःखनो समूह आपे छे, त्यारे जे मत्सरभावथी मुनिने पीडे, तेनी तो वातज शी करवी ? वली मुनिने कोपाववाथी एक भवमां करेलुं पुण्य जतुं रहे छे, अने मुनिनो घात करवाथी तो सातमी नरके जवुं पडे छे. माटे मुनिनी हत्यारूपी वेलडी आ लोक अने परलोकमां पण, दुःख, दुर्भाग्य, तथा दुर्गति आदिक माठां फलो आपे छे. वली त्रिकरण शुद्धिथी आराधन करायेलो मुनि सर्व प्रकारनां सुखो आपे छे, अने तेनी विराधना करवाथी नरक तथा तिर्यंच संबंधि दुःखो मले छे. वली चारित्री, तथा महा पराक्रमी एवा व्रतधारीओ तो एक बाजु रहो, पण क्रिया रहित अने निर्गुणी मुनिनी पण विराधना कोइ पण वखते करवी नहीं. माटे गमे तेवो पण चारित्रथी भूषित थएलो मुनि, गृहस्थीये पुण्यनी इच्छाथी गौतम स्वामीनी पेठे पूजवो. वली मुनिनुं शरीर कंइ वंदनीक नथी, पण तेनो वेष वंदनीक छे, माटे एवा वेषधारी मुनिने पण पुण्यशालीये पूजवो. वली मुनिनुं आचरण वंदनीक छे, पण वेष वंदनीक नथी, माटे निनुं आचरण तपासीने मोक्षनी इच्छावालाये तेने पूजवो. वली क्रिया

रहित मुनिने पण पूजवाथी, लज्जाथी ते व्रतने धरनारो थाय छे, अने उत्तम क्रियावालो मुनि पण, तेनी अवज्ञा करवामां आवे, तो ते व्रतमां शिथिल थइ जाय छे. वली जे माणसो व्रतधारीने जोइने पण नमता नथी, तेउनुं दान, दया, क्षमा, तथा शक्ति सघलुं अल्प सिद्धिने करनारुं छे, माटे जैनलिंगने धरनारा मुनिउने त्रिकरण शुद्धिथी आराधवा; पण स्वार्थनो नाश करनारी एवी तेउनी निंदा तो सर्वथा प्रकारे नज करवी. तेथी हे महीपाल! तारा कुष्टोनुं तेज प्रगट कारण छे, माटे क्रोधातुर मुनिउने पण तारे कोइ दहाडो विराधवा नहीं. हवे सूर्यावर्त कुंडनां पाणीनी कथा तुं सांभल? शत्रुंजय पर्वतनी नीचे पूर्व दिशामां सूर्यवन नामे मोहोटुं वन छे. ते वनमां सूर्य वैक्रिय शरीरथी साठ हजार वर्षो सुधि, जिननी सेवा माटे रह्यो हतो, तेथी तेनुं नाम सूर्योद्यान कहेवाय छे. ते वनमां ऋषभदेव प्रभुनी दृष्टिरूपी अमृतथी भरेला पाणीथी भरेलो सूर्यावर्त नामनो कुंड छे. महा भक्तिथी जिनस्नात्रमां जोडेलुं तेनुं पाणी हत्यादि दोषोने, तथा सर्व कुष्टोने नाश करनारुं छे. हवे ते वखते मणिचूड नामनो विद्याधर पोतानी स्त्रीसहित, चैत्री पुनेमनां महोत्सवमां विमलाचलपर जिनने नमीने आ सूर्योद्यानमां आव्यो; तथा त्यां पण श्री ऋषभदेव प्रभुनी प्रतिमाने नमीने, तथा ते कुंडनुं पाणी लेइने, ते पोतानां नगर प्रते चाल्यो. ते वखते विमानमां बेठेली तेनी स्त्रीये तने तेवी रीतनो जोयो, तेथी दया लावीने, तथा पतिनी आज्ञा लेइने तेणीये तारापर ते पाणी रेड्युं; अने तेथी ते सघली व्याधिउ तारा शरीरथी दूर गइ, तथा तने ते कहेवा लागीउं के, तारे विषे हवे अमो रहेवाने समर्थ नथी; वली प्रायें करीने सर्व हत्याउ नरकादिक दुःखो देनारी छे, तेमां पण मुनिनी हत्या तो विशेषें करीने भवभ्रमणनां कारणरूप छे. वली दूषण रहितोये वचनथी पण मुनिने कोपित करवो नही; वली परनी निंदा प्रायें करीने महादुःखनां समूहने देनारी छे. वली उत्कृष्ट मुनिउयें, परनिंदा, परद्रोह, तथा परधननी चोरीने, मोटां पापो कहेलां छे. एम कहीने ते मुनि ज्यारे मौन रह्या, त्यारे महीपाल कहेवा लाग्यो के, हे भगवन्! तमो मने जंगम तीर्थ समान आजे मल्या छो; धर्मरूपी नेत्रनो प्रकाश करवाथी, तथा सर्व तीर्थोनां उपदेशथी, तमो अतुल्य तीर्थ

समानज छो; अने तेथी तमोज प्राणीउने सेवनीक, पूजनीक, तथा ध्यान धरवालायक छो, वली बुद्धिवान पण गुरुविनां धर्मनां तत्वने जाणी शकतो नथी. वली गुरुना उपदेश विनां डाह्या माणसने पण, सुवर्णसीद्धि, कला, विद्या, धर्मतत्व, तथा धनार्जन पण सिद्ध थतां नथी. वली माता, पिता, जाइ आदिकनां अनृणी तो थइ शकीयें, पण धर्म देनारा गुरुनो अनृणी विविध उपायथी पण प्राणी थइ शकतो नथी. वली पिता, माता विगेरे सर्व संबंधिउ तो जवे जवे मले छे, पण धर्मने देनारा सद्गुरु तो, पुण्यथी क्वचित् जगोएज मले छे. अने तेथी हे जगवन्! आ जवरूपी समुद्रमां जमता, तथा प्रमादी चित्तवाला, एवा मने अमूल्य चिंतामणि रत्न समान तमो मल्या छे; वली तमोए मने आ तीर्थ बताव्युं, तेथी हुं धन्योमां पण धन्य, अने पुण्यवंतोमां पण पुण्यवंत थयो छुं. वली सघली क्रियाउ गुरुनी साक्षीयेज सफल थाय छे, पण बीजी रीते थती नथी, केम के, जो सूर्य न होय, तो आंखोवालो पण वस्तुने जोइ शकतो नथी. एवी रीते गुरुनी प्रार्थना करवाथी गुरुये कह्युं के, मारे पण अहींज रहेवुं छे; ते सांजली आनंदसहित महीपाल त्यांथी उठ्यो; पछी वाजांउनां नादोथी संज्रांत करेल छे, दिशाउनां पण जागो जेणे, तथा महापराक्रमी एवा ते सर्वे सेनासहित गुरुनी साथे चालवा लाग्या. एवी रीते अविछिन्न प्रयाणोथी सूर्यवनमां जइने तेउये वृक्षोनी छायामां सैन्यनो पडाव नांख्यो; तथा त्यां गुरुये कहेली विधियें करीने, तेउये कुंडमां तथा चैत्यमां उत्सवपूर्वक अरिहंत प्रजुनी पूजा करी, अने महोदय मेलव्यो. वली त्यां विद्याधरोये विद्यानां बलथी, ध्वजानां समूहोथी शोजतां रत्ननां विमानो वनाव्यां. पछी विमानोनां समूहथी आकाशतलने आछादन करता एवा तेउ, सिद्धिरूपी मेहेलनी अग्रवेदिका सरखा शत्रुंजयप्रते पहोंच्या. त्यां मंदिरोपर, यात्रा करनाराउनां संपूर्ण पुण्यनां ढगला सरखी सुवर्णनां कलशोनी श्रेणि जोइने तेउ आनंद पाम्या. वली त्यां त्रणे जुवनोमां उत्तम तीर्थ समान एवा ते पर्वतनां अग्र जागने पामीने, तथा मोक्ष सुख देनारा श्री ऋषजदेव प्रजुने जोइने, तेउ पवित्रपणुं पाम्या. त्यां विमानमांथी उतरीने, तथा रायणनां वृक्षने प्रदक्षिणा देइने, तेउये श्रीऋषजदेव प्रजुनां चरणोने नमस्कार कर्यो. दूषण रहित एवा तेउ, जिननां प्रा-

सादने जोइने आदरपूर्वक, प्रीतिथी संपूर्ण अंगवाला थया थका, हाथो उंचा करीने नाचवा लाग्या; वली आदिदेवनां दर्शनथी तेउ पोतानां आत्मानी स्तुति करवा लाग्या, तथा ते वखते राजाए अवचनीय पुण्य उपार्जन कर्युं; वली तेउए प्रथम उत्तम किरणोवालां रत्नोथी प्रभुने वधाव्या, तथा पुण्यनां समूहथी उछलता थका पृथ्वीपर लोटीने तेउ नमस्कार करवा लाग्या. वली त्यां तेउ शत्रुंजयी नदीमां नाहीने, बहारथी अने अंतरथी शुद्ध थया, अने त्यां तेउए यशथी उज्वल थएलां वस्त्रो पेहेर्यां. वली विद्याधरोए नंदन वनमांथी लावी आपेलां पुष्पोयें करीने, तेउए त्रणे लोकमां तिलक समान एवा प्रभुनी पूजा करी. एवी रीते गुरुनां उपदेशथी, मननां हर्षपूर्वक, तेउए ते तीर्थमां सर्व सुखोने आपनारुं धर्मकार्य कर्युं. वली तेउए त्यां अत्यंत हर्षथी, पवित्र पदो तथा अर्थोवालां स्तवनोथी जिनेश्वर प्रभुनी स्तुति करी. वली त्यां तेउए भक्तिथी शुद्ध उपकरणोयें करीने, गुरुने प्रतिलाभीने, तथा दीनादिकोने दया पूर्वक दान देइने आनंद मेलव्यो. वली जिननी पूजामां जे पुण्य थाय छे, तेथी अनुक्रमे सोगणुं, तथा हजार गणुं पुण्य जिननी प्रतिमा अने प्रासाद बनाववाथी थाय छे. वली अरिहंत प्रभुनी प्रतिमा अने मंदिर बनाववाथी प्राणी पापोथी मुक्त थइने स्वर्गने भजनारो थाय छे, तथा तीर्थनी रक्षाथी अनंतगणुं पुण्य मले छे; एवी रीतनुं गुरुनुं वचन सांभलीने, महीपाले अत्यंत भक्तिथी प्रतिमा सहित उंचुं जिनमंदिर बंधाव्युं. एवी रीते त्यां परम उत्सवथी तेउ अठाइ महोत्सव करीने, गुरुनां वचन पूर्वक विमानो सहित रेवताचल पर्वतप्रते गया. त्यां पण नेमिनाथ प्रभुनां चरणमां तत्पर रहीने, तेउए अठाइ महोत्सव कर्यो. त्यां सूर्यमल्ल राजा, प्राप्त थएल छे महोदय जेउने एवा पोतानां पुत्रोने वहु सहित आवेला जाणीने, तुरत सामो आव्यो. जंगम तीर्थसमान एवा ते पिताने जोइने, आदरवाला, तथा भक्तिवंत एवा तेउ बन्ने पृथ्वीपर लोटीने तेने नमस्कार करवा लाग्या; त्यारे राजाए पण न्याय अने धर्मथी जेम बन्ने पक्षोने तेम, पोताना बन्ने हाथोथी पृथ्वीपर रहेला ते गुणी पुत्रोने उंचक्या. पछी तेउ अरसपरस अत्यंत प्रीतिथी भेट्या; अने ते वखते तेउने जे हर्ष थयो, ते वचनथी पण कही

न शकाय तेटलो हतो. पछी राजा हाथीपर चडीने, तथा पुत्रोने पण हाथीपर चडावीने, मागण लोकोने उंचे प्रकारे धन देतो थको नगरमां दाखल थयो. त्यां उंचा मांचाउ, तथा धजाउनां समूहोने, अने मनोहर तोरणोने, तथा नाटकने जोता थका तेउ राजमंदिर प्रते आव्या. त्यां राजाए ते बन्ने विद्याधरोने सुवर्ण, हाथी, घोडा विगेरेथी सत्कार करीने, परिवार सहित तेउने पोताने स्थानके पहोंचाड्या; तथा तेज दिवसे राजाए महीपालने राज्य आप्युं. गुणोथी मनोहर एवा ते महीपाले राज्यने यत्नपूर्वक पालातां थकां, अखंड यश रूपी जंडारोने जर्या. ते महीपाल राज्य करते बते, अन्याय, रिपुनो जय, डुकाल के रोगोनो संजव पण पृथ्वीपर रह्यो नहीं; वली ते वखते वादलांउ इछित वृष्टि करतां, वायु तापनो नाश करतो, तथा वृक्षो संपूर्ण फलो आपतां. वली ते महीपाल स्त्री सहित आकाशगामिनी विद्याथी कृत्रिम तथा शाश्वतां मंदिरोमां जिनेश्वरोने पूजतो हतो. वली तेणे शत्रुंजय, तथा गिरनार आदिक पर्वतोपर, शेहेरोमां, गामोमां, तथा बगीचाउमां जिननां मंदिरो बनाव्यां. वली ते चोरासी गढ, तथा चोरासी पद, अने एक लाख बत्रीस हजार गामोने जोगवतो हतो. वली ते सात लाख घोडा, सातसो हाथी, तथा सातसो रथोनो स्वामी हतो. एवी रीते चारसो वर्ष राज्य पालीने, अंते पोतानां पुत्र श्रीपालने राज्य सोंपीने, महीपाल संसारथी विरक्त थयो. वली तेणे देवपालनां पुत्रने, जलरूपी किल्लावालो, तथा धान्यनां जंडाररूप सिंधदेश आप्यो. एवी रीते ते महीपाल राजा विवेक सहित पुण्यनो समूह बांधीने, स्त्री सहित श्री शत्रुंजय पर्वतप्रते गयो; तथा त्यां श्रीकीर्ति नामनां मुनिवर पासेथी तेणे दीक्षा लीधी; अने आयुनो क्षय होते बते निर्मल ज्ञानथी जासित थयो थको, ते मोक्ष पाम्यो. तेना वंशमां हे इंद्र! यश अने पुण्यनां संचयवालो, आ रिपुमल्ल राजा थयो बे; वली ते रैवताचलनी पासे रहे बे, माटे ते धन्य बे, अने ते अतूल शोजावालो थयो थको त्रण जवे मोक्षे जशे. वली हे इंद्र! स्मरण करवाथीज सर्व इछित फलने देनारुं, आ शास्वतुं था आदि तीर्थ बे, अने तेनो महिमा कहेवाने तत्वने जाणनाराउ पण समर्थ नथी. वली हे इंद्र! अहींथी पूर्व दिशामां, विकस्वर थएलां

नाना प्रकारनां वृक्षोवालुं, तथा सिद्ध अने अरिहंत प्रभुनी प्रतिमाने नमस्कार करता, तथा तेनुं स्मरण करता एवा माणसोनां पापोने नाश करनारुं, आ सूर्योद्यान छे, तथा अत्यंत सुगंधिनां समूहथी शोभतुं छे पाणी जेनुं, तथा प्रभावें करीने मनोहर, अने सघला कोढोने नाश करनारो आ सूर्यावर्त कुंड छे.

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिए रचेला, महातीर्थ श्री शत्रुंजयना महात्म्यमां महीपालना चरित्रना वर्णननो बीजो सर्ग संपूर्ण थयो. श्रीरस्तु.

तृतीयः सर्गः प्रारभ्यते.

राज्यने अवसरे दीठेलां छे कमलो जेउए एवा युगलीआंउए प्रभुना चरणोने कमल सरखा जोइने जलरहित कमलो पृथ्वीपर होय छे, एवुं जाणीने, आश्चर्य थइ, जेउए पाणीथी सींच्या नहीं, एवा प्रथम प्रभुना चरणो सर्वथा प्रकारे भवरूपी महा तापने छेदवा माटे थाउ ?

हवे श्री वीर प्रभु इंद्रने कहे छे के, हे इंद्र! एवी रीतें में तीर्थनो आ संक्षेपथी महिमा कह्यो; हवे आ तीर्थनां प्रभावनी विचित्रताने तुं सांभल? अनंतो काल थशे, तो पण आ तीर्थ नाश पामशे नहीं; हवे आ अवसर्पिणी कालमां तेना संबंधमां जे थयुं छे, तेनी कथा तुं सांभल? आ जंबूद्वीपनां दक्षिण भरतार्धमां गंगा अने सिंधुना मध्य भागमां युगलीआउ रहेता हता. तेउमां विमल नामनां हाथीपर चडवाथी विमलवाहन नामनो, युग्मी धर्मवालो, अने सुवर्ण सरखी कांतिवालो, पेहेलो कुलकर थयो. तेनो पुत्र चक्षुष्मान् तेनो पुत्र यशस्वी, तेनो पुत्र अभिचंद्र, तथा तेनो पुत्र प्रसेनजित थयो; तेनो पुत्र मरुदेव, तथा तेनो पुत्र न्यायें करीने उज्ज्वल नाभि नामे थयो, तेनी स्त्री मरुदेवी नामे हती, अने ते हमेशां आर्जव गुणोथी उज्ज्वल हती. हवे आ अवसर्पिणीनां त्रीजा आराने छेडे, श्री ऋषभदेव प्रभुनो जीव सर्वार्थसिद्धथी चवीने ते मरुदेवीनी कुक्षिमां आव्यो. असाड वद चोथने दवसे, चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्रमां आवते छते तेणीए रात्रिने छेडे नीचे प्रमाणे चौद स्वप्नो जोयां. वृषभ, हाथी, सिंह, लक्ष्मी, पुष्पमाला, कलश, ध्वजा, अग्नि,

रत्ननो राशि, पद्म सरोवर, विमान, क्षीरसमुद्र, चंद्र अने सूर्य, एवी रीते तेणीये चौद स्वप्नो जोयां. एवी रीते प्रभुनो ज्यारे गर्भमां अवतार थयो त्यारे त्रणे जगतमां उद्योत थयो, तथा नारकीउने पण उंचे प्रकारे सुख थयुं. पछी मरुदेवा माताए जाग्रत थइने, नाभिराजा पासे आवीने, तेमने मिष्ट वचनोथी ते व्रतांत कह्यो. सरल स्वभावी नाभिराजाये पण विचारिने कह्युं के, हे प्रिया! आ स्वप्ननां प्रभावे करीने, तने अद्भूत पुत्र थशे. एटलामां आसन कंपवाथी इंद्रे त्यां आवीने, तथा मरुदेवा माताने नमस्कार करीने कह्युं के तमोने पुत्रनी उत्पत्ति थशे. पछी मनोहर मुखवाली ते मरुदेवा माता, पृथ्वी जेम उज्ज्वल रत्नने, तेम मनोहर गर्भने धारण करवा लागी. जगतनां आधार, जगतनां सार, तथा जगतनां गुरु एवा प्रभुने धारण करती मरुदेवा माता, जाणे प्राणीउनी दयाथीज होय नहीं, तेम धीरेधीरे चालवा लागी. ते वखते धनद, इंद्रनी आज्ञाथी, जृंभक देवोये तैयार करेली इछित वस्तुउथी तेणीनां हर्षने वधारवा लाग्यो. हवे गर्भकाल संपूर्ण थये छते चैत्र वदी आठमने दिवसे, तथा चंद्र उत्तराषाढा नक्षत्रमां आवते छते,अने बीजा ग्रहो पण उंचा होते छते, निशीथ समये मरुदेवा माताये व्याधि रहित युगलरत्नने जन्म आप्यो. ते वखते वायु सुखेथी वावा लाग्या, तथा नारकीनां जीवो पण आनंदित थया, अने त्रणे जगतमां प्रकाश थयो, तथा देवडुंडुभि वागवा लागी. ते वखते तपावेलां सुवर्णसरखी कांतिवाला, वृषभनां लक्षणवाला, सर्व सुलक्षणें करी संपूर्ण, तथा जाणे देवसंबंधि शरीर सहितज आव्या होय नहीं, तेम प्रभु शोभवा लाग्या. ते वखते आसनो चलायमान थवाथी प्रभुनो जन्म थयेलो जाणीने अत्यंत हर्षयुक्त थइने छपन्न दिक्कुमारीउ त्यां आवी; तथा प्रभुने अने प्रभुनी माताने नमीने, अने भक्तिथी तेनी स्तुति करीने, पोताने धन्य मानती थकी तेउ नृत्य करवा लागी. वली तेउये दर्पण, कलश, पंखा, चामर, रक्षाबंधन आदिक पोतानुं सर्व कार्य संपूर्ण कर्युं. वली आसनो कंपवाथी, अवधिज्ञाने करीने प्रभुनो जन्म जाणीने, सघला देवो विमानोथी आकाशने शोभावता थका त्यां आव्या. ते वखते सुधर्मेंद्र पण भक्तिथी पोतानुं वै-

१ करीने, सूतिकागृहमां जइ, प्रभुने अने मरुदेवा माताने नम-

स्कार कर्यो; तथा माताने अवस्वापिनी निद्रा देइने, तथा तेमनी आज्ञा लेइने, अने प्रभुनुं प्रतिबिंब त्यां रहेवा देइने तेणे प्रभुने पोताना हाथथी लीधा. त्यां इंद्रे अंतरमां भक्तिभाव लावीने पोतानां पांच रुपो कर्यां; एक रूपथी प्रभुने लीधा, एक रूपथी छत्र धर्युं, एक रूपथी वज्र लीधुं, तथा बे रूपथी चामर लीधां. पछी ते सघला देवो, विमानोथी आकाशने चितरता, तथा रत्नोथी चंद्रनी कांतिने उल्लेखता, अने शब्दोथी जगतने पण फोडता थका मेरुपर्वत तरफ चालवा लाग्या. त्यां पांडुक नामनां उद्यानमां अर्धचंद्र सरखा आकारवाली अतिपांडुकंबला नामनी शिलाप्रते इंद्र पहोंच्यो. त्यां इंद्रोए आभियोगिक देवोनी मारफते रूपानां अने रत्नानां, सोनानां अने रत्नानां, सोनानां, रूपानां, अने माटीनां कलशो बनाव्या. पछी अद्भूत कांतिवालो ते इंद्र दिव्य सिंहासनपर पूर्व सन्मुख प्रभुने खोलामां लेइने बेठो. पछी समुद्र, नदी, कुंड, तलाव तथा द्रहोमांथी पाणी लावीने इंद्रोये प्रभुनो स्नात्रमहोत्सव कर्यो; पछी तेउये मनोहर बरास, लेपन, पुष्प, फल, अक्षत, वस्त्र, आभरण विगेरेथी प्रभुनी पूजा करी. पछी निर्मल भाववाला ते इंद्रोये हर्षथी प्रभुनी आरती उतारीने, नीचे प्रमाणे स्तुति करवा मांडी. हे स्वामी! हे युगादीश! हे जगतनां गुरु! हे अर्हन्! हे ध्यान धरवा लायक! हे निरंजन! तमो जय पामो? वली अढार कोडा कोडी सागरोपम सुधि नाश पामेलो छे धर्म जेउनो, एवा प्राणीउनो उद्धार करनारा, तथा अज्ञानरूपी अंधकारनां समूहनो नाश करवामां सूर्य समान एवा हे प्रभु! तमो जयवंता वर्तो? वली हे कल्याणरूप व्यवहारनां करनारा! तथा सर्व सुखनां स्थानक सरखा तमो जयवंता वर्तो? वली हे स्वामी! आजे जे तमारुं मने दर्शन थयुं, तेथी हुं सघला पुण्यशालीउमां विशेष पुण्यशाली छुं. वली वृक्ष, पत्थर, पर्वत तथा पृथ्वी आदिकने धरी राखवाने तो कोइक पण समर्थ थइ शके, पण हे नाथ! आ भवरूपी समुद्रमां पडता प्राणीउनां समूहने तो तमोज उद्धार करनारा छो. वली राग आदिक शत्रुथी पीडाएला लोकोने तमो निर्भय करनारा छो, वली मुक्तिरूपी स्त्री मेलववामां दूत समान एवा हे धर्मनां राजा! तमो जयवंता वर्तो? वली बाह्य अने अंतरंग शत्रुउनां समूहोथी पीडाता प्राणीउनो जीवद

थानां उपदेशथी तमोज उद्धार करशो. वली हे ईश! पिंडस्थ, पदस्थ तथा रूपस्थ ध्यानथी, योगीउं तमोने ध्यावे छे, अने तेउंनां आठ कर्मोनो नाश करीने, तमो तेमने पोताने स्थानके पहोंचाडशो. वली हे भगवन्! आपनां प्रसादथी ज्यांसुधिमां मने मोक्षसुख मले, त्यांसुधि हमेशां मने आपनां चरणनुं शरणुं थाउं? एवी रीते प्रभुनी स्तुति करीने कृतार्थ थएला ते इंद्र उत्सवपूर्वक प्रभुने लावीने, फरीने तेमनी माता पासे मुक्या. वली त्यां उंसीके बे कुंडल, दीव्य वस्त्रो, हार अने मुकुट मुकीने तेणे मातानी अवस्वापिनी निद्रा पाछी खेंची लीधी. वली त्यां इंद्र अप्सराउंने धाव तरीके मुकीने, तथा पोते नंदीश्वर द्वीपमां अठाइ महोत्सव करीने देवलोकमां गयो. पछी प्रभाते पुत्रनो ते वृतांत जाणीने नाभि राजाये पण पोतानी ऋद्धिने अनुसारे महोत्सव कर्यो. प्रभुना साथलमां ऋषभनुं चिन्ह हतुं, तथा स्वप्नमां पण पेहेलां माताये ऋषभ जोयो हतो, तेथी मातपिताये तेमनुं "ऋषभ" नाम पाड्युं. इंद्रे प्रभुनां अंगुठामां मोतीनां सरखुं उज्वल अमृत मुक्युं हतुं, तेथी ते कारणने अनुसरीने प्रभुनां दांतो पण मोती सरखा उज्वल थया. वली इंद्रनील मणिनां बनावेला घुघरा, चरणरूपी कमलोमां लीन थयेला अने गुंजारव करता भ्रमरानी पेठे शोभता हता. बाल्यपणामां प्रभु पांच धावरूप अप्सराउंथी सेवाता हता, ते जाणे पांच सुमतिउंरूपी धावमाताउंथी वृद्धि पमाता संयमधारीज होय नहीं तेम शोभता हता. वली त्यां चार निकायनां देवो इंद्रनी आज्ञाथी वयथी प्रभु जेवडा थइने, (पण गुणोथी प्रभु जेवा नहीं) प्रभुनी साथे क्रीडा करता हता. वली कौतुकथी प्रभु जे जे प्रकारे क्रीडा करवानी इछा करता, ते ते प्रकार देवो प्रभुनी सन्मुख रजु करता. एवी रीते एक वर्ष गया बाद प्रभु ज्यारे पोताना पितानां खोलामां बेठा हता, त्यारे सौधर्मेंद्र तेमनां वंश स्थापनमाटे सेलडीनो सांठो लेइने आव्यो. जाणेलछे इंद्रनी इछा जेणे एवा प्रभुए ते सांठो ते वखते लीधो, अने तेथी प्रभुनां वंशनुं "ईक्ष्वाकु" नाम पाडीने इंद्र गयो. हवे अंगुष्टपाननी अवस्थाने ओलंगी जनारी वयने पामीने प्रभु उत्तरकुरुक्षेत्रमां थतां दिव्य फलोथी संतोष पामवा लाग्या. एम रतां थकां प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पामता थका कल्पवृक्षनी पण स्पर्धा

करवा लाग्या, तथा सौभाग्य अने रूपरूपी राजाने रहेवानां भुवन सरखा यौवनने पाम्या, अने ते वखते तपावेल सुवर्ण सरखी कांतिवाला, तथा जन्मनां चार अतिशयोथी उज्वल, अने पांचसो धनुष्यना माननी कायावाला उत्तम लक्षणो सहित शोभवा लाग्या. पछी एक दहाडो इंद्रे प्रभुने कह्युं के, हे करुणानां भंडार! जो के तमारे आ जगतनो व्यवहार प्रकाशवो छे. तेम तमो संगरहित, तथा भवथी उद्विग्न थया छो, अने मोक्षसुखमां रक्त थया छो, तो पण मने तमो आ वखते लग्ननो महोत्सव देखाडो? एवी रीतनां इंद्रनां आग्रहथी प्रभुये ते वात अंगीकार करी. एवी रीते ज्यारथी प्रभुये आ लग्ननो व्यवहार देखाड्यो छे, त्यारथी आजसुधी पण तेज व्यवहार प्रवर्ते छे. एवी रीते छ लाख पूर्व गया बाद प्रभुने सुमंगलाथी भरत अने ब्राह्मीनुं युगल थयुं, वली पछीथी अनुक्रमे तुल्यरूपवालां ते सुमंगलाथी प्रभुने उगणपचास जोडलां थयां, तथा सुनंदाथी प्रभुने सुंदर आकृतिवाला, तथा जगत्नो उद्धार करवामां समर्थ, बाहुबलि अने सुंदरी नामनां अपत्यो थयां. हवे प्रभुनां अतिशय दानथी जाणे लज्जायुक्त थयां होय नहीं जेम, तेम कल्पवृक्षो अनुक्रमे निष्फल थयां थकां अलक्ष्य थयां, त्यारे ते युगलीआंउ मांहोंमांहें कलह करवा लाग्या, तथा एक बीजाउ प्रभुपासे तेनी फर्याद करवा लाग्या, त्यारे प्रभुये तेमने कह्युं के, लोकोपर राजा अमल करे छे, अने ते राजा तो माणसोथी जलें करीने अभिषेक करायेलो होवो जोइयें, माटे मारो अभिषेक करवामाटे तमे यत्न करो? एवी रीतनुं प्रभुनुं वचन सांभलीने ते युगलीआंउ पाणी लेवामाटे तलावे गया, एटलामां आसन कंपवाथी ते अवसर इंद्रोये जाण्यो, अने तेथी तुरत त्यां आवीने, तेउये मोटो मंडप रच्यो, तथा तेमां मणिनी पीठिकापर सिंहासन स्थाप्युं, ते पर प्रभुने वेसाडीने, जन्मस्नात्रनी पेठे हर्षथी विधिपूर्वक तेउये प्रभुनो राज्याभिषेक कर्यो. वली तेउये प्रभुने योग्य स्थानके दरेक अंगोपर आभूषण विगेरे पहेराव्यां, तथा देवोये चंद्रनी कांति सरखां छत्र चामरो पण प्रभुपर धर्यां, तथा सघला इंद्रो, प्रधान, मंडलिलिकादि सर्व व्यापारने धरता थका एकठा थइने, प्रभुनी पासे वेठा. एटलामां ते युगलीयांउ कमलनां पात्रोमां पाणी लेइने तुरत प्रभुपासे

आव्या, त्यां तेउये प्रजुने ऐश्वर्यथी जूषित थयेला जोया, ते वखते देहथी उत्पन्न थती कांतियें करीने नाश करेल ले, देवोनी पण शोजा जेणे, तथा जंगम प्रतापनी पेठे चर्मदृष्टिथी न जोइ शकाय एवा प्रजु शोजता हता. आजूषण, लेप, वस्त्र अने पुष्पमालाउंथी जूषित थयेला, ते प्रजुने जोइने, ततक्षण उत्पन्न थयेला विवेकथी तेउ विचारवा लाग्या के, जो आपणे प्रजुनां मस्तकपर अजिषेक करीशुं, तो प्रजुनां अंगपरनुं लेपन विगेरे नाश पामशे. एम विचारि तेउये ते पाणीथी प्रजुना चरणपर अजिषेक कस्यो, अने देवो ते आश्चर्यसहित जोवा लाग्या. पली सुधर्मेंद्रे, तेउने, प्रजुनां राज्यरूपी मेहेलनां दृढ स्तंज सरखा अधिकारीउ बनाव्या, तथा अहीं युगलीआंउने स्वयमेव विनय थयो, तेथी इंद्रे त्यां “ विनीता ” नामनी नगरी वसाववानो धनदने हुकम कस्यो. एवी रीतें प्रजुनां राज्याजिषेक वखते इंद्रना हुकमथी धनदे रत्न अने सुवर्णना समूहोथी नवी नगरी वसावी. ते नगरी बार योजन लांबी नव योजन पोहोली, आठ दरवाजावाली, मोटा किल्लावाली, तथा तोरणोथी मनोहर लागती हती. वली ते नगरीने फरतो बारसें धनुष्य उंचो, आठसें धनुष्यनां पायावालो, तथा एकसो धनुष्य पोहोलो तेणे खाइसहित गढ बनाव्यो. ते सुवर्णनां गढपर रहेली मणिउंनां कांगरांनी श्रेणि, मेरुपर रहेली ताराउंनी पंक्ति सरखी शोजती हती. वली ते नगरीमां चोखुणा, त्रिखुणा, गोल, स्वस्तिकनां आकारवाला, सर्वतोजद्र (चारे बाजुउंथी सरखा) एक जोंवाला, बे जोंवाला, त्रण जोंवाला, तथा ठेक सात जोंवालासुधि राजाना रत्न अने सुवर्णनां क्रोडो मेहेलो हता. वली त्यां इशान दिशामां चोखुणो, तथा सात जूमिवालो, मेहेल, तेणे नाजिराजामाटे बनाव्यो. वली पूर्वदिशामां सातजूमिवालो, सर्व बाजुथी सरखो अने गोल, मेहेल तेणे जरतने माटे बनाव्यो, वली अग्नि खुणामां तेणे बाहुबलिमाटे पण जरतना जेवोज मेहेल बनाव्यो, अने बीजा कुमारोनां मेहेलो तेणे ते बन्नेनी वच्चे बनाव्या, अने तेउंनी वच्चे एकवीस जूमिवालो, तथा त्रैलोक्यविज्रम नामनो मेहेल, तेणे श्री षजदेव प्रजु माटे रत्नोनी श्रेणिउंथी बनाव्यो, ते मेहेल सर्व बाजुयेथी कलशोथी वींटायेलो, अने चलकती धजाउंनां मीशथी जाणे

नाचतोज होय नहीं, तेम शोजतो हतो. वली ते मेहेल एक हजार ने आठ मणिनी जालीउथी, ते जाणे तेटलां मुखोथी प्रजुनो यश बोलतो होय नहीं, तेम शोजतो हतो. वली ते नगरीमां कल्पवृक्षोथी विंटायेली, किल्लावाली, अने पताकाउनी श्रेणिने धारण करनारी, हाथी अने घोडानी शालाउ हती. वली त्यां प्रजुनी कृपाथी मनोहर रत्नमय सुधर्मा सजा सरखी, सर्वप्रजा नामनी सजा थइ. वली त्यां पंच वर्णवाली कांतिथी आकाशने शोजावनारी मणिउनां तोरणोनी श्रेणि चारे दिशाउमां शोजती हती. वली त्यां नगरीनी वच्चे कुबेरे, एक हजार ने आठ मणिनां बिंबोथी शोजतुं चार गाउ उंचुं, मणि रत्न अने सुवर्णमय, नाना प्रकारनी जूमि अने ऊरुखावालुं श्रीरुषजदेव प्रजुनुं मंदिर बनाव्युं. वली त्यां तेणे सामंत, मंडलिक विगेरेनां नंदावर्तादिक मनोहर मेहेलो बनाव्या. वली त्यां तेणे, ध्वजानां अग्र जागथी खेदित करेल छे, सूर्यनां घोडाउ जेणे, एवां उंचां एक हजारने आठ जिनेश्वर प्रजुनां मंदिरो बनाव्यां; ते मंदिरो चोवटाउमां बांधेलां हतां, तेथी तेपरनां सुवर्ण कलशो अत्यंत शोजता हता. तेणे कौबेरी दिशामां मेरुसरखा उंचा, तथा सुवर्ण अने रत्नमय, अने धजाउवाला वेपारीउनां मेहेलो बनाव्या. दक्षिण दिशामां विविध प्रकारनां क्षत्रिउनां मेहेलो थया, अने जाणे तेमां रहेनाराउनां तेजोज होय नहीं, तेम त्यां शस्त्रशालाउ थइ. तेवीज रीते चारे दिशाउमां देवविमान सरखी उत्तम शोजावाला, नगरनां लोकोनां क्रोडो गमे मेहेलो त्यां शोजवा लाग्या. वली त्यां किल्लानी बहार सामान्य कारिगरोनां चारे दिशाउमां, सर्व धनथी जरपूर क्रोडो घरो थयां. वली दक्षिण अने पश्चिम दिशामां एक जोंथी मांडीने त्रण जूमिसुधि उंचां कारु लोकोनां घणां घरो थयां. एवी रीते एक रात्रि दिवसमां धनदे ते नगरी बनावी, तथा तेमां सुवर्ण, रत्न, धान्य, वस्त्र अने आजूषणो तेणे बनाव्यां. वली तेज रात्रिदिवसमां तेणे तलावो, वावो, कुवा, देवालयो, तथा बीजुं सघलुं बनाव्युं. वली त्यां तेणे चारे दिशाउमां सिद्धार्थ, श्रीनिवास, पुष्पाकर तथा नंदन अने बीजां पण अनेक वनो बनाव्यां. ते दरेक वन प्रते जिनेश्वर प्रजुनां सुवर्णमय चैत्यो शोजतां हतां, तेउ वृक्षोथी पण, पवनें करीने लावेलां पुष्पोनी पंक्तिथी पूजातां हतां. ते नगरीनी पूर्व दिशाए अष्टापद

नामनो, दक्षिणमां घणोज उंचो महाशैल नामनो, पश्चिममां सूरशैल नामनो, अने उत्तर दिशामां उदयाचल नामनो पर्वत हतो. एवी रीते त्यां कल्पवृक्षोनी श्रेणिउंथी शोजता, मणि अने रत्नोनी खाणोवाला, तथा जिनमंदिरोथी पवित्र पर्वतो हता. एवी रीते इंद्रनी आज्ञाथी कुबेरे रत्नमय, तथा जेनुं बीजुं नाम अयोध्या छे, एवी इंद्रनी नगरी सरखी विनीता नगरी बनावी; ते नगरीनां लोको देव, गुरु तथा धर्ममां आदरवाला, स्थिरता आदिक गुणोवाला, तथा सत्य, पवित्रता अने दयावाला, तेमज कलानां समूहोमां कुशल, सत्संगमां रक्त, निर्मल शांत नाववाला, तथा महा उदयवाला हता. ते नगरीमां सुर अने असुरोथी नमस्कार करायेला अने जगतनो व्यवहार करनारा, एवा रुषनदेव प्रनु जगतने रंजन करता थका राज्य करता हता. वली त्यां अयोध्यानी आसपास चारे बाजुए नगरो हतां, अने तेउं प्रनुए बनावेली शिल्पकलाथी तेमनाज वचनथी बनावेलां हतां. प्रनुए वीस लाख पूर्वो कुमारपणामां गाल्यां, अने पछी त्रण जगतनो उद्धार करवाने तेमणे राज्यस्थिति बांधी. तेमणे राज्यमां सात अंगो बांध्यां, वैरीनो नाश करवामां छ गुणोनी रचना करी, स्थिति माटे पांच करणो कर्यां, लश्करनां चार अंगो कर्यां, फल ग्रहण करवामां त्रण शक्ति करी, बे न्याय कर्या, अने एक छत्र कर्युं. आ प्रनुनी पेहेलां वरसाद, अग्नि, विद्या, कला के कोइ पण व्यवहार नहोतो. वली ते प्रनुनी आज्ञाथी पृथ्वीपर वरसाद वृष्टि करवा लाग्यो, पृथ्वी बीजादिकने धारण करवा लागी, तथा अग्नि तेने पकाववा लाग्यो. वली ते प्रनुए खेतीकारो, चाकरो, कुंनारो, वेपारी, उपरी, क्षत्रीउं, सुतार, कारीगरो, सोनीउं, चिताराउं, तथा मणीयार विगेरे बनाव्यां. वली तेमणे मोटा पुत्र नरतने बहोतेर कलाउं शिखवी, तथा नरते बीजा नाइउंने शिखावी; वली प्रनुए बाहुलिने हाथी, घोडा, स्त्री तथा पुरुषनां लक्षणो शिखव्यां, तथा सुंदरीने गणितशास्त्र शिखव्युं; वली तेमणे जमणा हाथथी, ब्राह्मीने ज्योतिरूप तथा जगतने हितकारी अढार लीपीउं शिखावी; एवी रीते तेमणे जगतनी स्थिति बनावीने, सघला लोकोने जुदा जुदा कार्योमां जोड्या. पछी देवोथी स्तुति करायेला ते प्रनु, कोइ वखते अद्भूत बगीचामां, तो कोइ वखते समुद्रने कांठे, तो कोइ वखते क्रि-

ता होय नहीं, तेम ते वखते देखावा लाग्या. पछी सर्व प्राणीउनी द-याथी ईर्यासमिति पूर्वक, पोतानां शरीरमां पण निरीह थया थका प्रभु पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या.

हवे ज्यां वैरीउ पण उपद्रव नथी करता, एवी अयोध्या नगरीमां पु-ण्यमां रक्त भरत राजा पोतानां पितानुं राज्य चलावता हता. ते भरत राजा सूर्यनी पेठे, तेजनां समूह सरखा, हमेशां उदयमां स्थिर, वैरीरुपी अंधकारने हरनारा, तथा कलावानोने (चंद्रने) धननां (तेजनां) दे-नारा हता; वली ते समुद्रनी पेठे गंभीर, सिंहनी पेठे शूरा, चंद्रनी पेठे कलावान, वरसादनी पेठे जगतनां जीवन तुल्य, कल्पवृक्षनी पेठे दानेश्वरी, कलहंसनी पेठे विवेकी, चैत्यनी पेठे उंचा, तथा कोयलनी पेठे मधुर स्वरवाला हता, वली पवननां मोटां मोजांउथी जेम मेरु, तेम ते शत्रुउथी अचल, तथा प्रभातनी पेठे मित्रनां (सूर्यनां) उदयमां तत्पर, अने धनने वधारनारा हता. वली ते शेषनागनी पेठे उत्तम भोगोथी (फणाउथी) लालित, पृथ्वीनां भारने धरनारा, नंदनवननी पेठे हमेशां पुष्पोनी श्रेणिउ सहित, हारनी पेठे गुणो सहित, (दोरी-सहित) तथा मोतीनी पेठे उत्तम व्रतने (गोलाकारने) धरनारा, अने पृथ्वीमंडलने शोभावनारा हता. जेनो प्रतापरुपी सूर्य जगतने दोषर-हित (रात्रिरहित) करतो थको, लक्ष्मीना क्रीडारुप कलाधरने (चंद्रने) उत्पन्न करतो हतो. वली तेनां प्रतापरुपी सूर्यथी त्रास पामीने सूर्य आकाशगामी थयो, अने ते अभ्यासथी तेने हजुसुधि पण स्थान मलतुं नथी. सूर्यादिकोनो तो " तापज " होय छे, पण भरतनो तो " प्रताप " हतो, केम के ते प्रतापथी बलेला शत्रुरुपी वृक्षो फरीने उ-गतांज नहोतां. वली ते भरत राजा न्यायी, विनयमां आसक्त, मनोहर दृष्टिवालो, विचारवंत, कलावान, अने दोषने नहीं धारण करनारो हतो.

हवे सर्व प्राणी प्रते हीतकारी एवा प्रभु, युगमात्र पृथ्वीपर दृष्टि क-रता थका, कर्मथी प्रेराइने एक देशथी बीजे देश विहार करवा लाग्या. वली ते वखते लोको मुग्ध होवाथी, निरवद्य आहारने जाणता नहोता, अने तेथी प्रभु एक वर्षसुधि आहार विनां रह्या, केमके, लोको मुग्धप-णाथी तेमने रथ, घोडा, हाथी, कन्या, सुवर्ण तथा वस्त्रो देवा लाग्या;

थएलां ते मरुदेवा माताने, तेणे पोतानां नाम पूर्वक ज्ञक्तिथी नमस्कार कर्यो. ते वखते राजाउंना स्वामी तथा कमल सरखी आंखोवाला भरत महाराजे, भ्रमरनी भ्रांतिने धरनारा एवा पोतानां केशोथी तेणीनां चरणकमलोनुं प्रमार्जन कर्युं. ते वखते पोतानां नेत्रोनां आंसुउंने जरा लुछीने, तथा मननां खेदने बहार कहाडीने मरुदेवा माता भरतने कहेवा लाग्यां के, हे वत्स ! तुं जो ? मारो पुत्र, मने, तने अने बीजा पुत्रोने पण तजीने हरिणोनो साथी थएलो छे. वली ते क्षुधा, तृषा, टाढ, अने तडकानी पीडाथी क्षीण शरीरवालो थइने, हमेशां रातदहाडो वायुनी पेठे एक वनमांथी बीजा वनमां भमे छे. वली चंद्र सरखुं शीतल, अने मोती तथा रत्नोथी जडेलुं एवुं तेनुं छत्र क्यां ? अने दावानल सरखुं प्रचंड आ सूर्यमंडल क्यां ? वली किन्नरीउंनां गीतोनां झंकारवालुं मनोहर संगीत क्यां ? अने वननी अंदर चालवाथी संभलाता मछरोनां भणकारा क्यां ? वली गजेंद्रपर चडीने तेमनुं नगरमां चालवुं क्यां ? अने कांकरा तथा पछरोवाला पर्वतोमां तेमनुं भमवुं क्यां ? जेने मृयु नथी आवतुं एवी हुं, पुत्रनां आवी रीतनां दुःखनां समूहने सांभलवाथी पण मरती नथी, माटे लोकनिंदित एवा आ मारा जीवतरने धिक्कार छे ! ! वली राजसुखमां तथा भोगविलासमां रक्त थयेलो तुं, वनमां भमता मारा पुत्रनी कंइ संभाल पण पुछतो नथी ! ! एवी रीते दीन वाणीवाली, तथा अश्रु सहित आंखोवाली पोतानी दादीने, जरा हसवाथी स्फुरायमान थएल छे होठ जेनां, एवा भरत महाराज कहेवा लाग्या के, हे माता ! त्रण लोकनां स्वामी, धीर, अने गंभीर एवा पुत्रने तमो उत्पन्न करनारा छो, माटे एवी रीतनुं कायरपणावालुं वचन तमो फरी फरीने बोलो नहीं. वली हे माता ! भयंकर एवा आ संसाररुपी समुद्रमां शिला सरखा अमो तातनुं रक्षण करवाने केम समर्थ थइ शकीयें ? तात तो मोक्षनी इछावाला छे, अने ते क्षणिक संसार सुखने दूर करवाने पोते उत्तम तप तपे छे. वली इंद्रादिक देवो पण चाकरोनी पेठे तेमनी पासे हाजर रहे छे, एवा ते प्रभुनुं माराजेवा केम रक्षण करी शके ? वली हे माता ! त्रणे लोकनां अधिपति एवा ते प्रभुनी तमो ज्यारे लक्ष्मी जोशो,त्यारे तमोने तेमनां तपनुं सत्य फल ज-

ग्राशे. एवी रीते जरत महाराज मरुदेवा माता साथे जेटलामां वात करे छे, तेटलामां कोइ पोलीउं जक्तिपूर्वक हाथ जोडीने, तथा पृथ्वीपर मस्तक नमावीने तेमने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामि! यमक अने शमक नामनां बे पुरुषो आपने कंइंक कहेवा माटे आव्या छे, अने तेउ बारणे उज्ञा छे. पछी जरत माहाराजे तेने अज्ञा आपवाथी पोलीआए तेउने त्यां प्रवेश कराव्यो, त्यारे तेउ पण हर्षथी "जय जय" शब्द करता त्यां आव्या, तथा तेउमांथी शमक नमस्कार करीने बोल्यो के, हे देव! हुं वधामणी आपुं छुं के, पिताजीने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं! वली पुरीमताल नामनां नगर पासे शकटानन नामनां वनमां, ते त्रण जगतनां प्रजुनुं इंद्रोए समवसरण बनाव्युं छे; तथा त्यां सर्व दिशाउंमांथी पुरुषो, स्त्रीउं, देवो अने देवीउं, पोतानी ऋधिथी स्पर्धा करता थका आव्या छे. पछी यमक पण नमस्कार करीने, हर्षयुक्त थयो थको उंचे स्वरे कहेवा लाग्यो के हे स्वामि! हुं पण वधामणी आपुं छुं के, स्फुरायमान प्रजाए करीने देदीप्यमान सूर्यना बिंबनी पेठे उज्ज्वल, हजार आरावालुं, तथा स्फुलिंगोनी श्रेणिथी शोजितुं अने देवाधिष्ठित चक्ररत्न आपणी शस्त्रशालामां उत्पन्न थयुं छे. जरत राजाये ते सांजलीने तेउ बन्नेने उचित दान आपी विसर्जन कर्या, तथा पोते अवचनीय आनंद पाम्या. पछी तेनुं चित्त हिंचोला खावा लाग्युं के, पेहेलां मारे ताततनां केवलज्ञाननो महोत्सव करवो, के चक्ररत्ननो महोत्सव करवो? एम विचारतां छेवटे तेणे निश्चय कर्यो के, अहो! जगतने अजयदान देनारा तात क्यां? अने जगतने जय आपनारूं आ चक्र क्यां? माटे आटलो वखत जे में विचार कर्यो, ते फोकट कर्यो; तेथी हवे मारे प्रथम प्रजुनां केवलज्ञाननी उत्पत्तिनो महोत्सव करवो. एम विचारि तेणे मरुदेवा माताने विनंति करी के, हे माता! तमो जे कहो छो के, मारो पुत्र हमेशां वनमां जमीने, क्षुधा, तृषा, ताप आदिकथी पीडित थइने दुःख जोगवे छे; पण हवे सुरअसुरोथी सेवित, एवा तमारा पुत्रनी, त्रणे जगतने आश्चर्य करनारी लक्ष्मीने जोइने तेनी तपस्यानुं फल जुउ? एम कहीने, तेणीनी अनुज्ञापूर्वक ते वाक्यथी हर्षित थएलां मरुदेवा माताने, विद्वानोमां शिरोमणि एवा जरत माहाराजे हाथीपर चडाव्यां;

पछी ते सज्ज करेला घोडा, हाथी, रथ, तथा पायदलसहित त्यांथी चालवा लाग्यो. सुवर्ण, तथा माणिक्यनां उलसायमान थतां किरणोथी विचित्र थयेलुं, अने क्रोडो गमे शस्त्रोथी चलकतुं थएलुं ते लश्कर विजलीनां भ्रमने करावनारुं हतुं. वली विविध प्रकारनां उत्सवोमां उत्साहवाला नगरनां लोकोथी वींटायेलो ते भरत राजा प्रभुने वांदवा माटे उद्यमवंत थयो थको मरुदेवा मातासहित चालवा लाग्यो. ते वखते "हुं पेहेलां प्रभुने वांडुं, हुं पेहेलां प्रभुने वांडुं" एवी रीते केटलाको अगाडी अगाडी जवा लाग्या. वली ते वखते प्रभुपासे जनारा लोकोने अमार्ग पण मार्गरूप थयो; अने एवा भक्तिवंतोने आगल जतां मोक्ष मार्ग पण मलशे. ते वखते पिता पुत्रनी, भाइ भाइनी, शेठ चाकरनी, के चाकर शेठनी राह जोता नहोता. एवी रीते दीनतारहित सैन्योथी तथा वेगयुक्त घोडाउंथी जतां थकां भरत माहाराजे अगाडी अरिहंतपणाने सूचवनारो रत्नध्वज जोयो. त्यां त्रण गढोमां रहेलां रत्नोनी चलाचल कांतिनां किरणोथी, तेने धर्मरूपी सूर्यनो उदय करनारा प्रभातनी भ्रांति थइ. पछी त्यां भरत माहाराजे मरुदेवा माताने कह्युं के, हे माता! आ अगाडी रहेला प्रभुनां समवसरणने तमो जुउ? ते समवसरण त्रण लोकोमां रहेनारा देवोये रत्नोनी श्रेणिउंथी बनाव्युं छे, अने उछलता किरणोनां समूहोथी ते सूर्योनी श्रेणि सरखुं सुंदर लागे छे. वली आ बाजुए सेवा माटे आवेला देवोनो, सांभलनाराउंनां श्रवणोने प्रिय लागतो "जय जय" शब्द संभलाय छे. वली आ बाजुए पांच जातिनां रत्नोनी कांतिरूपी आंगलीउंवालो, प्रभुने उलखावनारो, धर्मेज पोतानो हाथ उंचो कर्यो होय नही, तेवो आ रत्नध्वज शोभे छे. वली आ बाजुए जाणे तातना गुणोनेज कहेतो होय नहीं, एवो नवा शब्दोनां रंगवालो अद्भूत देवडुंडुभि संभलाय छे. वली प्रभुनां गुणोथीज होय नहीं, तेम मांजरोथी पिंजर थएलो आ अशोक वृक्ष, पल्लवानां समूहोथी जाणे नाचतो होय नहीं, तेम देखाय छे. ते सांभलीने मरुदेवा मातानां, दुःखाश्रुथी उत्पन्न थएलां आंखोनां पडलो हर्षाश्रुथी दूर थयां. ते वखते आनंदित थएला देवोथी करातो पोतानां पुत्रनी स्तुति जेम जेम ते सांभलतां गयां, तेम तेम ते अत्यंत उलसायमान थयां. सर्व अतिशयोथी संपूर्ण, तथा जिनरूप एवां पोतानां पुत्रने प्रेमथी ध्यावतां

थकां मरुदेवा माता तन्मयपणाने पाम्यां. पछी संसार संबंधि व्यापारने भुली जइने, प्रभुने चिंतवतां थकां ते क्षणवारमां जिनमय थयां; वली ते वखते हृदयमां, दृष्टिमां, आगल, पडखे, पाछल, वचनमां अने सर्व जगाए मोक्ष सुखना कारणरूप जिननेज ते जोवा लाग्यां पछी कर्मोनो क्षय करनारी क्षपकश्रेणिपर चडीने, नानाश्रुतविचार, एकश्रुत विचार, सूक्ष्मक्रिया, समुछिन्नक्रिया तथा अनुक्रमे ते शुक्ल ध्यानने पाम्यां. पछी अंतकृत केवलीपणाथी कर्मनो क्षय करी केवलोत्पत्ति समयेज मरुदेवा माता मोक्षे गयां. एवी रीते पुण्य कर्याविना पण, जे माणस स्नेहथी अंतकाले अरिहंत प्रभुनुं स्मरण करे छे, ते माणस आ मरुदेवा मातानी पेठे शिवगामी थाय छे. हवे ते वखते इंद्रोये समवसरणमांथी आवीने मरुदेवा मातानां शरीरनो संस्कार करीने, तेने क्षीरसमुद्रमां पधराव्युं; तथा तेओ उंचे स्वरे कहेवा लाग्या के, आ अवसर्पिणी कालमां आ मरुदेवा माता प्रथम केवली थइने मोक्षे गयां (सिद्ध थयां.) एवी रीतनी उद्घोषणा करीने, देवो, आंसुनां जलथी भींजाएला भरतने अगाडी करीने प्रभुपासे लेइ जवा लाग्या. त्यां भरत राजाए प्रभुनी लक्ष्मी जोइने, तथा देवोनां कहेवाथी शोकनो त्याग कर्यो, अने प्रभुने नमवाने उत्सुक थयो. त्यां छत्र, चामर आदिक राजानां उपकरणो तजीने, भरत राजा उतरासंग धारीने प्रभुनी पासे जवा लाग्या. वली त्यां वावमां नाहीने, अने धोएलां वस्त्रो पेहेरीने, भरत महाराज पूर्वद्वारथी समवसरणमां दाखल थया. पछी तेणे विधिपूर्वक प्रभुने प्रदक्षिणा देइने, तथा पृथ्वीपर मस्तक नमावीने नमस्कार कर्यो; पछी भक्तिथी उलसायमान थती रोमराजीथी कंचुकित थएला, तथा प्रफुल्लित लोचनवाला, भरत राजा, हृदयमां नहीं माता हर्षने वाणीनां मिशथी बहार कहाडवा लाग्या के, हे स्वामी! त्रणे लोकमां तिलक समान, जिनेश्वर, अनंत, अव्यक्त, चिद्रूप, तथा योगीश्वर एवा तमो प्रते नमस्कार थाओ? वली हे नाथ! एकांत हितकारी एवा तमोए आ संसारमां अवतार लेइने, बहुरूपवालो जगतनी व्यवस्थानो मार्ग देखाड्यो. वली हे जगत्प्रभु! अमोनेज आ भवरूपी समुद्रमांथी उद्धारवानी इछाथी, तथा मोक्षमार्ग देखाडवा माटे तमोए संयम लीधुं छे. वली हे प्रभु! तमोज आ जगतनां ईश्वर, दयालु, अने प्राणीओने

शरणुं लेवा लायक बो. वली आप, पोतानी मेलेज अमोने तारवामां तत्पर थया बो, माटे हवे आपनी हुं केटलीक याचना करुं? एवी रीते प्रज्जुनी स्तुति करीने, ज्ररत राजा, इंद्रने अगाडी करीने प्रज्जुनी पासे बेठा. पबी तत्वने जाणनारा प्रज्जु पण एक योजनसुधि गमन करती, सर्व ज्राषानां स्वरूपवाली, अने गंज्रीर वाणीथी क्लेशने नाश करनारी देशना देवा लाग्या. (धर्ममां प्रीति करवी, अने पापोथी यत्नपूर्वक विरक्त थवुं; एवी रीतनो जेमां माणसो प्रते उपदेश होय, ते देशना कहेवाय बे.)

जिनपूजा, सुगुरुनी सेवा, स्वाध्याय, निर्मल तप, दान, अने दया, एवी रीतनां ब कार्यो, हमेशां उत्तम गृहस्थीउने करवानां बे. वली माता पिता, ममत्व रहित गुरु, धर्मशास्त्र ज्रणावनार, अज्रयदान देनार, अन्नपाणी देनार, तथा कला शिखवनार, एटलाउनां चरण कमलोनी सेवाथी पुण्य उपार्जन करवुं. वली प्राणीउं प्रते दया, शुज्र पात्र प्रते दान, गरीबोनो उद्धार करवानी बुद्धि, अने यथोचित सर्व जनोप्रते उपकार, एवी रीतनो धर्म संसारथी तारनारो बे. वली ज्ञान, अज्रय, औषध, स्थान अने वस्त्रनुं दान, अरिहंत प्रज्जुनी पूजा, समतावंत मुनिउने नमस्कार पोतानीज स्त्रीमां तृप्ति, तथा अन्य स्त्रीउथी विरक्तपणुं, ए सघलां पुरुषोने अक्षय मंडनरूप बे. वली चाडी, द्वेष, परधननी चोरी, जीवहिंसा, निंदा, रात्रिज्रोजन, तथा कन्यादिक मोटां जूठ, एटलां वाना वर्जवां, केम के, तेना सरखुं बीजुं पाप नथी. वली पाप, तथा मरकी आदिकने हरनारां त्रण रत्नोने ग्रहण करवां; केम के, तेथी शुद्ध ज्रावयुक्त थया थका संत पुरुषो त्रण ज्रवोमांज सुखेथी मुक्ति सुख पामे बे. एवी रीते, मनोहर मोक्षरूपी फलने उत्पन्न करनारां, वचनरूपी पाणीने, ज्रविकरूपी पृथ्वीमां वरसीने, प्रज्जुए उत्कृष्ट संपदा माटे त्रण रत्नरूपी (ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी) बीज त्यां वाव्युं. एवी रीतनी प्रज्जुनी पवित्र देशनाने श्रवणगोचर करीने, ज्ररतनो पुत्र ऋषज्रसेन प्रज्जुने विनति करवा लाग्यो के, हे स्वामि ! आ ज्रवरूपी अरण्यमां दिङ्मूढ चित्तथी ज्रटकतां थकां अकस्मात सार्थपतिनी पेठे, पुण्योथी मने आपनो आजे मेलाप थयो ठे; अने तेथी आप मने तारो ? जे राज्यमां आ राग आदिक शत्रुउ मारा पुण्यरूपी ज्रंडारने लुंटी जाय ठे, ते राज्यनुं विष-

योथी विरक्त थएला मने हवे शुं प्रयोजन ठे? वली धनादिकनी लोलताथी आ नयंकर संसारसमुद्रमां नटकता बुद्धिवानो पण (मच्छीमारो पण) नाइ, पुत्र आदिकनी जालमां फसाइ पडे ठे; माटे हे नगवन्! हवे आप मने शरणारूप थो, अने तेथी चारित्रदान देइ मारुं रक्षण करो? नहींतर आ विषयो फरी मने पोतानां सपाटामां लेशे. त्यारे प्रनुए पण तेने नव्य जाणीने, चारित्र आपी तेनापर उपकार कर्यो; केम के सज्जनो हमेशां परनो उद्धार करनाराज होय ठे. पठी तेणे आ नवरूपी तापनी शांतिमाटे प्रनुनां चरणारविंदो मस्तके धर्यां. वली ते समये नरतनां बीजा चारसें पुत्रोए, तथा सातसें पौत्रोए पण चारित्र अंगीकार कर्युं. वली ते वखते क्रोडो देवोथी प्रनुने सेवाता जोइने, नरतनां पुत्र मरीचीए पण दीक्षा लीधी; तथा उज्ज्वल शीलने धरनारी ब्राह्मीए पण नरतनी रजा लेइने ते वखते घणी राजकुमारीउं साथे दीक्षा लीधी. वली ते वखते सुंदरीने पण व्रत ग्रहण करवानी इछा हती, पण नरते विचार्युं के, प्रनुनां चतुर्विध संघमां आ सुंदरी श्राविका थशे, एम विचारि तेणीने तेणे दीक्षा लेती अटकावी. वली ते वखते नरत महाराजे पण प्रनु सन्मुख सम्यक्त्व अंगीकार कर्युं, केम के, समतावंतोने पण नोगावली कर्म तो अवश्य नोगववुंज पडे ठे. वली ते समये केटलाक विद्याधरो तथा मनुष्योए चारित्र लीधुं, केटलाकोए श्रावकव्रत अंगीकार कर्यां, तथा केटलाको नद्र परिणामने स्वाधिन थया. वली कछ, महाकछ शिवायनां अगाउ तापस थएला राजाउंए पण प्रनुनां चरण समीपे आवीने, आनंदयुक्त व्रत अंगीकार कर्युं. पुंडरिक आदि साधुउं, ब्राह्मी आदिक साधवीउं, श्रेयांस आदिक श्रावको, तथा सुंदरी आदिक श्राविकाउं, एवी रीते प्रनुए चतुर्विध संघनी जे स्थापना करी, ते आजदन सुधि पण मोजुद ठे, केम के तेवा महान पुरुषोनी आज्ञानुं उल्लंघन थइ शकतुं नथी. एवी रीते तीर्थंकरोने पण माननीक, पुण्यवानोने पण पूजनीक, अने सुरासुरेंद्रोने पण सेवनीक एवो संघ हमेशां जय पामे ठे. हवे प्रनुए जेम चतुर्विध संघनी स्थापना करी, तेम इंद्र, चक्री विगेरेए मलीने ऋषनसेन आदिक चोरासी गणधरोनी प्रनुनी आज्ञा प्रमाणे स्थापना करी. महा बुद्धिवान ते गणधर महाराजोए प्रनु पासेथी

त्रिपदी मेलवीने तुरत द्वादशांगीनी रचना करी; अने प्रज्ञुनी कहेली तेज व्यवस्था आजे पण चाली आवे छे, केम के, अरिहंत प्रज्ञुनी आज्ञानुं विवेकी माणस उल्लंघन करता नथी. पछी देव, गंधर्व, विद्याधर, तथा राजाउं प्रज्ञुने नमस्कार करीने, तेमनी देशनानुं स्मरण करता थका पोतपोताने स्थानके गया. प्रज्ञु पण जविक जीवोने बोध देता थका चोंत्रीश अतिशय सहित पृथ्वीतलपर विहार करवा लाग्या. एकज जगोए स्थिरता करवाथी परनो उपकार नहीं थइ शके, एवा हेतुथीज होय नहीं जेम, तेम प्रज्ञुए एकज जगोए स्थिति करी नहीं. हवे पुण्यशाली, तथा लोकोथी नमाएला जरत राजा पण मनोहर मेहेलोवाली अयोध्या नगरीमां परिवार सहित आव्या; तथा उलसाय मान वैजववाला चक्रने जोवानी इछाथी ते शस्त्रशालामां गया, त्यां तेमणे सूर्यबिंबनी पेठे उछलता किरणोनी श्रेणिथी शोजायुक्त थएलुं, तथा शस्त्रशालाने पण चलकाटयुक्त करतुं चक्ररत्न जोयुं, ते वखतेज तेमणे तेने पंचांग प्रणाम कस्यो, केम के, क्षत्रिउंने शस्त्र उत्कृष्ट देवरूप छे. पछी तेमणे पवित्र जलथी आनंदपूर्वक स्नान करीने, धोयेलां, सुगंधयुक्त करेलां, तथा श्वेत वस्त्रो शरीरपर धारण कस्यां. अने शस्त्रशालामां आवी ते चक्र हाथमां ग्रहण कस्युं, अने जाणे वधारे चलकाटवालुं करता होय नही जेम तेम तेमणे बन्ने हस्तोथी तेनुं प्रमार्जन कस्युं. पछी तेणे सहस्त्र आरावालुं ते चक्र सुवर्णनां सिंहासनपर स्थापन कस्युं, अने तेम करीने ते उदयाचलनां शिखरपर रहेला सूर्यबिंबने याद करवा लाग्यो. पछी राजाये पोतानांज हस्तथी निर्मल जलथी ते चक्रने स्नान कराव्युं, त्यारे समुद्रमांथी उछलता वडवानल सरखुं ते शोजवा लाग्युं. पछी तेणे चंदन, अगर, कपुर, कस्तुरी, कुंकुम विगेरेथी तेनुं पूजन कस्युं. वली ते चक्र दशे दिशाउंनुं चक्रिपणुं तेमने आपशे, तेथी तेमणे पंच वर्णनां पुष्पोथी तेनुं पूजन कस्युं वली ते चक्र तेमने मंगल करनारुं छे. तेथी तेमणे तेनी आगल अखंड चोखाथी अष्ट मंगलो चितस्यां; तेम हीरा, वैडुर्य, माणिक, मोती, कर्केतन आदिकथी तेमणे तेनी पासे स्वस्तिक कस्यो, वली तेमणे मंगलदीपकपूर्वक तेनी आरती उतारी. “क्षत्रिउंना गुरुसमान, तथा प्रत्यक्ष देवरूप, एवा तमो प्रते नमस्कार थाउ ?” एम कहीने जरत रा-

जाए ते शस्त्राधिपतिने नमस्कार कर्यो. एवी रीते आठ दिवसोसुधि चक्रिये मनोहर भेटोपूर्वक तेनुं पूजन कर्युं. पछी एक हजार यक्षोथी अधिष्ठित, दिव्य शक्तिवालुं, हजार आराउंवालुं, महान् ज्वालाउंनी श्रेणि-थी लालित थयेलुं, गोलाकारवालुं, आकाशमां भ्रमण करनारुं अने दुष्ट दैत्य तथा शत्रुउंनो नाश करनारुं, ते चक्र भरतनां प्रतापनी पेठे दीपवा लाग्युं. पछी ते चक्री जयस्नानमाटे मनुष्य अने देवोए बनावेला मणिमय सिंहासनपर पूर्वसन्मुख बेठा, ते वखते कोइक स्त्री, तेनां रूपथी मोहित थइने, मणिनां कुंभमांथी पडता जलने पोतानां कटाक्षोथी बेवडां करीने तेनो अभिषेक करवा लागी, वली कोइक मदोन्मत्त स्त्री तो पोतानां कुंभ सरखां स्तनोनी वच्चे, तेवडाज (स्तन जेवडाज) कलशने लेइने अभिषेक करवा लागी. वली ते वखते कोइक स्त्री तो पोतानां हस्तरूपी कमलमां कर्णिकासरखा कलशने लेइने भरत राजापर जल सींचवा लागी. ते व-खते धवलध्वनिउंनी साथे वाजिंत्रोनां नादो, ते मंडपने पूरीने दिशा-उंनां मूलमां मूर्छा पामवा लाग्या. एवी रीते जय जय शब्द पूर्वक अभि-षिक्त थयेला चक्री अधिक कांतिवाला थइने सूर्यबिंबनुं अनुकरण करवा लाग्या. सोनेरी कांतिवाला ते भरत महाराजाये ज्यारे सफेद वस्त्रो प-हेर्यां, त्यारे ते मेखलासुधि शरदऋतुनां वादलांउथी वींटायेला मेरुस-रखा शोभवा लाग्या. दरेक अंगप्रते घणां आभूषणोथी भूषित थयेला, तथा पृथ्वीपर चालता ते भरत राजा जंगम कल्पवृक्ष सरखा शोभवा लाग्या. पछी भक्तिथी प्रेराइने तेमणे, पुष्प, अक्षत, स्तुति आदिकथी प्रथम प्रभुनुं आराधन कर्युं. पछी तपस्वीउंने दान देइने, भोजन करीने, अने तांबुल चावीने ते सभामां गया. त्यां चामरोथी वींझाता, तथा छ-त्रथी आछादित थएला, ते भरत राजा, वर्षाकालमां झरणोवाला पर्वत-सरखा शोभवा लाग्या. वली ते भरत राजा महा पराक्रमी, अने भक्ति-वंत सोल हजार यक्षोथी वींटाया थका शोभता हता. हवे ते चक्र आ-युधशालामांथी निकलीने, प्रयाणने सूचवतुं थकुं आकाशमां पूर्वसन्मुख रह्युं. पछी प्रभातमां सर्व शुभ लक्षणोथी खेंचेली छे, संपदा जेणे, तथा यश सरखा श्वेत हस्तीरत्नपर राजा चड्या. अत्यंत गर्जना करतो ते हाथी, ते वखते मदनी धाराउंथी बीजा मेघ सरखो देखावा लाग्यो.

आकाशने जाणे नवपल्लव करता होय नही जेम तेम उंचा हाथो करीने, ते वखते बंदिलोकोए जय जय शब्द कर्यो. वली ते वखते प्रयाणसमयनो दुंदुज्जिनाद थवा लाग्यो, अने तेथी सघली दिशाउं गाजवा लागी. वली ते वखते क्षोज्जित करेल डे, ज्जुवननो मध्यज्जाग जेणे, एवो मांगलिक वाजानो नाद दूतनी पेठे सर्व दिशाउंमां रहेलां सैन्यने बोलाववा लाग्यो. पडी ऊरतो डे मदनो समूह जेउंने एवा ऊरणावाला पर्वतो सरखा हाथीउंथी, तथा समुद्रनां मोजां सरखा अने चपल घोडाउंथी, तथा जंगम घर सरखा अने ऊणकार करता मोटा रथोथी, तथा वैरीउंने विदारवामां शक्तिवाला पालाउंथी, वींटाया थका, तथा इंद्र सरखा पराक्रमवाला ज्जरत राजा, सैन्यनां चालवाथी उडती रजोथी सूर्यने आडादित करता थका प्रथम पूर्वदिशा तरफ प्रयाण करवा लाग्या. त्यां अगाडीना ज्जागमां सुषेण नामनां सेनापतिरत्न, अश्वरत्नपर चडीने, तथा हाथमां दंडरत्न लेइने चक्रनी पेठे चालवा लाग्या. विघ्ननां समूहनां नाश माटे देहधारी जाणे शांतिरत्नज होय नहीं, एवा पुरोहित रत्न ज्जक्तिथी प्रज्जुने पूजीने चालवा लाग्या. वली जंगम दानशाला सरखा, तथा दरेक स्थानकप्रते क्षणवारमां सैन्य माटे दीव्य अन्न उत्पन्न करनार गृही रत्न पण चालवा लाग्या. वली विश्वकर्मा सरखा, तथा स्कंधावारादिक बनाववामां समर्थ वार्धकीरत्न पण त्यां चालवा लाग्या. वली सुरासुरोथी आश्रित थयेलां चर्मरत्न, खड्गरत्न, मणिरत्न तथा काकिणीरत्न पण चक्रिनी साथे चालवा लाग्यां. एवी रीते पृथ्वीनो स्वामी थइने पण कोइ बीजामां तेणीने उत्कंठीत जाणवानां गुस्साथीज जाणे होय नहीं जेम तेम सैन्यना निर्घातोथी पृथ्वीने चलित करतो, तथा पर्वतोने पण चलायमान करतो थको ते राजा बलयुक्त लश्करसहित चालवा लाग्यो; तथा ते हमेशां चक्रनी पाडल चालीने एक योजननुं प्रयाण करतो, अने शत्रुनां प्राणोने प्रयाण करावतो हतो. वली जे जगोये सैन्य पडाव नाखतुं, त्यां वार्धकी क्षणवारमांज नगरनी पेठे आवास बनावतो. तेमां अयोध्यानी पेठेज चक्रिनो शिबिर, चोवटा, त्रेवटा, शिल्पशाला, तथा, वजारनी श्रेणिउं थती. वली त्यां मार्गमां राजाउं, हाथी, घोडा विगेरेनी ज्जेटोसहित विनयथी नम्र थया थका, देवोथी सेवायेला

जरतने आवीने नमता हता. एवी रीते सैन्यनां समूहनां मर्दनथी आकाश पातालने क्षोज पमाडता थका जरत राजा मागधतीर्थप्रते आव्या. त्यां तेमणे पूर्व समुद्रने कांठे नव योजन पोहोलो, तथा बार योजन लांबो सैन्यनो पडाव नांख्यो. त्यां वार्धकीये अयोध्यानी पेठे सैन्यने माटे आवासो बनाव्या, अने रत्नोनी श्रेणिउथी तेणे एक पौषधशाला पण बनावी. पछी राजाउमां हस्ती समान ते जरत राजा पर्वतपरथी जेम केसरी सिंह, तथा उदयाचलथी जेम सूर्य तेम हाथीपरथी उतर्या; तथा पछी तेणे पोतानां कार्यमाटे पौषधशालामां नवुं दर्जनुं आसन पाथर्युं. तथा आजूषण, माला विगेरेनो त्याग करीने, अने श्वेत वस्त्रो पेहेरीने, तेणे मागध देवना निमित्ते पौषध लीधो. तथा तेणे शुद्ध संथारापर बेसीने, अने सर्व सावद्यने तजीने, मुनिनी पेठे अठम तप कर्यो. पछी पौषध पूर्ण थया बाद शरद ऋतुनां वादलांमांथी जेम सूर्य, तेम पौषधशालामांथी ते अधिक कांतिवालो थयो थको निकल्यो. पछी तेणे विधिपूर्वक स्नान करीने, तथा प्रजुने पूजीने क्षुद्र देवोनी प्रीति माटे बलिदान कर्युं. पछी ते उछलती पताकावाला, दिव्य शस्त्रोनी श्रेणिउथी शस्त्रशाला सरखा, घंटानां ऊंकारथी दशे दिशाउमांथी लक्ष्मीने बोलावता, तथा चोकडांथी खेंचायेल छे मुख जेउनुं, अने वैरीनां अहंकारनुं जक्षण करनारा, एवा उंचा घोडाउवाला रथमां ते बेठो. पछी इंद्रनो जेम मातली,सूर्यनो जेम अरुण, तेम राजानां अजिप्रायने जाणनारो तेनो संगर नामे सारथी थयो. पछी फक्त दोरीनां चलावामात्रथीज उछलता घोडाउ वेगथी राजाने पूर्वसमुद्रप्रते लेइ गया. पछी कांठापर रहेलां वृक्षोनां पडतां पांदडांनां अवाजथी जलचर जीवोने त्रास होते छते,ते नाजिसुधि रथ पाणीमां बुडे त्यांसुधि समुद्रमां गयो. घोडानां वायुथी वडवानलनी शंका करावता, एवा समुद्रनां पाणीथी क्षोज पामेलुं, तथा मध्य जागमां धनदे आश्रय करेलुं, अने आठमनां चंद्रसरखुं तेणे धनुष्य चडाव्युं. पछी तेणे शत्रुनां प्राणोनां प्रयाणमाटे पटहध्वनि सरखा, तथा धनुर्वेदनां ॐकारसरखा, लवण समुद्रने क्षोज पमाडनार, तटपरनां पर्वतोने फाडनार, तथा जलचरोने त्रास आपनार एवो धनुष्यनो टंकार कर्यो. मंदराचलना ज्रमणथी थता समुद्रनां शब्द सरखा निष्ठुर एवा ते धनुष्यनां टंकारने सांजलीने

त्रणे जगतनां मनो ते वखते क्षोजायमान थयां. वली ते टंकारनां शब्द-थी सूर्यनां घोडाउ पण जडकीने उन्मार्गप्रते जवा लाग्या, तेथी तेनां र-थनुं एक चक्र जांगी गयुं. पबी बिलमांथी जेम जयंकर सर्पने, तेम तेणे सुर अने असुरोने पण क्षोज पमाडनारुं बाण जाथामांथी कहाड्युं. पबी शत्रुनी पंक्तिउमां जेम दंड, तेम तेणे पोतानां नामवालुं बाण दोरीपर च-डाव्युं. ते वखते बाणनां किरणोयें करीने वैरीरूपी तलावने शोषावता ते जरत राजा रथमां बेठा थका सूर्यनी पेठे शोजवा लाग्या. पबी नखनां किरणोथी उज्ज्वल थयेला ते बाणने तेणे कर्णसुधि खेंच्युं. पबी एक प-गने खेंचीने उजेला, तथा जाथांउरूपी पांखवाला, अने बाणनां अग्रजा-गरूपी तीक्ष्ण चांचवाला, ते जरत राजा गरुडनी पेठे तर्क करावा लाग्या. ते वखते तेवा जरत राजाने जोइने समुद्रने एवी शंका थइ के, शुं आ मने सुकावी नाखशे ? के मने खेंची लेशे ? पबी पूर्व दिशा, अने पूर्वाच-लने क्षोजावनारुं, तेम नागकुमार, देवो विगेरेथी आश्रित थयेलुं, अने प-र्वतोमां पण नहीं अटकतुं ते बाण चक्रीए बोड्युं. ते बाणने जोइ लवण समुद्र अत्यंत क्षोजायमान थयो, अने ते अन्यासने आजे पण ते चला-यमान मोजांउथी याद करे बे. वली ते वखते जलमां रहेला पर्वतो पण ते बाणने जोइ शंका करवा लाग्या के, शुं क्रोधथी फरीने इंद्रनां हाथमांथी वज्र आवे बे ! ! ! पबी समुद्रनां जलने उबालतुं, तथा आकाशमां वि-जलीनां सरखुं ते बाण बार योजन उलंगीने, मागधेशनां हृदयमां शल्य-सरखुं, थयुं थकुं तेनी सजामां जइने पड्युं. तेनां पडवाथी थएला संघट्टनथी रत्नां सिंहासनमांथी चारे बाजुए अग्निनां तणखाउ निकलवा लाग्या; अने तेज तेनां क्रोधरूपी अग्निनां कारणरूप थया, अने तेनां राज्यरूपी वृक्षनां मूलमां अग्निनी तुलना करवा लाग्या. वली ते बाणने जोइने ते क्षणवार तो दिङ्मूढ थयो, अने ते बाणनी पांखनां पवनथी तेनो चित्त-रूपी दीपक वधारे बलवा लाग्यो. पबी नाशिकाने नचावतां थकां तेनी आंखो चणोठी सरखी लाल थइ, अने तेथी तेनुं क्रोधरूपी वृक्ष जाणे नवपल्लव थयुं होय नहीं, तेम देखावा लाग्युं. पबी तेणे त्रण प्रकारनां को-पने सूचवनारी त्रण वलीउ कपालपर धारण करी, अने होठने स्फुराय-मान करीने तेणे म्यानमांथी तलवार खेंची कहाडी. पबी ते पोताना

कोपरूपी अग्निनी ज्वालानी श्रेणि सरखी, अने झेर तुल्य वाणी बोलवा लाग्यो के, अग्निने हाथथी पकडवाने, दिग्गजोने पकडवाने, तथा शेषनागनां मस्तकपर रहेला मणिने हरवाने कोण उद्यमवंत थयेलो छे? तेम अणिदार नालांथी पोतानी आंखमां खरज करवाने कोण इछे छे? तथा सिंहनी केशवालीने लेवाने कोण इछे? वली फरती अरघटमालामां पोतानो पग नाखवाने कोण उत्सुक थाय? तेम आ मारी सन्नामां कया कुबुद्धिये बाण फेंक्युं छे? एम कहीने क्रोधयाम थयो थको, डाबा हाथथी वैरीनां कपोलने जेम तेम पोतानां सिंहासनने थाप मारीने, सर्पनी पेठे फुंफाटा मारतो, तथा पोतानां अंगने मरडतो थको ते एकदम सिंहासनपरथी उठ्यो. ते वखते तेनो परिवार पण तेनी पेठेज कोपथी जाज्वल्यमान थइने उठ्यो; केमके किरणोनो समूह सूर्यनुं अनुकरण करेज छे. ते वखते केटलाको तो क्रोधरूपी वृक्षनां पल्लव सरखी तलवारो नचाववा लाग्या, अने केटलाको वैरीनी छातीमां शल्य सरखा नालां उछालवा लाग्या. केटलाको आकाशने फोडता होय नहीं जेम, तेम मुजरो उछालवा लाग्या, तथा केटलाको यमनी भ्रुकुटी सरखा बाणो चडाववा लाग्या. केटलाको क्रोधनां गुच्छासरखा वज्रो धारण करवा लाग्या, तथा केटलाको आकाशने दांतावालुं करता थका त्रिशूलो धारण करवा लाग्या. केटलाको आकाशपातालने फोडता थका भुजास्फोट करवा लाग्या, तथा केटलाको मेघनादनुं अनुकरण करता थका सिंहनाद करवा लाग्या. वली केटलाको कहेवा लाग्या के, घुवड जेम सूर्यप्रते, तेम आ कोइ डुर्विनीत माणस आपणा स्वामीप्रते करे छे, माटे तेने पकडो अने मारो? एवी रीते प्रलयकालमां क्षोन्नायमान थयेला समुद्रनां नादनुं अनुकरण करनारो सघला परिवारनो एकी वखते कोलाहल थवा लाग्यो. एटलामां तेना प्रधाने ते बाण लेइने, क्रोधरूपी अग्निने शमववाने मंत्रसरखा ते परनां अक्षरो वांच्या के, "हे देवो! जो तमारे राज्य अने जीवितनुं प्रयोजन होय, तो अमोने तमारूं सर्वस्व स्वाधिन करीने तमो अमारी सेवा करो? एवी रीते तमोने सुर, असुर अने मनुष्यनां स्वामी श्री ऋषभदेव प्रभुनां चक्रवर्ती भरतपुत्र आज्ञा करे छे." एवी रीतनां अक्षरोने जोइने, तथा अवधिज्ञानथी ते बाबत जाणीने, ते मंत्री

पोतानां स्वामीने ते वाण देखाडतो थको सर्वने कहेवा लाग्यो के, हे राजन्यो! उतावल करनारा एवा तमोने धिक्कार छे!! केम के, तमो स्वामीनुं हित चिंतवता थका उलटुं अहित करवा लाग्या छो. आ जरत क्षेत्रमां प्रथम तीर्थंकरनां पुत्र, तथा वैरीरूपी चंद्रप्रते राहुसरखा आ जरत चक्री थया छे. वली मेरूने तोली शकाय, पृथ्वीने उपाडी शकाय, अने लवण समुद्रने पण सुकावी शकाय, तोपण चक्रीने जीती शकाय नहीं. हवे ते इंद्र सरखो चंड आज्ञावालो चक्री तमारीपासेथी दंड मागे छे, अने सुरासुरोथी मान्य एवी तेनी आज्ञा, तमोने मनाववानी तेनी इछा छे. वली देवोने विषे सर्वज्ञ जेम जिनेश्वर प्रजु छे, तेम आ पण पोतानी शक्तिथी माणसोमां इंद्र सरखो चक्री थयेल छे. माटे न्यायी एवा तमोये आ वखते तेनो विनय करवो लायक छे, अने पोताने काल-रात्रि सरखी लडाइनी तो वातज करवी नहीं. वली सूर्यप्रते जेम पतं-गीउं तेम चक्रीप्रते द्वेष करनार आ लोकोने पण आपे निवारवा. माटे हवे दंड देवानी वस्तुउ एकठी करो? अने ते चक्रीने जइ नमस्कार करो? केम के गर्व छे ते, हृदयने बालतो थको सर्वस्वनो नाश करे छे. एवी रीतनी मंत्रीनी वाणी सांजलीने तथा ते अक्षरो जोइने, परमेष्टीना स्मरणथी जेम पाप, तेम ते मागधेशनो गुस्सो नरम पड्यो. पछी ते जेट तथा ते वाण लेइने मंत्रीनी साथे चक्रीपासे जइ विनती करवा लाग्यो के, हे स्वामि! चातकने जेम वरसादनुं पाणी, तेम घणा कालथी उत्कं-ठित थयेला मने आजे आपनुं दर्शन थयुं, ते अत्यंत श्रेष्ट कार्य थयुं. वली आप अमारा स्वामी थवाथी अमो आजे सनाथ थया, केमके सू-र्योदयथी कमलोनी संपदा वृद्धि पामे छे. वली सूर्यसमान कोइ तेजस्वी नथी, पवन समान कोइ गतिवालो नथी, अने मेरूसमान कोइ पर्वत नथी, तेम आप समान कोइ पराक्रमी नथी. वली हे स्वामी! प्रमादनां वशथी में आपनी तुरत सेवा करी नहीं, ते आप क्षमा करशो, केमके संत पुरुषो नमनारप्रते प्रीतिवाला होय छे. वली हवेथी हे नाथ! हुं आपनां चरणकमलप्रते ज्रमरसमान छुं, तथा जिननी आशिषनी पेठे आपनी आज्ञा हुं मस्तकपर चडावीश. वली हे स्वामी! आ-पनी आज्ञाथी हुं जक्तिवालो थइने, पूर्वदिशानां आ मागध ती-

र्थमां जयस्तंजनी पेठे रहीश. वळी हे स्वामी ! आ अमो, आ राज्य, खाणो, लक्ष्मी विगेरे आपनांज छे, माटे आपनी इछा प्रमाणे सेवकने आज्ञा, फरमावो ? एटलुं कहीने तेणे चक्रीने हार, मुकुट, कुंडल, मागध तीर्थनुं पाणी, अने ते बाण आप्यां. वळी तेणे पूर्वे मेलवेलां रत्नो, मोती, मणी, अने बीजी पण दीव्य वस्तुउ आपी. पठी जरते पण तेने इनाम आपीने, तथा पोतानां सेवकोमां गणीने रजा आपी. पठी तेज मार्गे रथ पाठो वालीने, जरत राजा, इंद्र जेम देवलोकमां, तेम पाठा पोतानां सैन्यमां आव्या; तथा त्यां रथथी उतरीने, अने विधिपूर्वक स्नान करीने, परिवार सहित तेमणे अठमनुं पारणुं कर्युं. पठी त्यां मागधेशने जाणे सामी जेटज आपता होय नहीं तेम, तेमणे अगाइ महोत्सव कर्यो. पठी ते चक्ररत्न तेजथी सूर्यनी पेठे चलकतुं थकुं आकाशमां चालवा लाग्युं. पठी उन्नतोने नमावता, नम्रोने स्थापन करता, पर्वतोने दलता, दीनोनो उद्धार करता, जेटो लेता, तथा चक्रनी पाठल हमेशां जोजनसुधि प्रयाण करता, ते चक्री दीव्य शक्ति पूर्वक दक्षिण समुद्र प्रते पहोंच्या. एलची, लविंग, चारोली, कंकोल, तथा सोपारीवाला ते दक्षिणसमुद्रना कांठापरनां वनमां तेणे लश्करनो पडाव नाख्यो. त्यां पण अगाउनी पेठे वार्धकीए लश्करमाटे आवासो तथा उत्तम पौषधशाला बनावी. त्यां वरदाम देवने मनमां धारीने, अर्थ साधनार, पौषध सहित अठमनो तप चक्रीए कर्यो; तथा पठी वलिनो विधि करीने सुवर्णनां रथपर चडी, धनुष्य लेइने ते समुद्रने कांठे गयो. त्यां रथथी नाजिसुधिनां पाणीमां जइने, तेणे धनुष्य खेंची दीव्य बाण ठोड्युं. पठी सोनेरी अक्षरोवालुं ते बाण दिशाउनां जागने उज्ज्वल करतुं थकुं, बार जोजन जइने तेनी सजामां पड्युं. एवी रीते अकस्मात बाणनां पडवाथी चंडघातथी जेम सर्प, तेम ते वरदाम गुस्से थयो, तथा समुद्रनी पेठे गाजवा लाग्यो; अने मत्सर लावीने परिवार सहित हथीयारो एकठां करवा लाग्यो. पण पठी ते बाणनां अक्षरो जोइने, तथा चक्रीने आवेलो जाणीने, जेटो तथा ते बाण लेइने ते जरत पासे गयो; पठी तेनां विनयथी जरत राजा संतोष पाम्या, केम के, मोटाउनो गुस्सो प्रणिपातसुधिज होय छे. पठी त्यां तेने पर्वतनी पेठे स्थापीने, चक्री, सिं-

हनी पेठे संपूर्ण मानवाला थया थका तेज मार्गे पाछा वळ्या; तथा सैन्यमां आवीने अठमनुं पारणुं करी पूर्वनी पेठेज तेमणे चक्ररत्ननो त्यां अठाइमहोत्सव कर्यो. पछी वायु जेम फोतरांउने, तेम शत्रुनां समूहोने उडावता, तथा सर्वज्ञनी पेठे सुरासुरथी नमाता, मेघनी पेठे जगतने जीवितदान देनारा, ते चक्री चक्रनी पाछळ चालता थका अनुक्रमे पश्चिम समुद्रने तीरे आव्या. त्यां पण पूर्वनी पेठेज तपपूर्वक रथमां बेसी तेमणे बाण छोड्युं, अने ते प्रनासेशनी सन्नामां पड्युं. त्यां बाणनां अक्षरोथी क्रोधने समावीने, नेट सहित नरत पासे आवी, नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! मने अनाथने आजे पुण्यथीज आपनुं दर्शन थयुं छे, अने तेथी हवे आपना हुकमथी हुं अहीं आपनो सामंत थइने रहीश. एम कहीने तेणे ते बाण मुकुट, कडां तथा कंदोरो नरतने आप्यां. पछी तेना हाथमां रहेला सुवर्णकुंनमां रहेलुं पाणी जोइने राजाए कह्युं के, हे प्रनासेश ! आ जीवनी पेठे तें सांचवेलुं शुं छे ? त्यारे प्रनासेश कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! तेनी कथा तमो सांनळो ? आ सुराष्ट्र देशमां शत्रुंजय नामनुं तीर्थ छे; ते तीर्थ अनंत महिमावाळुं, अनंत पुण्योनुं स्थानक, नाना प्रकारनां रत्न, औषधि, कुंड अने रसकुंपिकानी ऋद्धिवाळुं, तथा दर्शनथी, श्रवणथी, स्पर्शनथी अने कीर्तनथी पण पापोने हरनारुं छे, अने ते क्षणवारमांज प्राणीउने स्वर्ग अने मोक्षनुं सुख आपे छे. वळी तीर्थरूप एवां नगर, बगीचा, पर्वत, देश, नूमि विगेरेमां शत्रुंजय समान त्रण लोकने पवित्र करनारुं तीर्थ नथी. वळी अन्य तीर्थोमां सेंकडो यात्राउथी माणसोने जे पुण्य थाय छे, ते पुण्य आ शत्रुंजयपर एक यात्राथीज थाय छे. ते तीर्थथी दक्षिण दिशामां, प्रनाविक जळथी नरेली, अने जिनचैत्योथी मंडित थएली शत्रुंजयी नामनी नदी छे. विशेष प्रकारे तीर्थोथी संगत थएली आ पवित्र शत्रुंजयी नदी, गंगा, सिंधु आदिकनां पाणीथी पण अधिक फळने देनारी छे. पवित्र तीर्थनी वेणी समान, तथा कमळोनां समूहथी शोनती आ शत्रुंजयी नदी स्नान करनाराउनां सर्व पापोने जळनां स्पर्शथी नाश करे छे. वळी ते गंगानी पेठे अपूर्व पुण्यने उत्पन्न करती थकी, घणां द्रहोनां प्रनाववाळी तथा आश्चर्य करावनारी छे. वळी तेनां शत्रुंजयी, जाह्नवी, पुं-

डरिकीणी, पापंकषा, तीर्थभूमि, हंसी विगेरे नामो छे. कदंब तथा पुंडरिक गिरिनी वच्चे, आ नदीमां महा प्रभाविक कमल नामनो ह्रद छे. आ ह्रदनी माटीनो, तेनांज जलथी पिंड करीने आंखे बांधवाथी अंधपणुं, पडल विगेरे रोगो नाश पामे छे. वली हे स्वामी! तेनुं पाणी कांति, कीर्ति अने (शुभ) गतिने देनारुं छे, तथा शाकिनी, भूत, वेताल, वायु, पित्त विगेरेनां दोषोने हरनारुं छे. वली तेथी थता उपसर्गोने ते पाणी स्पर्शमात्रथीज नाश करे छे; अने ते पाणीमां जीवनी उत्पत्ति थती नथी. वली हुं ते पुंडरीक तीर्थप्रते हमेशां नमस्कार करवाने जउं छुं, अने अहीं मारा घरमां रहेला जिनेश्वर प्रभुना स्नात्र माटे ते ह्रदमांथी जल लावुं छुं. वली आ पाणी सघला शत्रुउनां नाश माटे में राखेलुं छे, अने ते मने बहु प्रीय छे, माटे ते आपने आपवामाटे हुं लावेलो छुं; माटे तेने आप यत्नथी राखजो, केम के, ते आ दिग्यात्रामां सर्व दोषोने हरनारुं छे. एवी रीतनुं तेनुं वचन सांभलीने स्पृहावाला थया थका भरत राजा, तेणेज बनावेला विमानमां बेसीने शत्रुंजय पर्वते गया. त्यां शत्रुंजयी नदीमां स्नान करीने, तथा ते उत्तम तीर्थनो स्पर्श करीने, फरीथी वेगवाला विमानथी पोतानां आवासप्रते आव्या. पछी तेमणे प्रीतीथी ते प्रभासेशने, ते स्थानकमां वृक्षनी पेठे फरीने स्थाप्यो. वली तेज वखते गृहीरत्ने, दीव्य रसवतीथी भरत महाराजने अठमनुं पारणुं कराव्युं. त्यां ते प्रभासेशने निमित्ते अठाइ महोत्सव करीने, सूर्यनी पाछल जेम तेज, तेम ते चक्रनी पाछल चालवा लाग्यो. पछी ते चक्रीए महासिंधुनां दक्षिण कांठापर जइने, पूर्व सन्मुख लश्करनो पडाव नाख्यो. पछी चक्रीये त्यां ते सिंधु देवीनुं मनमां ध्यान धरीने अठमनो तप कर्यो, अने तेथी चलायमान थता पवनथी जेम मोजां तेम तेणीनुं आसन कंपवा लाग्युं. पछी अवधिज्ञानथी तेणीए चक्रीने आवेला जाणीने, भेटो लेइने ते तेने पूजवा माटे गइ. त्यां चक्रीने आशिष देइने, तथा जय जय शब्द करीने आकाशमां रही थकी कहेवा लागी के, हुं आपनी दासी छुं अने मारे शुं करवुं? तेनो आप हुकम फरमावो? एम कहीने महा तेजथी तिरस्कार करेल छे अंधकारनो समूह जेउए, एवा एक हजार ने आठ रत्नां घडाउ तेणीए चक्रीने आप्या. वली तेणीए तेमने मनोहर रत्नां सिंहासन,

मुकुट, बाजुबंध, कडां, हार, अने कोमल वस्त्रो पण आप्यां. पछी चक्रीए पण ते सघलुं लेइने तेणीने विसर्जन करी, तथा अठमनुं पारणुं कर्युं. पछी त्यां पण तेणे सिंधुदेवीने निमित्ते अठाइमहोत्सव कर्यो; अने पछी ते चक्ररत्ने देखाडेला मार्गप्रते जवा लाग्या. एवी रीते उत्तरपूर्व दिशातरफ जतां थकां अनुक्रमे ते चक्री वैताढ्य पर्वत प्रते पहोंच्या. त्यां तेणे पचीश जोजन उंचो, तथा पचाश जोजननां विस्तारवालो रूपानो वैताढ्य पर्वत जोयो. ते पर्वत जिनेश्वर प्रभुनां चैत्योथी, मोटां वनोथी, विद्याधर अने देवोनां स्थानकोथी, तलावोथी तथा लाखो गामोथी शोभतो हतो. त्यां दक्षिण बाजुए सैन्यनो पडाव नांखी, तेनां स्वामीने मनमां धरी तेणे अठमनो तप कर्यो. त्यारे वैताढ्याद्रिकुमारनुं आसन कंपवा लाग्युं, अने पछी तेणे अवधिज्ञानथी चक्रीने त्यां आवेला जाण्या. त्यारे ते चक्री पासे आवीने आकाशमां रही कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! आप जय पामो? हुं आपनो किंकर छुं, माटे मने आज्ञा आपो? एम कहीने तेणे भक्तिथी चक्रीने मणि, रत्नां आभूषणो, सिंहासनो तथा देवदूष्य वस्त्रो आप्यां, त्यारे ते सघलां लेइने तेणे तेने त्यां स्थाप्यो. पछी तेणे अठमनुं पारणुं करीने, ते देवने निमित्ते त्यां अठाइमहोत्सव कर्यो. पछी त्यांथी चक्रनी पछाडी चालता थका चक्री तमिस्रा गुफाप्रते पहोंच्या, अने त्यां सैन्यनो पडाव नांख्यो. त्यां कृतमालने मनमां धारीने तेणे अठमनो तप कर्यो, त्यारे तेनुं आसन कंपवा लाग्युं, अने तेथी तेणे त्यां चक्रीने आवेला जाण्या. पछी तेनी सेवा करवामाटे ते त्यां आव्यो, अने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! हुं आ गुफानां द्वारप्रते तमारा द्वारपालनी पेठे रह्यो छुं. एम कहीने तेणे चक्रीने दीव्य आभूषणोनो समूह तथा स्त्रीने योग्य चौद अनोपम रत्नो, तेने योग्य पुष्पो, तथा दीव्य वस्त्रो आप्यां. पछी चक्रीए तेने त्यां स्थाप्या बाद ते पोताने स्थानके गयो, अने तेणे पण राजाउ सहित त्यां अठमनुं पारणुं कर्युं. पछी चक्रीए पोतानां सेनापतिने हुकम कर्यो के, हवे तमो सिंधुसागर, वैताढ्यनी सीमा, तथा सिंधुनां निष्कुटने साधो? पछी सुषेणे पण अर्ध सैन्यसहित चर्मरत्नथी सिंधु नदी उतरीने, लीलामात्रमांज बर्बर, भिल्ल, सिंहल, टंकण, यवन, कालमुख, म्लेछ, योनक विगेरेने जीत्या. पछी तेणे चक्री पासे आवीने तेने रत्नोनां समूहो, घोडा,

रथ तथा हाथी विगेरे सोंपी आप्यां. त्यां केटलाक दिवसो रहीने राजाए सेनापतिने कह्युं के, आ तमिस्रा गुफानां बन्ने द्वारो उघाडो? पछी तेमनी आज्ञाथी सुषेण सैन्यसहित त्यां गयो; तथा त्यां तप करीने,अने सुखथी स्नान करीने, तेणे श्वेत वस्त्रो पहेर्यां. पछी सोनानुं धूपधाणुं लेइने ते गुफापासे गयो, अने तेने देखतांज तेणे नमस्कार कर्यो. त्यां अठाइ महोत्सव करीने, तथा चोखाथी अष्टमंगल चीतरीने, तेणे हाथमां दंडरत्न लीधुं. पछी सात आठ पगलां पाछां हठीने, तेणे वेगथी त्रण वार ते दंडरत्नथी कपाटप्रते ताडना करी. ते दंडघातथी ते कमाडो तडतड अवाज करता थकां उघडी गयां. पछी सेनापतिए विनंति करवाथी चक्री हस्तीरत्नपर चडीने ते गुफासमीप आव्या. पछी तेणे विचार्युं के, अहीं घात, आर्ति, अंधकार, भूत आदिकनां उपसर्गो आपणने थशे, एम विचारि तेणे चार अंगुलनुं मणिरत्न साथे लीधुं. पछी तेणे ते हाथीनां कुंभस्थलपर राख्युं; अने पछी ते चतुरंगी सेनासहित चक्रनी पाछल चालता थका गुफामां दाखल थया. त्यां तेणे आठ सोनैयानां प्रमाणवालुं, आठ कर्णिकावालुं, तथा बार योजन सुधि अंधकारनो नाश करनारूं काकिणीरत्न पण साथे लीधुं. यक्षोनां समूहथी आश्रित थएलां ते काकिणी रत्नथी, योजन योजनप्रते, ते गुफानी बन्ने बाजुउमां मांडलां करता थका ते चक्री जवा लाग्या. एवी रीते तेना उद्योतथी जता थका चक्री आज्ञालेख सरखी निम्नगा अने उन्निम्नगा नामनी गंभीर नदीप्रते पहोंच्या, तेउमांथी एक नदीमां तुंबडानी पेठे पत्थरनी शिला पण तरती हती, अने बीजीमां शीलानी पेठे तुंबडुं पण बुडी जतुं हतुं. ते नदीउपर वार्धकीए करेला पुलपरथी ते उतर्या, अने एवी रीते ते गुफानां उत्तरद्वार प्रते पहोंच्या. पेहेला द्वारनां उघाडवानां भयथीज होय नहीं जेम, तेम ते उत्तरनां द्वारो पण पोतानी मेलेज उघडी गयां, अने तेथी चक्री ते द्वारे बहार निकल्या. एवी रीते पचाश योजननां विस्तारवाली ते गुफाने उलंगीने चक्री उत्तर भरतार्धने जीतवामाटे चाल्या. ते वखते त्यां वसता म्लेछोनां उत्पातो थवा लाग्या. ते म्लेछोनां कालवक्त्र, कालदंष्ट्र, कराल, कालदारूण, वडवामुख, सिंहमुख विगेरे उपरीउ हता. तेने दरेकनी पासे पांच करोड घोडा, दश करोड रथो, एक करोड

हाथीउ अने पचास करोड पायदल हतुं, अने तेउ एवा बलवान हता के, रणसंग्राममां देवो पण तेउनां पराक्रमने सहन करी शकता न होता. मदोन्मत्त थएला ते म्लेछो पोतानां सैन्यो एकठां करीने चक्रीप्रते पोकार करवा लाग्या. वली तेउ क्रोधांध थइने जगतने तृणसमान गणता थका बख्तर अने हथीयारबंध थइने आमतेम दोडवा लाग्या. तेउ प्रलयकालनां वरसादनी पेठे बाणोनी श्रेणीउने वरसावता थका चक्रीनां अग्रसैन्यनी साथे लडवा लाग्या. तेउ उछलता थका, गर्जना करता थका, तथा भुजपीडन करता थका रणांगणमां प्रगट रीते नटनी पेठे शोभवा लाग्या. वली क्रोधथी भयंकर आंखोवाला थया थका साक्षात क्षत्रिय संबंधि तेजतुल्य शोभवा लाग्या. ते वखते घोडाउना हेषारवोथी, हाथीउनी गर्जनाउथी; रथोनां चित्कारोथी तथा सुभटोनां सिंहनादोथी जगत भयथी क्षोभ पामवा लाग्युं. ते वखते योधाउ पोतपोताना जयमां उत्सुक थया थका पर्वतोनां शिखरोथी वृक्षोथी तथा लोखंडनां हथीयारोथी लडवा लाग्या. केटलाको भयंकर दंडोथी, तो केटलाको मुद्गरोथी तो केटलाको बाणोथी, फरसीथी, तथा खड्गोथी शत्रुउनी साथे लडवा लाग्या. ते वखते प्रचंड वायुथी जेम वन, तथा दुर्जनथी जेम सज्जन, तेम ते क्रूर म्लेछोथी चक्रीनां सैन्यने उपद्रव थयो. वली त्यारे ते म्लेछोनां शस्त्रोथी चक्रीनो परिवार नाशवा, भ्रष्ट थवा, पडवा, मुर्छा खावा, तथा जोवा लाग्यो. ते वखते पोतानां हाथीउने नाशता, रथोने भांगता, तथा घोडाउने त्रास पामता जोइने सेनापतिने कोप चड्यो. पछी ते सुषेण सेनापति ज्यारे रणसंग्राम करवा लाग्यो, त्यारे म्लेछनां लश्करीउ त्रास पामवा लाग्या, तथा दिशाउने जोवाने पण समर्थ थया नहीं. पछी तेउ कागडाउनी पेठे एकठा थइने, पीडीतो जेम माताप्रते तेम विचारमाटे सिंधु नदी प्रते गया. त्यां वस्त्रो तजीने, वेलुपर रहीने, तपस्याथी पोतानां मेघमाली आदिक देवोने प्रसन्न करवा लाग्या. ते वखते तेउनां आसन कंपवाथी, तेउ पोतानां भक्त म्लेछो पासे आवीने आकाशमां रही कहेवा लाग्या के, तमोए अमोने शामाटे आराध्या छे? त्यारे तेउ कहेवा लाग्या के, आ अमारा देशने अगाउ कोइए पण पराभव कर्यो नथी, अने आ कोइ नवीन राजा आजे पराभव करवा आवेल छे, अने तेणे

अमोने नग्न कर्या. ते सांनलीने ते आग्रही म्लेछोने ते मेघकुमारो कहेवा लाग्या के, आ श्री युगादिदेवनां महा पराक्रमी पुत्र छे; वली ते नरतेश्वर नामनां आ नरतखंडनां पेहेला चक्री छे, तथा ते मंत्र, यंत्र, विष, शस्त्र, अग्नि तथा विद्यादिकथी पण जीती शकाय तेम नथी. तो पण तमारा उपरोधथी अमो तेने उपसर्ग करीशुं, एम कही तेउ अंतर्ध्यान थया. पछी आकाशमां श्याम रंगनां मेघो फेलावा लाग्या, तथा नयंकर गर्जना अने वीजलीनां कडाकाउ थवा लाग्या. पछी तेउ अंधकारनां परमाणुनी पेठे मूसलधाराथी समस्त पृथ्वीने व्याप्त करवा लाग्या. ते वखते वृक्षोनां मूलोने खोदी नाखता, तथा पर्वतनां शिखरोने पाडता थका मेघो जलना प्रवाहोथी खाडादिकोने पूरवा लाग्या. पछी, दुष्ट राजाप्रते जेम अन्यायो, रात्रिप्रते अंधकारो, तथा कलिकालमां जेम चोरो, तेम मेघनां समूहो पृथ्वीमां व्यापवा लाग्या. ते वखते चक्रीए करस्पर्शथी चर्मरत्न विस्तार्युं, अने जिनेश्वरे जेम नुवनने, तेम तेणे तेमां ते सैन्यने उंधर्युं. वली तेनी पेठेज तेमणे छत्र रत्नने विस्तार्युं, अने ते पारानां विंदुउनी पेठे चर्मरत्ननी साथे मली गयुं. पछी समुद्रमां जेम वाहाण, तेम ते चर्मरत्न पाणीमां तरवा लाग्युं, अने छत्ररत्न उपर पडता मेघने रोकवा लाग्युं. एवी रीते नूतनसृष्टि सरखा ते लश्करनुं चक्रीए पितानी पेठे रक्षण कर्युं, अने त्यारथी ब्रह्मांडनी कल्पना थइ. वली त्यां काकिणी, मणि अने, चक्ररत्नथी अंधकारनो समूह नाश होते छते, तत्काल उत्पन्न थएला धान्योथी ते सैन्य सुखे रहेवा लाग्युं. एवी रीते ते मेघकुमारोए कल्पांतकालनी पेठे सात रात्रि दिवसो सुधि पाणी वरसाव्युं. “ आ कोण पापीउ उद्वेग करवा लाग्या छे ? ” एवी रीतनां नरतनां नावने जाणीने, तेनां सोल हजार अंगरक्षक यक्षो कोप पामीने, तथा तुणीरो (नाथां) वांधीने मेघकुमारोने कहेवा लाग्या के, अरे रांकडाउ ! तमो आ चक्रीने क्रोध चडाववाने उद्यमवंत थएला कोण छो ? वली तमो मूर्खो आ नरतेश्वर चक्रीने जाणता नथी ! ! माटे हवे तमो तुरत आवीने आ चक्रीने पगे पडो ? अने तमो शरणे आव्याथी ते तमारो अपराध क्षमा करशे. अने जो तमो तेम नहीं करशो, तो तेनां चाकर एवा अमो तमोने हठथी मारशुं; ते सांनलीने मेघकुमारोए आ-

काशमांथी वादलांउनो समूह खेंची लीधो. पछी ते मेघकुमारो यक्षोर्ने साथे चक्रीपासे आवीने नमस्कार करवा लाग्या, तथा पोतानां अपरा धोनुं प्रायश्चित करवा लाग्या. पछी चक्रीए पण तेमनुं सन्मान करीने तेउने छोडी मेल्या, त्यारे तेउ म्लेछोपासे आवी कहेवा लाग्या के, आ चक्री अमाराथी पण जीताय तेम नथी, माटे तमो तुरत तेमने जइ नमस्कार करो ? एवी रीते शरणभूत मेघकुमारोए तेमने तेम कह्याथी, ते म्लेछो मुखमां तरणां लेइने लोटता थका चक्रीने नमवा लाग्या. तथा पछी तेउए रत्नोनां समूहो, घोडा, हाथीउ, अने मेरु सरखा सोनानां ढगलां चक्रीनां चरणपासे मेल्या; तथा बहु भक्ति पूर्वक तेउ मिष्ट वचनो बोलवा लाग्या. पछी चक्रीए पण तेमने रजा आप्याथी तेउ पोताने स्थानके गया. एवी रीते सन्मानित करेला पण म्लेछोए, मनमां मत्सर लावीने, क्षुद्र मंत्रोथी चक्रीनां सैन्यमां अनेक रोगो फेलाव्या. ते वखते सुबुद्धि मंत्री नमस्कार करीने, तथा मुकुटपर बन्ने हाथो जोडीने चक्रीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! आपणा सैन्यमां हाथी, घोडा अने माणसोने अद्भूत रोगनी पीडा थइ छे, अने ते दीव्य शक्ति तथा औषधोथी पण मटती नथी, माटे ते कोइ दुष्मने अभिचारादिकथी उत्पन्न करेली लागे छे. एवी रीते ते मंत्री जेटलामां चक्री साथे वात करे छे. तेटलामां आकाशतलने उद्योतवालुं करता थका महा तेजस्वी बे विद्याधरो त्यां आकाशमांथी उतर्या. ते वखते आदरथी उंचां मुखोवाला सैन्यनां लोकोथी जोवाता ते विद्याधरो चक्रीने नमीने तेमनी पासे बेठा. त्यारे चक्रीए पण उत्तम आकृतिवाला, तथा महा तेजस्वी एवा तेउ बन्नेने जोइने बहुमान पूर्वक पुछ्युं के, तमो कोण छो? त्यारे चक्रीनी मूर्ति अने वाणीथी खुशी थएला ते विद्याधरो पण प्रसन्न मुखवाला थया थका, नमीने चक्रीने कहेवा लाग्या के, हे स्वामि ! अमो बन्ने वायुसरखी गतिवाला विद्याधरो छीयें, तथा आजे आपनां तातने वांदवाने गया हता. त्यां ते युगादीश प्रभुनां मुखथी शत्रुंजयनी कथा सांभलीने, अमो बन्नेए त्यां जइ, ते उत्तम तीर्थने स्पर्श कर्यो. त्यां आनंदपूर्वक अठाइमहोत्सव करीने, वृषभेश प्रभुनां पुत्र आपने अमो जोवाने अहीं आव्या छीये. वली स्वामिनां पुत्रप्रते पण स्वामिनी पेठेज वर्तवुं, एवो क्रम होवाथी आप पण अमोने

युगादीश प्रभुनी पेठेज सेववालायक छो. वली हे स्वामि! आपनुं आ सैन्य मंद तेजवालुं केम जणाय छे? केमके, सूर्य अने पाणी छतां कमलोनो संकोच केम संभवे? त्यारे चक्रीये कह्युं के, मंत्र अने औषधिउथी पण असाध्य रोग अकस्मात आ सैन्यमां फाटी निकल्यो छे, तेथी प्राणीउने ग्लानि थएली छे. ते सांभली ते विद्याधरो चक्रीशने कहेवा लाग्या के, हे राजन्! शत्रुंजय पर्वतपर शाश्वतुं रायणनुं वृक्ष छे. तेनो प्रभाव शाकिनी, भूत, वेताल, तथा दुष्ट देवादिकनां दोषने हरनारो छे, एम अमोए बहु वखत युगादीश प्रभुनां मुखथी सांभल्युं छे. अने ते वृक्षनी छाल, माटी, शाखा, पत्र आदिक अमारी पासे छे, तेनुं पाणी करी, ते सेववाथी तमारुं सैन्य भले निरोगी थाय. पछी चक्रीए तेम करवानी आज्ञा आपवाथी तेउए सैन्यने निरोगी कर्युं; पछी चक्रीए तेमने सन्मान आप्यावाद तेउ पण पोताने स्थानके गया. पछी पोतानां सैन्यने निरोगी जोइने हर्षित चित्तवाला थइ, चक्री पोतानुं मस्तक धुणाववा लाग्या. पछी ते हर्षनेज जाणे वहार कहाडता होय नहीं, तेम ते कहेवा लाग्या के, अहो! आ उत्तम तीर्थनो महिमा तो वचनातीत छे; वली हुं एम मानुं छुं के, आ शिवाय कोइ उत्तम तीर्थ त्रणे जगतमां पण नथी, वली तेनां चिंतनमात्रथी पण बन्ने लोकनुं सुख मले छे. वली अगाउ पण में आ तीर्थनो अतिशय महिमा प्रभास देवनां मुखथी सांभल्यो हतो; वली आ दिग्जय कर्या बाद संघ सहित ज्यारे हुं आ तीर्थनी यात्रा करीश, त्यारेज आ मनुष्य जन्मने हुं सफल मानीश. एवी रीतनी अमृत सरखी वाणी बोलता ते चक्री, सर्व सभासदोने परम प्रीतिनां हेतुरुप थया. पछी चक्रीए फरीने क्रोधयुक्त थइने म्लेछो प्रते चक्र मेल्युं; त्यारे तेनां अधिष्टायक देवो तेउने तुरत बांधीने लाव्या. त्यारे चक्रीए तेमने दीन मुखवाला, तथा दीन वाक्योवाला जोइने, शिक्षा माटे तेउनां हाथी रत्नादिक लेइने, तेउने जता मेल्या. पछी सुषेण पण गिरि अने सागरनी मर्यादावाला सिंधुनां उत्तर निष्कुटने चक्रीनी आज्ञाथी जीतीने त्यां आव्यो. त्यां विविध प्रकारनां भोगोने भोगवता थका चक्री घणो काल रह्या; पछी एक दहाडो चक्ररत्न आयुधशालामांथी निकलीने वहार चाल्युं. पछी ते मार्गे अनुक्रमे चालता थका

चक्री क्षुद्रहिमाद्रिनां दक्षिण प्रदेश प्रते आव्या. त्यां सैन्यनो पडाव नाखीने, अठम तप करीने, रथमां चडी चक्री तुरत क्षुद्रहिमाद्रिपर गया. त्यां रथनां शीर्षपर त्रणवार ताडन करीने, पोतानां नामनुं वाण तेनां अधिष्टायक देवप्रते तेणे मेल्युं. त्यारे ते बाण वहोतेर जोजन वेग-थी आकाशमार्गे जइने पड्युं, अने तेथी हिमवंत् कुमारने गुस्सो चड्यो पण तेपरनां अक्षरो वांचवाथी तेनो गुस्सो उतरी गयो, तथा हाथमां ज्नेट लेइने ते चक्री पासे आवी नमस्कार करवा लाग्यो. एवी रीते चक्री-नुं आराधन करीने, तेमनी रजा लेइ ते पोताने स्थानके गयो, अने चक्री पण पोतानी सेनाप्रते आव्या. पछी ऋषनकूट पर्वत प्रते जइने तेणे त्रणवार रथपर ताडना करी, तथा काकीणी रत्नथी त्यां लख्युं के, " आ अवसर्पिणीमां त्रीजा आराने छेडे, श्री युगादीश प्रज्ञुनो पुत्र, तथा लक्ष्मीथी इंद्र सरखो, हुं ज्नरत नामे चक्रवर्ती थयो छुं. " पछी त्यांथी ते चक्री लश्कर सहित तेज मार्गे जता थका ज्नरतार्ध प्रते रहे-ला वैताढ्य पर्वत पासे गया. हवे पेहेलां ज्यारे आदिदेव प्रज्ञु राज्य करता हता, त्यारे कछ महाकछनां नमि अने विनमि नामनां पुत्रोने प्रज्ञुए कंइक कार्य माटे क्यांक मोकल्या हता; अने ज्यारे तेउ ते कार्य करीने पाछा आव्या, त्यारे तो तेमणे प्रज्ञुने संयमसहित जोया. एवी रीते निर्मम प्रज्ञुने नहीं जाणीने " हे तात ! हे तात ! " एम कहेता थका पुत्रनी पेठे तेउ प्रज्ञु पासे राज्य याचवा लाग्या. पछी तेउ " ज्नर-तने तो सेवशुं नहीं, " एम प्रतिज्ञा करीने, तलवार लेइ प्रज्ञुनी सेवा करवा लाग्या. एक दहाडो पातालेंद्र प्रज्ञुने वांदवा आव्यो, त्यारे तेणे तेमने प्रज्ञुनी अत्यंत ज्नक्ति करता जोया; अने तेथी तेणे तेमने हर्षथी सोल हजार विद्याउ, तथा वैताढ्यनी दक्षिण अने उत्तर श्रेणिनुं राज्य आप्युं. त्यां ते नमि अने विनमि सूर्य चंद्रनी पेठे आनंद पूर्वक राज्य करता हता. हवे ज्नरत चक्री पण रथपर बेसी त्यां आव्या, अने पातानां नामनुं बाण तेणे तेउप्रते फेंक्युं. ते बाणने जोइ तेउ बन्ने परस्पर विचारवा लाग्या के, जंबूद्वीपनां ज्नरत क्षेत्रमां आ ज्नरत प्रथम चक्री थया छे. अने ते पोतानां ज्नुजाबलथी गर्वित थइने आपणीपा-सेथी पण दंडनी याचना करे छे; पण तेनी पासे कंइ विद्यामंत्र नथी; एम

विचारि क्रोधथी लालचोल थइ तेउं लडवाने तैयार थया. हवे तेउंनी आज्ञाथी बीजा विद्याधरो पण महा सैन्योथी वींटाया थका त्यां आव्या. केटलाको तो पोतानां विमानोथी आकाशने सेंकडो सूर्यवालुं करता थका, तथा केटलाको रथोथी आकाशने गरुडमय करता थका, केटलाको मदझरता हाथीउंथी आकाशने जंगम पर्वतमय करता थका, केटलाको घणा पालाउंथी आकाशने वाणमय करता थका, अने केटलाको गर्जना करता डुंडुभिनां अवाजोथी पर्वतोने पण गजावता थका, तथा हाथमां हथियारो लेइने त्यां आव्या. हवे दिवसे पण विमानोथी आकाशने ज्योतिष्चक्रवालुं करता थका ते विद्याधरो रणसंग्राम करवा लाग्या. हवे चक्रीनुं सैन्य पण कोइ वखते यक्षोयें रचेलां विमानोथी, तो कोइ वखते रथ, हाथी अने घोडाउंथी पण ते विद्याधरोनी साथे लडवा लाग्युं. ते वखते विमानो विमानोनी साथे, घोडा घोडाउंनी साथे, हाथी हाथीउंनी साथे, पाला पालाउंनी साथे तथा रथो रथोनी साथे, धनुषधारीउं धनुषधारीउंनी साथे, तथा तलवारवालाउं तलवारवालाउंनी साथे, एम बन्ने सैन्यो लडवा लाग्यां. हवे अहीं विद्याधरोए पोतानी विद्याउंथी जे जे लश्करमां बनाव्युं, ते ते सघलुं चक्रीनां अंगरक्षक यक्षोए दूर कर्युं. एवी रीते बार वर्षोसुधि लड्याबाद चक्रीए तेउंने जीत्या, त्यारे तेउं हाथ जोडीने, तथा नमस्कार करीने भरत महाराजने कहेवा लाग्या के हे स्वामि! मेरुउपरांत बीजो पर्वत कयो छे? वायु उपरांत कोण वेगवालो छे? वज्रसमान शुं तीक्ष्ण छे? तेम तमाराथी बीजो कोण शूरो छे? वली हे स्वामी! आजे तमोने जोवाथी तो अमोए साक्षात प्रभुनेज जोया छे, माटे श्री युगादिदेवनी पेठेज तेनां पुत्र एवा तमोने अमो सेवशुं. वली आपनी आज्ञाथी अमो आ वैताढ्यपर दुर्गपालोनी पेठे रहीशुं. एम कही विनयना आधारभूत एवा विनमि राजाए सर्व अंगे आवेला तारुण्यथी मनोहर अंगवाली, तथा नेत्र, मुख, हाथ, हृदय अने पगरूपी कमलोए करीने कामदेव रूपी राजाने क्रीडा करवाने तलाव सरखी, तथा चलकती कांतिरूपी अमृतनां समूहथी भरेली, सर्व रोगोने शांत करनारी, अने इच्छा प्रमाणे दीव्य जलनी पेठे शीतोष्णनां स्पर्शवाली, सर्व शुभलक्षणोथी संपूर्ण, तथा सर्व अवयवोथी सुंदर, एवी पोतानी सुभद्रा नामनी कन्या

चक्रीने आपी. पछी चक्रीए तेमने रजा आपवाथी, तेउए पोतानां पुत्रोने राज्य सोंपी संसारथी विरक्त थइ, श्री रुषजदेव प्रजुनी पासे व्रत लीधुं. पछी चक्री चक्रनी पाछल चालता थका गंगाने किनारे पहोंच्या, अने त्यां तेमणे नहीं अति दूर, तेम नहीं अति नजदीक लश्करनो पडाव नाख्यो. त्यां पण सुषेण सेनापति चक्रीनी आज्ञाथी सिंधुनी पेठे गंगा नदी उतरीने; तथा उत्तर निष्कुट साधीने पाछो आव्यो. त्यां अठम तपथी सिद्ध थएली गंगा देवीए चक्रीने बे सुवर्णनां सिंहासनो, एक हजार ने आठ रत्नोनां कुंजो, हार, बाजुबंध, मुकुट, रत्नशय्या, दीव्य वस्त्रो तथा दीव्य पुष्पो आप्यां. पछी लावण्यनां मनोहर सुंदरपणाथी चाकररूप करेल छे कामदेवने जेणे, एवा ते चक्रीने जोइने, तेनी साथे विलास करवानी इछाथी ते मनमां चिंतववा लागी के, शुं आ इंद्र छे? के चंद्र छे? के कुबेर छे? के सूर्य छे? अथवा देवोनुं ते आवुं रूप क्यांथी होय? आ तो जगतनां स्वामी श्री युगादिप्रजुनां पुत्र जरत छे, केम के, रत्नाकर विनां आवुं रत्न बीजी जगोए कंइ उत्पन्न थतुं नथी. एवी रीते कामदेवनां बाणथी व्यग्र थइने ते कटाक्षो मारवा लागी, तथा जरतनी प्रार्थना करवा लागी, तेथी जरते तेणीने रतिवेश्ममां दाखल करी. पछी त्यां तेणीनी साथे विविध प्रकारनां जोगो जोगवतां थकां चक्रीए एक दिवसनी पेठे एक हजार वर्षो निर्गमन कर्यां. हवे एक दहाडो इंद्र जेम देवो सहित सुधर्मा सजाने, तेम जरत राजा राजाउ सहित पोतानी सजाने शोजावता हता. एटलामां मूर्तिवंत चंद्रसूर्य सरखा सौम्य कांतिवाला बे चारणमुनिउ आकाशमांथी उतर्या. ते वखते जरत चक्रीए संभ्रम सहित उठीने जक्ति पूर्वक साक्षात विवेक अने विनय सरखा ते मुनिउने नमस्कार कर्यो. पछी तेमने सिंहासनपर बेसाडीने, चक्री हाथ जोडीने तेनी सन्मुख बेठा. पछी श्री युगादीश प्रजुना पुत्रने ते जवमां मोक्षगामी जाणीने ते मुनि गंजीर वाणीथी तेने कहेवा लाग्या के, मैत्रीचतुष्क, अष्टांग योगनो अभ्यास, उपसर्गोनुं सहनपणुं, आर्जवता, कषाय, विषय अने आरंजोनो परिहार, अप्रमादीपणुं, प्रसन्नपणुं, कोमलता, तथा समता एटला मोक्षनां मार्गो छे. पछी ते देशनाने अंते रा-

जाए मुनिने नमस्कार करी पूछ्युं के, परोपकारमां रक्त एवा आप अहीं क्यांथी आवो छो ? वली मने एम जणाय छे के, रागद्वेषथी मुक्त थएला तथा पोतानां शरीरमां पण ममता विनाना एवा तमो केवल मने पवित्र करवा माटेज अहीं पधारेला लागो छो. त्यारे तेओमांथी एक मुनिए राजाने कह्युं के, हे राजन् ! अमो श्री युगादि प्रभुने वांदवा माटे गया हता. त्यां तेमनां मुखथी श्री पुंडरिक गिरिनुं उज्ज्वल माहात्म्य सांभलीने तेनो स्पर्श करवा माटे अमो आकाशमार्गे जवा लाग्या. त्यां देवो सहित ईशानेंद्र अमोने जोइ आनंदित मनवालो थइने मस्तक धुणावी कह्युं के, हे भगवन् ! आ पर्वतनुं आश्चर्यकारक माहात्म्य तमो जुओ ? आ हुं नरकगामी हतो, त्यांथी हुं आ इंद्र थयो छुं. हुं महाविदेह क्षेत्रनां पशुग्राममां सुशर्मा नामे ब्राह्मण हतो, ते दुःख अने दारिद्रनो तो एक मुख्य स्थानकरूप हतो. एक दहाडो ते आखा गाममां भिक्षा माटे भम्यो, पण त्यां तेने कंइ पण नहीं मलवाथी, ते केवल खाली हाथे पाछो पोताने घेर आव्यो. एवी रीते खाली हाथे तेने आवेलो जोइ, तेनी स्त्री क्रोधथी हाथमां सांबेलुं लेइ तेने मारवा दोडी. सुशर्मा दरिद्रताथी पेहेलेथीज पीडित थयो हतो, अने स्त्रीना आ आक्रोशथी तो ते वधारे क्रोधातुर थयो. पछी तेणे स्त्रीने वारी तो पण ते क्रोधथी शांत थइ नहीं, त्यारे तेणे तेणीने जोरथी पाणो मार्यो. ते पाणो मर्मस्थानमां लागवाथी ते मुर्छित थइने पडी, अने तुरत मृत्यु पामी. ते जोइ तेनो पुत्र क्रोधायमान थइ कहेवा लाग्यो के, अरे कुलचंडाल ! आ तें शुं अकार्य कर्युं ? ते वचनथी क्रोधायमान थइ ते ब्राह्मणे, पूर्वनां तापथी तप्त थइने, तेने तथा रडती एवी पुत्रीने पण मारी नांखी. पछी भयभीत थएलो तथा क्षोभ पामेल छे सघली इंद्रिओ जेनी एवो थयो थको, ते जवा लाग्यो, एटलामां कोइ गाय साथे अथडावाथी तेणे तेणीने पण मारी नांखी. पछी तेने पकडवा माटे कोटवालो तेनी पाछल दोड्या, त्यारे भयभ्रांत थइ, अंध तुल्य थयो थको ते पोतानां पापथी नरक सरखा कुवामां पड्यो. धिक्कार छे क्रोधने !!! के जेने वश थइ मूढ लोको कृत्याकृत्यनो विचार करता नथी, अने नरकना खाडामां पडे छे. !!! हवे ते कुवामां पडतां थकां ते ब्राह्मणनां टुकडे टुकडा थइ

गया, अने ते पीडाथी ते मृत्यु पामी जयंकर डुःखदायक सातमी नरके गयो. त्यां बंधन, बेदन, ताप, ताडन, आदिक महाडुःखो जोगवीने, मृत्यु पामी ते सिंह थयो. त्यां घणां निरपराधी जंतुउने हणीने ते फरीने पाबो चोथी नरकमां गयो. त्यांथी चवी चांडालकुलमां क्रूर कार्य करनारो थयो, अने फरीने पाबो ते सातमी नरके गयो. त्यां बहु कष्ट सहन करीने ते दृष्टिविष सर्प थयो, त्यां एक दहाडो तेणे पोतानां विलपासे केटलाक व्रतधारी मुनिउने जोया. त्यारे क्रोधथी फुंफाडा मारतो थको, तेउने डंखवानी इच्छाथी ते दोडवा लाग्यो; पबी तेउने जोइने ते चिंतववा लाग्यो के, आ तो मूर्तिथी शांत, तथा व्याधिरहित देखाय बे, एम विचारि ते धीरे धीरे चालवा लाग्यो. त्यां तेणे ते मुनिउने विद्याधरोप्रते उत्तम धर्मनो उपदेश देता, तथा शत्रुंजयनुं माहात्म्य कहेता दीठा, अने ते माहात्म्य तेणे पोते पण सांजल्युं. ते शत्रुंजयमाहात्म्य सांजल्याथी, तथा कर्मोनां लघुपणाथी तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. अने तेथी ते पोतानां पूर्वजवोने याद करवा लाग्यो. पबी ते बिलमांथी निकलीने, पोतानी संपदानां निदानजूत मुनिनां चरणोने कुंडालांरूप थइने नमतो हवो. पबी तेनां जावने जाणीने मुनिए तेने अनशन कराव्युं, तथा विद्याधरनी साथे तेने पुंडरिक गिरिप्रते पहोंचडाव्यो. त्यांथी ते काल करीने आ हुं इंद्ररूपे थयेलो बुं. माटे हे मुनिउं! हुं एम मानुं बुं के, पृथ्वीपरनां सघलां तीर्थोमां तेना सरखुं बीजुं कोइ पापोने हरनारूं तथा उत्तम तीर्थ नथी. पबी ते महाऋद्धिवान इंद्र ते वात जरताधीशने निवेदन करीने, चंदन अने कपूरनां काष्टोथी ते सर्पना पुद्गलनी सत्क्रिया करी. त्यां दाहजूमिपर रत्नोनुं सिंहासन करीने, तथा ते महातीर्थने नमस्कार करीने इंद्र पोतानुं राज्य पालवा लाग्यो. एवी रीतनुं चरित्र सांजलीने हे चक्री! अमो समाधिथी वारंवार ते तीर्थनो स्पर्श करीए बीए. हवे ते तीर्थप्रते जतां अमोए आ तमारुं सैन्य जोयुं. अने तमो अमारा गुरुनां पुत्र बो, तेथी आदरपूर्वक अमोए तमारुं आजे दर्शन कर्युं. हवे आप अमोने रजा आपो? केम के अमारे तीर्थप्रते जवुं बे; वली अमोए आपनो अति उत्तम विवेक अने विनय जोयेलो बे. पबी चक्रीए नमस्कार कर्या बाद तेउ त्यांथी चालता थया; अने चक्री

पण ते वात सांजली मनोरथ करवा लाग्या के, ते दिवस, ते क्षण अने ते रात्रि क्यारे आवशे !! के जे वखते हुं संघसहित श्रीशत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करीश. हवे चक्री गंगाने समजावीने, तथा तेनी आज्ञा लेइने प्रबल लश्कर सहित खंडप्रपात नामनी गुफासन्मुख चालवा लाग्या. त्यां जइ अठम तप करवाथी चलितासन थएलो नाट्यमाल देव जेटणां सहित चक्रीपासे आव्यो; तथा तेणे चक्रीने आजूषणप्रमुख आप्यां. पछी चक्रीए तेने बहुमान पूर्वक रजा आपवाथी ते पोताने स्थानके गयो. पछी त्यां चक्रीनी आज्ञाथी सुषेण सेनापतिए तमिस्रानी पेठेज खंडप्रपातनां द्वारो पण क्षणवारमां उघाड्यां. पछी चक्रीए हाथीपर चडीने तथा तेनां जमणा कुंजस्थलपर मणिरत्न राखीने ते गुफामां प्रवेश कर्यो. त्यां सैन्यसहित चालतां ते चक्रीए पूर्वनी पेठेज काकिणी रत्नथी गोमुत्रिका आकारनां मंडलो लख्यां; तथा निम्नगा अने उन्निम्नगा नदी ते उतर्या; अने त्यां ते गुफानुं दक्षिण द्वार पण पोतानी मेलेज उघडी गयुं. पछी ते गुफानां द्वारमांथी निकलीने गंगानां पश्चिम कांठापर तेणे पडाव नांख्यो, तथा अठमनो तप कर्यो. ते अठमने अंते एक हजार यक्षोथी अधिष्ठित थयेला प्रख्यात नवे निधानो तेनी समीप आव्यां. तेउनां नामो नैसर्प , पांडुक, पिंगल, सर्वरत्नक, महापद्म, काल, महाकाल, माणवक अने शंखक हतां. तेउनी उंचाइ आठ योजननी, पोहोलाइ नव योजननी, तथा लंबाइ बार योजननी हती. वली तेउनांज नामवाला तथा एक पल्योपमनां आयुष्यवाला, तेउनां नागकुमार नामनां अधिष्ठायको चक्रीने आवीने नमस्कार करवा लाग्या; अने कहेवा लाग्या के, अमो गंगानां मुखपर मागधतीर्थनां रहेनारा छीए, तथा हे महाभाग ! तमारां जाग्योथी वश थइने अमो तमारी पासे आव्या छीयें. वली हे चक्री ! तमारां जाग्यनी पेठे अमो कदी पण क्षय पामनारा नथी, माटे तमारी इछा प्रमाणे तमो अमोने दान तरिके आपो ? अने जोगवो ? एवी रीते ते निधानो प्राप्त थवाथी चक्रीए अठाइमहोत्सव कर्यो; तथा कल्पवृक्षथी पण अधिक दान ते पोतानी इछा मुजब देवा लाग्या. पछी चक्रीनी आज्ञाथी सुषेण पण गंगानो दक्षिण निष्कुट साधीने पाछो त्यां आव्यो. हवे त्यां केटलोक वखत हर्षपूर्वक रह्या बाद चक्ररत्न अयोध्याप्रते आ-

काशमार्गे जवा लाग्युं. एवी रीते ठ खंड पृथ्वीनां स्वामि, सुर असुर अने नरोथी विंटाएला, तथा अखंड आज्ञावाला चक्री केटलेक दिवसे अयोध्या नजदीक पहोंच्या. चोरासी लाख हाथी, तेटलाज घोडा अने तेटलाज रथो, तथा ठन्नु क्रोड सुजटोनां परिवारवाला ते जरत चक्री, पेहेला प्रयाणनां दिवसथी मांडीने साठ हजार वर्षों गया बाद पोतानां नगरमां आव्या. त्यां विनीता नगरथी थोडे दूर तेमणे लश्करनो पडाव नांख्यो, तथा त्यांनी अधिष्टायक देवीप्रते तेमणे अठमनो तप कस्यो. पठी वादलांमांथी जेम सूर्य, तेम पौषधशालामांथी निकलीने चक्रीए सर्वसंपदानां कारणरूप अठमनुं पारणुं कस्युं. पठी अयोध्यामां लोकोए पगले पगले तोरणो बांध्यां, तथा केसर अने कुंकुमनां जलथी पृथ्वीपर ठंटकाव कस्यो. वली जरतनां चरित्रोथीज होय नहीं जेम, तेम लोकोए घरोमां चित्रामणो कस्यां, तथा सर्व जगोए त्यां मंगलध्वनिठ फेलावा लागी. वली ते वखते त्यां लोकोए हर्षथी उमदा उमदा पोषाको पेहेर्या, तथा जगोजगोए सोनानां स्तंजोपर मांचाउ मांड्या. वली त्यां चक्रीने जोवामाटे जाणे सूर्यबिंबोज आव्यां होय नहीं, तेम दरेक मांचाउपर रत्ननां वासणोनां तोरणो शोजतां हतां. वली त्यां चालता फुवाराउथी अचानक जर्तारनां दर्शनथी अयोध्यारूपी स्त्री जाणे पसीनावालीज थइ होय नहीं, तेम देखावा लागी. वली ते अयोध्यारूपी स्त्री विचित्र प्रकारनी पताकाउरूपी हाथोथी घणे काले आवेला पोताना पतिने जाणे उत्सुकताथी आलिंगन करवाने इछती होय नहीं, तेम देखावा लागी. वली ते अयोध्यारुपी स्त्री, लोकोए धूपधाणामां करेला धूपमांथी निकलता अत्यंत धुंवाडानां मिशथी जाणे पोतानां जर्तारनां वियोगने दूर करती होय नहीं, तेम लोकोथी तर्क करावा लागी. हवे ते वखते ते नगरीमां प्रवेश करवानी इछाथी चक्री ऐरावण सरखा हाथीपर स्वार थया. जगतनां आ एकज पतिने सूचवनारा, तथा तेनां यश सरखा श्वेत ठत्रथी ते चक्री शोजवा लाग्या. वली मानस सरोवरमांथी तेनां मुखरुपी कमलप्रते आवेला हंसोथीज होय नहीं जेम तेम बन्ने पडखे वींजातां चामरोथी ते शोजवा लाग्या. मांहोमांहे जटकातां किरणोथी जाणे युद्ध करतां होय नहीं, एवां रत्नोथी शोजता तथा इछित दान देवाथी जंगम

कल्पवृक्ष सरखा ते चक्री देखावा लाग्या. वली ते ते दिग्जयथी थएलां विचित्र चरित्रोनां वचनोथी पगले पगले सुन्नटोथी जेम, तेम सुरासुरोथी ते स्तुति कराबा लाग्या. एवी रीते लोकोनां शरीरोथी पगले पगले नमाता ते चक्री नगरीमां, अने गुणोथी माणसोनां हृदयमां पण प्रवेश करवा लाग्या. पछी ते लाखो ऊरुखाउं रुपी नेत्रोथी उत्सुकपणे जोता, तथा उत्कंठा अने हर्षथी पताका रुपी हाथोथी नाचता, तथा कोइ जगोए इंद्रनील मणिउंथी श्याम, तो कोइ जगोए स्फटिकोथी निर्मल, तो कोइ जगोए माणिकथी लाल, तो कोइ जगोए सुवर्णथी पीला, अने विचित्र वर्णोथी देवलोक सरखा एकवीस नूमिवाला पोतानां पितानां मेहेल प्रते पहोंच्या. पछी चक्री वेदिकापर पग मुकीने, पर्वतपरथी जेम केसरी तेम हाथीपरथी नीचे उतर्या; अने वीजाउं पण पोतपोतानां वाहनोपरथी उतर्या. पछी त्यां चक्री लोकोनी नेटोने स्वीकारता, तथा नमस्कार करता माणसोने प्रीतिथी वोलावता थका रुणवार थोन्या. पछी तेमणे पोतानां शोल हजार अधिष्टायक यक्षोने यथोचित पूजीने विसर्जन कर्या; वली तेवीज रीते तेमणे वत्रीस हजार राजाउने, सेनापतिने, पुरोहितने, गृहपतिने अने वार्धकीने पण विसर्जन कर्या; तथा एवी रीते तेणे सघलाउंने विसर्जन कर्या पछी इंद्राणी सहित जेम इंद्र, तेम सुनद्रा नामे स्त्रीरत्नसाथे, तथा वत्रीस हजार वीजी राणीउंथी, तथा तेटलीज जनपदराजाउंनी कन्याउंथी तथा वत्रीस पात्रो अने वत्रीस नाटकोथी वींटाएला ते चक्री, मणि अने रत्नोनी शिलाउंनी श्रेणिउंथी आपेल छे, दृष्टिने उत्सव जेणे एवा मेहेलमां, धनद जेम केसमां तेम प्रवेश करता हवा. त्यां श्री ऋषनदेव प्रनुनी मूर्तिने नमस्कार करीने, चक्री स्नानपीठपर गया, तथा पछी न्नक्तिथी, पुष्प, धूप, अक्षत विगेरेथी तेज मूर्तिनी तेमणे पूजा करी. पछी चंद्रशालामां जइने राजाउंनां समूहनी साथे, माणसोने आश्चर्य करनारां नोजनोथी तेमणे आहार कर्यो. पछी तांबुल, चंदन, पुष्पमाला, श्वेतवस्त्रो, तथा आनूषणोथी ते चक्री इंद्र सरखा शोनवा लाग्या. पछी त्यां दीव्य संगीत, नाटक तथा स्त्रीउंनां विलासोथी तेमणे केटलोक काल सुखमां गाल्यो. एक दहाडो देवो अने मनुष्योए आवी चक्रीने विनंति करी के, हे छ खंडनां

स्वामी ! तमो महाक्षत्रीय छो; अने तेथी हे प्रभु ! अमोने आप म-
हाराज्यनां अभिषेक माटे आज्ञा आपो ? केम के जिनप्रते जेम इंद्रोनुं
तेम चक्रीप्रते अमारुं ते कार्य छे. पछी चक्रीए तेमने तेम करवानी आ-
ज्ञा आपवाथी क्षणवारमांज विद्याधरो, तथा यक्षो एकठा थया, अने
तेउए पूर्व दिशानां मंडनरुप रत्नोनां समूहोथी मंडप रच्यो. पछी तेउ
द्रहो, नदीउ, क्षीरसमुद्र, अने तीर्थोमांथी पाणी, माटी तथा वेलु
लाव्या. पछी चक्रीए पौषधशालामां जइ अठमतप कर्यो; केम के तपथी
मलेलुं राज्य तपथीज वृद्धि पामे छे: पछी उत्तम वस्त्रो पेहेरीने ते राणीउ
सहित, नाट्यरसमां मग्न थइने ते मंडपमां गया. मेरुने जेम सूर्य, तेम
चक्रीए सिंहासन, तथा मणिमय स्नानपीठने प्रदक्षिणा करी. पछी पूर्व
तरफनां पावडीयांउथी सिंहासनपर चडीने, स्त्री सहित ते पूर्वसन्मुख
बेठा. वली त्यां बीजी बत्रीस हजार स्त्रीउ पण आसनोपर बेठी; पछी
भक्तिवान राजाउ उत्तर तरफनां पावडीआंउथी ते स्नानपीठपर चड्या.
वली सेनापति, गृहपति, वार्धकी, पुरोहित तथा श्रेष्टि आदिको दक्षिण
बाजुनां पावडीआंउथी त्यां चड्या. वली ते वखते बीजाउ पण चक्रीने
जोइ हाथ जोडीने, हर्षित थया थका यथायोग्य आसनोपर बेठा. त्यां
चारण श्रमणोए प्रथम जैन आगममां कहेली विधिपूर्वक चक्रीने मंत्र-
स्नान कराव्युं. पछी तेनां आभियोगिक देवोए, इंद्रोए जेम जिनने तेम
शुद्ध तीर्थोदकथी तेमनो अभिषेक कर्यो. पछी शुभ क्षणे बत्रीस हजार
राजाउए तथा बीजा गोत्रवृद्धोए अने सेनापति प्रमुखोए पण तेमनो अ-
भिषेक कर्यो. पछी चंदनथी लिप्त छे अंग जेमनुं, तथा चांदनी सरखा
श्वेत वस्त्रवाला ते चक्री, शरद ऋतुनां वादलांउथी वींटाएला मेरुपर्वत
सरखा शोभवा लाग्या. पछी देवोए चैत्यपर जेम कलश, तेम तेमनां म-
स्तकपर ऋषभ प्रभुने इंद्रे आपेलो मुकुट स्थापन कर्यो. वली तेउए पवित्र
मोतीउथी गुंथेलो हार तेमनां कंठमां स्थापन कर्यो. ते हारनां का-
ठिन्यपणाने भेदनारी पारिजातनां पुष्पोनी अत्यंत सुगंधिवाली माला
तेउए चक्रीनां कंठमां स्थापन करी. पछी चक्री ते रत्ननां सिंहासनथी
उठ्या, अने तेज वखते तेनां प्रतिबिंबोनी पेठे बीजाउ पण त्यांथी उठ्या.
पछी जे मार्गेथी सिंहासन पर चड्या हता, तेज मार्गेथी उतरीने चक्री

जंगम मेहेल सरखा हाथीनां स्कंधपर चड्या. पठी फरीने स्नानगृहमां जइ, स्नान करी तथा प्रज्ञुने पूजीने तेमणे अठमनुं पारणुं कर्युं. एवी रीते जुदा जुदा देशोमांथी आवेला राजाउए, देवोए, तथा विद्याधरोए तेमनो बार वर्षोसुधि अन्निषेक कर्यो, ते वखते ते अन्निषेकथी मनोहर एकांत सुखमकाल सरखो त्यांनां लोकोनो काल निर्गमन थयो. एवी रीते चंद्रनी पेठे सौम्य, सूर्यनी पेठे शत्रुउ प्रते तीव्र, कुवेरनी पेठे धनवान, वरुणनी पेठे ज्ञुवनेश, तेजथी अग्नि सरखा, धर्मनी पेठे प्रसाद अने दंड करनार, कामदेव सरखा रूपवाला, दिवसे विकस्वर थएला कमल सरखा मुखवाला, देवोथी पण नथी मेलवातो मध्यन्नाग जेनो एवा कीर समुद्रनी पेठे गंन्नीर, अधिकारीउ प्रते आज्ञाथी इंद्रनी पेठे समर्थ, वरसादनी पेठे प्राणीउने हमेशां जीवितदान देनार, तथा ताराउमां जेम चंद्र, तेम सघला विद्याधरो, राजाउ अने न्नरतनां देवोमां पण ते चक्री एकज राजा होता हवा. वली ते हमेशां चौद रत्नोथी शोन्नता हता, तथा नवे निधानो तो तेनां चरणकमलनी पासेज रहेतां हतां. वली ते नीचेनी वस्तुउनां स्वामि थया थका शोल हजार यक्षोथी, परिवार सहित बत्रीस हजार राजाउथी, बत्रीस हजार जानपद कन्याउथी, बत्रीस हजार राजकन्याउथी, त्रणसो साठ रसोइआउथी, चोरासी लाख रथोथी, चोरासी लाख हाथीउथी, चोरासी लाख घोडाउथी, ठन्नुं क्रोड पालाउथी, बत्रीस हजार जनपदराजाउथी, बहोंतेर हजार नगरोथी, नवाणु हजार द्रोणोथी, अडतालीस हजार पत्तनोथी, चोवीस हजार कर्वटोथी, वीस हजार खाणोथी, सोल हजार खेटकोथी, चौद हजार संबाधोथी, ठपनसो द्वीपोथी, तथा ठत्रीस हजार वंदरोथी शोन्नता हता. वली ते उंगणपचास कुराज्योनां, न्नरत खंडनां अने वीजां राज्योनां पण स्वामी हता. वली आदीश्वर प्रज्ञुए बतावेली नीतिने जाणनारा, विश्वंन्नर, श्रीधर, सुबुद्धि तथा बुद्धिसागर नामनां तेमनां मंत्रिउ हता. वली तेउना अंश सरखा एकसो आठ, अने वली त्रण क्रोड पण मंत्रिउ तेमनां हता. वली न्नरत महाराजनां अंश सरखा, अने जगतमां एक वीर सरखा, तेमनां सुषेण, श्रीषेण, दुर्जय अने जगज्जय नामनां सेनापतिउ हता. वली तेमनां जीवानंद, महानंद, संन्नी-

वन, अने सुजीवन नामनां चार मुख्य नरवैद्यो, तथा बीजा साडात्रण लाख नरवैद्यो हता. वली तेमनां जांगल, कृतनाल, विशाल अने विमल नामनां चार मुख्य गजवैद्यो अने बीजा त्रण लाख गजवैद्यो हता. वली तेमनां विश्वरूप, परब्रह्म, हंस अने परमहंस नामनां चार मुख्य पंडितो, अने सात लाख बीजा पंडितो हता. वली तेमनां श्रीकुंठ, वैकुंठ, भृकुटि, अने धुर्जटि नामनां चार मुख्य धनुर्विद्या जाणनाराउं, तथा बीजा पण घणा हता. वली तेमनां ज्योतिषीउं, धर्मांग जाणनारा, अने दंडनीति जाणनाराउं पण घणा हता. हवे एक दहाडो भरत राजा हर्षथी क्रीडा करता थका पोतानां साठ हजार वीरोने संभालवा लाग्या. ते वखते राजपुरुषोए तेमने नामो लेइ लेइने देखाड्या, अने भरत राजा पण तेमने आनंद सहित जोवा तथा बोलाववा लाग्या. पछी दिवसे रहेली चंद्रनी कला सरखी कांति विनानी, तथा हिमथी क्लिष्ट थएली कमलनी सरखी विरूप थएली तथा सेवकोथी देखाडाती सुंदरीने भरत राजाए जोइ. त्यारे लाल आंखोथी चित्तमां थएला क्रोधनी रेखाने देखाडता थका भरत राजा कठिन वचनोथी सेवकोने कहेवा लाग्या के, अरे लुच्चाउं ! शुं अमारा घरमां कंइ भोजन आदिक खावा मलतुं नथी ? अथवा तमो शुं आ सुंदरीनो कंइं आदर करता नथी ? वली शुं आ कंइ खाती नथी ? के आने शुं कंइं रोग थयो छे ? अथवा ते ते विद्याने जाणनारा वैद्यो शुं मरी गया ? वली आ मदरहित हाथणीनी पेठे म्लान केम थइ छे ? अने आ उपरथी खातरी थाय छे के, खरेखर तमोए मारुं बीजुं पण नुकशान कर्युं होशे ! ! ! एवी रीते बोलता ते राजाने ते सेवको नमीने हाथ जोडी कहेवा लाग्या के, हे स्वामी ! श्री भरत महाराजने घेर तो सघली संपदाउं छे, केम के, इंद्रने घेर कंइं दरिद्रपणुं होय ? वली आ सुंदरी कुलदेवीनी पेठे अमोने हमेशां पूजनीक छे, तेम मृत्युप्रते उपाय करनारा वैद्यो पण घणा जीवता बेठा छे. पण हे स्वामी ! आप ज्यारथी दिग्यात्रामाटे सिधावेला छो, ते दिवसथी आ सुंदरी केवल प्राण धारवामाटेज आंबेलो करे छे. वली ते वखते आपे तेणीने प्रभुपासेथी दीक्षा लेती अटकावी हती, तेथी ते आ गृहस्थावासमां पण भावसाधवी थइने रहेली छे. पछी भरत महाराजाए सुंदरीने पुछ्युं के, तारे दीक्षा

लेवी छे ? त्यारे तेणीए हा पाड्याथी ज्ञरत राजा कहेवा लाग्या के, हे सुंदरि ! तुं जे आ संसारथी विरक्त थइ, माटे तने धन्य छे. वली तातना अपत्योने आ सुखदाइ कार्यज करवुं उत्तम छे. वली हे सुंदरि ! विषयरूपी चोरथी लुंटाएला अमो तातनां अपत्यो थइने पण तुछ सुखवाला आ राज्यमां माची रह्या छीए, माटे हे महासत्वे ! हवे तारी इछाप्रमाणे कर ? एवी रीते ज्ञरत राजाए आज्ञा आपवाथी ते हृदयमां अत्यंत आनंद पामी. हवे एटलामां त्रण जगतनां नाथ श्री रुषज्ञदेव प्रज्ञु पण जीवोनी अनुकंपाथी पृथ्वीपर विहार करता थका अष्टापद पर्वतप्रते आव्या. त्यां इंद्रोनां समूहोए हर्षथी आवीने रत्नोनी श्रेणिउथी प्रज्ञुनुं समवसरण बनाव्युं. ते वखते त्यांनो उद्यानपाल वांदरानी पेठे कुदीने, हर्षथी ज्ञरतपासे आवी जय जय शब्द करवा लाग्यो; तथा पछी पृथ्वीपर मस्तक नमावीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी ! हुं आपने कल्याणकारी वार्तानी वधामणी आपुं छुं के, श्री तातपादोए अष्टापद पर्वतने पवित्र करेलो छे, तथा त्यां देवोए पण हमणाज समवसरण रच्युं छे. ते सांज्ञली हर्ष पामेला चक्रीए प्रफुल्लित मनवाला थइने तेने साडा बार करोड सोनामोहोरोनुं इनाम आप्युं. पछी ज्ञरत राजाये सुंदरीने कह्युं के, आ तारो मनोरथ पण संपूर्ण थयो. एम कहीने तेमने तेणीने अंतःपुरनीस्त्रीउ मारफते शुरू तीर्थोदकोथी स्नान कराव्युं. पछी तेउए तेणीनां मनसरखां पवित्र अने निर्मल श्वेत वस्त्रो पहेराव्यां; तथा अंगे विलेपन कर्युं. पछी ते पालखीमां वेसीने छत्र चामरथी वींजाती थकी ज्ञरतनी पाछल अष्टापद पर्वतप्रते गइ. त्यां तेणीए ज्ञवनां तापथी दुःखित थएला पोतानां चित्तप्रते केलनां वृक्षसरखुं समवसरण जोयुं. हवे ज्ञरत अने सुंदरी वाहनमांथी उतरीने, तथा प्रज्ञुने प्रदक्षिणा देइने ज्ञक्तिसहित नमस्कार करवा लाग्या. मुक्तिसुखनी स्पर्धा करता एवा जिनना चरणकमलोने साठ हजार वर्षे मेलवीने ज्ञरत चक्री अत्यंत आनंद पामवा लाग्या. पछी मनमां रहेला आनंदनेज जाणे बहार कहाडता होय नहीं तेम, त्रण जगतने स्तुति करवा लायक एवा रुषज्ञदेव प्रज्ञुनी ज्ञरत महाराज स्तुति करवा लाग्या के, हे स्वामी ! तमो सर्व प्राणीउने ध्यान धरवा लायक छो, पण तमो कोइनुं ध्यान धरता नथी, तेम तमो इंद्रोने

पण पूजनीक छो, पण तमोप्रते कोइ पूजनीक नथी; वली तमोज जगतनां पेहेला नाथ छो, पण तमाराथी कोइ पेहेलो नथी, वली जगदीश्वरपणाथी स्तुति करवा लायक छो, पण तमो कंइ कोइनी स्तुति करनारा नथी. वली तमो सर्वने शरणारुप छो, पण तमोने कंइ कोइनुं शरणुं नथी, वली तमो आ जगतनां स्वामी छो, पण तमारो कोइ स्वामी नथी. वली मोक्षनुं सुख पण आपनेज स्वाधिन छे, केम के ते देनारो आप शिवाय बीजो कोइ नथी. वली उत्कृष्टमां उत्कृष्ट पण आपज छो, आपशिवाय कोइ उत्कृष्ट नथी. वली आप अनादि, अनंत तथा ज्योतिरुप छो, तेम पंडितो आपनुंज ध्यान धरे छे, अने आपनाथीज आ त्रणे जगतोने धन्य माने छे. माटे आ भवरूपी समुद्रमां वहाणसमान एवा आपप्रते नमस्कार थाउं; वली हे नमनारप्रते वत्सल भाव राखनारा प्रभु! आपनी पासे हुं मोक्षसुखनां आनंदनी याचना करुं छुं. वली हे प्रभु! हुं तो आपनो दास छुं, अने आपना तरफथी सनाथपणानी मागणी करुं छुं, माटे हे जगतने शरणाभूत प्रभु! मारापर कृपा करी मारुं रक्षण करो? एवी रीते ते चक्रीश्वर प्रभुनी स्तुति करीने, जिनरूपी चंद्रपासेथी नीचे प्रमाणे देशनारूपी अमृत पीवा लाग्या के, शीलथी सौभाग्यपणुं मले छे, सुपात्रदानथी भोगो मले छे, देवपूजनथी साम्राज्य मले छे, तथा तपथी कर्मोनो क्षय थाय छे. आ सघलुं भावनाथी क्षणवार पण सेववाथी अनुक्रमे चिन्मयपणाने पमाडी मुक्तिनां कारणरूप थाय छे. पछी ते देशनाने अंते सुंदरी प्रभुने नमस्कार करीने कहेवा लागी के, हे नाथ! कृपा करीने मने दीक्षा आपो? तथा मारो तुरत उद्धार करो? एवी रीतनां तेणीनां आग्रहथी प्रभुए तेने हर्षथी दीक्षा आपी, अने तेथी ते पण पोताने अत्यंत धन्य मानवा लागी. पछी भरत राजा पण एवी रीते सुंदरीनो दीक्षामहोत्सव करीने, तथा प्रभुने नमीने, पोतानी नगरीमां आव्या. एक दहाडो दिग्जयमां पण नहीं आवेला पोतानां भाइउने जोवानी इछाथी भरत राजा तेमने संभालवा लाग्या. पछी तेमणे प्रीतिथी तेमने बोलाववामाटे दूतो मोकल्या; केम के राजाउ प्रायें करीने दूतरूपी पगोवाला होय छे. ते दूतो तेउपासे जइ प्रथम साम वाक्योथी तेउने समजाववा लाग्या; पण तेउये तेम नहीं मान्याथी आकरां वचनोथी तेउ ते-

मने कहेवा लाग्या के, जो तमारे जीवित अने राज्यनी पण इछा होय, तो तुरत जरतनी पासे आवी हमेशां तेमनी सेवा करो? एवी रीतनी तेउनी कडवी वाणी सांजलीने, ते राजाउ मानथी अष्टापदप्रते रहेला प्रजुपासे गया; त्यां प्रजुने नमीने तथा स्तवीने, आंखोमां किंचित आंसु लावीने पोतानो व्रतांत तेउ कहेवा लाग्या के हे तात! आपे दीक्षा लेती वेलाए अमोने अने जरतने पण यथायोग्य, आपनी इछामुजब राज्यो आप्यां हतां; हवे दावानलनी पेठे परनी उन्नतिने नहीं सहन करीने जरते आखा ठ खंडनो ग्रास कर्यो. अने अमो तो आपनी जक्तिमां तत्पर थइने अमारां राज्योथीज संतुष्ट थया थका, सुखेथी दिवसो गालता हता. पण हवे तो आ मोटा जाइ अमारां राज्योने पण लेवाने इछे ठे, माटे हवे अमारे शुं करवुं? ते माटे पूर्वनी पेठेज आप अमारां हितनीइछाथी फरमावो? ते सांजलीने जगतनां नाथ जगतने पण प्रिय लागे एवुं वचन कहेवा लाग्या के, पराक्रमी क्षत्रीउए शत्रुउने मारवाज जोइयें!!! अने तेथी हमेशां ठलमां तत्पर अने पासेज रहेता एवा रागद्वेषरूपी महाशत्रुने तमो मारो? आ संसाररूपी समुद्रमां राग ठे. ते पत्थरनां ढगला सरखो ठे, तथा द्वेष ठे ते सम्यक्त्वरूपी कल्पवृक्षने बालवामां अग्नि सरखो ठे. माटे हे वत्सो! व्रतरूपी राज्य मेलवीने, अति जयंकर तपरूपी हथीयारोथी, ते रागद्वेषरूपी शत्रुने हणो? एवी रीते प्रजुपासेथी बोधिबीज पामीने, अत्यंत वैराग्ययुक्त थया थका, मोक्षसुखनी इछाथी तेउए तुरत दीक्षा लीधी. पछी ते सघली वात दूतोए जरतने जइ कही; त्यारे सूर्य जेम सघलां तेजोने, तथा समुद्र जेम पाणीनां समूहोने, तेम जरते तेउनां सघलां राज्यो लेइने स्वाधीन कर्यां; अने तेउनां पुत्रोने पोतानी आज्ञामां राखीने राज्यो सोंप्यां; केम के, राजाउ पोतानी आज्ञा मनाववानेज इछे ठे. हवे सूर्यनां दर्शन सरखो, वरसादनी धारासरखो, पवननी गतिनी पेठे सर्वव्यापी, तथा पर्वतसरखो वजनदार जरतनो प्रताप शत्रुउथी सहन न करातो हवो. पोतानां हाथथी दीधेलां दानोथी याचकोनी दरिद्रताने, तथा धर्मरूपी सूर्यथी अज्ञानरूपी अंधकारना समूहने, अने चक्रथी शत्रुनां कुलने हणता एवा श्री जरत महाराजा जयवंता वर्तो? ते चक्रीश्वर सकल जगतनां धर्मने एवो तो फेलाव्यो के जेना ध्वनिथी सर्व पापो नया (अंन-

रंग) शत्रुउं नाश पामवा लाग्या. नमता राजाउंनां मुकुटनां किरणोनां समूहोथी मनोहर थएल ठे पादपीठ जेनुं, तथा लोकोनां तापने हरनारा, श्री ज्ञरतराजारूपी चंद्र शत्रुनी कीर्तिरूपी ताराउंने पोतानां गुणरूपी किरणोनां समूहोथी त्रास आपवा लाग्या; (ए आश्चर्य ठे)

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिए बनावेला श्री शत्रुंजय महा तीर्थनां माहात्म्यमां श्री ऋषज्ञदेव प्रज्ञुनो जन्म, राज्याज्ञिषेक, दीक्षा, केवलोत्पत्ति अने ज्ञरतनां दिग्जयनां वर्णनरूप त्रीजो सर्ग समाप्त थयो.

चतुर्थः सर्गः प्रारभ्यते.

जे प्रज्ञु रूपी व्यापारीना देव, असुर, ज्ञुवनपति, अने मनुष्य अनुग्रहवाला ठे, तथा कमल, समुद्र, चंद्र अने विद्याधरो संपदा रूप ठे, तथा कामधेनु, कल्पवृक्ष, दक्षिणावर्त शंख अने रत्नरूपी आकरो (खाणो) ठे, एवा श्री आदिनाथ प्रज्ञु तमारुं रक्षण करो. ? हवे श्री वीरप्रज्ञु इंद्रने कहे ठे के, हे इंद्र ! वली पण आ तीर्थनुं वखाणवा लायक तथा आश्चर्यवालुं माहात्म्य तुं सांज्ञल ? एक दहाडो उलसायमान सुवर्ण कुंडलवाला ज्ञरत चक्री इंद्र जेम मेरुपर तेम सिंहासनपर बेठा हता. ते वखते त्यां रहेला बत्रीस हजार राजाउंनां मुकुटोना किरणोथी तेनी वरसाद सरखी सज्ञा, विजलीउं सहित देखाती हती. वली ते वखते तुल्य अलंकार तथा वस्त्रोवाला मंडलीक अने सामंतोथी, सामानिक देवताउंथी जेम इंद्र तेम ज्ञरत चक्री शोज्ञता हता. एटलामां सुषेण सेनापति पृथ्वीपर मस्तक राखीने, तथा बन्ने हाथो मस्तकपर जोडीने ज्ञरतने विनंति करवा लाग्यो के हे स्वामी ! सर्व जगोए विस्तार पामती आपनी आज्ञाने, जिननी आशिषनी परें राजाउं मस्तके चडावे ठे. वली आपना चक्ररत्ननो उदय थवाथी सघला क्षुद्र उपद्रवो नाश पाम्या ठे, केम के, सूर्यनुं बिंब तपते ठते शुं ताराउंनो समूह रही शके ठे ? वली तमोए दानथी दरिद्रीउंनां दारिद्रने, तथा तलवारथी शत्रुउंने नाश कर्या ठे. तो पण हे स्वामी ! अज्ञव्यनां मनप्रते जेम जिननो बोध, तेम आपणुं चक्ररत्न आयुधशालामां प्रवेश करतुं नथी. ते सांज्ञलीने चक्रीए मंत्रिनां मुखसामुं जोयुं. केम के, राजाउं प्राएं करीने मंत्रीमुखा होय ठे. पठी विश्वं-

जर नामनो मुख्य मंत्री जरतने नमीने, हाथ जोडी, विनयथी वामन थयो थको कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! विस्तार पामता आपना प्रतापने अटकाववाने समर्थ त्रणे लोकमां कोइ देव के पुरुष नथी; वली मोटा मोटा घंटी सरखा पत्थरोनी गणना कराय, पण पर्वतनी खीणोमां रहेला कांकराउने ते कोण गणे? तो पण कोइक वीरपणांनुं डोल घालतो पृथ्वीपर रहेलो लागे छे, के जे डुर्नयी घरमां शूरो थइने आपनी आज्ञा मानतो नथी. हवे मालुम पड्युं!!! हे स्वामी! जिताएला राजाउमां आपनो जाइ बाहुबलि के जे, बलवान अने गर्वथी पर्वत सरखो छे, ते हजु बाकी रहेल छे. बाहुबलिना हाथनां बलने रणसंग्राममां इंद्र पण सहन करवाने समर्थ नथी, ते पण हवे आपनी पासे निर्बल थशे; केम के इंद्रनां वज्र सरखा आपना दोर्दंडनां घातथी पर्वतनी पेठे सघला राजाउ चूर्णपणाने पामे छे. वली आपे आ दिग्जयनां मिशथी केवल दिग्निरीक्षणज कर्युं छे, हवे आ बाहुबलिने जीतवाथी तमारुं चक्रीपणुं सफल थशे. वली हे स्वामी! "आ मारो जाइ छे" एम विचारि आपे तेनी उपेक्षा करवी नहीं, केम के, शरीरनो रोग पण शुं मूलमांथी न उखेडवो? वली आज्ञा छे मूल जेनुं एवुं राज्य पंडितोए कहेलुं छे, केम के पोतानुं पेट जरनारा तो बीजा घणा होय छे, तेमां यश शानो? ते सांजलीने स्नेह अने कोपने वश थएला चक्री जरा विचार करीने आदरसहित मंत्रीने कहेवा लाग्या के, एक बाजुथी "मारो आ जाइ छे" तेथी मारुं मन शंका पामे छे, अने बीजी बाजुथी ते मारी आज्ञा मानतो नथी, तेथी क्रोधबुद्धि आवे छे. वली पोतानां जाइ साथे युद्ध करवामां मारा मनने लज्जा आवे छे, अने शत्रुने नहीं जीतवाथी चक्र शांत थतुं नथी. वली जेनी आज्ञा घरमां पण पलाती नथी, तेनी आज्ञा बहार पलाती केम कहेवाय? अने नाना जाइनी साथे युद्ध करवाथी लोकापवादनो पण जय रहे छे. ते सांजली अवसर उलखनारो, तथा राजानां अतिप्रायने जाणनारो ते मंत्री कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! आपनो नानो जाइ आपनुं संकट दूर करशेज; केम के गृहस्थीउनो एवो सामान्य आचार छे के, मोटो जाइ आज्ञा आपे, अने नानो जाइ ते मस्तकपर धारण करे; माटे प्रथम दूत मारफते आपनी आज्ञा मानवामाटे तेमने कहेवरावो, पण ते,

हाथी जेम कमलनीनां बंधने, तेम तमारी आज्ञाने सहन करशे नहीं. अने एवी रीते ते अविनयीने शिक्षा करवाथी तमारो लोकापवाद थशे नहीं, अने तेथी तमारी पण जीत थशे. एवी रीतनुं सचीवनुं वचन सांजलीने चक्रीए, नीति जाणनार, तथा वाचाल एवा सुवेग नामनां दूतने बाहुबलिप्रते मोकल्यो. पछी ते सुवेग पण पोतानां स्वामीनी आज्ञा लेइने, तथा वेगवाला रथमां बेसीने, राजनां मूर्तिवंत उत्साहनी पेठे चालवा लाग्यो. उत्तम सैन्यनां परिवारवाला ते सुवेगे पण मार्गे चालतां शत्रुसरखां अपशुकनोने जरा पण गणकार्यां नहीं. ते वखते गधेडो जस्मादिक स्थानमां रहीने खराब रीते जुंकवा लाग्यो; तथा धूलि उडाडतो वायु तेनी सन्मुख वावा लाग्यो, अने प्रचंड कालदंडनी पेठे कृष्ण सर्प तेनी अगाडी थइने जवा लाग्यो; एवी रीतनां अपशुकनोने जाणतां थकां पण दूत वेगथी जवा लाग्यो, केम के, तेवा माणसो स्वामीना कार्यमाटे विलंब करता नथी. वली सिद्धा मार्गमां पण तेनो रथ जडना चित्तनी पेठे स्खलना पाम्यो, तेम तेनी डाबी आंख फरकवा लागी. एवी रीतनां अरिष्टोथी पगले पगले वारण करातो पण ते अनुक्रमे क्षुद्र जंतुउंथी डुस्तर वनमां गयो. त्यां कोइ जगोए जयंकर हाथी सरखा जीलोने, तो कोइ जगोए मारेल छे हाथीउं जेउंए, तथा लाल चणोठी सरखी आंखोवाला सिंहोने, तो कोइ जगोए हाथीउंथी उखेडाता पर्वतनां टुकडा सरखा वृक्षोने, तो कोइ जगोए आश्चर्यकारी चित्राउंने, अने जूंडनां समूहोने, तेम पोकार करता, चालता तथा युद्ध करता अने बलवानोने पण जय आपता केटलाक डुष्ट जंगली प्राणीउंने जोतो थको, मृत्युनां क्रीडावन सरखां, तथा कालरात्रिने आनंद आपनारां, तथा वृक्षोनी घटाथी नथी देखातो सूर्य ज्यां एवा वनने ते सुवेग उलंगी गयो. पछी अनुक्रमे ते छ खंडथी बीजा, तथा अखंड लक्ष्मीनां स्थानक सरखा, अने इंद्रने रहेवानां घर सरखा बाहुबलीना बहलि देशमां पहोंच्यो. ते त्यां ठेकाणे ठेकाणे तथा गाम गाम प्रते मनोहर गोपीउंथी गवाता श्री युगादीश प्रजुनां गुणग्रामोने सांजलवा लाग्यो. वली पर्वत, गाम, सीमा विगेरेमां बाहुबलिना लोकोत्तर बलनुं मांहोमांहें थतुं वर्णन तेणे वारंवार सांजल्युं. वली त्यां तेणे बाहुबलि शिवाय बीजा राजाने नहीं जा-

णता, तथा लक्ष्मीथी कुवेर सरखा लोकोने जोया. वली सर्व जगोए प-र्वतनां शिखरो सरखा धान्यनां ढगलाउने तथा फलरूप वृक्षोने जोतो थको ते मनमां चमत्कार पामतो पामतो जवा लाग्यो. एवी रीते अनुक्रमे वेगथी त्रण लाख गामोने उलंगीने, ते बाहुबलीनी राजधानी तक्षशिला नगरीप्रते पहोंच्यो. त्यां तेणे उंचां अरिहंत प्रभुनां मंदिरोपर रहेली ध-जाउनी पंक्तिथी वींझाती, तथा मोतीनां ढगलाउथी जाणे पसीनावाली, तथा कुवेर सरखा सामंत लोकोवाली, अने लीलाथी मनोहर, तथा अ-क्षय संपदावाली, इंद्रपुरी सरखी ते नगरीने जोइ. त्यां तेनी आं-खोने हर्ष आपता, अने कवायत खेलवाथी खिन्न थएला क्षत्रीउने क्ष-णवार जोइने तेना मनमां भय थयो. पछी डुकानोनी श्रेणिपर रहेला, तथा पोताने "अहमिंद्र" मानता शाहुकारोनां पुत्रोने जोतो थको अनुक्रमे ते राजानां राजदरबारमां आव्यो. पछी महेनत विना रत्नोनां किरणोनां समूहोथी आकाशने चित्रित करता, तथा, कृत्रिम अने अ-कृत्रिम सिंहो, अने दीपडाउथी बीता छे हाथीउ ज्यां एवा, तथा हाथ-मां खुल्लां हथीयारोनां समूहवाला, अने बीजानी छाया जोवाथी पण सावधान रहेता द्वारपालोथी आश्रित कराएला, तथा कोइ जगोए ख-रती कस्तुरीथी भरेला, अने कोइ जगोए शत्रुनां हृदयनी पेठे घोडानी खरीउथी खोदाएला, तथा मंडपोथी देवलोकनी पेठे मंडित थएला, ए-वा अति सुंदर राजमेहेल प्रते ते पहोंच्यो. त्यां क्षणवार सुधि द्वारपा-लोथी रोकी रखाएलो, अने पछी छडीदारे राजानी आज्ञाथी प्रवेश क-राएलो ते सुवेग बहु भयसहित राजसभामां दाखल थयो. त्यां तेणे शि-खरोथी जेम मेरु, तेम बाहुबलि सरखाज स्वरूपवाला मुकुटबंध ह-जार राजाउथी सेवाएला, किरणोथी जेम सूर्य, तेम उत्तम शृंगार वाला, अने मूर्तिवंत उत्साह सरखा कुमारोथी अधिष्ठित थएला, वली रत्नोनी भींत अने मणिउनां स्तंभोमां पडतां प्रतिबिंबोनां मिशथी अमात्योए क-रीने अनेक मूर्तिवाला, मुखरूपी सोनेरी कमलनी शंकाथी आवेला हंस-सरखा चामरोए करीने, देवांगनोउथी जेम इंद्र, तेम वारांगनाउथी वींझाता, पवित्र वेषवाला, तथा सुवर्णदंडने धरनारा छडीदारथी ना-ममद्दणपूर्वक वर्णन करातुं छे नमता राजाउनुं जेनी पासे एवा, तथा

हाथी जेम कमलनीनां बंधने, तेम तमारी आज्ञाने सहन करशे नहीं. अने एवी रीते ते अविनयीने शिक्षा करवाथी तमारो लोकापवाद थशे नहीं, अने तेथी तमारी पण जीत थशे. एवी रीतनुं सचीवनुं वचन सांजलीने चक्रीए, नीति जाणनार, तथा वाचाल एवा सुवेग नामनां दूतने बाहुबलिप्रते मोकल्यो. पछी ते सुवेग पण पोतानां स्वामीनी आज्ञा लेइने, तथा वेगवाला रथमां बेसीने, राजनां मूर्तिवंत उत्साहनी पेठे चालवा लाग्यो. उत्तम सैन्यनां परिवारवाला ते सुवेगे पण मार्गे चालतां शत्रुसरखां अपशुकनोने जरा पण गणकार्यां नहीं. ते वखते गधेडो जस्मादिक स्थानमां रहीने खराब रीते जुंकवा लाग्यो; तथा धूलि उडाडतो वायु तेनी सन्मुख वावा लाग्यो, अने प्रचंड कालदंडनी पेठे कृष्ण सर्प तेनी अगाडी थइने जवा लाग्यो; एवी रीतनां अपशुकनोने जाणतां थकां पण दूत वेगथी जवा लाग्यो, केम के, तेवा माणसो स्वामीना कार्यमाटे विलंब करता नथी. वली सिद्धा मार्गमां पण तेनो रथ जडना चित्तनी पेठे स्खलना पाम्यो, तेम तेनी डावी आंख फरकवा लागी. एवी रीतनां अरिष्टोथी पगले पगले वारण करातो पण ते अनुक्रमे क्षुद्र जंतुउथी डुस्तर वनमां गयो. त्यां कोइ जगोए जयंकर हाथी सरखा जीलोने, तो कोइ जगोए मारेल छे हाथीउ जेउए, तथा लाल चणोठी सरखी आंखोवाला सिंहोने, तो कोइ जगोए हाथीउथी उखेडाता पर्वतनां टुकडा सरखा वृक्षोने, तो कोइ जगोए आश्चर्यकारी चित्राउने, अने जूंडनां समूहोने, तेम पोकार करता, चालता तथा युद्ध करता अने बलवानोने पण जय आपता केटलाक डुष्ट जंगली प्राणीउने जोतो थको, मृत्युनां क्रीडावन सरखां, तथा कालरात्रिने आनंद आपनारां, तथा वृक्षोनी घटाथी नथी देखातो सूर्य ज्यां एवा वनने ते सुवेग उलंगी गयो. पछी अनुक्रमे ते छ खंडथी बीजा, तथा अखंड लक्ष्मीनां स्थानक सरखा, अने इंद्रने रहेवानां घर सरखा बाहुबलीना बहलि देशमां पहोंच्यो. ते त्यां ठेकाणे ठेकाणे तथा गाम गाम प्रते मनोहर गोपीउथी गवाता श्री युगादीश प्रजुनां गुणग्रामोने सांजलवा लाग्यो. वली पर्वत, गाम, सीमा विगेरेमां बाहुबलिना लोकोत्तर बलनुं मांहोमांहे थतुं वर्णन तेणे वारंवार सांजल्युं. वली त्यां तेणे बाहुबलि शिवाय बीजा राजाने नहीं जा-

णता, तथा लक्ष्मीथी कुबेर सरखा लोकोने जोया. वली सर्व जगोए प-
र्वतनां शिखरो सरखा धान्यनां ढगलाउने तथा फलद्रूप वृक्षोने जोतो
थको ते मनमां चमत्कार पामतो पामतो जवा लाग्यो. एवी रीते अनुक्रमे
वेगथी त्रण लाख गामोने उलंगीने, ते बाहुबलीनी राजधानी तक्षशिला
नगरीप्रते पहोंच्यो. त्यां तेणे उंचां अरिहंत प्रभुनां मंदिरोपर रहेली ध-
जाउनी पंक्तिथी वींझाती, तथा मोतीनां ढगलाउथी जाणे पसीनावाली,
तथा कुबेर सरखा सामंत लोकोवाली, अने लीलाथी मनोहर, तथा अ-
क्षय संपदावाली, इंद्रपुरी सरखी ते नगरीने जोइ. त्यां तेनी आं-
खोने हर्ष आपता, अने कवायत खेलवाथी खिन्न थएला क्षत्रीउने क्ष-
णवार जोइने तेना मनमां भय थयो. पछी डुकानोनी श्रेणिपर रहेला,
तथा पोताने "अहमिंद्र" मानता शाहुकारोनां पुत्रोने जोतो थको
अनुक्रमे ते राजानां राजदरबारमां आव्यो. पछी महेनत विना रत्नोनां
किरणोनां समूहोथी आकाशने चित्रित करता, तथा, कृत्रिम अने अ-
कृत्रिम सिंहो, अने दीपडाउथी बीता छे हाथीउ ज्यां एवा, तथा हाथ-
मां खुल्लां हथीयारोनां समूहवाला, अने बीजानी छाया जोवाथी पण
सावधान रहेता द्वारपालोथी आश्रित कराएला, तथा कोइ जगोए ख-
रती कस्तुरीथी भरेला, अने कोइ जगोए शत्रुनां हृदयनी पेठे घोडानी
खरीउथी खोदाएला, तथा मंडपोथी देवलोकनी पेठे मंडित थएला, ए-
वा अति सुंदर राजमेहेल प्रते ते पहोंच्यो. त्यां क्षणवार सुधि द्वारपा-
लोथी रोकी रखाएलो, अने पछी छडीदारे राजानी आज्ञाथी प्रवेश क-
राएलो ते सुवेग बहु भयसहित राजसभामां दाखल थयो. त्यां तेणे शि-
खरोथी जेम मेरु, तेम बाहुबलि सरखाज स्वरूपवाला मुकुटबंध ह-
जार राजाउथी सेवाएला, किरणोथी जेम सूर्य, तेम उत्तम शृंगार वाला,
अने मूर्तिवंत उत्साह सरखा कुमारोथी अधिष्ठित थएला, वली रत्नोनी
भींत अने मणिउनां स्तंभोमां पडतां प्रतिबिंबोनां मिशथी अमात्योए क-
रीने अनेक मूर्तिवाला, मुखरूपी सोनेरी कमलनी शंकाथी आवेला हंस-
सरखा चामरोए करीने, देवांगनोउथी जेम इंद्र, तेम वारांगनाउथी
वींझाता, पवित्र वेषवाला, तथा सुवर्णदंडने धरनारा छडीदारथी ना-
मग्रहणपूर्वक वर्णन करातु छे नमता राजाउनु जेनी पासे एवा, तथा

पोतानां तेजोथी सकल जगतने तृण समान चिंतवता, एवा बाहुबलिने सिंहासनपर बेठेला जोया. अपूर्व क्षत्रीय तेजवाला ते बाहुबलिने जोइने प्रथम तो क्षोभ पामेलो ते सुवेग दूत आकार गोपवीने तेमने नमतो हवो. पछी मस्तकपर जोडेल छे हाथ जेणे, तथा बाहुबलिनां मुखपर राखेल छे दृष्टि जेणे एवो ते दूत राजाए भ्रुकुटीसंज्ञाथी देखाडेला आसनपर बेठो. पछी बाहुबलि पडछंदाथी सभानी भींतने पण वाचाल करता थका गंभीर वाणीथी तेने कहेवा लाग्या के, हे सुवेग! तातनी पेठे मने पूजवा योग्य एवा मारा मोटा भाइ तो खुशीमां छे नी? तथा अयोध्या नगरी तो कुशलतामां छेनी? वली पिताजीये लांबा कालसुधि लालन करेली एवी प्रजा पण कुशल छेनी? तेम आर्य एवा मोटा भाइनो छ खंडनो विजय तो अखंड रीते थयो छेनी? वली ते दिग्जयमां चोरासी लाख रथो, चोरासी लाख हाथीओ अने चोरासी लाख घोडाओने कंइ बाधा तो थइ नथी ने? तेम सघला राजाओ पण कुशलतामां छे नी? तेम त्यां कोइने कंइ पण विघ्न तो थयुं नथी ने? एटलुं बोलीने बाहुबलि रही गया बाद सुवेग पण तेमने नमस्कार करीने, तथा तेमनी वाणीथी क्षोभ पामीने जरा विचार करी कहेवा लाग्यो के, ते तमारा मोटा भाइनी कृपाथी अन्योने घेर पण कुशलपणुं थाय छे, त्यारे तेमना कुशलमाटे तो पुछवुंज शुं? वली जे विनीता नगरीनां तमारा मोटा भाइ अधिपति छे, ते नगरीने जिननां वचनमां जेम संशय, तेम विघ्ननो अंश पण क्यांथी होय? वली जेनां शत्रुओने चक्ररत्न पोतानी मेलेज भेदी नाखे छे, तेनी प्रजामां तो सर्वदा कुशलज होय छे. वली जेनी सेवा सर्व सुर, असुर अने मनुष्यो करे छे, तेनी सामे थवाने छ खंडना विजयमां कोण हिम्मत धरी शके तेम हतुं? वली त्रणे लोकनो विजय करवामां जे समर्थ छे, एवा भरत चक्री जेनां स्वामी छे, तेवा तेनां घोडा, रथ अने हाथीओने कोण विघ्न करी शके तेम छे? वली ते लाख यक्षो, तथा राजाओ, विद्याधरो अने देवोथी सेवाय छे; तो पण बांधवो विना तेने चेन पडतुं नथी. सर्व राज्योमां भमतां थकां तेमणे क्यांय पण भाइने जोया नहीं, अने तेथी उत्कंठासहित ते बांधवोने मलवाने इछे छे. वली दिग्जयमां तेम बार वर्षनां राज्याभिषेकमां पण तेओ आव्या नहीं; वली

छेवटे तेउं सघला निरीह तथा पोतानां शरीरमां पण निस्पृह थया छे. हवे तमारामां जरत महाराजनी उत्कंठा होवाथी मने अहीं तेमणे मोकलेलो छे. माटे हवे तमो त्यां आवो, अने तमारा संगथी तेमने सुख आपो? केम के बंधुविना तेमनुं राज्य दीपतुं नथी. वली कुलीनोने पोतानो मोटो जाइ तातनी पेठेज पूजनीक होय छे, अने तमो तेमने नमवाथी तमारुं मान पण विशेष थशे. वली ते चक्रीनां चरणोने देवो पण नमे छे. तेथी तेमनी सेवा करवाथी तमोने लज्जा थशे नहीं. वली 'हुं आटला दिवससुधि गयो नथी' एवी शंका तमो करशो नहीं, केम के, ते मोटा जाइ छे, माटे तमारो अपराध क्षमा करशे. वली तमारा संगमथी ते मोटा जाइ सुख पामीने वात्सल्यपणाथी तमोने अधिक राज्य आपशे, तेम तमारुं सर्व कष्टोथी ते रक्षण करशे. वली तमो बन्ने इंद्र अने उपेंद्रनी पेठे, तथा अश्विनीकुमारोनी पेठे, वैरीनां हृदयमां शल्यरूप थया थका मलीने राज्य करो? वली 'ते मारो जाइ छे' एम विचारि तमारे निर्जय थवुं नहीं. केम के अहंकारीने शिक्षा आपवानी दारुण राजनीति छे. वली जूठा निमित्तिआनुं अवृष्टिनुं वचन, वरसाद वरसवाथी जेम निष्फल थाय छे, तेम तमारा विषे जरतने खोटुं समजावनाराउंनुं वचन निष्फल थशे. वली जरत महाराजनुं सघलुं सैन्य तो एक बाजु रह्युं, पण हाथमां दंड धारण करता एक सुषेण नामना तेमना सेनापतिनुं बल पण रणसंग्राममां कोण सहन करी शके तेम छे? वली रणसंग्राममां पर्वतोनी पेठे उछलता तेनां चोरासी लाख हाथीउंने तथा समुद्रनां मोजांउंनी पेठे उछलता तेटलाज घोडाउंने रोकवाने पण कोण समर्थ छे? वली तेनां अन्य सैन्योनी तो गणनाज शुं करवी? केम के, जरत राजानां संग्रामने वलवान इंद्र पण सहन करी शके तेम नथी!!! वली ते जरत महाराजाने इंद्र पण पोतानुं अरधुं आसन आपीने पासे बेसाडे छे, तेवा तमारा मोटा जाइने नमवामां तमोने लज्जा शानी? वली तमोने राज्यनी अने जीवितनी पण जो इछा होय, तो जरत महाराजनां चरणकमलने तमो तुरत सेवो? एवी रीतनां सुवेग दूतनां वचनो सांजलीने वलवान् बाहुवलि पोतानां खजाउंपर दृष्टि करता थका, तथा (क्रोधथी) लाल आंखोवाला थइने तेने कहेवा लाग्या के, हे दूत!

तुं खरेखर वाचाल छे, तथा परस्थानमां आवीने पण जे तुं आवां अ-
हितकारी वचनो उंचे प्रकारे बोल्यो, तेथी खरेखर तुं तारा स्वामीनुं
कार्य करनारो छे. ते भरत चक्री मारा मोटा भाइ छे, माटे ते मारे पू-
जनीक छे, तेमां संशय नथी; केम के, मोटा भाइने पितानी पेठे पूजवा,
ए कुलीनोनो आचार छे; पण मोटो भाइ पोतानी मोटाइने ज्यांसुधि
जालवी राखे, त्यांसुधि तो ते नाना भाइने पूजनीक छे, पण ज्यारे ते
पोतानी मोटाइने उलंगी जइ कार्य करे, त्यारे तेने शी रीते सेवाय?
वली तेमणे छल करीने नाना भाइउनां राज्यो छीनवी लीधां, माटे अहो!
तेनुं भाइपणुं अने स्नेहरस पण केटलो बधो मोटो छे!!! वली तेउ स-
घला पण तातनांज पुत्रो हता; अने रणसंग्रामथी कंइ डरता नहोता;
पण "आ मोटा भाइ साथे कलह करवो!!" एम विचारि तेउने लज्जा
थइ. पछी तेउए विचार्युं के, आ मोटा भाइने तो शरम नहीं आवी; पण
अमोने लज्जा आवे छे, एम विचारि तेउए पिताजी पासे जइ दीक्षा लीधी.
वली ते भरतने जे राजाउ सेवे छे, तेउने तो अधिक राज्य आदिकनी
इछा छे, पण हुं तो पिताजीए आपेलां राज्यथी संतुष्ट थयेलो छुं, माटे
मारे तेनी सेवा शामाटे करवी जोइये? वली बंधुउनां राज्योने ग्रहण
करतां थकां में जे तेमनी उपेक्षा करी, एवी रीतनो मारो दोष शुं ते
चाडीआउ तेने सूचवशे?!! वली तुं जे कहे छे के, ते तमारो अपराध
क्षमा करशे, ते शुं में तेमनां कंइ गाम आदिक भांग्यां छे? के शुं? वली
इंद्र पण जे तेने अरधा आसनपर बेसाडे छे, ते पण "आ श्रीऋषभदेव
प्रभुनां ज्येष्ट पुत्र छे, माटे माननीक छे" एवुं विचारिनेज बेसाडे छे,
तेमां कंइ भरतनो पोतानो प्रभाव नथी. वली ज्यारे हुं रणसंग्राममां
चडीश, त्यारे तेनुं ते सैन्य, ते बिचारो सुषेण, ते चक्र अने ते भरत
पण शुं हिसाबमां छे? वली अगाउ अमो बन्ने ज्यारे गंगानां कांठापर
कवायत करता हता, त्यारे हुं तेने आकाशमां उछालतो, अने दया
लावी तेने पाछो झीली लेतो; ते सघलुं हमणा आ राज्यमदथी शुं ते
भूली गयो? के जेथी दुष्ट आशयथी माराप्रते तारासरखा दूतने मो-
कल्यो!!! वली तेनां भाडुत लश्करीउ तो रणसंग्राम वखते क्यांनाक्यांए
चाल्या जशे; अने ते वखते केवल भरतनेज मारा आ भुजदंडनां बलनुं

दुःख सहन करवुं पडशे!! माटे हे दूत! तुं चाल्यो जा? केम के न्यायी राजाए दूतने मारवो जोइए नहीं. फक्त ते भरतनेज तेनां अन्यायनुं फल हुं चखाडीश. एवी रीतनी गंभीर वाणीथी मनमां चमत्कार पामीने ते दूत पोतानो जीव लेइ ते आसनपरथी धीरे रहीने उठ्यो. दिङ्मूढ थवाथी तथा आंखनां चपलपणाथी तथा भयथी आंटीमां आवता पोताना दुपट्टाथी स्खलना पामतो थको, अने उगामेला हथीयारोवाला कुमारो अने राजाउंथी पोताने हणाएलो मानतो थको ते धीरे रहीने सभामांथी निकल्यो. पछी ते जीवितव्यनां देहधारी मनोरथ सरखा रथपर भयभीत थयो थको वांदरो जेम वृक्षपर तेम चडी बेठो. ते दूतने जोइ त्यांना लोको नीचे प्रमाणे मांहोंमांहें वातो करवा लाग्या.

एक–आ कोइक नवीन माणस क्षणवारमां सभामांथी निकल्यो!!

बीजो–अरे! हुं तो एम तर्क करुं छुं के, आ भरत राजानो दूत छे.

एक–अरे! शुं बाहुबलिविना आ पृथ्वीपर कोइ बीजो राजा छे शुं?!!

बीजो–आज आपणा बाहुबलि राजानो मोटो भाइ, तथा श्री ऋषभदेव प्रभुना भरत नामे पुत्र राजा छे.

एक–त्यारे शुं? ते आटलो वखत कोइ देशांतर गया हता?

बीजो–ते चक्रवर्ती छे; अने तेथी छ खंड भरतक्षेत्रने ते जीतवा गया हता.

एक–पण त्यारे तेणे आ बाहुबलिप्रते दूत शामाटे मोकल्यो होशे!!?

बीजो–शा माटे शुं? पोतानां हुकममां रही सेवा माटे बाहुबलिने बोलाववा माटे?!!! वली बीजुं शुं? समज्यो!!!

एक–त्यारे शुं! तेनी पासे कोइ शिखामण आपनार मंत्री नहीं होय!!! के जे तेने आवां कार्यथी निवारे!!!

बीजो– आए कोक उंडुं लागे छे!!! तेनी पासे तो सेंकडो मंत्रीउं छे, अने तेउएज आ कार्य माटे तेने विशेषे करीने प्रेरणा करी छे.!!

एक–त्यारे तो ते भरत सुखे सुतेला सिंहने लाकडी मारी जगाडवा जेवुं करे छे!

बीजो–एमज छे!!! केम के, प्राणीउंनुं जेवुं भाग्य तेवी तेने बुद्धि आवे छे!!!

एवी रीतनी नगरीनां लोकोनां मुखमांथी निकलती कथाने सांभल-तो थको ते सुवेग रथने वेगथी हांकीने तुरत नगरी बहार निकल्यो. पछी सुभटोनां भुजास्फोटोथी, तथा तेओनां विविध प्रकारनां हथीयारोनां नर्तनोथी, अने शुरवीरोनां सिंहनादोथी भडकता छे रथना घोडा जेनां, एवो थयो थको ते दूत चालवा लाग्यो. पछी सिंहनां टोलांनी व्यथाथी मुक्त थएला अने दिङ्मूढ थइ गभराएला हरिणनी पेठे, नगरमांथी निकल्यावाद ते थोडी थोडी जीवितव्यनी आशा राखवा लाग्यो. पछी मार्गमां नगर नगरप्रते वैरनी वातोमां आदरवाला, तथा खुल्लां हथीयारोवाला, अने पोतानां भुजामदथी अहंकारयुक्त थएला सुभटोने, तथा बालकोने पण रणसंग्रामनी उत्कंठावाला, अने हाथमां शस्त्रवाला जोइने ते दूत मनमां विचारवा लाग्यो के अहींनां आ स्त्री बालको विगेरे पण युद्धनी इछावाला छे, तो शुं आ पृथ्वीनोज तेवो गुण छे? के बाहुबलिनो प्रभाव छे!!! वली जेवा राजा तेवी प्रजा पण होय छे;अने तेथीज आ लोको पण पोतानां स्वामिनां बलनां माहात्म्यथी शूरा थएला छे. वली तेओनां मुखथी ते दूते भरतनी साथे बाहुबलिनां युद्धनी वात तो उपहास तरीके जाणी; ते वात युक्तज छे, केम के पोतानां स्वामिनां बलथी माणसो परनी अवज्ञा करेज छे. वली त्यां तेओ पोतानां स्वामिनां तेजनेज जेम तेम हथीयारोने सजवा लाग्या, तेम केटलाको घोडाओने खेलाववा लाग्या, तथा रथोने समारवा लाग्या; तेम केटलाको जंगम मेहेलो सरखा तंबुओ सज्ज करवा लाग्या, अने केटलाको कवचो तथा भाथांओने दृढ करवा लाग्या. पछी ते दूत ज्यारे मार्गमां चालतो हतो, त्यारे त्यांना लोको जाणे बापमार्यानुं वैर होय नहीं, तेम तेना तरफ करडी नजरे जोता हता; वली ते दूते त्यां सर्व जगोये पर्वतमां रहेता राजाओने पण बाहुबलिप्रते बहु भक्तिवाला, रणसंग्राममाटे सज्ज थयेला, तथा खुल्लां हथीयारोवाला जोया. एवी रीतनुं जोइने सुवेग दूत लोकापवादथी डरीने पोताना आत्माने निंदवा लाग्यो के, आ बन्ने भाइओनां वैररूप हुं थयो; वली ते विचारवा लाग्यो के, चक्रीने हजु शुं खोट रही गइ हती के, आ बाहुबलिनी पासेथी सेवानी इछा करी!! फोकट आ केसरी सिंहने जगाडवा जेवुं कर्युं छे!! एवी रीते वारंवार विचारतो थको ते दूत केटलेक दिवसे रथना वेगथी

सुखे समाधे पोताना स्वामिना देशमां आव्यो. त्यारे तेणे पोतानां लोकोनी एवी वाणी सांजली के अरे जाइर्छ! जेटलामां बाहुबलि पासेथी दूत पाछो आव्यो नथी, तेटलामां स्त्री, छोकरां विगेरे सर्व सामान तुरत किल्लार्जमां दाखल करो? वली नहीं पाकेलां धान्यो पण तुरत लणी ल्यो? तथा जूमिमां डाटी मेलो? के जेथी सर्वनो नाश न थाय. वली केटलाको कहेवा लाग्या के, अरे! छोकरां छैयां तो एक बाजु रह्यां, पण पोतानुं शरीर सांचववुंए डुर्लज छे; वली ज्यारे बाहुबलि गुस्से थयो, त्यारे तो आपणुं किल्लार्जनुं बल पण फोकटज छे. एवी रीतनी लोकोनी वाणी सांजलीने दूत विचारवा लाग्यो के, आ लोको तो माराथी पण वधारे वेगवाला लागे छे! के जेर्ज आवी रीतनो पोतानो जय प्रगट करे छे. एम विचारतो, तथा बाहुबलिनां वचनने याद करतो थको ते दूत तुरत अयोध्यामां आवी जरत महाराजने नमस्कार करतो हवो. पछी ते जक्तिथी हाथ जोडीने नैगमेषी देवनी पेठे जरत महाराजनी सामे बेठो. त्यारे चक्री जरा हसीने तेने स्नेहथी पूछवा लाग्या के, हे दूत! तुं तुरत आव्यो, तेथी मारा जाइने कुशलतो छेनी? अथवा में तेनी बालक्रीडा वखते घणीवार परीक्षा करी छे, के ते गंधहस्तीनी पेठे अन्यनी आज्ञा सहन करे तेम नथी. ते सांजली सुवेग पण नमस्कार करीने जरतेश्वरने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामि! ते बाहुबलिने अकुशल करवाने आ पृथ्वीपर कोण समर्थ छे? वली में तेमने प्रथम सामवाक्योथी घणा समजाव्या; अने पछी विविध उपायोथी समजाव्या, पण ते तो कंइ गणकारता नथी. वली सुषेण, सैन्य अने चक्रादिकनां वर्णन वखते अवज्ञा करीने, तेणे छ खंड विजयनी तो वात पण सांजली नहीं; पण उलटुं पोतानां खजार्जतरफ दृष्टि करीने तेणे मने कह्युं के, हे दूत! तुं तुरत तारा स्वामी पासे जा? अने तेनां राज्य अने जीवितमाटे तुरत तेने मारीपासें मोकल? वली ते देशनां सघला लोको तेनाज रागी छे, अने पोतानां जीवितदानथी पण तेनीज लक्ष्मीने इछे छे. वली तमो वैरी थवाथी तेर्ज रणसंग्राम माटे तातामाता थइ रह्या छे, केम के, तेर्जमां पोतानां स्वामिनी शक्तिनां गुणो आवेला छे. एवी रीते दूत कही रह्या बाद चक्री क्रीडापूर्वक कहेवा लाग्या के, ते मारो नाहानो जाइ शत्रुरूपी काष्टप्रते अग्निसरखोज छे. वली हुं

ते मारा भाइनी साथे रणसंग्रामरूप दुःखदायक विरोध करीश नहीं; केम के सर्व देशोमां ढुंढतां पण सगो भाइ मली शकतो नथी. वली माणसोने संपदा राज्य विगेरे सर्व जगोए मले छे, पण सगो भाइ तो भाग्यविना क्यांए पण मली शकतो नथी. वली मन विनानुं जेम दान, चक्षुविनानुं जेम मुख, तथा मंत्रिविनानुं जेम राज्य तेम बंधुविना आ जगत वृथा छे; वली जे धन बंधुनां उपकारमाटे थतुं नथी, ते धन वृथा छे, तथा जे जीवित दुःखीनां दुःखो मटाडवामाटे थतुं नथी, ते जीवित पण वृथा छे. वली जेना घरमां गोत्रीउंनां घातथी मलेली लक्ष्मी विलास करे छे, ते घरनां स्वामिने पतित जाणवो, तथा तेनुं राजतेज पण शोभतुं नथी. वली "आ पराक्रमहीन छे" एम लोको भले मारी हांसी करे, पण हुं आ नाना भाइनी साथे युद्ध करीश नहीं. हवे पोतानी (बाहुबलिए करेली) निंदाथी अंतरमां गुस्से थएलो, तथा महा उत्साही सुषेण सेनापति, राजानी ते वाणी सांभलीने धीर अने गंभीर वाणीथी कहेवा लाग्यो के हे स्वामी! युगादीश प्रभुनां पुत्र एवा तमोने क्षमा लाववी युक्तज छे, अने बंधु संबंधि अपूर्व स्नेह तमोने क्षमा करावे छे. पण हे स्वामी! आपनो आ स्नेह एक हाथनी ताली सरखो छे, केम के, आपनापर तेनी दृष्टि शत्रुतावाली छे, अने तमो उलटा तेनापर स्नेह करो छो! वली राजाउंए तो पोतानी आज्ञानो भंग करनार एवा भाइनी पण उपेक्षा करवी जोइयें नहीं, केम के राजाउंने तो आज्ञाज ज्योत्स्नानी पेठे सर्व तेजनी करनारी छे. वली पोतानांज राज्यथी कृतार्थ थएला राजाउं जे दिग्जय करे छे, ते कंइ लोभथी नहीं, पण पोतानां पराक्रमनी वृद्धिमाटेज करे छे. वली आगामि कालमां पोतानुं हित इछनार माणसे शत्रुनी उपेक्षा करवी नहीं, केम के ते क्षयरोगनी पेठे वृद्धि पामतो थको पोतानेज हणे छे. माटे ज्यांसुधि तमारां सैन्यनी रजोनी श्रेणिथी आ सूर्यमंडल छवायुं नथी, त्यांसुधि ते बाहुबलि झांखो थइने पोतानो देश छोडशे नहीं. वली ज्यांसुधि तमारा हाथीनां सैन्यनां भारथी आ पृथ्वी नमी नथी, त्यांसुधि अहंकारथी उद्धत थएला ते बाहुबलिनी गरदन केम नमशे? माटे हे स्वामी! अपने आ कार्यमां जरा पण विलंब करवो लायक नथी. जो मारा वचनपर श्रद्धा न होय, तो तमो आ मंत्रि प्रमुखोने पण रा-

जनीतिमाटे पूछो ? पछी मंत्रिउं पण सुषेणना वचननां पडघानी पेठेज बोलीने विशेष प्रकारे चक्रीने उत्साहित करता हवा. पछी चक्रीए पण रणकार्यमां तत्पर एवुं भंभा नामनुं वाजित्र वगडाव्युं, अने तेना शब्दथी सर्व जगोएथी राजाउं त्यां आवी एकठा थया. पछी चक्रीए पण शुभ दिवसे स्नान करीने तथा पवित्र वस्त्रो पेहेरीने उत्तम पुष्पोथी श्री युगादीश प्रभुनी सेवा करी. वली तेणें वांछित सिद्धिमाटे पौषधशालामां रहेला मुनिउंने नमस्कार कर्यो; अने तेउंनी धर्मलाभनी आशिष पण तेने अधिक सिद्धिने आपनारी थइ. पछी ते महा पराक्रमी चक्रीए आनंद अने वेगथी पोताना नगरनी समीपे सैन्यनो पडाव नाख्यो. ते वखते चमकपाषाणथी जेम लोखंड तेम भंभानादथी खेंचाइने देश देशनां सघला राजाउं त्यां आव्या. वली त्यां जंगम पर्वतो सरखा हाथीउं तथा घोडाउं आव्या, अने तेउं मनुष्योनां समूहरूपी समुद्रमां मोजांउंनी पेठे शोभवा लाग्या.

हवे पतिवाली तथा पुत्रोवाली कुलकन्याउंथी अखंड चोखाउंए करीने वधावेल छे मंगल जेनुं, तथा बंदीउंनां समूहोथी स्तुति कराता, देवो अने राजाउंथी सेवाता, नगरनी स्त्रीउंथी गवाता, तथा महाजनोथी जोवाता, एवा ते चक्री प्रभात समये, अत्यंत उंचा, पोतानां यश सरखा सफेद, बन्ने पडखेथी ऊरता मदें करीने करेल छे कस्तुरी सरखी पत्रवल्ली जेनी, तथा लीलामात्रथीज पर्वतो अने समुद्रोने उलंघवामां समर्थ, हमेशां एक हजार यक्षोथी अधिष्ठित थएला, एवा सुरगिरि नामनां हाथीपर, सूर्य जेम पूर्वाचलपर तेम, यात्रानां आरंभमाटे चड्या. पछी तेमना अंश सरखा बीजाउं पण बखतर तथा हथीयार सहित थइने, तेज वखते क्षणवारमां हाथी, घोडा, रथ, खचर विगेरे पर स्वार थया. पछी शेषनागनां मस्तकपर जेम मणि, तेम संपूर्ण चंद्रसरखुं, तथा मंगलीक कलशोथी विंटाएलुं, हजारो नागकुमार तथा देवोथी अधिष्ठित थएलुं, तथा पर राज्यने त्रास करनारुं, जय नामनुं छत्ररत्न चक्रीनां मस्तकपर शोभवा लाग्युं. पछी लीलायुक्त स्त्रीउंथी चामरोए करी वींझाता ते चक्री पगना अंगुठाथी हाथीने चलाववा लाग्या. एवी रीते दुंदुभिनां अवाजोथी दिशाउंने बधिर करता, तथा भंभानां नादोथी ब्रह्मांडने वाचाल करता,

मांगलिक वाजांउनां अवाजोथी हाथीनां गर्जारवोने पुष्ट करता, ते चक्री किरणो सहित जेम सूर्य, तेम सैन्यो सहित चालवा लाग्या. पढी सूर्यमंडलनी पेठे चारे बाजुउथी दीपतुं, तथा एक हजार आरावालुं चक्ररत्न पण तेमनी आगल आगल चालवा लाग्युं. वली, हे दिशाउ! तमो दूर जाउ? पृथ्वी! तुं मोटी था? आकाश! तुं पण तुरत अवकाश आप? केम के, आजे आ ज्ञरत चक्री सैन्यनां समूहना ज्ञारथी, तथा वाजां अने डुंडुज्ञिनां नादोथी तमोने दली नाखशे, एवी रीतनी बंदिउनी वाणीने सांज्ञलता थका, तथा रथोनां चित्कारोथी वाचाल करेल छे दिङ्मुख जेणे एवा, ते चक्री अगाडी अगाडी चालवा लाग्या. एवी रीते सैन्यथी उडती धूलनां अंधकारथी सूर्यने पण पतंगीआं सरखो करता, पृथ्वीने पण अस्थिर करता, मार्गमां आवती नदीउने सूकावता, तलावोने स्थलरूप करता, हाथीउनां मदथी नवां तलावो करता, तथा अमार्गने पण मार्गरूप करता थका ते चक्री हमेशां योजननां प्रयाणे करीने अनुक्रमे केटलेक दिवसे बहलि देशनी पासें पहोंच्या.

हवे चक्रीए सैन्यनां पडावमाटे पेहेलेथी केटलाक माणसोने त्यां मोकल्या हता, तेउ तेमनी पासे आवीने हर्षथी कहेवा लाग्या के, हे स्वामी! आप जय पामो? अहींथी उत्तर दिशामां गंगानां कांठापर वृक्षोनां डालांउथी सूर्यने पण आछादित करतुं एक वन छे; त्यां हृदयने आश्रयज्ञूत, तथा मनोहर सुवर्ण, मणि, रत्न विगेरेथी बनावेलुं तातनुं मंदिर छे. ते मंदिरमां पंडितनां कुलमां मंडनरूप, तथा उत्तम ध्यानमां रहेल छे अंतःकरण जेनुं एवो, अने उत्तम बुद्धिवालो कोइक साधु सुखेथी रहेलो छे. ते सांज्ञलीने पुण्यमां आदरवाला ते ज्ञरत चक्री ते वनमां श्री प्रथमप्रज्ञुने वांदवामाटे गया. त्यां विधिपूर्वक श्री ऋषज्ञदेव प्रज्ञुने नमीने, तथा ज्ञक्तिथी पूजीने, रत्नमय वेदिकापर चक्री बेठा. पढी आम तेम जोयाबाद ते मुनिने जोइ तेणे नमस्कार कर्यो, अने उत्तम वचनोथी कहेवा लाग्या के, हे मुनि! तमो रणसिंहनी पेठे नमि विनमिनी जोडे मारी साथे युद्ध करवामां उत्सुक थएला विद्याधर छो. अने हवे तो सर्व प्राणीउमां समस्वज्ञाववाला तमो थया छो, माटे हे कृपालु! तमो तमारा वैराग्यनुं मने कारण कहो? त्यारे मुनि कहेवा लाग्या के,

हे चक्री ! ते वखते तमोए नमिविनमि तथा मने पण जीत्यो; पछी अमोए अमारा पुत्रोने राज्य आपी वैराग्यथी दीक्षा लीधी, अने त्यारथी श्री युगादीश प्रभुनी हुं सेवा करुं छुं; केम के, बन्ने भवोमां साम्राज्यने आपनारनी कोण सेवा न करे? पछी चक्रीए पुछ्युं के, हमणा तात क्यां छे? त्यारे मुनिए कह्युं के, हे चक्री ! तुं ते कुतुहल सांभल ? हमणा ते प्रभु श्रीप्रभ उद्यानमां देवोथी सेवाया थका रहे छे, त्यां अनंत नामनां नागकुमारनी साथे धरणेंद्र आव्यो हतो. पछी धरणेंद्रे प्रभुने नमीने पुछ्युं के, हे, स्वामी ! सर्व देवोमां आ अनंत देवनां शरीरनी कांति अधिक केम छे? त्यारे प्रभुए कह्युं के, आ अनंत देव आजथी चोथे भवे एक आभीर थयो हतो, त्यां ते मुनिने पराभव करीने घणुं पाप उपार्जन करतो हतो. त्यांथी मृत्यु पामी नरकमां जइ, घणी वेदनाउ सहन करीने सुग्राम नामनां गाममां कुष्टी ब्राह्मण थयो. तेणे त्यां अमारा एक सुव्रत नामनां शिष्यने पुछवाथी तेणे कह्युं के, तें पूर्व भवमां मुनिने कष्ट आप्युं छे, तेथी तुं कुष्टी थयो छुं. माटे उत्तम माणसोए मुनिनी आराधना करवी, पण तेने विराधवो नहीं; ते मुनि कदाच क्षमावान होय, तो पण (तेनां विराधननुं) पाप तो पाछल आवेज छे. वली मुनिनुं सन्मान करवाथी ते उत्तम स्वर्गादिकनी गति आपे छे, अने तेनुं अपमान करवाथी मूलमां पडेला अग्निनी पेठे अनंत कुलोने ते बाली नाखे छे. पछी ते ब्राह्मणे ते रोग मटवानो उपाय पुछ्यो, त्यारे ते मुनिए कह्युं के, हवे तुं शत्रुंजय गिरिवरनी सेवा कर ? त्यां रागद्वेष रहित थइ समतारसमां रहेवाथी कर्मोनो क्षय करी तुं निरोगी थइश. वली आकरा तपथी प्राणी जेम वज्ररूप कर्मोथी मुकाय छे, तेम आ शत्रुंजयनी सेवाथी पण ते कर्मोथी मुकाय छे. वली आ तीर्थना माहात्म्यथी, शुद्ध आशयवाला अहीं रहेनारा तिर्यंचो पण प्राएं करीने पाप रहित थया थका सुगतिमां जाय छे. वली ते शत्रुंजय तीर्थनां स्मरणथी माणसोनो, सिंह, अग्नि, समुद्र, सर्प, राजा, झेर, युद्ध, चोर, शत्रु, तथा मरकीनो भय पण नाश पामे छे. वली उग्र तपथी, तथा ब्रह्मचर्यथी पण जे पुण्य मले छे, ते पुण्य आ शत्रुंजय प्रते रहेवाथी मले छे. वली श्री विमलाचलनुं दर्शन कर्याथी त्रणे लोकनां तीर्थोमां जे कंइ छे, ते सघलुं जोएलुं कहेवाय. एवी रीतनी

मुनिना मुखनी वाणी सांभळीने, ते शत्रुंजय पर्वत प्रते गयो, अने त्यां मुनिना कहेवा प्रमाणे करवाथी अनुक्रमे ते निरोगी थयो. त्यां वैराग्य-युक्त थइ अनशन करी, मृत्यु पामीने अधिक कांतिवालो आ अनंतदेव थयो छे. वली ते तीर्थसेवानां प्रभावथी आजथी त्रीजे भवे, सघलां कर्मोनो क्षय करी, अनंत चतुष्टयवालो थइ मोक्षे जशे. ते सांभळीने ते अनंत नागकुमार शत्रुंजयप्रते गयो, अने हुं पण तेनी साथेज आग्रह सहित ते तीर्थने उद्देशीने गयो. पछी ते देव त्यां महोत्सव पूर्वक अठाइ करीने, भक्तिथी तीर्थनुं स्मरण करतो थको पोताने स्था-नके गयो. माटे हे चक्री! ते शत्रुंजय समान बीजुं कोइ पण तीर्थ त्रणे भुवनोमां पण नथी, केम के, जेनां स्पर्शमात्रथीज आपदाउ दूर जाय छे. एवी रीते हे राजन्! तीर्थोप्रते भमतो थको हुं अहीं श्री युगादीश प्रभुने नमवामाटे आव्यो हतो, त्यां प्रसंगे तमारुं पण दर्शन थयुं. वली श्री बाहुबलिना सोमयशा नामे पुत्र छे, तेमणे आ श्री युगादीश प्रभुनुं मंदिर बंधाव्युं छे. श्री युगादीश प्रभु त्रणे लोकोनां नायक छे, अने तमो तेमनां पुत्र छो, माटे आपनां दर्शनथी मने बहु आनंद थयो छे. ते सांभळीने चक्री शत्रुंजयनुं तथा श्रीयुगादीश प्रभुनुं स्मरण करता थका पोतानां सैन्यप्रते आव्या, वृक्षोनी घटावाला तेज प्रदेशमां तेणे सैन्यने पडाव पण नांख्यो. अने ते मुनि पण त्यांथी चालता थया.

हवे बाहुबलिए पण भरतने आवेला जाणीने पोताना सिंहनादसहित भंभावाजित्र वगडाव्युं. त्यारे सैन्यसहित भरतने "हुं जीतीश, हुं जीतीश" एम स्पर्धा करता थका सर्व योद्धाउ त्यां आवी पहोंच्या. ते सुभटो जाणे पोतानां अंतरंग तेजनेज देखाडता होय नहीं तेम, हथीयारोथी आकाशने दांतावालुं करता थका शोभवा लाग्या. वली ते बाहुबलिनां सुभटो ते रणसंग्रामने तो आवेला उत्सव तरीके लेखवा लाग्या. पछी उ-त्तम शृंगारवाला तथा देहधारी वीररस सरखा त्रण लाख पुत्रोथी वीं-टाएला ते बाहुबलिए चतुरंगी सेना तैयार करी. पछी ते सैन्यसहित भंभानां शब्दोथी दिशाउने वाचाल करता, छत्रवाला, तथा चामरोथी विंझाता, तथा करेलुं छे मंगल जेनुं एवा ते बाहुबलि उत्तम दिवसे कल्या-णकारी भद्रंकर हाथीपर चढ्या. पछी उत्तम परिवारवाला ते बाहुबलि

राजाए पण पोताना देशनां सिमाडापर लश्करनो पडाव नांख्यो. पछी प्रज्ञातमां सर्व राजाउंनी सम्मतीथी बाहुबलिए पोतानां पुत्र सिंहरथने सेनापति तरिके नीम्यो. पछी राजाए पोते तेनां मस्तकपर रणपट्ट बांध्यो, तेथी ते उंचे चडता तेजथीज होय नहीं जेम, तेम शोज्ञवा लाग्यो. वली ज्ञरत चक्रीए पण पोतानां राजाउंनी संमतिथी, वैरीनी सेनाने मर्दन करनार सुषेणने सेनापति नीम्यो. वली ज्ञरत चक्रीए सर्व राजाउंने तथा पोतानां सवा क्रोड पुत्रोने दूतो मारफते बोलावीने, तथा दरेकने बहुमानथी नामो लेइ बोलावीने, इंद्र जेम वैमानिकोने तेम, तेउंने तेणे कह्युं के, दिग्जय करीने सघला राजाउं, विद्याधरो, देवो तथा डुर्मद ज्ञीलोने पण जीत्या, पण तेउंमां आ बाहुबलिनां सामंत सरखो जोरावर पण कोइ नहोतो, वली आ बाहुबलिपासे रणसंग्राममां कुशल एवा घणां शूरवीरो छे. वली परनी सेनामां जेम एक महा पराक्रमी होय छे, तेम आनी सेनामां तो सघला वीरो पराजयने ज्ञेदनारा (महापराक्रमी) छे. वली आ बाहुबलिनो महापराक्रमी सोमयशा नामनो पुत्र छे, ते एक लाख हाथीउं, त्रण लाख घोडाउं अने रथोनी साथे लडी शके तेवो छे. वली ते सोमयशानो नानो ज्ञाइ सिंहरथ नामे छे, ते पण महा शूरवीर अने हाथमां दीव्य शस्त्रोने धरनारो छे. वली ते बाहुबलिनो क्षोज्ञ पामेला समुद्र सरखा ध्वनिवालो सिंहकर्ण नामनो पुत्र छे, ते पोताना बलथी हाथें करीने पर्वतोने पण अधर उपाडे छे. वली तेने जगतनां वीरोथी पण न जीती शकाय तेवो, तथा सिंह सरखा पराक्रमवालो, अने शत्रुनां सैन्यनो क्षय करवामां समर्थ सिंहसेन नामनो पण पुत्र छे. वली ते कुमारोमां जे सर्वथी नानो छे, ते पण डुःखें करीने जीती शकाय तेवो छे. वली तेउंमांथी कोइक तो अक्षौहिणी सेनाने पण जीती शके तेवो छे, एम सांज्ञल्युं छे. वली हे राजाउं! दिग्जयनां मिशथी तो केवल दिशाउंनुं जोवापणुंज थयुं छे; खरेखरुं युद्ध तो आ बाहुबलि साथे करवानुं छे. माटे समुद्र प्रते जेम प्रवाहो, तेम तमारे आ सुषेण सेनापतिनी पाछल रहेवुं. एवी रीतनी चक्रीनी आज्ञा धारण करीने हर्षित थया थका, तथा पोतानां स्वामी प्रते सेवकपणानो बदलो वालवानी इच्छावाला थया थका तेउं पोतपोताने स्थानके गया; तथा त्यां तेउंए वज्र,

मुद्गर, चक्र, तलवार, भालां, बाण विगेरे हथीआरोनी विविध प्रकारनां पुष्पोथी पूजा करी; वली तेओ नृत्य सहित जयलक्ष्मीनां प्रारंभ सरखां मंगल वाजिंत्रो शस्त्रोनी पासे वगाडवा लाग्या. वली आठे दिशाओमांथी लक्ष्मीने खेंचवा माटेज होय नहीं जेम तेम तेओए हथीआरोनी आगल अक्षत अने रत्नोथी अष्ट मंगलो आलेख्यां. प्रभातमां युद्धनी इच्छावाला बन्ने सैन्यना वीरोने ते रात्री पण लांबी थइ पडी. "हवे प्रभात क्यारे थशे. ?" एवा विचारथी तेओ उठी उठीने वारंवार अस्ताचल प्रते जता चंद्रने जोता हता. ते वखते ते वीर पुरुषोनां मनने जाणीने रण-संग्रामनी इच्छावाली तेओनी आंखोमां बीकथीज होय नहीं जेम तेम निद्रा आवी नहीं. हवे ते श्री ऋषभदेव प्रभुनां बन्ने पुत्रोनां युद्धने जोवानी इच्छथीज होय नहीं जेम, तेम सूर्य पण उदयाचलनी चूलिकाप्रते तुरत चढ्यो. हवे दश लाख वाजित्रोनां दृढ शब्दोथी दिग्गजो तो जाणे शब्दविनानां अने चेष्टाविनानांज थया होय नहीं, तेम थया. वली ते वखते अढार लाख दुंदुभिओ वागती थकी चंद्रनां हाथीने अने सूर्यना घोडाओने पण भय देवा लागी. भरतनां सैन्यमां वैरीनां प्राणोने हरनारा शोल लाख रणशींगाओ वागवा लाग्यां. ते वखते काहलीओनां तथा भेरीओनां भांकारोथी पृथ्वीतल भेदावा लाग्युं. वली ते वखते वाजांओना शब्दोथी तारामंडल त्रास पामवा लाग्युं, तथा वीरोनां सिंहनादोथी जगत शब्दमय थइ गयुं. वली ते समये, "हे वीरपुरुषो ! तमो बखतर पेहेरो ? घोडाओने पाखरो पहेरावो ? शस्त्रो तथा रथादिक तैयार करो? हमणा रणसंग्राम थशे;" एवी रीते वारंवार कहेता थका राजपुरुषो बन्ने सैन्योमां फरवा लाग्या. ते वखते वीरपुरुषो राजानी आज्ञाथी शरीपर रोमांच धारण करवा लाग्या. वली तेओ घोडाओने पाखर पहेरावता थका तेओनां जय सूचवनारा हेषारवोथी अत्यंत आनंद पामवा लाग्या. ते वखते रणशींगानां अवाजोथी घोडाओ भडकता हता, तेथी तेओने मधुर वाक्योथी शांत करीने तेओ पाखरो पहेरावता हता. वली तेओए ते घोडाओनी बन्ने बाजुओए गरुडनी चांचो सरखां भालांओ बांध्यां. ते वखते शत्रुनां समूहने गलवा माटे केटलाक घोडाओ सिंहमुखा, गरुडमुखा, हस्तीमुखा अने बहुमुखा पण थया. वली बखतरवाला तथा गर्जना कर-

ता हाथीउं, मेखलापर उगेला वृक्षोवाला जंगम पर्वत सरखा शोजता हता. वली ते वखते वीर पुरुषोए हाथीउंनी सुंढोमां परशु, जालां तथा मुजरो आप्यां, तथा तेउनां दांतोमां लोखंडनां वलयो पहेराव्यां. वली ते वखते डुंडुजिनां नादोथी जडकता घोडाउंने चोकडांउथी खेंचीने घणी मेहेनते रथोमां जोड्या. क्रोधायमान थएला योद्धाउं, जाथांउ वांधीने वेगथी वारंवार चालता रथोपर पण चडवा लाग्या.

हवे बाहुबलि पण स्नान विलेपन करीने, तथा श्वेत वस्त्रो पेहेरीने प्रजुने पूजवा माटे गया. त्यां तेमणे श्री आदिनाथ प्रजुनी प्रतिमाने जलथी स्नान करीने विविध प्रकारनां पुष्पो, अक्षत, तथा स्तवनोथी तेमनुं पूजन कर्युं. पठी ते देवलमांथी निकलीने, तेमणे वज्रनुं वखतर तथा टोप पहेर्यां. वली तेणे पीठपर बाणोथी जरेलां जाथांउ बांध्यां, अने तेथी ते चार हाथोवाला देखावा लाग्या. वली जेनां टंकारथी आकाशमांथी ताराउं पण खरी जाय ठे, एवुं धनुष्य तेणे डाबा हाथमां पकड्युं. पठी झरता मदथी झरणावाला पर्वत सरखा, तथा जंगम उत्साह सरखा महाजद्र नामनां गंधहस्तीपर ते बाहुबलि चड्या. पठी सिंहनां चिह्नवाली धजानां मिशथी जाणे नाचताज होय नहीं एवा बाहुबलि, जगतने त्रण समान गणता थका सैन्यसहित समरांगणमां आव्या. ते वखते लीला घोडावालो चंद्रनी ध्वजावालो तथा चंद्ररथवालो सोमयशा शत्रुउंने रोकवा माटे बाहुबलिनी आगल थयो. वली त्यां यमनी पेठे डुःखे जोइ शकाय एवो, कूर्मनी धजावालो, अने सिंहघोडावालो, महायशा पण जालां सहित आव्यो. तेनी आगल सिंहनी धजावालो तथा जगज्जय नामनां रथवालो, महा बलवान सिंहरथ पण अनेक शस्त्रोसहित चालवा लाग्यो. वली त्यां मयूरकेतुवालो, महासागर सरखा ध्वनिवालो, अने कालदंष्ट्र नामनां रथपर चडेलो सिंहकर्ण पण आव्यो. तेम त्यां रक्तवीजहंसकेतुवालो, सर्व शत्रुउंथी न जीताय एवो, तथा महाबल रथपर चडेलो सिंहविक्रम पण आव्यो. वली वज्रकेतुवालो, तथा रणसंग्राममां सर्व शत्रुउंने जीतनारो अने कालार्गल नामनां रथपर चडेलो सिंहासन पण त्यां आव्यो. इत्यादि बाहुबलिनां पुत्रो, तथा राजाउं नाना प्रकारनां वाहनो तथा शस्त्रो सहित उत्साहथी त्यां आव्या.

हवे भरत महाराज पण स्नान करी, शुद्ध वस्त्रो पेहेरीने देवलमां गया; केम के, संत पुरुषो पोतानां कार्योमां गाफल रहेता नथी. त्यां श्री ऋषभस्वामिनी प्रतिमाने स्नान करी, तेणे पोतानां यशथी जेम पृथ्वीने, तेम ते प्रतिमाने केसरथी लेपन कर्युं; पछी संपूर्ण भक्तिथी तेमणे सुगंधि पुष्पोथी ते प्रतिमानुं पूजन कर्युं, तथा धूप उखेवीने स्तुति करी. पछी तेणे जगतने जीतनार, अने वज्रथी पण भेदाय नहीं तेवुं बखतर तथा उत्तम शोभावालुं शिरस्त्राण (टोप) पेहेर्युं. पछी तेमणे अक्षय तथा लोखंडनां बाणोथी भरेलां जय अने पराजय नामनां बे तुणीरो बांध्यां. वली तेमणे डाबा हाथमां त्रणे लोकोने दंड करनारुं, तथा देवोनां समूहोथी आश्रित, अने भयंकर टंकारवालुं धनुष्य धारण कर्युं. वली तेमणे दैत्योप्रते दावानल सरखुं, तथा वैरीओने नाश करनारुं खड्ग धारण कर्युं, तथा बीजां हथीयारोने पण चक्रीए हाथथी स्पर्श कर्यो. पछी ते झरता मदनां समूहवाला, तथा ऐरावण सरखा सुरगिरि नामनां हाथीपर शक्रकेतु सहित बेठा. पछी सिंहनी धजावालो सुषेण पण पवनंजय नामनां रथपर चड्यो, अने तेनो नानो भाइ गरुड नामनां रथपर बेठो. वली ते सुषेण सेनापतिए कालानल खड्गने तथा वीजली सरखी कांतिवाला अग्निमुख भालांने हाथमां धारण कर्युं; पछी त्यां महा पराक्रमी सवा लाख कुमारो पण सज्ज थइने आव्या. तेओमां सर्वेथी मोटो सूर्ययशा नामे हतो, के जे त्रणे लोकोनो जय करवामां समर्थ, तथा दीव्य शस्त्रोथी रणमां वैरीओथी न जीताय तेवो हतो. वली ते देवसंबंधि सूर्यहास खड्गने, इंद्र धनुष्यने तथा सुरसन्नाह नामनां बखतरने धारण करतो थको शोभतो हतो. वली ते सूर्यध्वजवालो, लीला घोडावालो, वैनतेय नामनां रथमां चडीने रणसंग्राममां आव्यो. वली देवोथी पण न जीताय तेवो, सफेद घोडावाला रथपर चडेलो, अने सिंहध्वजवालो देवयशा कुमार पण त्यां आव्यो. वली गरुडपताकावालो तेनो नानो भाइ वीरयशा पण, उग्र बखतर तथा धनुष्यने धारण करतो थको त्यां आव्यो. वली कपिकेतुवालो तथा दुर्जय नामना रथपर चडेलो, सुयशा नामनो चक्रीनो पुत्र पृथ्वीने कंपावतो थको त्यां आव्यो. वली पोतानां नादथी आकाशपातालने पण गजावतो, मत्स्यनां केतुवालो अने धनुष्यने धारण

करनारो महापराक्रमी मेघनाद कुमार पण त्यां आव्यो. वली वरसादनी पेठे बाणोनी धारा वरसावनारो, तथा हाथीनी पताकावालो, रथपर चडीने सर्व शस्त्रोसहित कालमेघ कुमार पण त्यां आव्यो. वली वैरीउनां सुजटोनुं मर्दन करनारो, पीला घोडावालो तथा घुवडानी पताकावालो महाकाल कुमार पण रणसंग्राममां उत्सुक थयो थको रथमां बेसीने त्यां आव्यो. वली अश्वनी पताकावालो श्याम घोडावालो, अने रणमां पांच अक्षौहिणी सेनाने पण जीतनारो, वैरिसिंह कुमार पण त्यां आव्यो. वली ते वखते वीरपणानुं मान धरावनारो, लीला घोडावालो, हंसनी पताकावालो, अने हाथमां गदा धारण करनारो वीरसेन कुमार पण रणसंग्राम माटे उत्सुक थयो. इत्यादि चक्रिना पुत्रो अने वीजा महा बलवान राजाउ पण विविध प्रकारना वाहनोपर वेसीने त्यां रणसंग्राम माटे आव्या.

हवे ते वखते रथमांथी निकलता शब्दोथी गर्जना करतो, अने क्रोडो सुजटोथी वींटाएलो महाबलवान सुषेण सेनापति सैन्यनी अगाडी थयो. वली वीजा पूर्णरथी तथा अर्धरथी एवा राजाउ अने कुमारो पण हाथी, घोडा, रथ विगेरे वाहनोपर वेसता हवा. ते वखते केटलाक सुजटो तो रसातुर थइने प्रथमथीज रणसंग्राममां जटकवा लाग्या, तेउने स्वामिना हुकमथी छडीदारो वेगथी रोकवा लाग्या. वली ते वखते चालता लश्करीउनां पदघातोथी, पृथ्वी पण शेषनागनी फणोनी पंक्तिने नमावती थकी कंपवा लागी. वली ते वखते बन्ने सैन्योनां महायोद्धाउनां बलातिशयथी रंजित थइने जाणे मस्तको धुणावता होय नहीं तेम, महान पर्वतो पण कंपवा लाग्या. हवे प्रलयकालनां प्रारंजमां उछलता समुद्रनी पेठे गर्जारवा करता, एवा ते बन्ने लश्करो एकठां मल्यां. ते बन्ने सैन्योनां दुंदुजिनां नादोथी पुष्ट थयेला वाजिंत्रोनां शब्दोथी त्रणे लोको क्षोज पामवा लाग्यां. ते वेलाए स्वारोनी साथे स्वारो, रथवालाउनी साथे रथवालाउ, विद्याधरोनी साथे विद्याधरो, राजाउनी साथे राजाउ, सुजटोनी साथे सुजटो, सामंतोनी साथे सामंतो, तथा जिल्लोनी साथे जिल्लो मल्या. वली ते समये बन्ने सैन्योनां हाथीउनां दांतो एक वीजा साथे मलीने जयलक्ष्मीनां पलंगपणाने जजता हता. ते वखते बाणधाराउनां

वरसादथी दिशाउंने आछादित करता, विचित्र प्रकारना धनुष्योने ध-रता, सिंहनादथी गर्जना करता, जालांउनां अग्रजागोने खद्योतरूप क-रता, खड्गोने विजलीरूप करता, पताकाउने बगलीरूप करता, उछलती धूलिने वादलांरूप करता, कीर्तिरूप वेलडीनी वृद्धिमाटे रुधिररूपी पाणीथी पृथ्वीने सिंचता, पाछलनां योद्धाउने जीवितदानथी चातकोनी पेठे संतुष्ट करता, तथा वाहनोथी पृथ्वीने पण स्पर्श नहीं करता, एवा ते सुजटो रणसंग्राममां आम तेम जमता प्रलयकालनां मेघ-सरखा शोजता हता. वली. सैन्यरूपी समुद्रमां उछलता मोजांउनी पेठे क्रोधातुर थया थका तेउ, घोडा, रथ के हाथीने पण गणकारता न-होता. वली ते वखते त्यां हाथीउ सुंढमां योद्धासहित रथने लेइने तथा तेने आकाशमां जमाडीने पक्षिनां मालानी पेठे फेंकवा लाग्या. एवी रीते ते जयानक रणसंग्राम चालते छते कोइक साहसी योद्धो, पोतानी स्त्रीनां स्तननां वैरथी हाथीनां कुंजस्थलोने ताडना करवा लाग्यो. ते वखते सुषेण सेनापति पोतानां सैन्यनुं जरा मंदपणुं देखीने क्रोधातुर थयो थको, हथिआरसहित घोडापर बेसीने प्रलयकालना अग्निनी पेठे आगल धस्यो. एवी रीते ते सुषेणे लीलामात्रथी सुजटोनां समूहोने तृणनी पेठे कापवा मांड्याथी तेनी सामे कोइ पण सुजट उजी शक्यो नहीं. एटला-मां अनिलवेग नामनो महाविद्याधर सुजट बाहुबलिनां चरणोने नमीने पवन सरखा वेगथी सुषेणनी सामे दोड्यो, अने तेने कहेवा लाग्यो के, हे सुषेण ! तुं सेनापति छे, अने हुं तो एक बाहुबलिनो पालो छुं, पण मारुं जुजाबल तुं जो ? तेने जोइ महापराक्रमी सुषेण पण समुद्रसरखी गर्जनाथी आकाशपातालने पण गजाववा लाग्यो. तुल्य बलवाला तेउ बन्ने हर्षयुक्त थया थका रोमांचकंचुकथी ते वखते बखतरने पण फाडवा लाग्या. पछी तेउ बन्ने बाणोथी लडता थका देवोने पण जगतनां नाशनी शंका करावता लाग्या. वली तेउ आकाशमां रही जोता देवोनां विमानोने बा-णोनां स्पर्शथी त्रास पमाडवा लाग्या. मदोन्मत्त थएला हाथीउनी पेठे एक बीजानां यशनी इछा राखता, तथा क्रोधथी लाल आंखोवाला तेउ बन्ने, सैनिकोने दुःखे जोवालायक थया. प्रलयकालमां पर्वतनी साथे जेम पर्वत अथडाय, तेम अथडातां थकां ते विद्याधरे सुषे-

णने जरा हठाव्यो. ते वखते ते विद्याधरे वीर्योल्लासथी वरसा दनी पेठे महाध्वनिवालो सिंहनाद कर्यो. ते सिंहनादथी अत्यंत हर्षित थएला बाहुबलिनां लश्करीउ तेनां पडघानी पेठे चारे को रथी गर्जना करवा लाग्या. ते वखते क्रोधथी लाल थएलो, विकराल आंखोवालो, तथा साक्षात कल्पांतकालनां अग्निसरखो सुषेण सेनापति खड्गरत्न लेइने दोड्यो. ते वखते लोको एवी तर्क करवा लाग्या के, शुं आ सुषेण आखा जगतनो संहार करशे ? के पर्वतोने उखेडी नाखशे ? के पृथ्वीने फाडी नाखशे ? हवे तेवी रीते सुषेणने धसी आवतो जोइने सिंहरथ कुमारे वायुसरखा वेगवाला घोडाउथी रथने वच्चे नांख्यो. त्यारे कांठापरनां पर्वतथी अटकावेलो समुद्रनो मोजो जेम अटकी जाय, तेम महाबलवान सुषेण पण तेथी अटकी गयो. ते वखते युद्धनो साक्षी सूर्य पण बहु पडतां एवां सुभटोनां बाणोथी जाणे त्रास पाम्यो होय नहीं, तेम अस्ताचलप्रते गयो. त्यारे बन्ने राजाउनी आज्ञाथी पूर्वापर समुद्रोनी वेलानी पेठे बन्ने सैन्यो पाछां वल्यां. पछी ते महापराक्रमी वीरो केटलीक मेहेनते ते रात्रि गालीने, प्रभात काल थवाथी नाचवा लाग्या. पछी तेउ पोतपोतानां बख्तरोतथा हथियारो धारण करीने तैयार करेला पोतपोतानां वाहनोपर चड्या. पछी तेउ बाजांउनां शब्द प्रमाणे चालता थका रणभूमिपर आव्या; तथा प्रसिद्ध पताकाउथी उलखीने तथा एकबीजानां कुलादिकनुं वर्णन करीने, तथा बोलावीने बाणोनो वरसाद वरसाववा लाग्या. ते वखते पोतानां स्वामिना कृपारूपी समुद्रने पार पहोंचवानी इच्छाथी तेउ तीक्ष्ण अणिवालां बाणोने पण गणकारता नहोता. वली ते समये बाणो, बाणोनी साथे घसावाथी अग्निने उत्पन्न करता थका, जोवा आवेला देवोने पण भय उपजाववा लाग्या. वली ते वखते घासथी जेम दरिद्रिनुं घर, तेम राजाउ बाणोथी आकाशने आछादित करवा लाग्या, अने तेथी देवोने ते रणसंग्राम जोवामां विघ्न थवा लाग्युं. ते भयंकर रणसंग्रामने जोइने कायरो तो त्रास पामवा लाग्या, अने वीर पुरुषो तो ते महाघातोथी पण जाणे बेवडा थवा लाग्या. त्यां वीर पुरुषो, लोहीथी सींचाएली, तथा घोडाउथी चूर्णित थएली पृथ्वीपर, हाथीनां कुंभस्थलोने भेदीने मोतीउ

रूपी बीजो वाववा लाग्या; ते बीजोमांथी तेउनुं यशरूपी वृक्ष डालां- उथी विस्तार पामीने अक्षय थयुं थकुं, त्रणे जगतमां व्यापवाने समर्थ थशे. हवे सिंहरथ कुमार क्रोधातुर थइने, सर्व शस्त्रोथी स्फुरायमान थयो थको चक्रीनी सेना प्रते पोतानो रथ वेगथी दोडाववा लाग्यो; ते वखते सिंहकर्ण कुमार, अग्निनी पाछल जेम वायु, तेम सर्वने संहार कर- वामां समर्थ थयो थको तेनी पाछल आव्यो. पछी ते बन्ने वीरो चक्रीनी सेनाने क्षोभावा लाग्या, अने पृथ्वीने कंपाववाथी देवोने पण दुष्प्रेक्ष्य थया. तेउनां बाणोना पडवाथी ते नहीं सहन करी शकावाथी लश्करी- उनी आंखो मीचाइ गइ. तेउ संग्राममां रसिक थया थका हाथी, घोडा, रथ, पाला के राजाउने पण गणवा लाग्या नहीं. एवी रीते तेउना स्वछंद रीते चालवाथी लश्करमां आंतरो पडी गयो. त्यारे सुषेण पण मात्स- र्यपणाथी प्रलयकालनां समुद्रनी पेठे, विविध प्रकारनां हथियारो स- हित पवनवेगे दोड्यो. त्यारे बाहुबलिनां सैन्यनां राजाउ बोलवा ला- ग्याके, अरे ! आने मारो ! मारो ! पकडो ! पकडो ! पछी सुषेणे बाहुबलिनी सेनाने एवी तो विखेरी नाखी के, तेनी सामे कोइ पण आवी शक्यो नहीं. पछी त्यां सुषेणे पेला विद्याधरनां पुत्रने जोइने त्रणे जगतने क्षोभावनारो धनुष्यनो टंकार कर्यो; अने तेने कह्युं के, हे विद्याधर ! ते वखते सिंहरथे वचमां रथ नाखीने तारुं रक्षण कर्युं हतुं, पण आ समये तारुं रक्षण कोण करी शके तेम छे ? ते सांभ- लीने अनिलवेग पण महावेगथी तेनी सामे आव्यो. पण तत्क्षण सु- षेणनां हथीयारोथी व्याकुल थइ ते पाछो वल्यो. पछी त्यांथी वेगसेहित उछलीने ते चक्रीनी हाथीनी सेनामां आव्यो, त्यां ते दडाउनी पेठे हा- थीउने आकाशमां उछालवा लाग्यो, तथा तेउने पडता झीलीने मुष्टी- उथी मारवा लाग्यो. ते कोइ वखते पृथ्वीपर, तो कोइ वखते आकाशमां, तो कोइ वखते तीर्छो, तो कोइ वखते फुदडी फरतो, तो कोइ वखते च- तुरंगी सेनामां देखावा लाग्यो. तेवी रीतनो तेने जोइने, हथीपर बेठेला चक्रीए क्रोधथी, इंद्र जेम वज्रने तेम तेनापर चक्रने मुक्युं. हजार आ- राउमांथी निकलती ज्वालाउनी श्रेणिवालां सूर्यबिंब सरखां ते चक्रने जोइने घुवडनी पेठे ते विद्याधर त्रय पाम्यो. पछी तेणे विचार्युं के, अ-

हींथी नाशी जवुं तेज श्रेष्ट छे, एम विचारि वारंवार चक्रने पाछुं वाली जोतो थको ते नाशवा लाग्यो. पछी ते मेरु, गुफा, समुद्र, रुचकद्वीप, बीजा द्वीपो, अने पाताल विगेरे ज्यां ज्यां जवा लाग्यो, त्यां त्यां ते चक्रने पूर्वार्जित कर्मनी पेठे पाछल आवतुं जोइ, तेणे वज्रपंजर बनाव्युं. त्यारे तेने चक्राधिष्टायक देवो हसीने कहेवा लाग्या के, रे रंक! तें आ चक्रीप्रते शुं करवा मांड्युं छे? वली हे रंक! ते चक्री ज्यारे तारापर कोपायमान थया, त्यारे देवोमांथी पण तारुं कोण रक्षण करी शके तेम छे? माटे हवे तें पक्षीनी पेठे पंजर शामाटे धारण कर्युं छे? पछी ते अनिलवेग विद्याधर छमास पछी पोतानां ते पिंजरमांथी निकल्यो, त्यारे चक्रे तेनुं माथुं कापी नांख्युं. पछी ते चक्र पाछुं वलीने चक्रीना हाथमां आव्युं, अने चक्रीनां सैन्ये वारंवार जय जय शब्द कर्यो. हवे सिंहरथ तथा सिंहकर्णने तेवी रीतना जोइने मेघनाद अने सिंहनाद नामनां चक्रीनां पुत्रो तेनी तरफ दोड्या. पछी ते चारे वीरो परस्पर युद्ध करता थका, देवोने पण चारे दिशाउनां प्रलयनी भ्रांति सूचववा लाग्या. जगतने क्षोभ पमाडनारा ते चारे वीरो वज्रोनी साथे जेम वज्रो तेम अत्यंत बलथी लडवा लाग्या. हवे ते वखते तेउनां रणसंग्रामथी जाणे डर्यो होय नहीं तेम, सूर्य अस्ताचलप्रते गयो; अने बन्ने लश्करो पण पोतपोताने स्थानके गयां. त्यां पुरोहिते काकिणी रत्ननां पाणीथी वैरिनां मारथी घायल थएली सेनाने पाछी नवी जेवी करी; अने चंद्रयशाए चंद्रथी मेलवेली विद्यानां योगथी बाहुबलिनी सेनाने शल्यरहित करी. पछी प्रभातमां पोतपोतानी पताकाउथी आकाशने चित्रित करता थका, अंदर क्रोधवाला थइने सर्वे शस्त्रो सहित त्यां आवी पहोंच्या. त्यां पर्वत सरखा माथांवालो रत्नारि नामनो विद्याधर बाहुबलिनां चरणोने नमीने, तथा तेनी आज्ञा लेइने, लाख भारनां वजननी लोखंडनी गदा हाथमां धारण करीने, वंटोलीआनी पेठे गर्जना करतो थको वेगथी दोड्यो. यमनी पेठे हाथमां गदावाला, ताडनां वृक्ष सरखा उंचा, बलती अग्निसरखी पीली आंखोवाला, उगता सूर्य सरखा मुखवाला, वृक्षनां डालां सरखा हाथोवाला, शीलातल सरखा हृदयवाला, बीजा विद्याधरोथी वींटाएला, महा भयंकर तथा महा बलवान एवा ते विद्याधरने

जोइने लश्करीउं कंपवा लाग्या. ते विद्याधर, वरसादनी पेठे गर्जना करतो थको चक्रीनां सैन्यमां प्रलयकालनां अग्निनी पेठे गदानां मारथी कांकराउनी पेठे हाथीउने, पतंगीआंउनी पेठे घोडाउने, पद्मिनां मालाउनी पेठे रथोने, तथा क्षुद्र कीडाउनी पेठे पालाउने मारवा लाग्यो. त्यारे माहेंद्रचूड नामनो विद्याधर पण जरतने नमी, हाथमां जयंकर मुशलने जमावतो थको क्रोधथी तेनी सामे दोड्यो. पछी ते महा बलवान विद्याधरे वज्रथी जेम पर्वतने, तेम ते रत्नारिने मार्यो, अने तेथी ते पृथ्वीपर लोटवा लाग्यो. ते वखते सूर्य पण तेनी साथे तेनीज आकृतिने धारण करतो थको पश्चिम समुद्रमां जइने पड्यो. ते रात्रिए बाहुबलिनुं सैन्य कमलनी पेठे मुकुलित थइ गयुं; पण प्रजात होते छते पाछुं क्षणवारमां प्रफुल्लित थयुं. हवे रत्नारिने हणाएलो जाणिने अमितकेतु क्रोधथी बलतो थको, धनुष्य अने फरसी लेइने चक्रीनां सैन्यप्रते दोडी आव्यो. ते बाणोनी धाराउथी वैरीउनां समूहमां डुर्दीन करतो थको मेघनी पेठे तेउनां मुखोने उलटां करवा लाग्यो. पछी क्षीरसमुद्रनी पेठे गर्जना करतो, तथा प्रलयकालनां सूर्यनी पेठे तीव्र अने अद्भूत तेजोथी तपतो, तथा दोषोनी खाणसरखा (चंद्र सरखा) शत्रुनां समूहोने कलंक सहित करतो थको सूर्ययशा रथ सहित तेनी सामे आव्यो. ते सूर्ययशानां नादथी चक्रीनां लश्करीउने जाणे बेवडो हर्ष थयो होय नहीं तेम, तेउ समरांगणपर आव्या. एवी रीते धसी आवता सूर्ययशानां केतुने अमितकेतुए क्षणवारमां बाणथी छेदी नाख्यो. ते जोइ धूमकेतुनी पेठे उछलेला सूर्ययशाए अर्धचंद्र नामनां बाणथी तेनुं गलुं कापी नाख्युं. ते वखते चक्रीनी सेनामां जय जय शब्द थयो, तथा सूर्य यशापर आकाशमांथी पुष्पवृष्टि थइ. एवी रीते मंथानक सरखो ते सूर्ययशा बाहुबलिनी सेनाने वलोवीने पाछो पोतानां सैन्यमां आव्यो. पछी बाहुबलिए राजाउने बोलाव्याथी वीस क्रोड पाला, तेटलाज घोडा, रथ, तथा हाथीउनो स्वामी, तथा वैताढ्यनी दक्षिण श्रेणिनो सुमति नामनो नायक, बाहुबलिने नमीने रणसंग्राममां धस्यो. ते वखते साक्षात क्षत्रीधर्म सरखो, तथा सिंहनी पेठे महापराक्रमी शार्दूल नामनो चक्रीनो पुत्र ते सुमतिने धस्यो आवतो जोइने, वीररसथी आकुल थयो थको, हा-

थीपर वेसी सिंहनाद करी समरांगणमां आव्यो. तेनां वाणोनुं आकर्षण, संधान, के मोक्ष कंइ पण शत्रुनां समूहो जोइ शक्या नहीं; एवी रीतनां ते शार्दूलने वाणोथी दुर्जय जोइने सुमतिए देवोथी पण ने छेदाय एवां दीव्य शस्त्रो तेनापर फेंक्यां. त्यारे प्रेमपाशोथी जेम प्राणी, तेम ते शार्दूल सिंहनी पेठे नागपाशोथी वंधायो थको चालवाने अशक्त थयो. तेनी पीडा जरा वेठीने, तथा तुरत सूर्यथी प्राप्त थएली विद्यानुं स्मरण करीने, हाथी जेम कमलनां तंतुउने, तथा योगी जेम कुकर्मोने तेम तेणे तुरत ते नागपाशोनां वंधनो त्रोडी नांख्यां. पछी वादलांमांथी निकलता सूर्यनी पेठे अधिक कांतिवालो थएलो ते शार्दूल खड्ग उगामीने क्रोधथी सुमतिप्रते दोड्यो. पछी सिंह जेम पर्वतने तेम हाथीने छोडीने तेणे सुमतिने क्रोधथी मस्तकमां खड्गथी मार्यो. ते घाथी ते विद्याधरनां काचा घडानी पेठे वे टुकडा थइ गया; अने रणसंग्राममां शार्दूलनो प्रताप पण वेवडो थयो. ते वखते सूर्य पण कमलोनां निमीलनने नहीं सहन करवाथी जय पामीने अपर समुद्रप्रते गयो. पछी प्रजाते वैरीरूपी कमलोने नाश करनारो सोमयशा, तेजथी जाज्वल्यमान थइने चक्रीनी सेनासाथे लडवा लाग्यो. कालसरखो जयंकर एवो ते सोमयशा चक्रीनी सोनामांथी सर्व शस्त्रो एकठां करीने वहु क्रोधथी तेनो वरसाद वरसाववा लाग्यो; त्यारे तेनी साथे चक्रीनां सैनिको सूर्यसाथे जेम अंधकारो तेम लडवा लाग्या. एक एवो पण ते सोमयशा रणमां अनेक सरखो थइने, हरिणोनी साथे जेम सिंह, तेम ते सवलाउनी साथे लडवा लाग्यो. एवी रीते वंटोलीआनी पेठे तेणे चक्रीनी सेनाने उन्मार्गे चडावी दीधी. ते वखते सूर्ययशानो सुरराज नामनो महावलवान् पुत्र, सोमयशाने तेवी रीते नुकशान करतो जोइने तेनी सामे धस्यो. एवी रीते जयनी इछावाला तेउ वन्ने ज्यारे एकठा थया, त्यारे लोकोनां मनमां क्षणवारसुधि प्रलयकालनी शंका थइ. ते वखते तेउनी वीकथीज जेम, तेम सूर्य अस्त थयो; तथा पाछो तेउने जोवामाटे ते कौतुकी सूर्य उदय थयो. ते वखते शब्दवंधु अने वीरवंधु, महावाहु अने सुवाहुक, धूपघट ने धूमकेतु, जयवीर अने महाजय, वाहुक ने त्रिलोक, तथा कामजोज अने चंडक, एवी रीते चक्री अने वाहुवलिनां

वीरो मांहोमांहें लडवा लाग्या. एवी रीते ते बन्ने सैन्योनो भयंकर रण-संग्राम बार वर्षोसुधी चाल्यो. हवे प्रभातमां रणतुरीओथी फरीने आवी पहोंचेला लश्करीओ महाक्रोधथी शस्त्रोनो वरसाद वरसाववा लाग्या. ते वखते भरतनां कालसेन अने वीरसेन नामनां पुत्रो, तथा महायश अने सिंहसेन नामनां बाहुबलिनां पुत्रो लडवा लाग्या; वली कालमेघ अने महाकाल, सिंहविक्रम अने सुंदर एवी रीतनां कुमारो मांहों मांहें रण-संग्राम करवा लाग्या. तेओनां रथोनां चित्कारोथी पृथ्वीतल कंपवा लाग्युं. अने बाणोनां प्रहारोथी आकाशमां रहेला देवो पण त्रास पामवा लाग्या; वली तेओनां सिंहनादोथी सिंहादिक पशुओ पण हरिणोनी पेठे दूर नाशवा लाग्या; तथा तेओनां भुजास्फोटोथी पर्वतो पण फाटवा लाग्या. ते वखते श्री भरत महाराजाना मोटा पुत्र सूर्ययशाए कल्पांत-काले उद्भ्रांत थएला समुद्रनी पेठे गर्जना करी; पछी ते ऊंचे प्रकारे नाद करतो थको तथा पोतानां हाथमां धनुष्य धारण करतो थको, बाणोनां समूहोने फेंकतो थको, सैन्यनां समूहने मूर्छित करतो थको, वायुथी जेम पर्वतो, तेम वेगथी हाथीओने लोटावतो थको, मूर्तिवंत यमनी पेठे सुभ-टोनां समूहने हणतो थको, रथोने चूर्ण करतो थको, घोडाओनां समूह-ने घुमावतो थको, रथनां चक्रनां शब्दोथी पृथ्वीमंडलने क्षोभ पमाडतो थको, वीरोनां कलेवरोथी गीधो अने शियालोने लोभावतो थको, दुः-सह पराक्रमथी पोताना पिताने आनंद आपतो थको, महान राजाओने जडमूलथी काढी नाखतो थको, तथा अगल रहेलाओने भस्मरूप करतो थको, बाहुबलिनां लश्करप्रते दोड्यो. एवी रीते पोतानी सेनानो संहार करता सूर्ययशाने जोइने, क्रोध पामेला बाहुबलि तेनी सामे रणभूमिमां आव्या; तथा पृथ्वीने धडो अने मस्तकोवाली, आकाशने शस्त्रोवालुं, तथा दिशाओनां चक्रने रुधिरवालुं करवा लाग्या. पछी ते सूर्ययशाने कहेवा लाग्या के, हे वत्स! तुं क्षीरकंठ (बालक) छतां पण मारी सेनामां आवी रीते फुफे छे, तेथी हुं खुशी थयो छुं, केम के, तें वंशनी शोभा वधारी छे. वली त्रणे लोकमां पण एवो कोइ माणस नथी के, जे मारा क्रोधने स-हन करी शके, माटे तुं जलदी मारी दृष्टिथी दूर था? केम के, तुं मने मारा सोमयशा सरखो छे. ते सांभलीने, सूर्ययशा उत्साह सहित जाणे

उलटो तेमने तर्जना करतो होय नहीं, तेम गंभिर वाणीथी बाहुबलिने कहेवा लाग्यो के, हे काकाजी! आजे तो मंगल छे; वली तमो मने ताततुल्य छो, तेथी हुं तमोने भक्तिथी नमुं छुं. वली पिताजी ज्यारे दिग्जयमाटे गया हता, त्यारे तेओ मने विनीतामांज छोडी गया हता, तेथी में जरा पण रणसंग्राम जोयो नथी; माटे आजे कृपा करीने आपनां आ पुत्रनी भुजाओनुं पराक्रम जुओ? एम कही तेणे धनुर्दंडनो टंकार कर्यो. ते वखते त्रणे लोकनां नाशनी शंकाथी संभ्रांत थएला देवो, आकाशमां एक बीजापर पडता थका टोलांबंध एकठा थया; अने विचारवा लाग्या के, अहो! पोतानां बन्ने हाथोसरखा, आ बे रुषभदेव प्रभुनां पुत्रोनो रणसंग्राम केवो भयंकर निवडशे! एम विचारि तेओए बन्ने सैन्योनां सुभटोने कह्युं के, हे सुभटो! ज्यांसुधि अमो तमारा बन्ने स्वामिओने समजावीयें, त्यांसुधि तमोए कोइए युद्ध करवुं नहीं; अने ते माटे तमोने श्री रुषभदेव प्रभुनी "आण" छे. एवी रीते त्रणे जगतनां स्वामिनी आणाथी बन्ने सैन्योनां सुभटो चित्रेलाओनी पेठे स्थिर थइ गया. अने देवो भरत महाराजापासे गया. त्यां जइ तेओए भरतने कह्युं के, हे छ खंड भरतनां स्वामी! तथा हे चक्रीशिरोमणि! तमोए छ खंड पृथ्वीनो जय सुखेथी कर्यो; अने तेमां देवोमांथी पण कोइ तमारी सामे थयुं नहीं; अने हवे तमो बन्नेए श्रीरुषभदेव प्रभुनां पुत्रो थइने, पोतानां हाथथीज पोतानां हाथनो वध केम आरंभ्यो छे? तमारा पिताजीएज आ जगतनी सृष्टि बनावी, अने ते सृष्टिनो तमो बन्ने संहार करो छो, ते तेमनां पुत्रपणाने लायक छे? वली तमो ज्यारे सामा चालीने लडवा आव्या छो, त्यारे ते बाहुबलि पण सामा आवेल छे, माटे तमो चाल्या जवाथी ते पण चाल्या जशे. वली ते तमारा नाना भाइ छे; माटे कारणे कारज नीपजे छे. माटे हे राजन्! जगतने संहार करवानां कारणरूप आ रणसंग्रामथी तमो विरमो? के जेथी आप जेवानो उदय त्रण जगतनां हर्षमाटे थाय. एवी रीते कहीने देवो मौन रह्याबाद चक्री तेओने कहेवा लाग्या के हे देवो! तमो हमेशां पिताजीनां भक्तो छो, अने अमो पण तेज पिताजीना पुत्रो छीयें; माटे युक्तायुक्तनो विचार करीने, तमो अमोने शिखामण आपो? "हुं बलवान छुं" एवा हेतुथी अथवा मात्सर्यथी हुं कंइ रणसंग्रामनी इछावालो नथी, पण

चक्र आयुधशालामां प्रवेश करतुं नथी, माटे तेनुं मारे शुं करवुं? वली साठ हजार वर्षोसुधिमां दिग्जय करीने हुं आव्यो, अने ते वखते पण नहीं आवेला भाइओने में माणसो मारफते बोलाव्या, त्यारे तेओ तो मनमां कंइंक लावीने तातनां अनुयायिओ थया; पण आ बाहुबलि मारो अविनय करवा लाग्यो. पेहेलां तो ते मने तातनी पेठे विनयथी आराधतो हतो, अने हमणां तो ते दैवयोगे मारी आज्ञा पण मानतो नथी. हवे एक बाजुथी जोउं छुं तो आ मारो नानो भाइ माराज अंशतुल्य छे; अने बीजी बाजुथी आ चक्ररत्न पोतानां स्थानकमां प्रवेश करतुं नथी. माटे एकज वखत ते मारो भाइ मारी पासे आवे; अने पछी ते आ हाथी, घोडा, रथो, राज्य विगेरे मारुं सघलुं तुरत भले लेइ जाय. माटे हे देवो! एवी रीते संकटमां रहेला मने न्यायदृष्टिथी विचारिने तमो शिखामण आपो?
एवी रीतनी चक्रीनी वाणी सांभलीने ते देवो तेमने कहेवा लाग्या के, हे महीपति! चक्ररत्ननां अप्रवेशथी अमो तमोने कंइं पण अटकावी शकता नथी. पण हवे जो ते बाहुबलि राजा पण माने तो, तमोए द्वंद्वयुद्धथी लडवुं, के जेथी जगतनो क्षय थाय नहीं, अने तेथी तमो बन्नेए दृष्टि, वचन, मुष्टि, अने दंडथी युद्ध करवुं; के जेथी तमारां बन्नेनां पराक्रमनी सिद्धी थशे, अने प्राणीओनो नाश थतो अटकशे. पछी ते वात भरते कबुल करवाथी ते देवो बाहुबलिनां सैन्यमां गया, त्यां तेओए बाहुबलिने जोया; त्यारे तेओए तेमने आशिष आपी के, हे युगादीश प्रभुनां पुत्र बाहुबलि! तमो जय तथा आनंद पामो? एम कही तेओ तेमने कहेवा लाग्या के, हे बाहुबलि! बलवान एवा तमोए भुजदंडनी खरजना मिशथी जगतना संहारनां कारणरूप आ शुं आरंभ्युं छे? वली हे राजन्! तमो यशनां अर्थी तथा गुरुभक्त छो, तो आ मोटा भाइ साथे तमोए रणसंग्रामनो संरंभ शुं मांड्यो छो? माटे तमो चालो? अने भरतराजाने नमस्कार करो? केम के तेवी रीतनी गुरुसेवाथी तमारुं विशेष मान थशे. वली पोतेज मेलवेला धननी पेठे छ खंड भरतनुं राज्य तमो करो? अने तेम कर्याथी सर्वथा तमारी शोभा वधशे, केम के, अहंकार तो अज्ञानी माणसोने होय छे; एटलुं कहीने देवो मौन रह्या बाद बाहुबलि तेमने कहेवा लाग्या के, सरल आशयवाला तमो तातनां अत्यंत

नक्त छो. अगाउ श्री पिताजीए याचकोप्रते जेम धन, तेम अमोने अने नरतजीने पण राज्य वेहेंची आप्युं छे. त्यारे अमो तो पिताजीनी आज्ञापूर्वक तेटलाज राज्यथी संतुष्ट रह्या; अने नरतजी तो असंतुष्ट थइने समस्त नरतखंड गली गया; तेटलेथी पण तेनी आशा संपूर्ण न थवाथी तेमणे नाइउनां राज्यो लेइ लीधां; अने तेम करीने तेमणे तेवी रीतनी पोतानी गुरुता देखाडी !!! अने तेथी मिथ्यात्वथी मूढ मनवालो अतत्वने पण जेम तत्वबुद्धिथी माने छे, तेम में पण गुरुबुद्धिथी तेमनी फोकट तातनी पेठे सेवा करी. वली ते चक्री थइने पण मारुं राज्य अन्यपणानी बुद्धि लावी हरवानी इच्छा करे छे, पण ते एम नथी जाणता के, आ बाहुबलि तो तेनुं सर्व कंइ हरी लेशे! माटे ते मोटा नाइने पण गुरुबुद्धिथी फोकट केम नमुं ? अने तेथी पोतानां पराक्रमथी जो ते राज्य लेइ शके, तो नले लीए. वली हे देवो ! जे सामो लडे नहीं, तेनी साथे लडवुं नहीं; माटे ते जेवा आव्या छे, तेवाज जो पाछा जाय, तो समर्थ एवो पण हुं तेमनी उपेक्षा करीश. वली तेमनां दीधेला नरतखंडने हुं नोगवुं, एवुं तमोउ सांनल्युं पण क्यांथी ? केम के, जो पिताजीनां आपेलांथी पण तृप्ति न थइ, तो पछी शाथी थवानी हती ? माटे हे देवो ! जो तमो अमारुं हित इच्छता हो तो, तेमनीपासे जइ तेमने लोनांधनेज समजावो ? वली हुं तेमना जेवो कंइ लोनी पण नथी. एवी रीतनी बाहुबलिनी वाणी सांनलीने देवो मनमां आश्चर्य पामी कहेवा लाग्या के, चक्रनां अप्रवेशथी नरतने पण अटकावी शकाय तेम नथी, माटे हवे तमो बन्नेए उत्तम द्वंद्व युद्धोथी लडवुं, पण अधम युद्धोथी लडवुं नहीं. ते वात बाहुबलिए कबुल करवाथी देवो जोताथका नजदीकमां आकाशमां उन्ना.

हवे बाहुबलिनो छडीदार हाथीपर चडीने, हाथ उंचो करी, मोटा शब्दोथी सुनटोने कहेवा लाग्यो के, हे सघला राजपुरुषो ! तमो आ वांछित रणसंग्रामथी पाछा हठो ? तथा हाथी घोडा आदिक वाहनोने पण सर्व जगोएथी पाछा खेंची ल्यो ? केम के, देवोनी मागणीथी आपणा स्वामीए द्वंद्वयुद्ध करवुं कबुल्युं छे; माटे तमो ते दूर रहीने जुउ ? ते सांनली सर्वे सुनटो पोतानी नुजाउने फोकट वृद्धि पामेली मानता थका, राजानी आज्ञाथी वांछित रणथी दूर खस्या. पछी नरतनां लश्क-

रीउं पण पाछा हठता थका एवुं चिंतववा लाग्या के, अमो वेगा छतां आपणा स्वामीए द्वंद्वयुद्धनो शामाटे आश्रय कर्यो हशे? वली सैन्यनां मृत्युथी तथा भागवाथीज सर्वथा रक्षण करवा लायक एवा राजाउंये द्वंद्वयुद्ध करवुं लायक गणाय. वली एक आ बाहुबलि शिवाय समस्त छ खंड भरतमां पण आपणा स्वामि सरखो कोइ बलवान नथी, अने तेथीज अमोने आ बाबत शोच थाय छे. एवी रीते एकठा थइने शोचमां पडेला पोतानां सैनिकोने जोइने भरते पोतानुं बल देखाडवा माटे तेउंने आज्ञा आपी के, तमो एक मोटो खाडो खोदो? ते सांभली तेउंए एक विस्तारवालो खाडो खोद्यो. पछी महा बलवान चक्री ते खाडानां कांठापर बेठा, अने पोतानां बन्ने हाथो सांकलोथी बांध्या. एवी रीते सेंकडो छेडावाली सांकलोथी विंटाएल छे शरीर जेमनुं एवा ते चक्री, वडवायोथी विंटाएला वडनी पेठे, तथा किरणोथी विंटाएला सूर्यनी पेठे शोभवा लाग्या. पछी तेमणे पोताना लश्करीउंने हुकम कर्यो के, हवे तमो सघला सर्व वाहनोसहित, तथा तमारां समस्त बलथी मने खेंचीने आ खाडामां तुरत पाडो? के जेथी तमोने मारा बलमाटे निर्भयपणुं थाय. पछी तेउं सघला तेमने खेंचीखेंचीने थाकी गया, पण तेउं चक्रीने जरा पण तेउं चलावी शक्या नहीं. पछी चक्रीए हृदयपर हाथ फेरववानां मिशथी तेउंने जरा खेंच्या; त्यारे सघला राजाउं विगेरे सैनिको पोतानां वाहनो अने परिवारोसहित, लताप्रते जेम पक्षिउं, तेम सांकलमां लटकता थका खाडामां पड्या. एवी रीतनां पोतानां स्वामिनां बलनां माहात्म्यथी खुशी थएला एवा तेउं रणसंग्राममां पराङ्मुख थइने साक्षिउंनी पेठे नजदीक उभा.

हवे देवोए ते रणभूमिने गंधोदकथी सींची, तथा त्यां पचरंगी पुष्पोनी श्रेणि पाथरी. पछी चक्री अने बाहुबलि दृष्टियुद्धनी प्रतिज्ञा करीने, रणभूमिपर सामसामा उभा. एवी रीते अनिमेष रीते जोता थका तेउं बन्ने चिरकालनां अनालोकदोषनुं मार्जन करता होय नहीं, तेम शोभवा लाग्या. विस्तारवाली आंखोवाला, लाल मुखवाला, तथा पर्वतसरखा उंचा, एवा ते बन्ने वीरो, एक बीजाने ग्रस्त करवानी, इछावाला होय नहीं, तेम भयंकर देखावा लाग्या. पछी बाहुबलिनां सूर्य सरखा रौद्र मुखने जोवाथी चक्रीनी आंखोमां पाणी आवी ते बीडाइ गइ. ते

ખતે ભરતેશનાં લશ્કરીઓનાં મુખો નીચાં થયાં. અને તેની સ્પર્ધાથીજ હોય નહીં જેમ, તેમ બાહુબલિનાં સૈનિકોનાં મુખો ઉંચાં થયાં, પછી નીચું મુખ કરી રહેલા ભરતને બલવાન બાહુબલિ કહેવા લાગ્યા કે, હે સ્વામી! તમો ઉદ્વિગ્ન કેમ થાઓ છો ? હજુ મારી સાથે વાગ્યુદ્ધ કરો ? એવી રીતનાં તેનાં વચનથી, પદઘાતથી જેમ સર્પ, તેમ આમર્ષયુક્ત થઇને ચક્રી કહેવા લાગ્યા કે ભલે તેમ કરો ? પછી ચક્રીએ મંદરાચલથી વલોવાએલા સમુદ્રના ધ્વનિ સરખો, તથા ઐરાવણની ગર્જના સરખો, અને કલ્પાંતકાલની મેઘની ગર્જના સરખો, તથા આકાશમાંથી નક્ષત્રોનાં સમૂહને પાડતો, એવો મહાભયંકર સિંહનાદ કર્યો. તે સિંહનાદથી કુલપર્વતોનાં શિખરો કંપવા લાગ્યાં, તથા સમુદ્ર ઉછલવા લાગ્યો, અને તેનાં પાણી ગગનાંગણમાં પહોંચવા લાગ્યાં, વલી તે વખતે નાગકુમારો એક પાતાલમાંથી બીજા પાતાલમાં, તથા સિંહાદિક દૂષ્ટ પ્રાણીઓ એક ગુફામાંથી બીજી ગુફામાં જવા લાગ્યા. વલી તે સમયે દુર્બુદ્ધિઓ, જેમ સુબુદ્ધિને તેમ ઘોડાઓ લગામને, તથા હાથીઓ અંકુશને, ન ગણકારવા લાગ્યા. વલી ચાડીઆઓ જેમ ઉત્તમ વાણીને તેમ રથનાં ઘોડાઓ રાશને, અને ખચ્ચરો જાણે ભૂતભરાએલાં થયાં હોય નહીં તેમ, ચાબુકના મારને ન ગણકારવા લાગ્યા. વલી સર્વે લશ્કરીઓ તો ઘૂર્ણિત તથા નિશ્ચેતનોની પેઠે, પોતાનું સર્વસ્વ હરાઇ ગયું હોય નહીં તેમ મૂર્છિત થયા. પછી ક્રોધાતુર થયેલા બાહુબલિએ પણ સર્વ ગર્વ અને સર્વ તેજથી બ્રહ્માંડને પણ ફોડી નાખે, એવો સિંહનાદ કર્યો. તે વખતે અંદર પડેલા મંથાચલનાં મથનનાં શબ્દની શંકાથી સમુદ્રમાં રહેલા જલચરો ત્રાસ પામવા લાગ્યા. વલી ફરીને ઇંદ્રે મુકેલા વજ્રની ધ્વનિનાં ભ્રમથી પોતાનાં ક્ષયની શંકા કરતા થકા કુલપર્વતો પણ કંપવા લાગ્યા. વલી તે સમયે અંતઃકરણમાં જાણે શલ્ય પેઠું હોય નહીં, તેમ ત્રણે જગત ચેતનરહિત થયાં. વલી દેવાંગનાઓ પણ દિગ્મૂઢ થઇને પોતાનાં ભરતારનાં હૃદયનું શરણું લેવા લાગી, પછી ચક્રીએ ફરીને દુઃસહ સિંહનાદ કર્યો. ત્યારે બાહુબલિએ પણ કાનને બહેરા કરી નાખે એવો, તથા સ્થિર વસ્તુઓને પણ ચલાયમાન કરે તેવો, સિંહનાદ ફરીને કર્યો. તેમ કરતાં થકાં અનુક્રમે દુર્જનની મિત્રાઇની પેઠે ચક્રીનો સિંહનાદ ઘટવા લાગ્યો, અને બાહુબલિનો સિંહનાદ નદીનાં પ્રવાહની પેઠે, તથા સજ્જનની

मित्राइनी पेठे वृद्धि पामवा लाग्यो. एवी रीते शास्त्र संबंधि वादमां पण सर्वेनी साक्षीए बाहुबलिनी जीत थइ. पछी बाहुबलिए फरीने चक्रीने कह्युं के, हे जगन्नाथ! आ काकतालीय न्यायथी में तमोने जीत्या छे, पण तेथी तमो विषाद करो नहीं? हजु मुष्टियुद्ध करो? एवी रीतनां बाहुबलिना वचनथी उत्साहवंत थयेला जरताधिपे मुष्टियुद्धमाटे उंचे प्रकारे भुजास्फोट कर्यो. पछी तेउ बन्ने कटीपर पट्टा बांधीने, तथा पगनां धबकाराउथी पृथ्वीने उंची नीची करता थका खेलवा लाग्या. पछी तेउ सिंहनाद करता थका वायुवेगथी जेम वृक्षो, तेम आकाशपातालने उंचुं नीचुं करता थका शोजवा लाग्या. वली तेउ वारंवार कुदीकुदीने पगोथी पृथ्वीने ताडन करता थका कूर्मराजने पण प्राणसंदेहनां संकटमां पाडवा लाग्या. वली तेउ नजदीक नजदीक रहेलां वृक्षोनी पेठे, एक बीजानी भुजाउने मरडता थका जेटवा लाग्या, तथा ततक्षण विखुटा पडवा लाग्या. पछी बाहुबलिए क्रोधायमान थइने चक्रीने हाथमां लेइने दडानी पेठे आकाशमां वेगथी उछाल्या. ते वखते "आ चक्री छखंडने जीतीने हवे शुं आकाशने पण जीतवानी इछा करे छे?" एवी शंकावाला देवोथी कौतुके करीने जोवोता, ते चक्री योगीनी पेठे आकाशने तेजस्वी करता थका तेने उलंगीने अदृश्य थया. ते वखते बन्ने सैन्योमां मोटो हाहाकार थइ रह्यो; तथा आकाशमां रहेला देवोने पण म्लानि आवी गइ. ते वखते बाहुबलि शोचवा लाग्या के, धिक्कार छे मारा आ उछृंखल बलने! तथा मने अविवेकीने! तथा धिक्कार छे! मारा आ राज्यमाटेनां लोजने! अने बन्ने राज्योनां मंत्रिउने पण धिक्कार छे!!! पण हवे आवी शोचनाथी शुं थवानुं छे? माटे जेटलामां आ मारा मोटा जाइ पृथ्वीपर पडीने चूर्ण न थइ जाय, तेटलामां तेनो उपाय करुं. एम विचारि तेमणे पोताना बन्ने हाथोने शय्यानी पेठे विस्तार्या; तथा उंची दृष्टि करीने पगनां अग्र जागथी पृथ्वीने स्पर्श करीने उजा. पछी आकाशने दीपावता एवा विद्युदंडनी पेठे पडता चक्रीने बाहुबलिए झीली लीधा. पछी चक्री अत्यंत उग्र मुष्टिने उगामीने खेचरोने त्रास पमाडता थका बाहुबलिप्रते दोड्या. पछी चक्रीए ते मुष्टि बाहुबलिने माथामां मारवाथी, ते क्षाणे ज़रा आंखो विंचीने कंइंक याद करता होय नहीं, तेवा देखावा

लाग्या. पछी पवन जेम पर्वतना शिखरने, तेम बाहुबलिए स्वस्थ थया बाद मुष्टिथी भरतनी छातीमां ताडना करी. ते घाथी चक्री, जाणे पोताप्रते पृथ्वीनां समस्त रागने जाणवानी इछावाला थया होय नहीं तेम पृथ्वीतलपर पडी गया. ते वखते पोतानां स्वामिनां दुःखथी दुःखी थएला भरतना सर्व सैनिको मूर्छा पाम्या; केमके मोटाउनी आपदा कोने दुःखदायक थती नथी ? ते वखते बाहुबलि विचारवा लाग्या के, अहो ! में दुर्मेदीए आ कुलनो नाश करनारुं शुं कार्य आरंभ्युं छे ? वली ज्यारे आ मोटा भाइ जीवे नहीं, त्यारे तो हुं पण जीवी शकुं नहीं; एम विचारि ते आंखमां आंसु लावी भरत महाराजने पोतानां दुपटाथी पवन नाखवा लाग्या. पछी संज्ञा आव्या बाद चक्रीए नाना भाइने चाकरनी पेठे पासे उभेला, तथा पोताने तेवी स्थितिमां रहेला जोया. पछी ते चक्री उठीने क्रोधांध थया थका लोखंडनो दंड भमावता थका बाहुबलिप्रते दोड्या. पछी हाथी दांतोथी जेम नगरनां दरवाजाने, तेम चक्रीए क्रोधथी बाहुबलिने तुरत ते दंडथी ताडना करी. एवी रीतना चक्रीना दंडघातथी बाहुबलिनां मस्तकपर मोटो ध्वनि थयो, तथा तेमनो मुकुट जीर्ण घडानी पेठे चूर्णित थइ गयो. अने तेनी व्यथाथी बाहुबलिनां नेत्रो बीडाइ गयां, तथा तेनां दुःसह शब्दथी लोकोए कानोपर हाथ मेल्या. पछी ते व्यथाने नहीं गणकारीने तेणे पण लोखंडनो दंड लेइ भमाववा मांड्यो; ते वखते लोकोने एवी शंका थइ के, शुं आ पर्वतोना शिखरोने भांगी नाखशे ? के पृथ्वीने फाडी नाखशे ? पछी हाथी जेम पोतानां मजबूत दांतोथी नगरनां दरवाजाने, तेम तेणे ते दंडथी चक्रीना हृदयमां ताडना करी. ते घाथी चक्रीनुं दृढ बख्तर पण चुर्णित थइ गयुं; अने तेथी वादलांमांथी निकलेला सूर्यनी पेठे प्रगट कांतिवाला ते देखावा लाग्या. पछी कल्पांत कालनो मेघ तडिद्दंडथी जेम पर्वतने, तेम चक्रीए ते दंडथी बाहुबलिने ताडना करी. ते वखते बाहुबलिप्रते पोताना अपराधनां भयथीज होय नहीं जेम तेम ते लोखंडनो दंड भांगी गयो. ते दंडघातथी बाहुबलि घुंटणसुधि पृथ्वीमां समाइ गया; अने ध्यानमां रहेला योगीनी पेठे क्षणवार बेभान रह्या. पछी कादवमां डुबेला हाथीनी पेठे पोतानुं अंग कंपावीने ते तुरत बहार निकल्या; तथा

हाथमां लोहदंड लीधो. ते वखते "शुं आ ताराओने पाडी नाखशे? के पर्वतोने चूरी नाखशे? के पक्षिनां मालाओनी पेठे आकाशमांथी विमानोने फेंकी देशे?" एवी रीते लोकोथी शंका कराता, अने जोवाता एवा बाहुबलिए यमनी पेठे चक्रीने बलथी ताडना करी. ते दंडघातथी चक्री छेक कंठसुधि जमीनमां डुबी गया; अने तेथी राहुथी जरा ग्रसाएला चंद्र सरखा ते देखवा लाग्या. ते वखते बाहुबलि शोचवा लाग्या के, अहो! भाइनां वधथी मने मोटुं अने दुःसह पाप थयुं! तथा अरे! में कुपुत्रे तातना वंशने कलंकित कर्यो!! एवी रीते बाहुवलि जेटलामां शोच करे छे, तेटलामां सूर्य सरखी कांतिवाला चक्री ते व्यथाने तजीने पृथ्वीमांथी बहार निकल्या; तथा विचारवा लाग्या के, देवोथी जेम इंद्र, हरिणोथी जेम सिंह, तथा ताराओथी जेम चंद्र, तेम चक्री बीजा राजाओथी जीताय नहीं!! माटे साठ हजार वर्षोसुधि में जे दिग्जय कर्यो, ते शुं आ बाहुबलिमाटेज कर्यो? के जेथी आ मने मारवाने उद्यमवंत थयो छे!!! वली वासुदेवनी पेठे एकी वखते बे चक्री थाय पण नहीं; केम के जिनागमनी वाणी शुं वृथा थाय? माटे खरेखर हुं चक्री नथी, पण आ चक्री छे; अने आजदनसुधि में तेना सेनापतिनी पेठे दिग्जय कर्यो. एवी रीते मनमां चिंतातुर थएला ते चक्रीना हाथमां तेज वखते सूर्यसरखी कांतिवालुं, तथा अग्निकणोने उडाडतुं चक्ररत्न आव्युं. ते चक्रनां आववाथी पोताने चक्री मानीने, तथा चक्रने भमावीने गर्वथी तेणे बाहुबलिने कह्युं के, हे बाहुबलि! हजु पण कंइ बगडी गयुं नथी; माटे देवोए पण मानेली, एवी मारी आज्ञाने तुं मान छोडीने अंगीकार कर? वली तुं नानो भाइ छे, तेथी तारा पूर्वना सघला अपराधो हुं क्षमा करीश, अने तारा वधथी मने भ्रातृहत्यानुं पाप पण न लागे तो सारुं! वली तीर्यंचोमां पण जेम हाथीथी मोटो सिंह, अने तेथी मोटो अष्टापद छे, पण तेओ सघला शुं राजाने वश नथी थता? एवी रीते बाहुनां बलथी तारे पण गर्व करवो लायक नथी, केम के सघला बलवान राजाओ पण चक्रीनी आज्ञा माननाराओ थाय छे. एवी रीते बोलता चक्रीने बाहुबलि पोतानां खभाओपर दृष्टि नाखता थका गंभीर वाणीथी कहेवा लाग्या के, हे आर्य! आ तमारी क्षत्रीयपणानी

बुद्धि तथा तमारुं तातपुत्रपणुं तो अहो! बहु सारुं शोजे बे!! केमके दंडयुद्धनी प्रतिज्ञा करीने पण तमोए चक्र ग्रहण कर्युं बे!!! वली हे गुणज्येष्ट! पतंगीउं जेम सूर्यने तेम तमो आ लोखंडनां टुकडाथी आ बाहुबलिना बाहुनां बलने शामाटे निंदो बो? वली तमारा बाहुनुं बल तमोए जोयुं! हवे आ चक्रनां बलने पण तमो जुउ? वली हे जाइ! तमो कंइ पण शंका करशो नहीं! केम के क्षत्रीयोनो ते व्यवहार बे. ते वचनथी क्रोध पामेला चक्रीए ते चक्ररत्नने जमामीने, तथा जोनाराउने जय उत्पन्न करीने, तुरत ते बोड्युं. ते वखते बाहुबलि विचारवा लाग्या के, शुं आ चक्रने हुं लोहदंडथी घडानी पेठे फेंदी नाखुं? के दडानी पेठे लीलामात्रथी आकाशमां उबाली नाखुं? अथवा मारा यशरूपी वृक्षमाटे तेने पृथ्वीमां बीजनी पेठे दाटी देउं? अथवा चकलीनां बच्चांनी पेठे हाथमां लेइने तेने चूर्ण करी नाखुं? अथवा मूष्टी मारीने तेने कोइ दिशामां फेंकी दउं? नहीं! पण तेनुं पराक्रम तो जोउं!! बाहुबलि एम विचारते बते, ते बलतुं चक्र तेने प्रदक्षिणा करीने, फरीने चक्रीना हाथमां गयुं. (चक्रीनां सामान्य गोत्रीउपर पण ते चक्र चाली शकतुं नथी; त्यारे आवा सिद्धिवंत पुरुषनी तो वातज शी करवी?) पबी बाहुबलिए विचार्युं के, हवे तो आजे आ चक्रने, तेनां अधिष्टायक हजार यक्षोने, तथा अन्याय करनारा ते चक्रनां स्वामी जरतने पण मुष्टिथी चूर्ण करी नाखुं; एम विचारि बाहुबलि कल्पांतकाले मूकेला इंद्रनां वज्र सरखी निष्ठूर मुष्टि उगामीने चक्रीप्रते दोड्या. पबी समुद्र जेम मर्यादाजूमिप्रते तेम, बाहुबलि रणजूमिपर चक्रीनी पासे आवी विचारवा लाग्या के, अरे!! चलाचल राज्य माटे, तथा मारा बन्ने जवोने नष्ट करवा माटे, में आ जाइनो वध करवानुं कार्य प्रारंज्युं बे!!! वली मोटा जाइने मारीने, तथा नाना जाइउने बलथी बगीने जे राज्य आ दुनियामां मेलवाय बे, तेवुं मनोहर राज्य पण मारे जोइतुं नथी. वली लेशमात्र सुखनी प्राप्तिथी ज्रमित थएला अधम नरोज नरकागारमां कारणरूप कार्यमां पडे बे; जो एम न होत तो जिनेश्वर प्रज्ञु शामाटे तेवा राज्यनो त्याग करत? माटे हवे आजे तो हुं पिताजीने मार्गे चालनारो थउं!! एम मनमां विचारिने ते महाबुद्धिवान बाहुबलि, जरा उष्ण अश्रुजलोथी पृ-

थ्वीने सिंचता थका चक्रीने कहेवा लाग्या के, हे ज्येष्टबंधु! आप हवे मारो अपराध क्षमा करो? वली हे जगत्प्रभु! में राज्यमाटे आपने बहु खेद आप्यो छे; वली हे वडीलभाइ! मारे हवे संपदानुं प्रयोजन नथी; हुं तो हवे पिताजीने मार्गे चालनारो थइश; एम कही बाहुबलि महाराजे तेज उगामेली मुष्टीथी पोताना मस्तकपरनां केशोने उखेडी नाख्या. (लोच कर्यो.) ते वखते "अहो! उत्तम कार्य! अहो! उत्तम कार्य!" एवी रीते देवो आनंद सहित बोलवा लाग्या; तथा बाहुबलि महाराजपर पुष्पोनी वृष्टि करवा लाग्या. पछी अंगीकार करेल छे महाव्रतो जेणे एवा बाहुबलि मुनिराज विचारवा लाग्या के, अनंत सुखनी संगतिवाला श्री पिताजीनां चरणकमलप्रते हवे हुं जउं; अथवा अहींज रहुं; केम के त्यां जवाथी प्रथमथी दीक्षित, तथा ज्ञानें करीने मनोहर एवा मारा नाना भाइउनी मध्ये मारी लघुता थशे. माटे अहींज ध्यानरूपी अग्निथी घातिकर्मोने बालीने, केवलज्ञान मेलव्याबाद हुं प्रभुनी सभामां जइश. पछी ते पंडितशिरोमणि बाहुबली मुनिराज एम विचारता थका, त्यांज बन्ने हाथो लांबा करीने कायोत्सर्ग ध्यानमां लीन थया.

पछी चक्री, बाहुबलिने तेवी रीतनां, तथा पोतानुं तेथी उलटुं कार्य जोइने, नीचुं मुख करी जाणे पृथ्वीमां समाइ जवानी इछा करता होय नहीं तेम देखावा लाग्या. पछी आंखोमां आंसु लावीने चक्रीए तत्क्षण पोतानां नाना भाइने नमस्कार कर्यो; तथा पोतानी निंदारूप तथा तेमनी प्रशंसारूप नीचे प्रमाणे वचनो ते बोलवा लाग्या.

हे बांधव! आ दुनीयामां जेटला लोभ अने मत्सरथी ग्रस्त थएला माणसो छे; तेउनो हुं सरदार छुं! अने आप तो बलवान, कृपालु, अने धर्मीउनां सरदार छो. वली हे बंधु! आपे मने प्रथम युद्धथी जीत्यो, तथा हवे तमोए व्रतरूपी हथीयारथी रागादिक शत्रुउने जीत्या; माटे आपसरखो आ दुनीयामां कोइ पण बलवान नथी. वली हे भाइ! आपज खरेखरा तातनां पुत्र छो! केम के, तेमना मार्गमां आप वर्तो छो! अने हुं तो जाणतां छतां पण रागद्वेषथी कदर्थित थयो छुं. माटे हे भगवन्! आप हवे मारापर कृपा करो? अने आ समस्त पृथ्वीनुं मारुं राज्य ग्रहण करो? अने हुं आपनुं संयमरूपी साम्राज्य ग्रहण करीश. एवी रीते बाहुबलि

निराजप्रते बालकनी पेठे आलाप करता ते चक्रीने, पवित्र बुद्धिवाला त्रीउंए पढी समजाव्या.

पढी ते चक्री बाहुबलिनां पुत्र सोमयशाने अगाडी करीने, तक्षशीला गरीपासे रहेला जिनमंदिरमां गया. त्यां उद्यानमां हजार आरावाला, था विचित्र मणिउंथी जडेला, मंदिर सहित धर्मचक्रने नमस्कार करीने सोमयशा चक्रीने कहेवा लाग्यो के, हे तात! पूर्वे कल्मष रहीत श्री षन्नस्वामी छद्मस्थ अवस्थामां पृथ्वीपर विहार करता थका रात्रिए आवी ग्हीं समोसर्या हता; त्यारे पिताजीए (बाहुबलिए) एम विचार्युं के, हुं नातमां सर्व राजाउं तथा सर्व लोको साथे मोटा उत्सवपूर्वक तातपासे इ तेमने वांदीश; एवी प्रतिज्ञा करीने, तेमणे मांचाउं, झरुखा, बजार वेगेरे शणगाराव्यां; तथा त्रेवटा अने चोवटाउं विगेरे सर्व मार्गोपर कपूर अने चंदननां छंटकावपूर्वक कस्तूरीथी मंडलो कराव्यां; तथा त्यां पुष्पमालाउं, रंगबेरंगी पताकाउं अने मणिनां तोरणो बंधाव्यां. पढी प्रभाते पवित्र थइने, परिवार तथा सर्व लोको सहित, तातनी स्तुतिनुं स्मरण करता थका ते अहीं आव्या; पण तेटलामां तेमणे सूर्य विनानुं जेम आकाश, पुत्र विनानुं जेम उत्तम कुल, तथा जीवविनानुं जेम शरीर, तेम पिताजी विनानुं आ वन जोयुं. त्यारे मनमां खुंचेला दुःखरूपी खीलाथी पीडित थएला पिताजी, पडखे रहेला वृक्षोने पण रोवरावता थका रुदन करवा लाग्या के, विलंब करनार, तथा धर्मनो विघात करनार एवा मने धिक्कार छे!! केम के, में रात्रिये जइने पण पिताजीनां चरणकमलोने नमस्कार कर्यो नहीं!! वली हे भगवन्! तमो खरेखर वीतरागज छो, आप समान बीजो कोइ पण आ पृथ्वीपर ममतारहित नथी. केम के, पुत्रप्रते पण तमोए जरा पण राग धर्यो नहीं. एवी रीते रुदन करता पिताजीने मंत्रि प्रमुखोए समजाव्या बाद, तेमणे पिताजीना पगलांनी प्रतिमाने नमस्कार कर्यो; पढी तेमणे विचार्युं के, पिताजीना आ पगलांना स्थानकने कोइ स्पर्श न करे तो सारुं, एम विचारि तेमणे आ उंचां प्रासाद सहित आ धर्मचक्र अहीं स्थापन कराव्युं. (माटे बुद्धिवाने नानुं अथवा मोटुं प्रारंभेलुं धर्मकार्य विलंबविना प्रयत्नथी करवुं, धर्मकार्यना विस्तार माटे विलंब करवोज नहीं, केम के, विलंबथी रात्रि गया-

बाद बाहुबलि पण प्रभुने नमी शक्या नहीं) ते सांभली चक्री ते धर्मच-क्रने नमीने तक्षशिलामां गया, तथा त्यां सोमयशानो अभिषेक करी राज्यपर बेसाड्यो. अने त्याथी सेंकडो शाखाउवालो सोमवंश (चंद्रवंश) चालु थयो, केमके पुरुषरत्नोनी उत्पत्तिनुं कारण तेवुं तेवुं एक होय छेज. ते सोमयशाने रूपवंती, तथा कुलीन एवी सुव्रतादिक चोवीस हजार स्त्रीउ हती, तथा जगतमां प्रख्यात पराक्रमवाला अने पवित्र श्रेयांस आदिक बहोतेर हजार तेमने पुत्रो हता; वली ते बत्रीस लाख गामोनुं, एकसो पत्तनोनुं, तथा त्रणसो नगरोनुं रक्षण करता हता. वली तेमने चुमालीस लाख रथो, एक लाख हाथी, तथा सूर्यनां घोडासरखा पांत्रीस लाख घो-डाउ, तथा सवा क्रोड पालाउ हता; तेम सातसो राजाउ तेमनी आज्ञा धारण करता हता.

हवे सोमयशाथी, तथा त्यांनां सर्व राजाउथी पूजाएला चक्री फरीने पण श्रीबाहुबलि मुनिराजनां चरणोने नमीने पोताना नगरप्रते गया, तथा त्यां सुर, असुर अने मनुष्योनां समूहोथी सेवाएला ते चक्री पि-तानी पेठे प्रजाने पालवा लाग्या.

हवे त्यां बाहुबलि मुनिराजे सर्व सावद्य व्यापारथी रहित थइने, तथा सर्व प्राणीउप्रते हितकारी थइने, कर्मोनो नाश करवामाटे ध्यान धरवा मांड्युं. नाशिकापर राखेल छे दृष्टि जेमणे, निर्मल ज्योतिवाला, प्रभुनुं ध्यान धरता, तारानां प्रचारोथी रहित मेरुसरखा निष्कंप, घुटणसुधि लं-बावेल हाथोवाला, रोकेल छे सर्व आश्रवो जेमणे एवा, तथा गोपवेल छे, चित्तरूपी पवन जेमणे एवा ते बाहुबलि मुनि शोभवा लाग्या. सर्व ऋ-तुनां दोषोथी दूषित नहीं थएला, तथा द्वेष अने रागथी नहीं लेपाएला योगी, तेम टाढ, तडको, तथा वरसादथी नहीं लेपाएली मूर्तिवाला ते बाहुबलि मुनि पर्वत सरखा शोभता हता. वली परस्पर जन्मवैरवाला जीवो पण सहोदरतुल्य थइने, तेमनो आश्रय करता हता; तथा तेमना मस्तकपर, डाढीमूछोपर अने भुजादिकमां पक्षिउ मालाउ बांधी रहेता हता. वली कर्मरूपी लताउ उखडी जवाथी, वनलताउथी वींटाया थका, वादलांउनां समूहोथी जेम मेरुपर्वत तेम अधिक कांतिवाला ते गंभीर मुनिराज शोभता हता. वली दुष्ट माणसो जेम सज्जनोनां चित्तने, तेम

जलथी वृद्धि पामेला, अने तीक्ष्ण मुखवाला दर्भनां अंकुरो, पगमां प्रवेश करीने, तेमनां शरीरने नेदवा लाग्या. एवी रीते ते मुनिराज रागद्वेषने जीतीने, हृदयकमलमां प्रभुनुं ध्यान धरता थका, तथा मत्सररहित बुद्धिवाला थया थका, समभावमां एक वर्षसुधि रहीने घातिकर्मोनां पटलोने बालवा लाग्या. पछी श्री युगादीश प्रभुए तेमनी केवलोत्पत्तिना समयने, तथा तेमां विघ्न करनारा तेमनां मानने जाणीने, तेमने प्रतिबोधवामाटे ब्राह्मी अने सुंदरी सतीउने त्यां मोकली; अने तेउ पण अनुक्रमे ते मत्सररहित मनुष्यवाला वनमां आवी. त्यां ते साधवीउ वादलांमां रहेला सूर्यनी पेठे, वेलडीउनां समूहोथी विंटाएला ते मुनिराजने केटलीक महेनते उलखीने, आदरपूर्वक तेमने प्रभुनां वचनो कहेवा लागी के, हे भाइ! श्रीयुगादीश प्रभु आपने अमारा मुखथी संदेशो कहेवरावे छे के, हाथीपर चडेला पुरुषोने शुं केवलज्ञान थाय? माटे ते तमारा वैरीने तमो जीतो? वली हे युगादीश प्रभुनां पुत्र! तमो ते तरुण गजेंद्रथी नीचे उतरो? वली हे बांधव! तमो आवा उत्कृष्ट मुनि थइने पण केम मोहमां पडो छो? माटे बोध पामो? एटलुं कहीने ते बन्ने बेहेनो श्री आदिदेव प्रभुनां चरण समीपे गइ; पछी ते वचनो सांभलीने बाहुबलि पण तेनुं तत्व विचारवा लाग्या के, आ बन्ने मारी बेहेनो सर्वज्ञ एवा श्री पिताजीनी शिष्यो छे; माटे ते कोइ पण वखते जूठुं बोले नहीं, पण तेमणे जे हाथी कह्यो ते क्यां छे? वली में तो हमेशने माटे आ सप्तांग राज्य तो तज्युं छे! अने हुं तो कायोत्सर्ग ध्यानमां छुं! त्यां मने हस्तीनी प्राप्ति क्यांथी? पण अहो! हवे मालुम पड्युं!! “नाना भाइउने कोण नमे?” एवी रीतनो मानरूपी हाथी मारी पासेज रहेलो छे, माटे ते मारुं दुष्कृत हवे मिथ्या थाउ? हुं तेउने जइ नमीश. मानथी तो पुण्य, कीर्ति, यश, लक्ष्मी तथा स्वर्गनुं साम्राज्य पण जतुं रहे छे, अने ते दुर्गतिनी संगति करावे छे. वली मान छे ते म्लानि करनारुं, गुणोने हरनारुं, धर्मरूपी लक्ष्मीने चोरनारुं, नीचगोत्ररूपी वृक्षप्रते वरसादसरखुं, सौभाग्यनो नाश करनारुं, कीर्तिने घटाडनारुं, मोक्षसुखने दूर करनारुं, तथा पुण्योनी श्रेणिरूप रात्रिने नाश करवामां सूर्यसरखुं छे, तेथी सत्पुरुषो प्रायें करी तेनो त्याग करे छे. वली पूर्वे जेउए चारित्रनो भार अंगीकार करेलो छे, एवा

मारा नाना भाइओने पण हुं तातनी पेठेज वंदना करीश, एम पोतानां मनमां विचारिने, जेवा तेओ तातपासे तुरत जवाने इच्छे छे, तेटलामां केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी, के जे पेहेलेथीज तेमनाप्रते अत्यंत रागवाली हती, ते तेमनां मानरहित चित्तरूपी मंदिरमां तुरत दाखल थइ, अने तेथी ते बाहुबलि महामुनिराज समकालेज समस्त जगतने जोवा लाग्या. पछी त्यां देवोए आपेला मुनिनां वेषने धारण करीने ज्ञानथी शुद्ध चित्तवाला ते बाहुबलि मुनिराज त्यां जइ प्रभुने प्रदक्षिणा करीने केवलीनी सभामां बेठा. एवी रीते बलवानोमां पण महाबलवान आ बाहुबलि मुनिराज छे; केम के, तेमणे एकी वखतेज रणसंग्राममां भरत चक्रीने अने कर्मोने पण तुरत जीत्यां; तथा पोतानुं मान पण तेमणे तजी दीधुं.

एवी रीते आचार्य महाराज श्री धनेश्वरसूरिए बनावेला महातीर्थ श्री शत्रुंजयनां महात्म्यमां भरतचक्री अने बाहुबलिनां संग्रामनां वर्णननो चोथो सर्ग संपूर्ण थयो. श्रीरस्तु.

पंचमः सर्गः प्रारभ्यते.

श्री शत्रुंजय पर्वतरूपी ऐरावणमांथी उत्पन्न थएला मुक्तामणि सरखा, लक्ष्मीनी श्रेणिसरखा, पुण्यनां सूर्यसरखा, शुभ यशनी वेणिसरखा, त्रणे लोकोनां गुरु, नाभिराजाना वंशथी (वांसथी) उत्पन्न थएला मणिसरखा तथा कुवलयने (चंद्रविकासी कमलने) उद्बोध करवामां चंद्र सरखा, श्रीयुगादीश प्रभु अखंडित सुख आपो? हवे श्री वीरप्रभु इंद्रने कहे छे के, हे इंद्र! हवे ते चक्रिनां बाह्य शत्रुनी जीतनी पेठे, तेमनो अंतरशत्रुओनो जय, तथा श्री शत्रुंजय तीर्थनी सिद्धिने तुं सांभल?

हवे अतिशयोरूपी किरणोवाला, तथा चक्रवाकोथी जेम सूर्य, तेम त्रणे जगतनां लोकोथी सेवाता, श्री ऋषभदेव प्रभु पृथ्वीने पवित्र करता थका, तथा भव्यरूपी कमलोने उल्लासित करता थका पूर्वाचलप्रते जेम सूर्य, तेम श्रीशत्रुंजय पर्वतप्रते आव्या. कल्पवृक्ष, पारिजात, संतान, हरिचंदन, लवंग, चारोली, आंबा, चंपक, अशोक, नालीएरी, नागरवेल, सोपारी, केल, सालरी, शाल्मली, तथा शाल आदिक वृक्षोथी शोभता,

तोनां स्वामिपणाथी चमरी गायोनां पुंछडांरूपी चामरोथी वीं-
जिनमंदिरोरूपी छत्रो अने उंचां कलशोथी वींटाएला, हजारो
शिखरोथी प्रगट रीते मुकुटयुक्त थएला, विचित्र प्रकारनां मणि
रत्नोनां किरणोथी आकाशने पण देदीप्यमान करता, नदी, द्रहो,
ां समूहो, तथा वावोथी उत्तम शोभाने धारण करता, कमलोथी
ोकनी पण हांसी करता, कल्पवृक्षोनी घाटी छायामां भर्तारो सहित
उली किन्नरीउथी गवाती छे, युगादीश प्रभुनां गुणोनी पंक्ति ज्यां एवा,
र्शनमात्रथी पण जगतने पवित्र करता, स्पर्शमात्रथी पण पापोनां समू-
हने हरता, नेत्रप्रते एक रसांजन सरखा, मोक्षनी इछावाला अनेक गां-
ार्वो, विद्याधरो, मनुष्योनां समूहो, देवो, असुरो, नागकुमारो, तथा सिं-
ादिकोथी सेवाता, अनंत सिद्धोनां स्थानरूप, अनंत सुख देनारा, प्रा-
ीउप्रते अनंत भवरूपी समुद्रमां द्वीपसरखा, एक लाख बत्रीस हजार
गामोथी विभूषित थएला, हमेशां समुद्रना रत्नोथी बंधाएली मेखलावाला,
त्रसरखी छायावाला वृक्षोथी मध्याह्नकाले पण ताप विनाना, सौराष्ट्र
देशनी स्त्रीउनां गीतोनां झंकारोथी खुशी थएल छे देव, मनुष्य अने ना-
गकुमारो ज्यां एवा, मूलमां पचाश योजनवाला, शिखरपर दश योजन-
वाला, तथा आठ योजन उंचा, एवा ते पर्वतपर प्रभु चड्या. वली मो-
क्षनी नीसरणीनां पगथीआं सरखा ते उंचा पर्वतपर पुंडरिक प्रमुख मु-
निउ, तथा सुंदरी प्रमुख साधवीउ विगेरे चड्या. पछी तीर्थंकर जेम ती-
र्थने, तेम श्रीयुगादीश प्रभु ते रायणने विशेषथी पवित्र करता थका, रा-
त्रिए तेनी नीचे समोसर्या. हवे आसन कंपवाथी प्रभाते देवोए त्यां आ-
वीने, भवभीरुउने शरणातुल्य समवसरण बनाव्युं. त्यां प्रभुए पोरसीसुधी
धर्मदेशना आपी; तथा पछी पुंडरिकजीये प्रभुनां पादपीठपर बेसीने
धर्मदेशना आपी के, तीर्थ, जिन, अने गुरुमां भक्ति, धर्मशास्त्रनी रुचि,
दया, सुपात्रेदान, प्रिय वचन अने विवेक एटलां सम्यक्त्वनां लक्षणो छे.
वली आर्यदेश, मनुष्यपणुं, दीर्घ आयुष्य, उत्तम कुल तथा न्यायोपा-
र्जित धन, एटलां माणसोनां पुण्योपार्जननां हेतुउ छे. वली आर्य-
देशमां जो मनुष्य भव मलेलो होय, तोज पापकार्योथी लज्जा, धर्मना
आगमोनुं सांभलवुं, कृत्याकृत्यनो विचार, दयालु बुद्धि, गुरुनी सेवा,

अपयशनी बीक, पापनां नाशनी इछा, तथा उत्तम धर्ममां प्रीति थाय छे. वली जे मनुष्यभवें करीने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष नामनां चारे पुरुषार्थो साधी शकाय छे, ते मनुष्य भवनी स्तुति करवाने कोण समर्थ छे? वली उत्तम न्यायमार्गथी उपार्जन करेली संपदा पण दानेश्वरीने घेरज कृतार्थ थाय छे; तथा आर्य देशमां विवेकी कुलमां जे मनुष्यपणुं मले छे, तेज प्रशंसवा लायक छे. वली जे उद्यमवंत माणसो पोतानां आयुष्यनां क्षणमात्रने पण प्रमादथी फोकट गुमावता नथी, एवा विवेकी माणसो आ जगतमां धर्मकार्योप्रते लांबां आयुष्यवाला थाउ? वली जे माणस खांसी, श्वास, संग्रहणी, अर्श, रक्तपित्त, तथा ज्वर आदिक रोगोथी हमेशां पीडाएला छे, तेउ शी रीते पुण्योपार्जन करी शके? वली प्रायें करीने पराक्रम दैन्यमाटे, शौर्यता पराभवमाटे, उद्यमपणुं दरिद्रतामाटे, तथा उज्ज्वल कुल पापमाटे थतुं नथी. पछी ते देशनाने अंते प्रभु पुंडरिक महाराजने कहेवा लाग्य के, आ शत्रुंजय पर्वत मोटुं तीर्थ छे, तथा मोक्षनां घररूप छे. वली आ तीर्थपर आववाथी प्राणीउ दुर्लभ लोकाग्रने पण मेलवे छे, तेम आ गिरिराज शाश्वतो छे. वली आ तीर्थ अनादि छे; तथा अहीं अनंत तीर्थंकरो पोतानां कर्मसमू[illegible] नाश करीने सिद्ध थया छे. वली आ तीर्थपर जे पक्षिउ, तथा बीजा [illegible]द्र अने हिंसक जंतुउ रहे छे, तेउ पण त्रण भवोमां मोक्षे जशे. [illegible] जीवो अभव्य तथा पापी छे, तेउ आ पर्वतने जोइ शकता नथी [illegible]यादिक तो मली शके छे, पण आ तीर्थ मली शकतुं नथी. वली [illegible] मोक्षमां गए छते, तथा केवलज्ञाननो लय थए छते, आ त[illegible] [illegible]थी तथा स्तुतिथी पण लोकोने तारनारुं छे, तेम आ दुः[illegible] केवलज्ञाननो लय थवाथी, तथा धर्मनी पडती आववाथी [illegible]गतनुं हित करनारुं छे. वली जिनोमां जेम हुं मुख्य छुं; [illegible]जेम मेरु छे, तथा द्वीपोमां जेम जंबूद्वीप छे. तेम सघल[illegible] [illegible]य तीर्थ छे. वली जे माणसोए पोतानी जींदगीमां आ [illegible] नथी, तेउने मनुष्यरूपधारी पशुउज जाणवा. ते[illegible] [illegible]ता तीर्थंकरो, तथा केवलीउ आव्या छे, तेम मोक्षे [illegible] वली अतीतकालमां थइ गएला तथा हवे थन[illegible]

मु- ती- रा- आ- सुधी [illegible]सीने रुचि, [illegible]णो छे. यायोपा- आर्य- [illegible], धर्मना [illegible]रुनी सेवा,

श्री [illegible]क्ष्मीनी [illegible]ोकोन. तथा कुः श्रीयुगाद[illegible] के, हे इं[illegible] उनो जय हवे [illegible] त्रणे जगत[illegible] थका, तथ[illegible] सूर्य, तेम [illegible] रिचंदन, ल[illegible] सोपारी, केल[illegible]

आ तीर्थमां रायणनां वृक्षतले समोसर्या छे, तथा समो सरशे. वली आ सुराष्ट्र देश, आ शत्रुंजय गिरि, आ रायण, तेम वर्तमान तीर्थंकर ए सघला तीर्थरूप छे. वली समुद्रमां रहेलो जेम वडवानल, तेम आ दुःखम कालमां आ तीर्थनो महिमा अधिक अधिक थशे, माटे आ मोटामां मोटुं तीर्थ छे. आ तीर्थमां श्री अरिहंत प्रजुनी पुष्प, अक्षत विगेरेथी पूजा करवाथी, तथा स्तुति करवाथी प्राणीउनुं जन्मसुधि करेलुं पाप नाश पामे छे. वली अन्य तीर्थ करतां आ तीर्थमां जिननी पूजा करवाथी अनंतगणुं फल मले छे. तेम अहीं फक्त एकज पुष्पथी प्रजुपूजा करवाथी स्वर्ग अने मोक्ष दुर्लज्ञ थतां नथी. वली आ तीर्थमां जे माणस प्रजुनी अष्टप्रकारी पूजा करे छे, ते नवे निधानो पामीने अरिहंत तुल्य थाय छे. वली पुण्यशाली माणसज अरिहंत प्रजुनी पूजा, सुगुरुनी जक्ति, शत्रुंजय तीर्थनी सेवा, तथा चतुर्विध संघनो संगम करे छे. वली अहीं शुज्ञ गुरुनी त्रिकरणशुद्धिपूर्वक आराधना करवाथी ते तीर्थंकर पद आपे छे, तथा सामान्य मुनिनी आराधनाथी चक्रीनी लक्ष्मी मले छे. वली जेणे पोतानां धननां समूहथी गुरुनी सेवा करी नथी, तेनो जन्म, तथा तेनी सर्व लक्ष्मी पण निष्फलज छे. वली पूर्व जवमां तीर्थंकरोने पण बोधिबीजनां हेतुरूप गुरुज छे, माटे बुद्धिवाने तेवा गुरुनी अहीं विशेष पूजा करवी. वली अहीं सघली धर्मक्रीयाउं पण गुरुनी साथे रहीने करवी; केम के गुरु विना ते सघली निष्फल छे. माटे पोतानां अनृण्यपणाने इछनारा माणसे आ तीर्थमां धर्म आपनार गुरुनी वस्त्र, अन्न, पाणी आदिकथी सेवा करवी. वली आ शत्रुंजय तीर्थमां गुरुने वस्त्र, अन्न, तथा जलनुं दान देवाथी, तथा तेनी जक्ति करवाथी आ लोक अने परलोकमां सर्व संपदाउं मले छे. आ शत्रुंजय तथा जिन, ए बन्ने स्थावर तीर्थो छे; पण गुरु तो जंगमतीर्थरूप छे, माटे तेमनी अहीं अत्यंत सेवा करवी. वली आ तीर्थमां अज्ञयदान, अनुकंपादान, सुपात्रदान, तथा कीर्त्यादिक मोटनुं दान, तेम अन्नदान, ज्ञानदान, औषधदान, अते जलनुं दान देवुं; एम जिनेश्वरोए कहेलुं छे. वली जे माणस अहीं दीन, तथा अनाथादिकोने दान आपे छे; तेने घेर अटकाव रहित निरंतर लक्ष्मी नाच्या करे छे. माटे महा बुद्धिवाने मोक्ष देनारुं दान आ तीर्थमां देवुं; केम के, दान-

विना प्राणीउं नवसागरने तरी शकता नथी. वली आ तीर्थमां अत्यंत गुणवालुं तथा मोक्षसुख आपनारुं तथा सर्व दुःख हरनारुं शील त्रिकरणशुद्धिथी पालवुं. पोतानुं अहित इछनारा एवा जे माणसे आ तीर्थमां शीलनंग कर्युं छे; तेनी क्यांए पण सिद्धि थाय नहीं; तथा ते चांडालथी पण वधारे निंदनीक छे. वली आ तीर्थमां तप करवाथी निकाचित कर्मो, तथा जन्मसुधिनुं पाप पण नाश पामे छे. वली छठ अने अठम आदिक तपथी उत्तम फल मले छे; माटे सर्व इछित आपनारो ते तप अहीं विशेषें करीने करवो. वली अहीं अष्टाइनो तप करवाथी कर्मोनो नाश करी प्राणी स्वर्ग अने मोक्षनां सुख क्षणवारमां मेलवे छे. वली अहीं चैत्री पुनेमनो उपवास करवाथी सुवर्णनो चोर, तथा शुन्न नावथी सात आंबेल करवाथी वस्त्रनो चोर शुद्ध थाय छे. रत्ननी चोरी करनारो अहीं अत्यंत उत्तम नावथी दान देतो थको, कार्तिक मासनां सात दिवसनां तपथी शुद्ध थाय छे. वली रुपुं, कांसुं, त्रांबुं तथा पित्तलनी चोरी करनारो, ते पापथी अहीं सात दहाडाउं सुधी परमार्ध नामनो पृथक रीते तप करवाथी मुक्त थाय छे. वली मोती तथा परवालांनो चोर, अहीं त्रिकाल जिन पूजाथी, तथा पंदर आंबेलोथी निर्मल थाय छे. वली धान्य तथा जलनो चोर अहीं सुपात्रे दान दीधाथी, तथा रसनो चोर महादानथी शुद्ध थाय छे. वली वस्त्र अने आनूषणनो चोर अहीं जिनपूजन करवाथी पोतानां आत्मानो खाडा सरखा नवमांथी उद्धार करनारो थाय छे. वली देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्यने चोरनारो माणस अहीं जिनपूजनथी शुद्ध थाय छे; तथा ध्यान अने सुपात्रे दान देवाथी ते अंतरंग शत्रुउंनो नाश करनारो थाय छे. वली जे माणसे कुमारिका, दीक्षित स्त्री, वटलेली, सधवा, विधवा, तथा गुरुस्त्रीसाथे गमन कर्युं होय, ते माणस पण मनने रोधीने जिननुं ध्यान धरतो थको अहीं जो छ माससुधी तप करे, तो शुद्ध थाय छे. वली गाय, नेंस, घोडा, हाथी, पृथ्वी तथा घरनो चोर, अने मंत्र तंत्र देनारो पण अहीं नक्तिथी जिननुं ध्यान धरवाथी शुद्ध थाय छे. वली अन्यनां चैत्य, घर, बगीचा, पुस्तक तथा प्रतिमादिक उपर जे दुष्ट बुद्धि "आ मारुं छे" एम धारी नाम नाखे छे, ते माणस पण अहीं सामायिकथी पवित्र थइ छ

मास सुधि तप करवाथी पापोने नाश करी शुद्ध थाय छे. वली अहीं परमेष्टिनुं ध्यान, तथा, देवार्चन आदिकथी समकीती श्रावक सर्व पापोथी मुकाय छे. एवुं कोइ पण पाप नथी, के जे अहीं अरिहंत प्रभुनां ध्यानथी नाश न पामे; तेम तेवुं कोइ पण पुण्य नथी, के जे अहीं अरिहंत प्रभुनां ध्यानथी न मले. वली पोताना चित्तमां चिंतवेलां एवां नहीं करेलां पण पुण्यो अहीं उत्तम भावनाउथी थाय छे, माटे अहीं उत्तम ध्यान धरवुं. सघला व्यापारोमां "मनोव्यापार" मुख्य छे, अने तेज प्राणीउने स्वर्ग, नरक तथा मनुष्य भवमां लेइ जाय छे; माटे आ तीर्थमां कृष्ण, नील, अने कापोत लेश्या चिंतववी नहीं; पण कर्मोनां क्षय माटे पद्म, सित विगेरे लेश्याउ चिंतववी, वली क्षुद्र जंतुउ प्रते पण अहीं मनथी के वचनथी के शरीरथी पण हिंसा करवी नहीं; केम के, ते धर्मरूपी वृक्षने बालवाने दावानल सरखी छे. कंथुआ सरखा जीवने पण जे माणसो मारे छे, तेउनुं सातमी नरक शिवाय बीजुं स्थानक नथी. माटे नरकप्रते दूती सरखी हिंसा तो सर्वथा प्रकारे करवीज नहीं, केम के, जे माणस परने पीडा उपजावे छे, तेनी पासे धर्मरूपी राजा आवतो नथी. वली सघला जंतुउ अनंत भवोनी अपेक्षाए बंधुसरखाज छे; माटे तेउनुं पोताना आत्मानी पेठे रक्षण करवुं; अने जाणवुं के, कोइ कोइना शत्रु नथी. वली. प्राण जाय तो पण उत्तम बुद्धिवाने जूठुं बोलवुं नहीं; अने सत्य बोलनारो अपवित्र पण पवित्रज छे. असत्य बोलवाथी प्राणीउने मुखमां फोडा, परु, कीडा विगेरेनी व्याधि थाय छे. वली कोइए नहीं दीधेली पाणीनी अंजलि पण ग्रहण करवी नहीं; केम के अदत्तादानथी जीवो निर्धन तथा स्वल्प आयुष्यवाला थाय छे. डाह्या माणसे चोरी करवी नहीं, केम के धन छे ते जीवोने प्राणसमान छे, अने तेथी प्राण हरनार करतां पण धन हरनार वधारे भयंकर छे. वली आ तीर्थमां उत्तम माणसे पोतानी स्त्रीने पण सेववी नहीं; त्यारे बन्ने लोकनो नाश करनारी परस्त्रीनी तो वातज शी करवी? परधननी चोरी, चाडी तथा परनो द्वेषकरवाथी महा पाप थाय छे. आ भयंकर संसाररूपी समुद्रमां परिग्रहनां भारथी प्राणी होडीनी पेठे डुबी जाय छे, माटे ते जेम बने तेम अल्प करवो; वली ते क्रमे क्रमे करीने तेवी रीते अल्प

करवो, के जेथी लोभरूपी भयंकर पिशाच छली शके नहीं. वली सर्व प्राणीउने विषे पोताना आत्मानी पेठे समपणुं (सामायिक) चिंतववुं; केम के, तेवा समपणाविना सघली क्रियाउ निष्फल छे. वली जे माणस समतामां रहे छे, तेने त्रणे जगत वश थाय छे; तथा तेने देवो पण जरा पण पराभव करी शकता नथी. वली पौषधप्रतिमाने प्राप्त थएलो माणस क्षणवारमांज कर्मोनो नाश करे छे, अने ते चारित्रधारीनी पेठे देव अने मनुष्योथी पण वंदाय छे. वली आ तीर्थमां पौषधव्रत करवाथी मासक्षपणनुं पुण्य मले छे, तथा अतुल्य केवलज्ञान पण मले छे. वली अतिथिसंविभागव्रत करवाथी नरक अने तिर्यंच गतिनो नाश करी प्राणी मोक्षसुख मेलवे छे; भोजन वखते आवेला मुनिउने दान देवाथी मोक्षराज दूर रहेतुं नथी; त्यारे (आलोक संबंधि) राज्यसुखनी तो वातज शी करवी? जे माणस गुरुदेवप्रते आहार तथा नैवेद्य दइने भोजन कर छे, तेज खरुं भोजन जाणवुं; अने ते शिवायनुं तो देहने पोषण करनारुं फक्त पशुग्रास सरखुं भोजन जाणवुं. वली ग्रहण करेलुं देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्य अंगारानी पेठे सात कुलोने बाली नांखे छे, माटे ते बुद्धिवानोए लेवुं लायक नथी. देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्यथी थएली धननी वृद्धि झेरनी पेठे प्रथम स्वादिष्ट लागे छे, पण पाछलथी तीव्र वेदना आपे छे. जे माणसो हमेशां देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्य भक्षण करे छे, तेउनी शुद्धि सर्व तीर्थोनां आश्रयोथी पण थती नथी. लोभांधचित्तथी देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्य जो लेवामां आवे, तो ते तिर्यंच तथा नरकादिक दुर्गति आपे छे. वली एकेंद्रिआदिक जीवोने निरर्थक जे ताडन करवुं, ते "अनर्थदंड" कहेवाय; तेवा अनर्थदंडथी यत्नपूर्वक विरति करवी. अनर्थदंड करवाथी माणस शरणारहित थइने आ भवरूपी समुद्रमां मगरोसरखा कर्मोथी पीडाय छे. वली कल्याणना अर्थी माणसे विशेषें करीने आ तीर्थमां वृक्षनां डालां, पांदडां, फल, अंकुरा विगेरे छेदवां नहीं. आ शत्रुंजय तीर्थमां सर्व जगोए हमेशां देवोनो वास छे, माटे तेउने छेदवां नहीं. वली यशरूप धनवालाउए प्राणोथी पण उपकार करवो; केम के, ते सर्वधर्मरूप, तथा मोक्षसुखनां कारणरूप . परोपकारथी उत्पन्न थएलुं पुण्य भवभवप्रते वृद्धि पामे छे; अने जे परो-
र करे छे, ते सर्व जगोए अटकाव रहित देवनी पेठे चाली शके छे.

वली ज्ञानी अने पुस्तकोनी अन्न वस्त्रादिकथी करेली सेवा सूर्यनी कांतिनी पेठे प्राणीउंनी जडतानो नाश करे छे. ज्ञानपूजाथी ज्ञानावरणीय कर्मोनो नाश थइ, मुक्तिलक्ष्मीनां कारणरूप केवलज्ञान प्राप्त थाय छे. वली आ शत्रुंजय तीर्थपर जिननी पूजानी पेठे ज्ञाननी पूजा पण प्राणीउंने छेक मोक्षसुधिनुं अधिक अधिक फल आपे छे. वली आ तीर्थमां रात्रिभोजन करवाथी माणस गीध, घुवड, प्रमुख जवो पामीने अत्यंत दुःखी थयो थको नरकमां जाय छे. सदा रात्रिभोजनमां तत्पर रहेला एवा अपवित्र माणसे आ तीर्थनो कोइ पण वखते स्पर्श पण करवो लायक नथी. वली आ तीर्थमां रहीने जे माणसो सम्यक्त्वमूल बार व्रतोने पाले छे, तेनां तुल्य बीजो कोइ धन्य नथी, तथा तेउं मोक्षमां जाय छे. वली अन्य तीर्थमां जप, तप, तथा दानथी जे फल थाय छे, तेथी क्रोडगणुं फल आ तीर्थनां स्मरणथी पण थाय छे. वली आ तीर्थमां जे माणस रथ, घोडा, जमीन, हाथी, सुवर्ण तथा मणिनी भेट आपे छे, ते हर्ष सहित चक्रीपणाने तथा इंद्रपणाने भोगवे छे. वली जे माणस आ तीर्थमां इंद्रोत्सवादि कार्य करे छे, ते सघला भोगो भोगवीने निश्चयें करी मोक्ष मेलवे छे. वली हे पुंडरिक! सघला तीर्थोमां आ तीर्थराज छे, तथा सघला पर्वतोमां ते उत्तम पर्वत छे; माटे जेम मने, तेम मोक्षनां कारणरूप आ गिरिवरने तुं सेव? वली हे मुनि! माराथी जेम आ जगतनी स्थिति, तेम तारा नामथी आ अवसरपिणीमां आ तीर्थ प्रसिद्धि पामशे. वली नहीं वलथी तेम नहीं अनभ्यासथी, तेम इंद्रिउंने तथा मनने रोधिने तुं अहीं रहे? स्फटिकसरखा निर्मल आत्माने त्रण ध्यानोथी (पिंडस्थ, पदस्थ, अने रूपस्थथी) ध्यावतां थकां, अने कंइ पण चिंता रहित आश्रव परिणामने रोकीने, विकल्प रहित लयमां प्राप्त थइ, पांच ह्रस्व अक्षरोनां उच्चारनां परिमाणवाला कालमां शुभाशुभनो नाश करी, तथा घातिकर्मोने वालीने, अने केवलज्ञान पामीने, आज तीर्थनां माहात्म्यथी तुं मुक्तिरूपी स्त्रीनो स्वामी थइश. एवी रीते पुंडरिक महामुनिने कहीने भगवान — त्रिलोकनां हितनी इछाथी बीजी जगोये विहार करी गया. पछी ते लोकमां रहेनारा लोको पण तेवी रीतनां सर्वज्ञ प्रभुनां वचनने सांभलीने आनंद सहित, तीर्थमां अनुराग धरता थका पोतपोताने स्थानके गया.

हवे पुंडरिक महाराज पण त्यां पांच क्रोड मुनिउथी वींटाया थका ङनी पेठे समता धारीने रह्या. तथा ते मुनिउने परम वैराग्यरूपी अ तथी ज्ञरेली वाणी कहेवा लाग्या के, क्षेत्रानुज्ञावथी आ गिरि मोक्षसु नां स्थानकरूप ठे; अने कषायरूपी शत्रुउने जीतवामाटे किल्लासमान हवे आपणे अहीं मोक्षनां कारणरूप संलेखना करवी; ते संलेखना व्यथी अने ज्ञावथी, एम बे प्रकारनी ठे. सघला उन्माद, तथा महा गनां कारणरूप एवी सर्व धातुउनुं चारे बाजुथी जे शोषवुं; तेने ङ संलेखना मानेली ठे. मोह अने मात्सर्यवाला रागद्वेषादिक कषायो समताथी जे ठेद करवो, तेने ज्ञाव संलेखना कहेली ठे. एम कहीने पुं रिकजी महाराज ते साधुउ सहित सघला सूक्ष्म अने बादर अतिचारो आलोचवा लाग्या. वली तेमणे फरीने पण पोतानां महाव्रतोने दृढ कर्य केम के, वारंवार अग्निनो ताप सुवर्णनी शुद्धि माटे थाय ठे. चोंत्रीस अ तिशयोवाला, मोतीसरखी निर्मल कांतिवाला तथा त्रणे लोकनां स्वामी ए सर्व जिनेश्वरो अमोने शरणारूप थाउ? अनंत अने अक्षय स्थानप्रते प्रा थयेला, परवालांसरखी कांतिवाला, अने पंदर ज्ञेदे सिद्ध थएला सिद्ध अमोने शरणारूप थाउ? महाव्रतोने धरनारा, धीर, सावद्यनां आश्रय नानां, इंद्रनीलमणिसरखी कांतिवाला एवा मुनिउ अमोने शरणारू थाउ? केवली प्रज्ञुए कहेलो, सर्व दयामय, तथा स्फटिकोपल सरखो द ङारहित एवो धर्म अमोने शरणारूप थाउ? वली चोरासी लाख जीव योनि मांहें जे कंइ डुष्कृत थयुं होय, ते सघलुं अमारुं अपुनःक्रिय पूर्वक मिथ्या थाउ? वली अज्ञानताथी जे अढार पापस्थानको सेव्यां होय ते सघलांउने त्रिकरणशुद्धिथी वोसरावुं ठुं. वली एकेंद्रियादिक सर्व जंतु उने हुं खमावुं ठुं; अने तेउ पण वैररहित एवा हुं प्रते क्षमा करो? वली कर्मोथी आ संसारमां ज्ञमता एवा सर्व प्राणीउ प्रते मने मित्राइ ठे; हुं एकलोज ठुं; मारुं कोइ नथी; अने आ मारा आत्माने अरिहंत प्रज्ञुनुं श रणुं ठे. एटलुं कहीने पुंडरिकजी महाराजे सघला साधुउनी साथे डु ष्कर निराकार अनशन अंगीकार कर्युं. एवी रीते ते क्षपकश्रेणिपर च ड्या; अने त्यां जीर्ण दोरडांनी पेठे चारे बाजुएथी तेमनां तथा पांच क्रोड

मुनिउंनां पण घातिकर्मो त्रुटी गयां; केम के, तप सर्वेने सरखो छे. तपथी राज्य, स्वर्गनी संपदा, तथा मोक्षसुख मळे छे; अने त्रणे लोक वश थाय छे. त्यां चैत्रसुदी पुनेमने दिवसे पुंडरिकजी महाराजने प्रथम केवलज्ञान थयुं; तथा पछी ते मुनिउंने थयुं. पछी ते योगिउं क्षणवार चोथा शुक्लध्यानमां रहीने, सर्व कर्मो क्षीण थवाथी मोक्ष गया. ते वखते त्यां सर्व देवोए आवीने मरुदेवा मातानी पेठे, तेमनो निर्वाणमहोत्सव कर्यो. जेम आ अवसर्पिणीमां श्री ऋषभदेव प्रभु पेहेला तीर्थंकर छे, तेम आ पेहेलुं तीर्थ थयुं; ज्यां एक मुनि पण सिद्ध थाय छे, ते तीर्थ कहेवाय छे, त्यारे ज्यां आटला बधा मुनिउं सिद्ध थया, तेने तो मोटामां मोटुं तीर्थ जाणवुं. हवे श्रीऋषभदेव प्रभु फागणसुदि आठमने दिवसे आ शत्रुंजयपर आव्या, त्यारथी अष्टमीपर्व थयुं. आठम, पाखी तथा पुर्णिमाने दिवसे प्राणीउंने शुभाशुभ आयुनो बंध पडे छे. ते बन्ने पर्वने दिवसे आ तीर्थमां भक्तिथी अल्प आपेलुं दान पण क्षेत्रमां रोपेला बीजनी पेठे बहु फल आपे छे. तप, दान तथा शीलादिकथी जिनभक्तिनी पेठे आराधेलुं अष्टमी पर्व प्रगट रीते प्राणीउंना आठे कर्मोनो नाश करे छे. चैत्रसुदी पुनेमने दिवसे आ तीर्थपर पुंडरिकजी महाराज मोक्ष गया, त्यारथी चैत्रीपुनेमनुं पर्व थयुं; तथा आ पर्वतनुं नाम पुंडरिकगिरि पड्युं. जे माणस संघसहित चैत्री पुनेमने दिवसे आ पुंडरिकगिरिपर रहेला पुंडरिक महाराजने पूजे छे, ते लोकोत्तर स्थितिवाळो थाय छे. वळी नंदीश्वरादिक द्वीपोमां रहेला शाश्वता प्रभुउंनां पूजनथी जे पुण्य थाय छे, तेथी पण अधिक पुण्य शत्रुंजय गिरिनी चैत्रीनी यात्राथी थाय छे. वळी बीजे वखते दान, शील, तप तथा पूजा प्रमुखथी जे पुण्य थाय छे, तेथी क्रोडगणुं पुण्य चैत्री पुनेमने दिवसे अहीं शत्रुंजयपर जिनपूजनथी थाय छे. चारित्र, चंद्रप्रभ प्रभु, चैत्री पुनेम, शत्रुंजय पर्वत, तथा शत्रुंजयी नदी पुण्यविना मळी शकतां नथी. जे माणस आ तीर्थपर चैत्री पुनेमने दिवसे जिनालयमां शांतिस्नात्र, ध्वजारोपण, तथा आरति करे छे, ते पोतानां निर्मळ भवोने मेळवे छे. वळी बीजी जगोये पण चैत्री पुनेमने दिवसे संघपूजन करवाथी माणस ज्यारे देवनां सुखोने मेळवे छे, त्यारे आ विमळाचलपरनी तो वातज शी करवी? चैत्री पुनेमने दिवसे वस्त्र, अन्न अने

पाणीआदिकथी प्रतिलाभेला मुनि चक्रीनी अने इंद्रनी पदवी आपीने, छेवटे मोक्ष आपे छे. चैत्री पर्व सर्व पर्वोमां उत्तम छे; तथा सर्व पुण्योने वधारनारुं छे; तेनुं पुंडरिकगिरिपर आराधन करवाथी ते उत्कृष्ट फलने देनारुं छे. वली चैत्री पुनेमनी अठाइ अष्ट सिद्धिउने आपनारी छे. वली सघला देवो पण आ चैत्री पर्वने नंदीश्वर द्वीपमां जइ जिनपूजादिकथी भक्ति पूर्वक आराधे छे. माटे धर्ममां प्रीतिवाला माणसे प्रमादनां हेतु रूप कलह, क्रीडा तथा अनर्थदंडादिक तजीने चैत्री पर्वने भजवुं. वली अक्षय सिद्धिमाटे चैत्रीपुनेमने दिवसे प्रभावना, जिन, चैत्य, सिद्धांत, गुरु अने मुनि प्रते भक्ति करवी.

हवे श्री ऋषभदेव प्रभु विहार करी पृथ्वीने पावन करता थका विनीता नगरीनी पासे रहेला सिद्धार्थ नामनां उद्यानमां पहोंच्या. त्यां इंद्रादिक देवो प्रभुनी भक्तिथी आकाशमांथी उतरीने आव्या; तथा तेउए त्यां योजन सुधिनी भूमिमां त्रण गढोवालुं प्रभुनुं समवसरण रच्युं. त्यारे उद्यानपालके तेनी भरत महाराजने वधामणी आपी; त्यारे भरतजीए पण तेने हर्षथी बार क्रोड सोनामोहोरोनुं इनाम आप्युं. पछी पाला, घोडा, हाथी, रथो, पुत्रो, सामंतो, सेनापतिउ, राजाउ, राणीउ तथा माणसोथी वींटाएला, तथा साहुकारो, सार्थवाहो, चारणो, वंदिउ, गांधर्वो, अने सघलां लश्करोथी सेवाएला भरत महाराज आकाशने छत्रमय करता थका, दिशाउने चामरो तथा धजाउ सहित करता थका, अने सैन्योथी पृथ्वीने पूरता थका त्यां चालवा लाग्या. पछी त्यां पूर्व तरफनां द्वारथी समवसरणमां आवीने, तथा प्रभुने प्रदक्षिणा देइने चक्री नीचे प्रमाणे तेमनी स्तुति करवा लाग्या के हे स्वामी! हे जिनाधीश! हे करुणासमुद्र! हे संसार रूपी वनमांथी तारनारा! तथा हे वत्सल प्रभु! तमो जय पामो? घणां कालथी उत्कंठा करता एवा मने आजे आपनुं दर्शन थयुं छे, अने तेथी मने एम लागे छे के, आजे मारुं पूर्वनुं करेलुं शुभ कर्म फलीभूत थयुं. वली हे प्रभु! आप वीतरागनां चित्तमां हुं वसुं छुं, एम केम कहेवाय? पण आप मारा चित्तमां वसी रह्या छो, माटे हवे मारे बीजा कोइनी पण जरुर नथी. सुखमां, दुःखमां, नगरमां, अरण्यमां, जलमां, अग्निमां, रणसंग्राममां, दिवसमां अने

रात्रिमां पण मारा चित्तमां आपना चरणोनुं ध्यान रहेजो ? एवी रीते प्रभुनी स्तुति करीने तथा पंचांगथी प्रभुने नमीने चक्री इंद्रनां नाना भाइनी पेठे तेमनी पाछल बेठा. त्यारे प्रभु पण सर्व भाषारूप, तथा एक योजनसुधि संभलाय एवी वाणीथी देशना देवा लाग्या के, सुपात्रे दान, श्री संघनी पूजा, उत्तम प्रभावना, महोत्सव पूर्वक तीर्थयात्रा, सिद्धांतोनुं लखाववुं, स्वामीवात्सल्य, गुरु तथा आगमोनो महोत्सव, समता, अने शुभध्यान एटलां पुण्यनां स्थानको छे. ते देशनाने अंते भरत महाराजा प्रभुने मस्तकथी नमस्कार करीने, तथा पोतानां शब्दोथी समुद्रने पण लज्जित करता थका पुछवा लाग्या के, हे स्वामी ! आपे संघाधिपनां पदनुं बहु वर्णन कर्युं छे; ते शी रीते उत्तम प्रकारे प्राप्त कराय ? तथा तेथी शुं फल मले ? त्यारे श्री युगादीश प्रभुए कह्युं के, हे राजन् ! जेवुं तीर्थंकर पद छे, तेवुंज संघाधिपनुं पद छे. वली छती संपदाए पण पुंडरिकगिरिनी पेठे भाग्यविना संघाधिपतिनुं पद मली शकतुं नथी. इंद्रपद तथा चक्रीपद पण प्रशंसवा लायक छे; अने ते बन्नेथी पण संघाधिपनुं पद पुण्योत्पादक होवाथी वधारे प्रशंसनीक छे. संघपति उत्तम दर्शनशुद्धि पामीने दुर्लभ तीर्थंकरनामगोत्रने पण मेलवे छे. संघ तो अरिहंतोने पण हमेशां माननीक तथा पूजनीक छे; अने तेवा संघनो जे अधिपति थाय, ते तो लोकोत्तर स्थितिवालो थाय. चतुर्विध संघ सहित, शुभ भाव सहित महोत्सव पूर्वक जिनबिंबने रथमां स्थापन करीने, पंचविध दान देतां थकां, दीनोनो उद्धार करतां थकां, नगर नगर प्रते जिनमंदिरोपर ध्वजारोपण करतां थकां, शत्रुंजयपर, गिरनारपर, वैभार पर्वतपर, अष्टापद पर्वतपर, तथा सम्मेतशिखरपर शुद्ध सम्यक्त्वथी देवपूजन करतां थकां, तथा गुरुनी आज्ञा प्रमाणे ते सर्व तीर्थोमां अथवा एक तीर्थमां पण इंद्रोत्सवादिक कार्य करतां थकां संघपति थवाय छे. वली हमेशां पूजनिक एवा गुरु पुण्यकार्यमाटे जे आराधाय छे, ते सुवर्णमां सुगंध मलवा बरोबर छे. वली उत्तम यात्रानुं फल इछनार माणसे, मिथ्यात्विजनो संग, तथा तेनां वाक्योमां आदर करवो नहीं. वली परतीर्थनी निंदा के स्तुति करवी नहीं; पण त्रिकरण शुद्धिथी जीवित पर्यंत सम्यक्त्व पालवुं. वली संघयात्रा करनारे साधुओ तथा

साधर्मीउने वस्त्र, अन्न, तथा नमन आदिकथी प्रत्यक्ष रीते पूजवा. वल
आर्जवयुक्त संघपतिए पाक्षिकादिक पर्वो, दानादिक धर्मो, तथा श्र
संघनी पूजा करवी. एवो संघपति देवोने पण पूजनीक थाय छे, तथ
कोइ संघपति तो तेज भवमां अने कोइक त्रण भवोमां सिद्ध थाय छे
एवी रीतनो वृतांत प्रभु पासेथी तथा इंद्र पासेथी पण सांभलीने श्र
भरत महाराजा प्रभुनां चरणोने नमीने भक्तिथी कहेवा लाग्या के, हे
त्रणे जगतोने आराधवालायक प्रभु! मारापर आप कृपा करो? वे
जेथी हुं निर्मल संघपतिपद मेलवुं. पछी प्रभुए इंद्रादिक देवो तथ
संघ सहित उठीने, भरत महाराज उपर अक्षत तथा वासक्षेप नाख्यो
ते वखते इंद्रे पण दीव्य माला लावीने चक्रीना तथा तेमनी पटराण
सुभद्रानां कंठमां ते नांखी. पछी चक्री मार्गे राजाउथी पूजाता थका स
घला सांमंतो सहित अयोध्यामां आव्या. पछी त्यां तेमणे बहुमान पू
र्वक संघनां लोकोने बोलाव्या, तथा पापरूपी शत्रुउने नसाडवा माटे
उंचे प्रकारे भंभा वाजित्र वगाडाव्युं. पछी चक्रीए त्यां आवेला संघनां
लोकोने सन्मान देवा पूर्वक नगरमां रहेलां जिनचैत्योमां अठाइ महो-
त्सव कराव्यो. पछी तेमणे गणधरोने बोलावीने पोतानां घरमां सर्व वि-
घ्नोने नाश करवा माटे शांतिस्नात्र कराव्युं. ते वखते गणधरोनां मं-
त्रोथी सघला देवोए प्रत्यक्ष थइने निर्विघ्न यात्रा करवा माटे पोतानी
गति अंगीकार करी. एटलामां इंद्रे स्वर्णनां देवालयवाली श्री युगादीश
प्रभुनी प्रतिमा चक्रीने आपी. ते वखते भरत राजाए इंद्रने पूछ्युं के,
हे इंद्रराज! सर्वज्ञ प्रभु तो सर्व सावद्य रहित तथा सर्व कार्योमां मूक-
पणाने भजनारा छे, तो सावद्यमय एवा आ संघाधिपपणामाटे मने ते-
मणे केम उपदेश कर्यो? त्यारे इंद्रे कह्युं के, हे चक्रीश्वर! जेमां बहु
पुण्य तथा अल्प पाप थाय, तेवुं कार्य कोण आदरता नथी? वली प्रायें
करीने ग्रहस्थीउनुं पुण्यकार्य तो सावद्य होय छे, अने साधुउनुं कार्य
निरवद्य होय छे. वली माटी सहित जेम सुवर्ण, तथा औषधि, तेम
सावद्य धर्म परिणामे हितकारी छे. वली सावद्यना अंशवाला दान, शील
तथा अभयदान आदिकथी पण महान पुण्य थाय छे. वली जे सरलस्व-
भावी माणस सर्व आरंभोथी पण शासननी प्रभावना करे छे, ते स्वर्ग

था मोक्षनुं सुख मेलवे छे. वली तीर्थयात्रा तथा प्रतिष्ठादिक कार्य पण ावद्यथी थाय छे, पण तेवी रीतनो सावद्यनो लेश पण बहु पुण्य माटे ाय छे. एवी रीते भरत संघपतिने शिखामण देइने, तेनी रजा लेइ द्र पोताने स्थानके गयो.

हवे चक्री शुभ दिवसे वार्धकीए बनावेला मणि, रत्न तथा सुवर्ण-मय आवासमां संघसहित नगरनी बहार रह्या. ते संघावासमां रहेलुं सुवर्णमय जिनमंदिर जंबूद्वीपमां रहेला, तथा नक्षत्रोथी शोभता मेरु सरखुं शोभवा लाग्युं. तेज आवासना दक्षिण भागमां क्षणवारमां वार्धकीए बनावेली पौषधशालामां गणो सहित गणधरो रह्या. तेथी डावी बाजुए चक्रीनो अद्भुत आवास हतो, तथा तेनी चारे बाजुए बीजा संघमाटेनां आवासो हता. एवी रीते मार्गमां सर्व मुकामे भक्तिवंत वार्धकीए संघनां आवासो बनाव्या. वली त्यां सुवर्णमय जिनमंदिरमां रत्नमय प्रभुनी मूर्ति शोभती हती; वली त्यां गणधरोए ते जिनालयमां बाहुबलिनां पुत्र चंद्रयशाने, विनमि विद्याधरनां पुत्र गगनवल्लभने, पूर्व दिशानां राजा वज्रनामने, तथा कल्याणकेतुने सूरिमंत्रोथी प्रतिष्ठित कर्या. वली भरत चक्रीनां ते संघमां धर्मनां भारनी धोंसरीने धरनारा बीजा पण हजारो राजाउ हता. ते वखते विकस्वर पुष्पमालावाली सुभद्राथी चक्री, वनमालाथी भूषित थएला जंगम वसंत ऋतु सरखा शोभता हता. साधर्मीउनुं वात्सल्य करीने, संघनी पूजा करीने, तथा जिननी सेवा करीने करेल छे प्रस्थानमंगल जेणे एवा, तथा शुभ दिवसे हाथीपर चडेला, छत्र चामरथी शोभता, चारण श्रमणोए करेल छे प्रथम मांगल्य जेमनुं एवा, तथा इंद्र जेम सामानिकोथी तेम चारे दिशाउमां राजाउथी विंटाएला, अप्सराउनुं संगीत जोता थका, तथा हे भरत महाराजा! तमो " जय पामो? लांबा काल सुधि जीवो? आनंद पामो?" एवी रीते देवोथी जेम तेम वंदीउथी स्तुति कराता, सामंतोथी, मंडलीकोथी, कुमारोथी, राजाउथी, मंत्रीउथी, संघपुरुषोथी, तथा चतुरंगी सेनाना समूहोथी, पर्वत सरखा हाथीउथी, समुद्रनां मोजां सरखा घोडाउथी, (जंगम) घर सरखा रथोथी, पोतानां उत्साह सरखा पालाउथी, अणुव्रत धरनारा श्रावक श्राविकाउथी, श्रीनाभ प्रमुख क्रोडो

गमे साधुओथी, नमि विनमिथी, ज्ञानी गणधरोथी, शील रुपी अलंकारो-वाली साधवीओथी, गायन करनारा गांधर्वोथी, वंदिओनां समूहोथी, कौ-तुकी नटोथी, तथा नाचती नायिकाओथी वींटाएला, एवा भरत महा-राज चालवा लाग्या. त्यां सोनानां रथपर रहेलुं मणिनुं देवायलय, आ-काशमां जिनेश्वर प्रभुनां शरीरथी भामंडलनी पेठे शोभतुं हतुं. तेनापर चामरोनां वींझावा सहित त्रणे लोकनां ऐश्वर्यने सूचवनारुं पूर्णिमानां चंद्र सरखुं छत्रत्रय शोभतुं हतुं. सैन्यनां चालवाथी उडती रजोए करीने सूर्यमंड-लने आछादित करता, तथा संघनां चरणन्यासथी पृथ्वीतलने पवित्र करता, अंतःपुरनी स्त्रीओथी धवलध्वनियें करीने गवाता, मोटी स्त्रीओथी लवण उता-राता, जगोए जगोए अने नगरे नगरे गुरुनी पूजा करता, तथा जिनचैत्योनो उद्धार करता थका भरत राजा प्रयाण करवा लाग्या. पोते वावेला वृक्षो-प्रतेथी जेम, तेम देशो देशनां राजाओ पासेथी रत्नो अने सुवर्णनी अमूल्य भेटोने लेता थका, योजनप्रमाण प्रयाणथी विविध देशोने ओलंगीने अ-नुक्रमे भरत राजा सौराष्ट्र देशमां पहोंच्या. ते वखते सुराष्ट्रनो पुत्र, तथा भरतजीनो भत्रीजो, अने सौराष्ट्र देशनो राजा शक्तिसिंह तेमनी स-न्मुख आव्यो. पृथ्वीतलपर पडीने नमता एवा तेने चक्रीए पोताने हाथे उठाडीने तथा आलिंगन करीने कह्युं के, हे पुत्र! आ देशनुं सुराष्ट्र नाम सफल थयुं छे; केम के, अहीं परदेशीओने दुष्प्राप्य एवुं शत्रुंजय तीर्थ छे. वली हे पुत्र! तुं धन्य छे, के आ तीर्थनी हमेशां सेवा करे छे. दूर रहेनारा अमो तो अहीं रहीने तेने जोइ शकता नथी. एवी रीते प्रीति पूर्वक तेने बोलावीने, आभूषण आदिकथी तेनुं चक्रिए सन्मान कर्युं. पछी शिखरोथी स्पर्श करेल छे आकाशने जेणे, तथा यात्रिकोनां यशनां भंडार सरखा, तथा संसारथी भयभीत थएला प्राणीओ प्रते किल्ला सर-खा, तथा पृथ्वीरूपी स्त्रीनां अमुल्य मुकुट सरखा, तथा मोक्षरूपी स्त्रीने रमवानां दडासरखा, तथा रत्नोनी कांतिथी यत्नविनां आकाशने चित्रित करता, एवा ते पुंडरिक गिरिने जोइने रोमांचने धारण करता थका तथा आदरथी मस्तकने धुणावता थका भरत महाराजा सोमयशाने कहेवा लाग्या के, आ सौराष्ट्र देशनां पुण्यशाली लोकोने धन्य छे, के जेओ हमेशां नजदीक रहीने आ पुंडरिक गिरिने सेवे छे. आ पर्वतनी छाया, तथा वायु

पण चंद्रनां किरणोनी पेठे जगतने तापरहित करे छे. कमल सरखा उ-ज्वल एवा आ पुंडरिक गिरिनुं जेठ दर्शन करे छे, तेठ पुण्यरूपी अमृतथी पवित्र थइने पापरूपी कादवथी मुकाय छे. वली आ गिरिराजने जोइने मारुं मन एटलुं तो आनंद पामे छे के, जाणे हुं पापरूपी मेलथी मुकाइने निर्मल थयो होउं नहीं, तेम लागे छे. वली मारा पोतानांज आत्मानी खातरीथी आ तीर्थने हुं पंकरहित धारुं छुं, केम के, कार्य कारणनी अपेक्षाथीज थाय छे. वली पवनथी कंपता मस्तकोये करीने आ वृक्षो तीर्थनां वासथी जाणे नाचतांज होय नहीं, तेम मारी आंखोने अत्यंत आनंद आपे छे. वली जे पक्षिठ आ तीर्थपर वसे छे, तेठने पण धन्य छे; पण चक्रीनी लक्ष्मीवाला, एवा पण अमो दूर होवाथी धन्य नथी. एम कहीने चक्रीए हस्ती स्कंधथी उतरीने गणधरोने तथा मुनिठने हर्षथी नमस्कार कर्यो; तथा धर्ममार्गने देखाडनारा ते गुरुठने तेमणे पुछ्युं के, हे नगवन्! आ पर्वतने शी रीते पूजवो? तथा अहीं शुं क्रियाठ करवी? त्यारे श्रीनान्न नामनां मुख्य गणधर अवधिज्ञानथी जाणीने कहेवा लाग्या के, हे चक्री! जोवामात्रथीज आ पर्वतने नमस्कार करवो; वली आ गिरिनां प्रथम दर्शननी जे माणस वार्ता पण निवेदन करे, तेना प्रते जे कंइ देवाय, ते पुण्यनी वृद्धिमाटे थाय छे. वली उगता चंद्रने जेम तंतुठथी तेम, पुण्यलान्न माटे प्रथम आ पर्वतने सुवर्ण, मणि, रत्न विगेरेथी वधाववो. पछी वाहनो तजीने, तथा पृथ्वीतलपर लोटीने जिननां चरणनी पेठे, तेनुं पंचांगी नमस्कारथी सेवन करवुं. पछी त्यांज आवास करीने, तेज दिवसे उपवास सहित संघपतिए महाधरोनी साथे, न्नक्ति पूर्वक स्नान करीने तथा शुद्ध वस्त्रो पेहेरीने, स्त्रीसहित देवालयमां जिननी मनोहर स्नात्रपूजा करवी. संघनी वहार शुद्ध देशमां श्री शत्रुंजयनी सन्मुख पोतानां चित्तसरखो (संघपतिए) उंचो आवास करवो. पछी उत्तम धूप उखेवीने, संघसहित मंगलध्वनिठनो उच्चार थाते छते, याचको प्रते न्नावसहित दान देतां थकां, उत्तम यक्षकर्दमथी पृथ्वीतलने लींपतां थकां, कुंकुमनां मंडलपर संघने कल्याणकारी एवो मोति अथवा तंडुलोथी स्वस्तिक करवो. पछी सघलो घोंघाट मटाडीने, तथा गणधरजीने अगाडी करीने, तेनी पाछल संघपतिए रहीने पूजानो उत्सव करवो. त्यां कुंजेला,

रांधेलां, तथा सिद्ध करेलां नैवेद्योथी, रुपाथी, सुवर्णथी, वस्त्रोथी तथा पुष्पमालाउथी प्रथम पूजा करवी; तथा नक्तिथी स्वामीवत्सल, अने संघपूजा करवी; तथा अनंत फल देनारुं संगीत जिनमंदिरमां करवुं. पढी त्यां महाधरोए तथा बीजा शुन्न आशयवालाउये संघपतिनी स्त्री सहित, आनूषण, वस्त्र, तथा पुष्पमालाउथी पूजा करवी. पढी त्यां गुरुन्नक्ति करतां थकां संघवासीउए धर्मकथा सांन्नलवा पूर्वक रहेवुं. एवी रीते गुरुनी वाणी सांन्नली अत्यंत आनंद थएला चक्रीए विमलाचलनी पासे आवास कर्यो. पढी स्नान करी पवित्र थइ, श्वेत वस्त्रो पहेरी, महाधरो तथा स्त्री सहित ते जिनमंदिरमां गया. त्यां अष्टापदनां (सुवर्णनां) पात्रोमां रहेलां पक्वानो, जाणे न्नरत पासे अष्टापद पर्वतनां शिखरो आव्यां होय नहीं, तेम शोन्नतां हतां. पढी त्यां चक्रीए गणधर महाराजनी साक्षिये पुष्प, अक्षत, स्तुति विगेरेथी प्रन्नुनी पूजा करीने संगीत कर्युं. पढी गुरुए बतावेली विधिपूर्वे पवित्र जगोपर यक्षकर्दमथी मंडल करीने तेमणे मोतीनो साथीउ पूर्यो. ते वखते त्यां रत्नाकर तथा रोहणाचल पर्वतनां जाणे चोरोज होय नहीं, तेवा मेरु पर्वतनां ककडाउ सरखा सुवर्णनां ढगलाउ हता. एवी रीते गुरुए बतावेला विधिमार्गमां रहीने चक्रीए पुंडरिक गिरिनी संघ सहित पूजा करी. पढी पृथ्वीपर पंचांग नमस्कार करीने तेमणे नीचे प्रमाणे तीर्थनी स्तुति करवा मांडी. जे तीर्थने पातालमां रहेनारा धरणेंद्र प्रमुख नागकुमारो सेवे ढे, एवा आ तीर्थप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने चमरेंद्र तथा बलींद्रादिक सर्वे न्नुवनवासिउ सेवे ढे, एवा आ तीर्थराज प्रते नमस्कार थाउ? जेने किन्नरो किंपुरुषो, तथा किन्नरोनां इंद्रो सेवे ढे, एवा आ तीर्थराज प्रते नमस्कार थाउ? वली जे तीर्थने राक्षसोनां अधिपो तथा यक्षेश्वरो परिवार सहित सेवे ढे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने अणपन्नी पणपन्नी प्रमुख व्यंतरेंद्रो सेवे ढे, एवा आ तीर्थप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने चंद्रसूर्य नामनां ज्योतिषनां इंद्रो, तथा बीजा खेचरो पण सेवे ढे, एवा आ तीर्थराज प्रते नमस्कार थाउ? वली जेने मनुष्य लोकमां रहेनारा वासुदेवो तथा चक्रीउ पण सेवे ढे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउ? वली जेने इंद्रो, उपेंद्रो तथा सिद्धो अने विद्याधरनां स्वामीउ पण सेवे

छे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउं? वली जेने ग्रैवेयक तथा अनुत्तर विमाननां देवो पण सेवे छे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउं? एवी रीते त्रणे लोकमां रहेनारा ज्ञुवनपतिउं, मनुष्यो, तथा देवो जेने नमस्कार करे छे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउं? वली अनंत, अक्षय, नित्य, तथा अनंत फलने देनारुं आ तीर्थ जय पामो? तथा ते प्रते नमस्कार थाउं? वली जेपर अनंता तीर्थंकरो सिद्ध थया छे, तथा थशे, तथा जे मुक्तिरूपी स्त्रीनुं क्रीडागृह छे, एवा आ तीर्थराजप्रते नमस्कार थाउं? एवी रीतनी आ पुंडरिक गिरिनी स्तुति जे माणस हमेशां जणे छे; ते माणस घेर बेठां पण यात्रानुं उत्तम फल मेलवे छे. एवी रीते चक्रीए श्री शत्रुंजय पर्वतनी स्तुति करीने गणसहित श्रीनाज्ञ गणधर महाराजने नमस्कार कर्यो. नमता एवा चक्रीनी पीठपर गणधर महाराजनो हाथ, जाणे कर्मरूपी हाथीने मारवाने मेरुपर सिंह चड्यो होय नहीं, तेम शोजतो हतो. पछी धर्मध्यानमां तत्पर रहीने, तथा गुरुनां वचनरूपी अमृतथी सिंचायां थकां आनंद सहित चक्रीए दिवस व्यतीत कर्यो. पछी प्रज्ञाते चक्रीए संघसहित चैत्यमां रहेला प्रज्ञुने तथा गुरुने नमीने पुण्यकारी पारणुं कर्युं. पछी तेमणे त्यां पुंडरिक गिरिनी समीपमां वार्धकीरत्न मारफते विनिता नगरी सरखुं नगर वसाव्युं. त्यां मोटा मेहेलोनां त्रण क्रोड जरुखाउं, जाणे ते पर्वतने जोवा माटे निमेष रहित थएला नेत्रोनां समूहो होय नहीं, तेम शोजता हता. त्यां मेहेलोपर रहेली मणीमय आगासीउंथी अमावास्याने दिवसे पण माणसोने हजारो चंद्रोनी ज्रांति थती हती. त्यां सोनानां मेहेलोनां शिखरोने जोइ जोइने, लोको मेरुने तो तेनां कचरानां ढगलासरखो मानवा लाग्या. वली त्यां समुद्रोमां जेम पाणीने तेम समस्त देशोनी वस्तुउंने लोको जोता हता. वली त्यांना मोहोटा गढनी आकाशमां अडती शिखाउं क्षणवारसुधि, चालता एवा सूर्यनां घोडाउंने पण विघ्नकारी थती हती. वली निकलती छे रत्ननी कांतिउं जेमांथी एवां द्वाररुपी मुखोयें करीने, शोज्ञाथी जाणे देवनगरीनी पण हांसी करती होय नहीं, तेम ते नगरी शोजती हती. तेनी अंदर निर्मल कांतिवालुं श्री युगादीशप्रज्ञुनुं मंदिर, जाणे जरतनो अक्षय यशनो कंद उंचो जतो होय नहीं, तेम शोजतुं हतुं; ते कंद व-

धिने शिखरोथी शाखावालो, धजाउथी पांदडावालो, कलशोथी फलोवाल तथा मोक्षरूपी अद्भुत रसने उत्पन्न करनारो हतो. वली त्यां वावो, कुवा तलावो, दीर्घीकाउ, पल्वलो, तथा वगीचाउ उंचे प्रकारे शोजता हता एवी रीते सौराष्ट्र देशनी सीमामां आनंद आपनारुं ते आनंदपुर नामन नगर वसावीने, ते शक्तिसिंहने चक्रीए सोंप्युं. पछी तीर्थयात्रामां उ त्सुक थयेला चक्री श्रीनाजि गणधरपासे आव्या, त्यारे ते पण गणो स हित साथे चालवा लाग्या. पछी पुण्यनी सेना सरखो संघ पण उंचुं मुख राखी पर्वतने जोतो थको हर्षथी जरतजीनी पछवाडे चालवा लाग्यो. ते व खते पोतानां कसुंबी वस्त्रोथी जाणे प्राणीउने राग देखाडतीउं होय नहीं तेम स्त्रीउ धवलमंगलो गावा लागी. वली ते वखते चारे कोरे आका शामां जंजा, निशान, कंसाल, ताल, वीणा, तथा मृदंगोनां अवाजो सं जलावा लाग्या. ते वखते उंचां मुख करी पर्वतपर चडता संघनां लोक जाणे प्रगट रीते मुक्तिनां घरनी मनोहरताने जोता होय नहीं, तेम शो जता हता. चक्री उत्तर दिशाएथी चडता हता, अने बीजाउ कौतुकथी सर्व मार्गेथी ते पर चडता हता. सुधर्म गणधरनां महा तपस्वी चिल्लण नामनां शिष्य लोकोथी वींटाया थका पश्चिम मार्गेथी ते विमलाचलपर चडवा लाग्या. एवी रीते दश योजन चड्या बाद तृषातुर थएला श्रावको ते मुनिने कहेवा लाग्या के, अमोने प्राण जाय तेवी तृषा पीडा करे छे; अने तेथी प्रजुनां चरणकमलोने जोया विनांज अमारां प्राणो पाणी-विनां फोकट जता रहेशे. एवी रीते तेउने पीडित जोइने मुनिए तेमने पाणी देखाड्युं. त्यारे तेउए कह्युं के, हे मुनिराज! आटलां पाणीथी अ-मारी तृषा जाय तेम नथी, माटे तपलब्धिथी एवुं करो के, जेथी अमो सघला सुखी थइयें. पछी संघना लोकनुं सानिध्य इछता ते मुनिए, तपल-ब्धिथी ते पाणीयें करीने मोटुं तलाव बनाव्युं. मंद मंद पवननी लेहेरो-थी हालतां मोजांउए करीने मनोहर छे पाणी जेमां एवा ते तलावथी लोकोनुं मन विश्राम पाम्युं. ते पाणी पी पीने लोकोनां मनो अमृत रस-नां पानथी पण अधिक आनंद पाम्यां. एवी रीते संघनां लोकनां उपरो-धथी चिल्लण मुनिए तपनां प्रजावथी ते तलाव बनाव्युं; तेथी ते "चि-ल्लण" नामनुं तलाव कहेवावा लाग्युं. आ तीर्थमां प्रौढ तपनां प्रजावथी

निए संघनां वाक्यथी सर्वने उपकार करनारुं ते तलाव बनाव्युं, माटे ते
वेत्र जाणवुं. तेनां पाणीनां स्नानथी, पानथी, तथा जिननां अभिषेकथी
पनी शुद्धि थाय छे. ते तलावनां पाणीथी स्नान करीने, तथा जिनचर-
ोने पखालीने माणस एकावतारी थइ मोक्षमां जाय छे. हवे संघनो समूह
ाणीथी तृप्त थइने, तथा तेनां वायुथी विश्रांत थइने सुखेथी प्रथम शिखरपर
डवा लाग्यो. हवे चक्रीए त्यां जतां थकां, वृक्षोथी पंथिउनां थाकने दूर
रनारुं एक वन जोयुं. ते लक्ष्मीविलास नामनुं वन एक योजननां विस्तार-
ळुं, वावो तथा कुंडोथी शोभतुं, तथा नंदनवन सरखुं हतुं. उत्तर दिशा-
पी स्त्रीनां मुखपर तिलक सरखा ते मनोहर वनने जोइने शक्तिसिंह
क्रीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी! आ तमाल वृक्षोनी लीली श्रेणि
ागाडी देखाय छे, ते जाणे पर्वतनी मेखलापर इंद्रनील मणिनी कांची
कंदोरो) होय नहीं तेम शोभे छे. वळी आ वृक्षोनी पंक्ति, आ पुष्पोने
ण योग्य (दोरीमां परोववा लायक) जाणीनेज जेम, तेम पोतानां
स्तकोपर धारण करे छे. वळी वर्षाकालनां मेघ सरखुं श्याम, तथा ब-
लीउ सरखी पुष्पोनी श्रेणिउथी मंडित थएलुं आ वन कोना तापने ह-
ारुं नथी? वळी आ वन श्वेत पुष्पोनां गुच्छाउथी, आकाशने सेंकडो चं-
ोवाळुं करे छे; तथा तेमां रहेला भ्रमरो तेउना कलंकपणाने धारण करे छे.
ळी श्वेत पुष्पोनां समूहोथी, सर्व जगोए लीलुं एवुं आ उद्यान, पर्वत-
पी लक्ष्मीना मोतीउथी गुंथेला केशपाश (चोटला) सरखुं शोभे छे. वळी
ंहींआ कल्पवृक्षो पंथिउ प्रते इच्छित दान आपीने पोतानां नामनी स-
ळता करे छे. वळी आ बाजुए केळनां वृक्षो झरता शाखाउनां पोताना
ंदडांउथी, सूर्यनां किरणोथी तप्त थएला प्राणीउने पवन नांखे छे. वळी
क मूळथी ते शाखाउ सुधि फलरूप थएलां आ फणसनां वृक्षो, जाणे
ोकोने तीर्थसेवाथी उत्पन्न थएलां फलोनेज कहेतां होय नहीं, तेम
ागे छे. चारे कोरेथी नागरवल्लीउथी वींटाएलां सोपारीनां वृक्षो किन्न-
ोने शुं "लतावेष्टिक" नामनां नृत्यने शिखवी रह्यां छे!!! वळी अहीं
अशोक, आंबा, चंपक, गुलाब, [illegible], [illegible], नारंग विगेरे बीजां वृक्षो
ण शोभी रह्यां छे. वळी अहीं किन्नर, [illegible] तथा विद्याधरोनी [illegible]
ीन थईउ, श्री युगादीश प्रभुनां [illegible] गाती थकी पोतानां [illegible]

नाश करे छे. वली तमाल, हिंताल, तथा तालोनी श्रेणिर्ठथी व्याप्त थ एला आ वनमां संघनां लोकोनुं मन क्षणवार विश्राम पामे छे. मा नदीनां चपल मोजांर्ठनां समूहथी व्याप्त थएला आ किनारापर सं जले पोतानो पसिनो तथा थाक उतारे; तेम मधुपानमां आनंद पा मता जमरार्ठनां ऊंकारथी मनोहर लागता एवा आ पर्वतपर, क्षण वा सुधि हरिणाक्षी स्त्रीर्ठ जले आपने पण आनंद आपे; वली हे राजन् आ वखते सूर्य पण आकाशनां मध्य जागमां आवेल छे, माटे अहीं तापनी पीडाने नाश करनारो शितल पवन आप पण सेवो? वली हे स्वामी! चित्तने स्थिर करीने अहीं विश्राम करो? केम के, विश्राम पण पंथिर्ठनी व्यथानो नाश करे छे. एवी रीतनां तेना वचनथी चक्रीए पण मनथी विचारिने वार्धकी मारफते हर्षथी त्यां आवास कर्यो.

त्यां केटलाको स्त्रीर्ठ सहित पुष्पोनी श्रेणिर्ठ लेवा लाग्या; तथा के टलाको वांदरार्ठनी तुलना करीने आंबानां फलो तोडवा लाग्या. केट लाको तो हरिणाक्षी स्त्रीनां नयननां छेडार्ठ सरखा चंचल, तथा मार्गनो थाक उतारनारा, एवा नदीनां पाणीमां स्नान करवा लाग्या. केटलाको तो त्यां पुष्पोथी बिछानां करवा लाग्या, तथा केटलाको वननां मनो हर पणाने तुरत वर्णववा लाग्या. चंपा सरखा गौर अंगवाली, तथा हरिण सरखी आंखोवाली, केटलीक स्त्रीर्ठ त्यां गोलाकार थइने रंग स हित रास रमवा लागी. केटलीक स्त्रीर्ठ हींचका खाती थकी नजदीक उजेला पोतानां जरतारने, दिवसे पण पोतानां मुखथी तेजस्वी चंद्रनो ज्रम उपजाववा लागी. एवी रीते सघला लोको ज्यारे हर्षथी क्रीडा क रवा लाग्या, त्यारे जरत राजा पण शक्तिसिंहनी साथे ते उद्यानमां गया. त्यांनी सघली वातोने जाणनार शक्तिसिंह पण चक्रीने नाम लेइ लेइने दरेक पगले ते वननी चारुता देखाडवा लाग्यो. त्यां चक्रीए मो- तीनां चूर्ण सरखा पाणीथी जरेला, तथा आंखोने आनंद आपनारा एक कुंडने जोयो. ते कुंड शतपत्रादिक सोनेरी कमलोथी, तथा कलहंस प- क्षिना शब्दोथी मनोहर लागतो हतो. हवे चक्रीए मंद गर्जारववाला मेघने पण जीती जाय एवी वाणीथी हर्षपूर्वक शक्तिसिंहने कह्युं के, हे पुत्र! तुं अहींनो जाणीतो छे, माटे आ कुंडनां प्रजावनी वार्तारूपी अमृ-

तनां सेचनथी मारा कर्णने पवित्र कर? एवी रीतनुं चक्रीनुं वचन सांभलीने शक्तिसिंह कहेवा लाग्यो के, हे चक्री! ज्यारे अहीं पिताजी (श्री युगादीश प्रभु) पधार्या हता, त्यारे हुं तेमने वांदवा गयो हतो; त्यां में प्रभुने पुछवाथी इंद्रे मने, ते ते पापोरूपी शत्रुउने नाश करवामां शस्त्र सरखी, तथा पवित्र करनारी आ पर्वतनी कथा कही; अने ते वखते तेणे मने आ कुंडनुं जे महात्म्य कह्युं छे, ते आप सांभलो? आ मोटा कुंडनुं नाम "सर्वतीर्थावतार" छे. आ तीर्थमां उत्सर्पिणी कालमां केवलनाणी प्रभुनां मंदिरमां सौधर्मेंद्र आव्या हता. तेमणे तीर्थंकर प्रभुनां स्नात्रमाटे आ कुंडमां गंगा, सिंधु, पद्मद्रह आदिक तीर्थोनां जलाशयो कर्यां. आ कुंडमां स्नान करवाथी सर्व तीर्थोनुं फल मले छे; तथा आना पाणीथी स्नपित करेला प्रभु मुक्ति आपे छे. वली जिननां चरणनां प्रक्षालनथी पवित्र थएला आ कुंडनां पाणीथी त्रण प्रकारनी विषनी भयंकर पीडा पण नाश पामे छे. वली आ जलनां स्नानथी कुष्टादिक सघली आधिव्याधिउ नाश पामे छे, तथा कांति, कीर्ति अने बुद्धि प्राप्त थाय छे. घणा कालथी तथा पडता पत्थरोनां समूहथी आ कुंड जीर्ण थएलो छे, तो पण तेनो प्रभाव तो हमणा वृद्धि पामेलो छे. एवी रीते शक्तिसिंहनां मुखथी ते कुंडनो प्रभाव जाणीने चक्री उत्तम भावसहित अत्यंत आनंद पाम्या. पछी चक्रीए वार्धकीने कहीने ते कुंडने दृढ कराव्यो, तथा तेथी उत्पन्न थएला पुण्यनां समूहोथी तेणे पोतानां भवपंजरने जर्जरित कर्युं!! पछी वैडुर्य, हीरा, माणिक्य, पुखराज विगेरेनी कांतिथी मंडित थएलो ते कुंड, विचित्र प्रकारनां पाणीनां मोजांउयुक्त शोभवा लाग्यो, तथा त्यारथी ते भारतकुंडनां नामथी प्रसिद्ध थयो. पछी ते त्रियामाने (रात्रिने) एक यामनी (पहोरनी) पेठे त्यां गालीने चक्रीए प्रस्थान करनारनी दूती सरखी भंभा वगडावी. पछी चक्री ते कुंडमां सुभद्रापटराणी सहित स्नान करीने, तथा मनोहर वस्त्रो पेहेरीने, पेहेला शिखरपर चड्या. ते वखते त्यां सौधर्मेंद्र पण भक्तिना रंगथी प्रेरायो थको, स्नेहथी तेने जोवानी इच्छाथी विमानमां बेसी आव्यो. पछी ते चक्री तथा इंद्र जाणे पोताना शरीरनुं ऐक्यपणुं करता होय नहीं, तेम त्यां आनंदथी भेट्या. पछी ते इंद्र तथा चक्रीए श्रीनाभ गु-

रुसहित सूर्यचंद्रनी पेठे मुख्य शिखरने हर्षथी स्पर्श कर्यो. पछी चक्रीए इंद्र सहित रायणने प्रदक्षिणा करी; त्यारे ते रायण पण पुष्करावर्त मेघनी पेठे तेमनापर तुरत क्षीर झरवा लागी. पछी चक्रीए तेनी नीचे रहेलां, तथा इंद्रे बनावेलां अने देखाडेलां श्री युगादीश प्रभुनां पगलांउने नमस्कार कर्यो. पछी तेमणे महान भक्तिथी ते पाडुकापर यक्षकर्दमथी लेपन करीने, तेनुं गुलाब आदिक पुष्पोथी पूजन कर्युं. पछी ज्ञानथी उज्ज्वल एवा प्रभुनेज साक्षात मनमां चिंतवीने तेणे ते पगलांने नमस्कार कर्यो. पछी इंद्र आनंद सहित अमृतने पण दूर करनारी वाणीथी चंद्र सरखा चक्रीने कहेवा लाग्यो के, हे चक्री! कालनां दोषथी प्रायें करीने हीन गुणोने भजनारा माणसो मूर्तिविनां आ पर्वतप्रते श्रद्धा करशे नहीं; वली तीर्थंकरोनां चरणोथी पवित्र थएलो आ पर्वतज तीर्थरूप छे; तो पण विशेष श्रद्धामाटे अहीं प्रभुनुं मंदिर भले थाय. वली जे जे काले जे जे तीर्थंकरोनी अहीं स्थिति थाय छे, ते ते काले ते ते तीर्थंकरोनी अहीं मूर्तिउ थाय छे. माटे आ वखते श्री ऋषभदेव प्रभु प्रथम तीर्थंकर विचरे छे, तेथी तमारां नगरनी पेठे अहीं पण तेमनी मूर्ति अने तेमनुं मंदिर बनावो? वली जेम बाहुबलिए पोतानी तक्षशिला नगरीमां चोरासी मंडपनो प्रासाद बंधाव्यो छे, तेवो प्रासाद तमो पण अहीं बनावो? एवी रीतनां इंद्रनां वचनथी विशेष थएली छे सुवासना जेनी, एवा चक्रीए वार्धकीने सोमयशानां कहेवा मुजब चैत्य बनाववानो हुकम कर्यो. त्यारे दिव्य शक्तिवालां वार्धकीए पण भरत महाराजनी आज्ञाथी मणि अने रत्नोए करीने "त्रैलोक्यविभ्रम" नामनो प्रासाद बनाव्यो. ते प्रासादमां पूर्वदिशा तरफ भुवनाभोगनां छत्र सरखा सिंहनाद प्रमुख एकविंश मंडपो शोभता हता; तेम दक्षिण दिशामां भद्रशाल प्रमुख एकवीश, तथा पश्चिम दिशामां मेघनाद प्रमुख एकवीश मंडपो, अने उत्तर दिशामां श्रीविलास प्रमुख एकवीश मंडपो शोभता हता; तथा ते सघलाउं माणिक्यनां किरणोथी आकाशने पण चित्रित करता हता. ते प्रासाद एक गाउ उंचो, अढी गाउ लांबो, तथा एक हजार धनुष्य पोहोलो हतो. वली त्यां चक्रीनां यशथी पूर्ण थएली दिशाउंनां जाणे हास्यो होय नहीं, तेवी मणिनां तोरणोनी श्रेणिउं चारे दि-

शाउंमां शोजती हती. वली तेमां लाखो गमे जरुखाउं, रत्नमय वेदी- काउं, जालीउं तथा कटेराउं शोजता हता. वली तेमां सेंकडो सूर्यनी कांतिना ढगला सरखी कांतिवाली, श्री युगादीश प्रजुनी रत्नमय चतु- र्मुखी मूर्ति शोजती हती. तेनी बन्ने बाजुउंए अत्यंत कांतिवाली श्री पुं- डरिक महाराजनी मूर्तिउं शोजती हती. वली त्यां चक्रीए कायोत्सर्गमां रहेला प्रजुनी मूर्ति पण करावी; तथा तेनी बन्ने बाजुउंए हाथमां खेंचेली तलवारवाली नमिविनमिनी मूर्तिउं पण करावी. वली त्रगडा गढमां र- हेला, केवलज्ञानी तथा धर्मतत्व कहेता एवा प्रजुनी, एवी रीतनी चतु- र्मुखी मूर्ति पण तेमणे करावी. वली तेमणे हाथ जोडेली, तथा प्रजुस- न्मुख दृष्टिवाली, पोतानी मूर्ति पण कारिगरपासे करावी. वली तेमणे ह- र्षथी श्री नाजिराजानी, तथा मरुदेवा मातानी, अने बीजा पूर्वजोनी पण प्रासादसहित मूर्तिउं करावी. वली ते चैत्यमां रत्न तथा मणिनी बना- वेली सुनंदा तथा सुमंगलानी मूर्तिउं पण शोजती हती; तेम त्यां सर्व- ज्ञानमय ब्राह्मीनी शुज्ज मूर्ति, तथा सर्व संपदा देनारी निधानपर रहेली सुंदरीनी मूर्ति पण शोजती हती. वली त्यां पोतपोतानां वर्ण, लांठन, अने मानवाली जावि तीर्थंकरोनी मूर्तिउं पण नवघरमां रही थकी, शा- सन देवताउंसहित शोजती हती. वली त्यां जरत महाराजाए करावेली पोतानां बीजा जाइउंनी पण मणि अने रत्नोनी प्रासादसहित मूर्तिउं अत्यंत शोजती हती. एवी रीते विचित्र प्रकारनी चैत्योनी श्रेणि ते ती- र्थमां बनावीने, चक्रीए त्यां कारिगरो, चिताराउं, रखेवालो, तथा पूजा- रीउंने राख्या, तेम त्यां जिनपुजामाटे तेमणे जारी, थाल, कलश, उत्र, चामर, दीपक, आजूषण, आरतिप्रमुख उपकरणो मुक्यां. वली ते तीर्थ- मां हाथीनां आसनवालो, बन्ने जमणा हाथोमां वरदाम तथा अक्षमाला धरनारो, अने बन्ने डावा हाथोमां बीजोरुं तथा नागपाश धरनारो, तथा तपेला सुवर्ण सरखी उत्तम कांतिवालो गोमुख नामनो यक्ष पोतानी इच्छाथीज रक्षक थयो. वली सोनेरी कांतिवाली, गरुडनां आसनवाली, जमणा हाथोमां वरदाम, अक्षमाला, चक्री, तथा पाशने धरनारी, डावा हाथोमां धनुष्य, वज्र, चक्र तथा अंकुशने धरनारी, अने दक्ष एवी अ- प्रतिचक्रा नामनी शासनदेवी ते तीर्थमां रक्षक थइ.

हवे शुभ दिवसे बाहुबलि, श्रीनाभ, नमि, विनमि आदिक सूरिउ, तथा इंद्रो आदिक देवो पण त्यां एकठा थया. ते वखते इंद्रनां हुकमथी भक्तिवंत आभियोगिक देवो, गुरुए कहेलो पूजानो सामन तुरत लाव्या. पछी त्यां ते ऋषिउए शांतिस्नात्रसहित द्वादशांगोमां कहेली विधिपूर्वक चैत्योनी तथा प्रतिमाउनी प्रतिष्ठा करी; तथा संघसहित सूरिमंत्रथी पवित्र करेला वास अने अक्षतोने ध्वजदंडोपर तथा मूर्तिउपर तेउए नांख्या. ते वखते त्यां सर्व वाजित्रोनो मंगलिक ध्वनि सर्वना कर्णोने पवित्र करवा लाग्यो. एवी रीते चक्रीए करेलो प्रतिष्ठा महोत्सव त्यां थयो, तथा अधिष्टायक देवो पण त्यां प्रत्यक्ष थया. पछी चक्रीए त्यां उत्तम मंत्रना उच्चारपूर्वक सुवर्णनां कलशोथी जन्मोत्सवनी पेठे प्रभुनुं स्नात्र कर्युं. पछी तेमणे कर्पूर, अगर, कंकोल, कस्तुरी, चंदन आदिकथी प्रभुनी प्रतिमाने लेपन कर्युं; तथा साथे पोतानी कीर्तिथी जगतने पण लिप्त कर्युं; पछी चक्रीए ज्ञानी गुरुउने जमणी बाजुए बेसाड्या, तथा साधवीउने अंतःपुरनी स्त्रीउसहीत डाबी बाजुए बेसाडी. पछी चंदन, मंदार, संतान, हरिचंदन, पारिजात, कल्पवृक्ष, मल्ली, बकुल, कमल, केतकी, मालती, जुइ, करवीर, शतपत्र, जासुद, तथा कल्हार प्रमुखनां, तथा विचित्र प्रकारनी सुगंधिनां उल्लासथी खेंचाएला भमराउए करेलुं छे स्पष्ट नृत्य ज्यां, एवां पुष्पोएं करीने, इंद्र तथा चक्री प्रमुखोए प्रभुनी पूजा करी. पछी सर्व जनोए अक्षत, फल, धूप, दीपक, नैवेद्य, जल विगेरेथी पूजा करी. पछी हाथमां आरती धारण करता, तथा स्फुरायमान मुखवाला शुभारंभी चक्री, दिवसे उगता सूर्यसरखा शोभवा लाग्या. पछी इंद्र प्रमुखोए भवतापने छेदनारी तिलकनी श्रेणिउ करी. सर्व (अज्ञानरूपी) अंधकारने नाश करनारी आरतिने जमणी बाजुथी फेरवता चक्रीपर पुष्पोनी वृष्टि पडवा लागी, अने तेथी ते अत्यंत शोभवा लाग्या. वली तेनां हाथमां रहेलो, तथा एक शिखावालो मंगलदीवो, जगतमां दीपकसमान एकज आ प्रभु छे, एम जाणे कहेतो होय नहीं, तेम शोभवा लाग्यो. ते वखते हर्षित थइने चक्रीए जे जे कार्य कर्युं, तेनुं फल तो चक्रीज जाणी शके तेम छे. पछी कर्मोनी साथेज शरीरने नमावीने चक्रीए श्रीयुगादीश प्रभुने नमस्कार कर्यो. पछी रोमांचरूपी

कंचुकने धारण करीने, तथा ऋरता हर्षाश्रुथी भींजाइने, अने पोताना हाथोने मस्तकपर जोडीने चक्री नीचे प्रमाणे स्तुति करवा लाग्या के, हे प्रभु! बुद्धिरूपी धनथी हीन थएलो हुं क्यां? अने गुणोना समुद्र-तुल्य आप क्यां? पण आपनी भक्तिथी वाचाल थएलो हुं आपनी स्तुति करुं छुं. हे प्रभु! तमो अनंत, तथा जगत्पूज्य छो, तेम अनादिरूपने भजनारा छो अने आपनां यथावस्थित स्वरूपने तो योगिउ पण जाणी शकता नथी. वली हे प्रभु! आपे अन्योथी सर्वथा दुर्जय तथा आत्मा-र्थनो नाश करनारा एवा रागादिक शत्रुउने तपरूपी हथीयारथी हण्या छे; वली बीजा नामधारी देवो तो रागादिकथी विडंबना पामेला छे; तेउ अंतरंग शत्रुउने नहीं मारतां बहारना शत्रुउने मारे छे. वली हे अनंत ज्ञाननां माहात्म्यवाला एवा चारित्रमां चतुर! तथा जगतमां प्रदीप स-मान; एवा हे नाभेय भगवन्! आपनाप्रते नमस्कार थाउ? वली हे प्रभु! आपे योगनां आठे अंगो एवी रीतें बनाव्यां छे के, तेउ आठे कर्मोनो नाश करे छे. वली श्रीशत्रुंजय पर्वतप्रते रत्नसरखा, तथा श्री नाभिरा-जानां कुलमां सूर्यसरखा, तथा स्वर्ग अने मोक्षनां व्यापारवाला एवा आपनी हुं स्तुति करुं छुं. वली हे प्रभु! रत्नथी जेम सुवर्ण, तथा तेजथी जेम सूर्य, तेम आपनाथी आ शत्रुंजय पर्वत अलंकृत थयो छे. वली हे प्रभु! हुं आपनी पासेथी स्वर्गसुख, के मोक्ष, के लक्ष्मी मागतो नथी; पण फक्त आपनां चरणकमलो मारा मनमां वसो? एवी रीते स्तुति करीने चक्रीए मुकुटथी पृथ्वीतलने स्पर्श करीने श्रीयुगादीश प्रभुने पं-चांग नमस्कार कर्या. पछी श्री प्रथम प्रभुनी माता, तथा प्रथम सिद्ध एवां मरुदेवी मातानी पूजा करीने चक्रीए तेमनी नीचे प्रमाणे स्तुति करवा मांडी के, आ जगतने शत्रुउथी पराभव पामतुं जोइने, दया लावी जेणीए, अभयदान देनार प्रथम प्रभुने पोतानी कुक्षिमां धारण कर्या, एवां मरुदेवी माताने हुं बहुवार नमस्कार करुं छुं. वली जेणीए अक्षय सुखवाला मोक्षमां वास कर्यो छे, तथा चिद्रूपपणाथी जगतनो स्वभाव जाण्यो छे, तथा महा अतिशयवंत, एवां ते मरुदेवी माताने हुं त्रिविधे त्रिविधे नमस्कार करुं छुं. वली तेणीना समान परम योगने धरनारी कोइ पण स्त्री नथी; केम के, तेमणे हाथीना कुंभस्थलपर रहीने पण पोतानां

अंतरंग शत्रुउने हण्या; वली पुत्रपर बहु प्रेमवालांज होय नहीं जेम, तेम ते पोतानां पुत्रने थनारुं सुख जोवा माटे प्रथमथीज मोक्षमां गयां. वली हे माता! जगतमां जूषण समान, योगीश्वरी, तथा समस्त जावोने जाणनारां एवां जो तमो न होत, तो आ युगादीश प्रज्ञु, जगत, बोधिलाज, ज्ञान, मोक्ष, तथा (अंतरंग) वैरीउनो नाश क्यांथी होत? वली हे माता! आपनां चरणोनां नखोनां संगथी मारुं निबिड अज्ञानरूपी सर्व अंधकार नाश पामो? वली आप जगतनां प्रथम गुरुना कारणरूप बो, तेथी हुं आपनी स्तुति करुं बुं, तथा आपने नमुं बुं, अने चिंतवुं बुं. जगतनां इश्वरनी माता, योगिनी तथा जगतनी इश्वरी, अने देवोथी पण सेवाएलां एवां मरुदेवी माता माराप्रते मंगल करो? एवी रीते मरुदेवी मातानी स्तुति करीने चक्री ब्राह्मीनी मूर्तिने पूजीने तेनी स्तुति करवा लाग्या के, जे सर्व विश्वनी स्थितिरूप बे, तथा योगिउने पण ध्यान धरवा लायक बे, जवजयने हरनारी बे, माणसोने तारनारी बे, दिव्य शक्तिवाली बे, मनुष्य अने देवोथी पूजाएली बे, तथा जे मंत्ररूप स्वरूपवाली बे, एवी युगादीश प्रज्ञुनी पुत्री श्री ब्राह्मी माता मने सुख आपो? वली डोलरसरखी निर्मल एवी जे ब्राह्मी माताने, उत्कृष्ट समाधिमां रहेला योगीउ पोतानां हृदयकमलमां धारण करीने स्मरण करता थका पापोनां समूहने तजीने परम तत्व जाणे बे, एवी निर्मल शीलने धरनारी ते ब्राह्मी माताने हुं नमस्कार करुं बुं. सुर, असुर अने मनुष्योने जाणवालायक, तथा श्री युगादीश प्रज्ञुनी पुत्री, अने ब्रह्म शब्दने उत्पन्न करनारी ते ब्राह्मी माता विघ्नोनी शांतिमाटे थाउ? एवी रीते तेमनी स्तुति करीने, तथा तेमने नमीने, चक्री सुंदरीनां चैत्यमां जइ, तेने पूजीने स्तुति करवा लाग्या के, हे सुंदरी बेहेन! तमो आ पृथ्वीनां जूषणरूप लक्ष्मी बो, तथा शुज्न लक्षणवालाउप्रते तमो नित्यरूपे बो, वली तमारे माटे प्रायें करीने आ जगत तपो करे बे, तथा तमोने माने बे; वली आ जगतमां कांकरा, तथा हाडकारूप पदार्थो पण जे रत्न अने शंखरूप थाय बे, ते तमारी दृष्टिनां प्रजावथी थाय बे. वली हे जगवती! नीच वंशमां उत्पन्न थएलो माणस पण आपनां आश्रयथी कुलीन अने पंडितोने पण सेवनीक थाय बे. वली हे देवी! तमारा प्रसादथी आ

त्रणे जगत पण सघला लोकोने सेवनीक थाय छे. वली लक्ष्मीने लीधे लोकोना मनमां धर्मनो पण आदर थाय छे, माटे लोको तमारी सेवा करे छे. वली हे जगतनुं हित करनारी सुंदरी! तुंज बुद्धि, धृति तथा मति छे; तथा हे आदि देवनां कुलरूपी समुद्रप्रते लक्ष्मी समान देवी! हुं तारी स्तुति करुं छुं. एवी रीते भक्तिनां समूहथी उन्नत थया थका चक्रीए सुंदरीनी स्तुति करीने, तथा नमीने उत्कृष्ट रीते प्रभुनी पूजा करी. पछी तेमणे सुवर्ण, रूपुं, तथा वस्त्रोथी, गणधरोए प्रतिष्ठित करेला महाध्वजो सघला प्रासादोपर चडाव्या. पछी चक्रीए उत्तरासंग करीने, गुरुपासे आवी, तथा प्रदक्षिणा देइने, तेमनां चरणोनुं चंदनथी पूजन कर्युं. पछी श्रीनाभ गणधरे "सूरिमंत्रथी प्रतिष्ठित थएलुं, दृष्टिदोषने नाश करनारुं तथा गुरुनां हाथरूपी कमलोथी उत्पन्न थएलुं, तिलक तमोने मंगल आपो?" एवी रीते कहीने हर्षथी मुक्तिने वश करवामां औषधसरखुं तिलक भरत महाराजना कपालमां कर्युं. पछी चक्रीए हे क्षमाश्रमण! हुं आपने वांदवाने इच्छुं छुं, एम कहीने तेमनी अनुज्ञा मल्या बाद, तेमणे श्रीनाभ गणधरने नमस्कार कर्यो. त्यारे गुरुए पण सर्व लक्ष्मीउने वश करवामां औषधरूप, आपदारूपी सर्पप्रते गरुड समान, तथा संसारने तारनारो धर्मलाभ तेमने आप्यो. पछी चक्री हर्षपूर्वक तेमनां मुखरूपी चंद्रमांथी निकलती वाणीरूपी अमृतने पीवाने चकोरोनी पेठे तेमनी पासे बेठा. ते वखते ते चक्रीनां मुखरूपी चंद्रनां उदयथी गुरुनो ज्ञानरूपी समुद्र जाणे अंदरथी उभरायो होय नहीं, तेम देशनाना मिशथी बहार निकल्यो. जे माणसो आ तीर्थमां जिनने पूजे छे, तेउज धन्य, तथा कृतार्थ छे, अने तेउथीज आ पृथ्वी भूषित थएली छे. जे राज्यमां वेगवाला घोडा, मदोन्मत्त हाथीउ, सर्व संपदा, अनुरक्त सेवको, चामर सहित श्वेत छत्र, सिंहासन, उत्तम शय्या, शुद्ध राणीउ, संगीत, सुगंधि वस्तुउ वारांगनाउनां विलास, छत्रीस जातनां नाटको तथा तेउनां विनोदो, मले छे; ते राज्य जिनपूजाथी मले छे. जे माणस दहीं, दूध, घी, साकर, तथा चंदन, एवी रीते पंचामृतथी जिननी पुजा करे छे, ते देवरूप थाय छे. वली जे माणसो हमेशां प्रभुने पोताने हाथे पूजे छे, तेउ मोक्षमां जाय छे; दिवसमां एकवार पण जो जिननी पुजा करवामां आवे, तो अनेक भवोनुं उपा-

जैन करेलुं पाप पण नाश पामे छे. वली जे माणस प्रभुनी तीर्थोदकथी स्नात्र करीने वारवार कुसुमांजलि मुके छे, ते चारे गतिने भजनारो थतो नथी; (अर्थात् मोक्ष पामे छे.) वली जल, पुष्प, अक्षत, धूप, फल, नैवेद्य, दीपक, स्तुति, अने पत्रादिकथी पण भक्तिपूर्वक प्रभुने पूजवा. एवी रीते जिनाज्ञा पूर्वक जे माणस अष्टांगथी प्रभुनी पूजा करे छे, तेनी पासे आठे सिद्धिउ प्रगट थइने आवे छे. वली जे शुभ भाववाला माणसो साते क्षेत्रोमां उत्तम द्रव्य वावीने समय आव्ये तेने भावनारूपी पाणीथी सिंचे छे; तेउ आ चौद रज्जु प्रमाण लोकने भेदीने समाधिथी अनंत ज्ञान तथा अनंत सुखमय मोक्षने मेलवे छे. तेमां प्रथम मणि, रत्नादिक, सुवर्ण, रूपुं, पत्थर, अथवा काष्टनुं जिनमंदिर बंधाववुं; वली जेउ फक्त घासनां पण जिनालयो बंधावे छे, तेउ पण देवलोकमां अखंडित विमानोने मेलवे छे. वली तमारी पेठे जेउ उत्तम रत्न अने सुवर्ण आदिकथी जिनमंदिरो बंधावे छे, तेवा पुण्यशालीउनां उत्तम फलने तो कोण जाणी शके तेम छे? जिनमंदिरमां जेटलां काष्टादिकनां परमाणुउ होय छे, तेटला लाख पल्योपम सुधि, तेनो बनावनार स्वर्गसुख भोगवे छे. वली नवुं जिनमंदिर बंधाववामां जेटलुं फल थाय छे, तेथी आठगणुं फल तेनो जिर्णोद्धार करवाथी विवेकीने थाय छे. वली शत्रुंजयादिक तीर्थोमां जेउ प्रासादो तथा प्रतिमाउ करावे छे, तेउनां पुण्यने तो ज्ञानीज जाणी शके. माटे मणि, रत्न, सुवर्ण, रुपुं काष्ट, पत्थर अने माटीनां पण एक अंगुठानां प्रमाणथी मांडीने एकसोने सात अंगुठानां प्रमाणसुधिनां, जेउ शुद्ध भावथी जिनबिंबो करावे छे, तेउने मुक्तिरूपी लक्ष्मी वश थाय छे. वली जे माणस एक आंगुलनां प्रमाणवालुं पण जिनबिंब बनावे छे, ते भवांतरमां एक छत्रवालुं (समस्तपृथ्वीनुं) राज्य मेलवे छे. वली जेम मेरुथी कोइ बीजो पर्वत मोटो नथी, तथा जेम कल्पवृक्षथी बीजुं कोइ वृक्ष श्रेष्ट नथी, तेम जिनबिंब कराववा समान बीजो कोइ धर्म नथी. जिनबिंबो बनावीने दुर्गतिथी कोने भय छे? केम के, जेउ सिंहपर चडेला छे, तेउने शियाल क्यांथी पराभव करी शके तेम छे? जेउये गुरुनी आज्ञा प्रमाणे जिनबिंबो भराव्यां छे, तेउनां घरनां आंगणामां त्रणे लोकोनी संपदा दासीउ थइ रहे छे. वली जे माणस सूरिमंत्रथी अरिहंत प्रभुनी प्रतिष्ठा

करावे छे, ते अरिहंतपदवी पामे छे; केम के, वाव्याप्रमाणे फल निपजे छे. जेटला हजार वर्षोसुधि लोको जिननी पूजा करे छे, तेटला कालसुधि ते बिंबनां करनारने तेनां फलनो अंश मले छे. वली बिंबोनी प्रतिष्ठा करवाथी बन्ने लोकमां हितकारी एवुं जे फल प्राणीने थाय छे, ते तो केवलीज जाणी शके. वली (दरेक कार्यमां) करनारने, करावनारने, अनुमोदन करनारने तथा सहाय करनारने शुभाशुभ बन्ने तुल्य फल थाय छे, एम श्री जिनेश्वर प्रभुए कहेलुं छे. वली जे देशमां अथवा जे नगरमां अरिहंत प्रभुनां बिंबनी प्रतिष्ठा थाय छे, त्यां रोग, डुकाल के, वैर होतां नथी. वली जे शुभ चित्तवाली स्त्री जिनेश्वर प्रभुनां स्नात्र माटे पाणीथी भरेली गागर पोतानां मस्तकपर उपाडे छे, ते चक्रवर्तीनी पटराणी थइने, मोक्ष जाय छे. वली जीवविनानुं जेम शरीर, विद्याविनानो उत्तम पुत्र, आंखोविनानुं उत्तम मुख, पुत्र विनानुं उत्तम कुल, पाणी विनानुं तलाव, तथा सूर्य विनानुं जेम आकाश तेम प्रतिष्ठा विनानुं बिंब शोभतुं नथी. वली ज्ञानविना संसार भ्रमण थाय छे, अने ज्ञानथी मोक्षनो संगम थाय छे. सिद्धांतनां आराधनरूप ज्ञान, द्रव्यथी अने भावथी एम बे प्रकारनुं छे. ज्ञाननां पुस्तकोनी रक्षामाटे कवली, पाठां, रूमाल विगेरे आपवां; तेनीपासे, दीपक अने धूप करवो, तेपर वासक्षेप नाखवो, तेनी पासे संगीत करवुं, अष्टमंगल आलेखवां, तथा तेउनुं फल, पुष्प, अक्षत विगेरेथी पूजन करवुं. ए ज्ञाननुं द्रव्याराधन छे. ज्ञानने सांभलवुं, तेपर श्रद्धा राखवी, भणाववुं, तेम ते ज्ञाननां जाणनारनी भक्ति करवी, ते ज्ञाननुं भावाराधन छे. हे राजन्! एवी रीते करेली आगमनी पूजा भवरूपि जडतानो नाश करनारी, तथा केवलज्ञानने उत्पन्न करनारी छे. ज्ञाननी पूजा करवाथी माणसो चक्रीना तथा इंद्रादिकनां भवने मेलवीने मोक्ष जाय छे. चतुर्विध संघनी पूजा अने उपासना करवी; ते चारे देवो लोकोत्तर सुख देनारां छे. जेने घेर संघ आवे छे, तेना हाथमां चिंतामणि रत्न, तेना आंगणामां कल्पवृक्ष, तथा तेनीपासे कामधेनु आवी जाणवी; तेम तेनुं कुल कलंकरहित जाणवुं. वली जेनां मस्तकने संघनां चरणोनी रज स्पर्श करे छे, ते पवित्र माणसने तीर्थ सेवानुं फल थाय छे. पापोनां समूहरूपी गर्मीने दूर करवामां मेघनी श्रेणि सरखो. दारिद्र्यरूपी रात्रिने नाश करवा

सूर्यसरखो, तथा कर्मरूपी हाथीने मारवामां सिंहसरखो सनातन संघ जयवंतो वर्तो? जेणे फल, तांबुल, वस्त्र, ज्ञोजन, चंदन तथा पुष्पोथी श्री संघनी सेवा करी ढे, तेने सर्व उत्तम फल मळ्युं ढे. एवी रीते हे चक्री! जैन राज्यमां रहेलां आ साते क्षेत्रो हमेशां फलदायक ढे; अने तेउमां वावेलुं धनरूपी बीज विघ्नरहित उदय पामे ढे. एवी रीते मुनिना वचनरूपी अमृतने पीपीने पण जाणे अतृप्त थया होय नहीं, तेम मनमां आश्चर्य थश्ने ते चक्री मस्तक धुणाववा लाग्या. पढी गुरुनां चरणोने तथा बीजा मुनिउने पण नमस्कार करीने, मुनिनी वाणीनुं स्मरण करता थका चक्री पोताने स्थानके आव्या. त्यां तेमणे अत्यंत रसवाली षट रसनी रसवती जमीने, आनंदित थइ क्षणवार उत्तम ज्ञद्रासन पर निद्रा करी. पढी चक्री सोमयशा, शक्तिसिंह, तथा सुषेण आदिकथी वींटाया थका इंद्रना आवासे आव्या. ते वखते इंद्र पण पोतानां आवास प्रते चक्रीने आवता जोश्ने आनंद पामतो थको पोतानां आसनथी उठ्यो. पढी महोदयवाला तेउ बन्ने एक आसनपर बेठा थका अत्यंत शोज्ञवा लाग्या. पढी त्यां परस्पर केटलीक कथाउ कर्या बाद, इंद्र चक्रीने कहेवा लाग्या के, हे चक्री! श्री युगादीश प्रज्ञु अमारे पूजवा योग्य ढे, केम के, अमो तेउनां चाकरो ढीयें; अने तमो तेमना चरमशरीरी पुत्र ढो; वली तमो संघपति तथा तीर्थनो उद्धार करनारा ढो, तेथी सर्वथा प्रकारे पूजनिक ढो; वली तमोए करेली आ पूजानां अनुवर्तनथी लोको पण तेम करशे; तेम वली जो हुं तेम करीश, तो वली विशेषथी तेनुं अनुकरण थशे; पढी चक्रीए पण तेम करवुं अंगीकार कर्याथी इंद्रे देवो सहित विधिपूर्वक कुसुमादिकथी पूजा करी; अरिहंत प्रज्ञुनी आशिषथी, विविध प्रकारनां द्रव्योवाला पुष्पनी माला हर्षथी तेणे पोतानां कंठमां स्थापन करी. पढी देवोसहित क्षीरसमुद्रे जइ त्यांथी कलशोमां उत्सवसहित जल ज्ञरी, पाढा आवी तीर्थंकरनां चरणोनुं तेणे हर्षथी स्नात्र कर्युं; तथा त्यां सुपात्रोने दान आप्युं. ते दिवसथी लोकोमां ते महान इंद्रोत्सव प्रसिद्ध थयो, केम के, जेम महान पुरुषो वर्ते ढे, तेम लोको पण ते करे ढे. एवी रीते ज्ञरत चक्रीए, तथा इंद्रे पूजा करी, त्यारथी, विविधोदयवाली बहुविध जिनपूजाउ प्रचलित थइ. पढी इंद्रनी

आज्ञाथी त्यां अप्सराओए, तथा हाहा हुहु विगेरे गांधर्वोए लोकोने हर्ष आपनारुं संगीत कर्युं. संगीत त्रणे लोकोने वश करनारुं, स्वर्गादिक सुख आपनारुं, तथा सर्व लोकोनां सर्व अर्थोने साधनारुं छे; संगीत सुखदुः-खमां सरखुं छे; तथा ते द्राक्ष अने शेलडीना रसथी पण अधिक (मिठा-शवालुं) छे, तेम जिन पूजामां ते संगीत पापने हरनारुं छे; वली तेणे सु-वर्ण प्रते जाणे सुगंध लाववानी इछाथीज होय नहीं तेम, ते तीर्थमां विशेषे करीने मुनिओनी त्रिविधे पूजा करी. वलि त्यां तेणे सुवर्ण, रत्न, रूपुं, जल, अन्न तथा वस्त्रोथी, फरीने न आवे एवुं याचकोनुं दारिद्र दूर कर्युं. वली भरत राजाए ते तीर्थनी पूजा माटे ते सुराष्ट्र देश आपी दीधो; अने त्यारथी ते पृथ्वीमां "देवदेश" तरिके प्रसिद्ध थयो.

हवे एक दिवसे ते चक्री अने इंद्र एक आसनपर वेसीने परस्पर कथा रूपी अमृतरसने पीता हता. तेटलामां मोटा हदोनां आवर्तोरूपी नाभिवाली, विकस्वर कमलरूपी मुखवाली, कांठाओ रूपी जघनथी मनो-हर, रसवली, (पाणीवाली) अंदर रहेला वेटोरूपी स्तनोथी मनोहर लागती, हंसोरूपी वस्त्रवाली, लावण्यने धरनारी, वृक्षोनी घटाथी सूर्यने न जोती, शुभने धारण करनारी, पुण्यनी सोवतवाली, पूर्वाब्धिरूपी प-तिना संगवाली, पोताना तरंगोथी नाचती, चकोररूपी आंखोवाली, स्वस्थ, तथा उत्तम पर्वतथी (राजाथी) उत्पन्न थएली एवी कुलस्त्री सरखी शत्रुंजयी नदीने भरत महाराजे आगल रहेली दीठी. चकोर, चातक, चक्रवाक, हंस, तथा सारसथी शोभीती थएली, मोजांओथी चपल कमलोवाली, भमराओना गायनोवाली, तथा बन्ने शिखरो बन्ने मर्यादानी पेठे रहेली, एवी ते शत्रुंजयी नदीने जोइने भरत राजाए इंद्रने पुछ्युं के हे इंद्र ! आ नदी कइ छे ? त्यारे इंद्रे पण कह्युं के, हे चक्री ! आ शत्रुंजयी नामनी नदी छे, अने ते शत्रुंजय पर्वतनां आश्र-यथी गंगाथी पण अधिक फल देनारी छे. आ नदीमां रहेला हदोनुं जो जुदुं जुदुं माहात्म्य कहेवामां आवे, तो सुरेस्वर बृहस्पतिना पण सेंकडो वर्षो वीती जाय. पूर्वे केवलनाणी नामना तीर्थंकरनां स्नात्र माटे अहीं इशानेंद्र गंगाने उतारी हती. ते नदी वैताढ्य पर्वतथी जमीननी अंद-रज वहे छे, तथा आ शत्रुंजय पासे ते प्रगट थाय छे, अने तेथी तेनुं

" शत्रुंजयी " नाम पडेलुं छे. आ नदीनां जलनां स्पर्शथी कांति, कीर्ति, लक्ष्मी, बुद्धि, धृति, तथा समाधि थाय छे, अने सिद्धिउं वश थाय छे. वली हंस, सारस, चक्रवाक आदिक जे पक्षिउं पण आ नदीना पाणीने स्पर्श करे छे, तेउंने पापरूपी मेल चोंटतो नथी. वली आ नदीनां पाणीथी सर्व महारोगो नाश पामे छे; वली जे माणसो आ नदीना कांठापर उगेलां वृक्षोना फलो खाय छे, तथा छ माससुधि जेउं आनुं पाणी पीए छे, तेउं वात, पित्त, कुष्ट आदिक रोगोने क्रिडामात्रमां जीतीने सुवर्ण सरखी कांतिवाला थाय छे; वली आ नदीनां जलनां स्नानथी शरीरमांथी पापो पण चाल्या जाय छे, त्यारे औषधोथी साध्य एवा वातपित्तादिकनी तो वातज शी करवी ? आ शत्रुंजयी नदी स्पर्शथी पण सर्व तीर्थोनां फलो देनारी, तथा सर्व पापोने हरनारी छे; वली हे चक्री! जेनां पाणीनां स्पर्शथी शांतनु राजानां पुत्रो सुख पाम्या, एवा आ नदीना ऊहनुं तमो माहात्म्य सांजलो ?

आ जरत खंडमां श्रीपुर नामनुं नगर छे, त्यां शत्रुउंने नाश करनारो शांतनु नामे राजा हतो; तेनी सुशीला नामनी स्त्रीए एक दहाडो स्वप्नमां अति धूसर धूमकेतुने जोइने, ते वात पोताना स्वामीने तुरत कही. अनुक्रमे ते स्वप्नने अनुसारे तेणीने कुलक्षणो पुत्र थयो; अने तेज वखते राज्यलक्ष्मीना मुख्य अंगरूप हाथीउंनुं सैन्य नाश पाम्युं. वली फरीने पण तेणीने डुष्ट स्वप्नथी सूचित हीन पुत्र थयो, अने ते वखते घोडाउंनुं सैन्य नाश पाम्युं. तेवीज रीते त्रीजो पुत्र थवाथी, जीवहिंसाथी जेम धर्म, तथा लोजथी जेम सर्व गुणो, तेम राजानी सर्व संपदा नाश पामी. चोथा पुत्रनी जन्मवार्ता सांजलतांज शत्रुउंए सैन्य सहित आवीने ते श्रीपुर नगरने घेरो घाल्यो. त्यारे सघलो जंडार विगेरे क्षीण थवाथी ते शांतनु राजा पोतानी स्त्री सुशीलाने तथा पुत्रोने लेइने रात्रिए कंइक नासी गयो. तेनां नील, महानील, काल, तथा महाकाल नामना ते चारे पुत्रो साते व्यसनोमां लीन थया. जुगार, मांसजोजन, मदिरापान, वेश्यागमन, चोरी, शिकार, तथा परस्त्रीगमन, ए नामनां सात व्यसनो उत्तम जनोए कहेलां छे. जुगारथी बीजां व्यसनो पण थाय छे, माटे बन्ने लोकमां अहितकारी जुगारनो त्याग करवो. वली

जे मांस, पोतानां शब्दथीज कहे छे के, "जेने तुरत नरकमां जवुं होय, ते मने नक्षण करे" माटे ते मांस नक्षणनो त्याग करवो. जुगारथी धन, यश, धर्म, बंधुवर्ग तथा कुलनो क्षय थाय छे, तथा तेथी दुःखनां समूहो देनारी नरक अने तिर्यंचनी गति मले छे. जे दुर्बुद्धिउ जीजनां स्वादथी मांस खाय छे, तेउने शीयाल, अने पिशाच सरखा नरकगामी जाणवा. जे मदिरापान अनर्थोनुं मूल, बुद्धि, कांति अने यशनो नाश करनारुं, तथा पोतानी माता अने पोतानी स्त्री बच्चेना अंतरने पण नहीं जणावनारुं छे, ते मदिरापान कोण अंगीकार करे? वली बन्ने लोकनो विघात करनारुं परस्त्रीगमन तजवुं; तेम पापरूप वेश्या प्रते जरा पण प्रीति करवी नहीं. जे चोरी आ लोकमां पण प्रत्यक्ष रीते वध, बंधनादिक दुःखो करनारी छे, तेम परलोकमां पण दुखदायी छे, एम धारी उत्तम बुद्धिवाने तेनो त्याग करवो. चोरीथी आ लोकमां पण कर्ण, नाक, आंख, हाथ, पग विगेरेने पीडा थाय छे, तथा परलोकमां चांडालकुलमां उत्पत्ति थाय छे. धर्म रूपी वृक्षनां मूलमां अग्नि सरखा, कीर्तिरूपी महेलपर मशीना लेप सरखा, एवा शिकारने सर्वज्ञ प्रजुए धिक्कारेल छे, माटे तेनी वार्ता पण सांजलवी नहीं. जे शिकारना व्यसनी माणसो प्राणीउने मारे छे, तेउ दुःख, दरिद्रता, तथा दुष्ट पीडानां जोगवनारा थाय छे. एवी रीतना साते व्यसनो सेवनारा ते चारे पुत्रो कुष्टी थया. कदरूपा, क्रूर, कुष्टी, तथा कुसंगमां पडेला ते पुत्रो, कुग्रहो जेम चंद्रने, तेम राजाने वींटीने रहेता हता. एवी रीते ते पुत्रो सहित ते राजा एक देशमांथी बीजा देशमां, तथा एक वनमांथी बीजा वनमां जमवा लाग्यो, पण कोइ जगोए सुख पाम्यो नहीं. हमेशां अत्यंत लांजन करतां छतां पण रोगथी ग्रस्त थएला ते पुत्रो राजाना मनमां एवी चिंता उत्पन्न करवा लाग्या के, दारिद्रपणामां पण चैरीउ विगेरेथी डरीने जे जीविताशा प्राणीउ करे छे, ते केवल क्लेशमाटेज थाय छे; माटे हवे तो थाजे गमे तेम करीने पण आ स्त्री तथा पुत्रोने छेतरीने, तुरत हुं आपघात करीश, एम विचारीने ते कोइक मोटा पर्वतपर चड्यो; त्यां तेणे एक उंचुं जिनमंदिर जोयुं. प्राय प्रयाणना प्रस्थान समये जाणे ते नाशुं तेमनी इछा करतो होय नहीं, तेम ते, कुटुंब सहित ते जिनमं-

“ शत्रुंजयी ” नाम पडेलुं छे. आ नदीनां जलनां स्पर्शथी कांति, कीर्ति, लक्ष्मी, बुद्धि, धृति, तथा समाधि थाय छे, अने सिद्धिउं वश थाय छे. वली हंस, सारस, चक्रवाक आदिक जे पक्षिउं पण आ नदीना पाणीने स्पर्श करे छे, तेउंने पापरूपी मेल चोंटतो नथी. वली आ नदीनां पाणीथी सर्व महारोगो नाश पामे छे; वली जे माणसो आ नदीना कांठा पर उगेलां वृक्षोना फलो खाय छे, तथा छ माससुधि जेउं आनुं पाणी पीए छे, तेउं वात, पित्त, कुष्ट आदिक रोगोने क्रिडामात्रमां जीतीने सुवर्ण सरखी कांतिवाला थाय छे; वली आ नदीनां जलनां स्नानथी शरीरमांथी पापो पण चाल्या जाय छे, त्यारे औषधोथी साध्य एवा वातपित्तादिकनी तो वातज शी करवी ? आ शत्रुंजयी नदी स्पर्शथी पण सर्व तीर्थोनां फलो देनारी, तथा सर्व पापोने हरनारी छे; वली हे चक्री! जेनां पाणीनां स्पर्शथी शांतनु राजानां पुत्रो सुख पाम्या, एवा आ नदीना उहनुं तमो माहात्म्य सांजलो ?

आ जरत खंडमां श्रीपुर नामनुं नगर छे, त्यां शत्रुउंने नाश करनारो शांतनु नामे राजा हतो; तेनी सुशीला नामनी स्त्रीए एक दहाडो स्वप्नमां अति धूसर धूमकेतुने जोइने, ते वात पोताना स्वामीने तुरत कही. अनुक्रमे ते स्वप्नने अनुसारे तेणीने कुलक्षणो पुत्र थयो; अने तेज वखते राज्यलक्ष्मीना मुख्य अंगरूप हाथीउंनुं सैन्य नाश पाम्युं. वली फरीने पण तेणीने डुष्ट स्वप्नथी सूचित हीन पुत्र थयो, अने ते वखते घोडाउंनुं सैन्य नाश पाम्युं. तेवीज रीते त्रीजो पुत्र थवाथी, जीवहिंसाथी जेम धर्म, तथा लोजथी जेम सर्व गुणो, तेम राजानी सर्व संपदा नाश पामी. चोथा पुत्रनी जन्मवार्ता सांजलतांज शत्रुउंए सैन्य सहित आवीने ते श्रीपुर नगरने घेरो घाल्यो. त्यारे सघलो जंडार विगेरे क्षीण थवाथी ते शांतनु राजा पोतानी स्त्री सुशीलाने तथा पुत्रोने लेइने रात्रिए कंइक नासी गयो. तेनां नील, महानील, काल, तथा महाकाल नामना ते चारे पुत्रो साते व्यसनोमां लीन थया. जुगार, मांसजोजन, मदिरापान, वेश्यागमन, चोरी, शिकार, तथा परस्त्रीगमन, ए नामनां सात व्यसनो उत्तम जनोए कहेलां छे. जुगारथी बीजां व्यसनो पण थाय छे, माटे बन्ने लोकमां अहितकारी जुगारनो त्याग करवो. वली

जे मांस, पोतानां शब्दथीज कहे छे के, “जेने तुरत नरकमां जवुं होय, ते मने भक्षण करे” माटे ते मांस भक्षणनो त्याग करवो. जुगारथी धन, यश, धर्म, बंधुवर्ग तथा कुलनो क्षय थाय छे, तथा तेथी दुःखनां समूहो देनारी नरक अने तिर्यंचनी गति मले छे. जे दुर्बुद्धिउ जीवनां स्वादथी मांस खाय छे, तेउने शीयाल, अने पिशाच सरखा नरकगामी जाणवा. जे मदिरापान अनर्थोनुं मूल, बुद्धि, कांति अने यशनो नाश करनारुं, तथा पोतानी माता अने पोतानी स्त्री वच्चेना अंतरने पण नहीं जणावनारुं छे, ते मदिरापान कोण अंगीकार करे? वली बन्ने लोकनो विघात करनारुं परस्त्रीगमन तजवुं; तेम पापरूप वेश्या प्रते जरा पण प्रीति करवी नहीं. जे चोरी आ लोकमां पण प्रत्यक्ष रीते वध, बंधनादिक दुःखो करनारी छे, तेम परलोकमां पण दुखदायी छे, एम धारी उत्तम बुद्धिवाने तेनो त्याग करवो. चोरीथी आ लोकमां पण कर्ण, नाक, आंख, हाथ, पग विगेरेने पीडा थाय छे, तथा परलोकमां चांडालकुलमां उत्पत्ति थाय छे. धर्म रूपी वृक्षनां मूलमां अग्नि सरखा, कीर्तिरूपी महेलपर मशीना लेप सरखा, एवा शिकारने सर्वज्ञ प्रभुए धिक्कारेल छे, माटे तेनी वार्ता पण सांभलवी नहीं. जे शिकारना व्यसनी माणसो प्राणीउने मारे छे, तेउ दुःख, दरिद्रता, तथा दुष्ट पीडानां भोगवनारा थाय छे. एवी रीतना साते व्यसनो सेवनारा ते चारे पुत्रो कुष्टी थया. कदरूपा, क्रूर, द्वेषी, तथा कुसंगमां पडेला ते पुत्रो, कुग्रहो जेम चंद्रने, तेम राजाने वींटीने रहेता हता. एवी रीते ते पुत्रो सहित ते राजा एक देशमांथी बीजा देशमां, तथा एक वनमांथी बीजा वनमां भमवा लाग्यो, पण कोइ जगोए सुख पाम्यो नहीं. हमेशां अत्यंत भोजन करतां छतां पण रोगथी ग्रस्त थएला ते पुत्रो राजाना मनमां एवी चिंता उत्पन्न करवा लाग्या के, दारिद्रपणामां पण वैरीउ विगेरेथी डरीने जे जीविताशा प्राणीउ करे छे, ते केवल क्लेशमाटेज थाय छे; माटे हवे तो आजे गमे तेम करीने पण आ स्त्री तथा पुत्रोने छेतरीने, तुरत हुं आपघात करीश. एम विचारिने ते कोइक मोटा पर्वतपर चड्यो; त्यां तेणे एक उंचुं जिनमंदिर जोयुं. प्राण प्रयाणना प्रस्थान समये जाणे ते भातुं लेवानी इछा करतो होय नहीं, तेम ते, कुटुंब सहित ते जिनमं-

दिरमां गयो. त्यां तेणे अद्भूत आकारवाला, तथा सर्व तेजोनां साररूप, अने जिननां चरणोने नमता एक पुरुषने जोयो. तेने जोवाथी अधिक नाववालो थएलो ते राजा, पोताना आत्माने जिननी साथे ऐक्य करतो थको तेमने नमस्कार करवा लाग्यो, (मनशुद्धिथी करेली अल्प जिननक्ति पण परलोकनी पेठे आ लोकमां पण उत्तम सुख देनारी बे.) पबी ते पुरुषे ते राजाने कह्युं के, हे नद्राकृति! हुं नागकुमारोनो स्वामी धरणेंद्र बुं; तथा तारी जिननक्तिथी हुं तारापर तुष्टमान थएलो बुं, माटे कंइ वर माग? तेनां वचनथी खुशी थएलो ते राजा तेने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, आपनुं दर्शन खरेखर मने संपदा देखाडनारुं बे. वली हे धरणेंद्र! हुं आपनी पासेथी वर तो पबी मागीश; पण मने प्रथम ते वात कहो के, मारा आ पुत्रोनो जन्म थते बते, अनुक्रमे मारी संपदानो नाश केम थयो? त्यारे धरणेंद्रे ज्ञानथी तेनां नवोने जाणीने कह्युं के, महा वनमां आ नील नामनो पूर्व नवे निल्ल हतो. क्रूर आशयवालो, तथा लोकोने मारनारो ते निल्ल एक दहाडो यात्रिक लोकोने लुंटीने मार्गे पाबो वल्यो; त्यां ते धनुष्य चडावीने वनमां हरिणने शोधतो हतो, तेटलामां तेणे ध्यानमां रहेला एक मुनिने जोया. त्यारे तेणे मुनिने हरिण विषे पुबवाथी मुनि ज्यारे बोल्या नहीं, त्यारे ते निल्ले ते मुनिनेज बाणथी मार्या; त्यारे मुनि पण "नमोऽर्हद्भ्यः" एम कहेता थका मृत्यु पाम्या; अने तेज दिवसे ते निल्लने पण एक सिंहे मारी नांख्यो; त्यारे ते निल्ल मरतां थकां चिंतववा लाग्यो के, अरे! में दुष्टे आ निरपराधि मुनिने मार्या, तेनुं खरेखर मने आ फल मल्युं. पबी ते निल्ल त्यांथी मरीने मुनिहिंसानां पापथी सातमी नरके गयो, अने त्यां तेणे तेंत्रीस सागरोपम सुधि अधिक अधिक दुःख सहन कर्युं. पबी बीजा पण सिंह, वाघ आदिकनां बहु नवो करीने पाबो ते नरकमां गयो; माटे हे राजन्! मुनिनी हिंसा महा नयंकर बे; तेम मुनिनी निंदा पण महा दुस्तर बे, अने मुनिजननी उपेक्षा पण महा पापोनी करनारी बे. हवे अंत समये तेणे मुनिहिंसानां पापनी जे गर्हणा करी हती, तेथी ते नरकमांथी उधरीने आ तारो नील नामनो पुत्र थयो बे; अने हजु पण तेनुं केटलुंक पाप बा-

की रह्युं छे; हवे आ तारो महानील पुत्र पूर्वे कंका नामनी नगरीना भीम राजानो स्वल्प धनवालो शूर नामनो क्षत्रीय सेवक हतो. एक दहाडो राजानो प्रधान बदलाइ जवाथी पोतानो गरास पोताने नहीं मलवाथी, दरिद्रपणाथी दुःखित थइ, पोताने घेर गयो. त्यां ते रसोइने सारी नरती करवा लाग्यो; त्यारे तेनी स्त्रीए तेने कह्युं के, हे प्राणेश! सारी वस्तुउ मारी पासे नथी, माटे हुं शुं करुं? स्त्रीनां ते वचनथी क्रोधायमान थइने तेणे तेणीने पत्थर मार्यो, त्यारे ते मुर्छा खाइ मृत्यु पामी. त्यारे तेनी पुत्रीए त्यां कोलाहल करवाथी, त्यां भमतो कोटवाल, ते सांभली आवी पहोंच्यो, पछी कोटवाल तेने बांधीने राजापासे लेइ गयो; त्यारे राजाए तेने शूलीए चडाववानो हुकम कर्यो. त्यां कोइ मुनि पासेथी पंच नमस्कार सांभलीने, तथा तेमां आदरयुक्त थइने, ते शूलिनी वेदना सहन करी, मृत्यु पामी ते नरके गयो. त्यां स्त्रीवधथी उत्पन्न थयेलुं कर्म भोगवीने, हे राजन्! नमस्कारनां स्मरणथी ते आ तारा पुत्रपणे उपज्यो छे. माटे शरणविनानी तथा हमेशां बीकण एवी स्त्रीने मारवी नहीं, केम के कुपित थएली स्त्री बन्ने लोकनां घातमाटे थाय छे. हवे आ तारो त्रीजो पुत्र पूर्वे कोइ महाकामी, तथा वेश्या आदिकनुं गमन करनारो शेठनो पुत्र हतो, ते हमेशां देवगुरुनी निंदा करनारो तथा धर्मनो नाश करनारो हतो, तेम द्रव्य अने यौवननां मदथी मातापितानी पण ते आज्ञा मानतो नहीं. देव, धर्म अने तत्वोनां कारणरूप सुगुरुज छे; माटे जेणे सुगुरुनी निंदा करेली छे, तेणे ते त्रणेनो नाश कर्यो छे. वली हे राजन्! जे देव, धर्म अने गुरुनी निंदा करे छे, ते चांडालोमां भव करी, खरेखर नरकमां जाय छे. देवनिंदा करनारने बोधिबिज, मोक्ष, स्वर्ग, उत्तमकुल, के शुद्ध द्रव्यनी प्राप्ति थती नथी. जिननी निंदाथी, मुंगापणुं, गुंगलापणुं, पित्त, कोढ आदिक रोगो थाय छे, तेम गुरुनिंदा करवाथी अपयश, अकालमृत्यु, दुःख, दुर्गंधिपणुं, तथा पागं आदिक रोगो पण थाय छे. धर्मनी निंदा करनार माणस वारंवार नरक अने तिर्यंच योनिमां जाय छे, तथा तेने मनुष्य भव मली शकतो नथी. वली ते त्रणेनी निंदा करनार घोर पापी छे, अने तेना संगथी बीजाउ पण मलीन थाय छे. पछी ते पुत्रने एवो जाणीने

शेठे विचार्युं के, आ डुराचारी आपणा कुलने कलंक लगाडनारो छे, माटे तेने कचरानी पेठे घरमांथी कहाडी मेलवो; एम विचारि ते शेठे तेने क्रोधथी नगरमांथी कहाडी मेल्यो, त्यारे ते (टोलांथी) ज्रष्ट थएला हरिणनी पेठे वनमां जमवा लाग्यो. पछी ते लूताप्रमुख मुखनां रोगनी पीडाथी मृत्यु पामीने छठी नरके जइ आ तारो काल नामनो पुत्र थयो छे. वली आ तारो चोथो महाकाल नामनो पुत्र पूर्वजवे ब्राह्मणनो पुत्र हतो, तथा ते जिक्षा मागी आजीविका चलावनारो तथा डुःखीउ हतो. डुःखें जरी शकाय एवा उदरने जरवामाटे ते देशोदेशमां जमतो हतो; छेवटे ते कोइक जिननां पूजाराने घेर चाकरी रह्यो. एक दहाडो ते देवनां आजूषणो तथा मुनिनां उपकरणो चोरीने, एक वेश्याने दइ आव्यो, केम के ते, ते व्यसनमां अनुरक्त थयो हतो. देवद्रव्य ग्रहण करवाथी सात पेहेडीउंनो दाह थाय छे; वली देवद्रव्यनां विनाशथी प्राणी सात वार अत्यंत डुःखदायी नरकमां जाय छे; तेम गुरुद्रव्य विषसहित जोजन सरखुं छे. देवद्रव्य तथा गुरुद्रव्यथी जीवितनी जे आशा राखवी, ते धत्तुराथी तथा विषथी मिश्रित अन्ननां जोजन सरखुं छे. पछी छेवटे कुष्टना रोगथी पीडित थइने केटलेक दिवसे मृत्यु पामीने, नरकमां जइ आवी, ते चांडालकुलमां उत्पन्न थयो. अने त्यांथी मरीने आ तारो पुत्र थयो छे. एवी रीते तेउं मुनिहिंसाथी, स्त्रीहिंसाथी, देवगुरुनी निंदाथी, तथा देवद्रव्यनुं अने गुरुद्रव्यनुं जक्षण करवाथी, तारा कुलमां उत्पन्न थया छे; वली ते जिल्ल अंतकाले मुनिस्मरणथी, क्षत्री परमेष्टीनां स्मरणथी, देवगुरुनो निंदक सत्कुलनी उत्पत्तिथी, तथा चोर जिनदर्शनथी आ मनुष्यपणे उपन्या छे. वली तेउंनां बाकी रहेलां पापथी तुं राज्यज्रष्ट थयो छे, अने तेथी तुं हवे आपघातनी इछा कर नहीं. हवे तुं सुराष्ट्र देशमां जइ, शत्रुंजयगिरिपासे रहेली शत्रुंजया नदीने सेव? केम के, ते सर्व पापोने नाश करनारी छे. वली ते नदीनां कांठापर रहेलां वृक्षोनां फलोने खाजे, अने तारा पुत्रोने पण खवरावजे, तथा ते शत्रुंजी नदीनां जलथी श्री जिनेश्वरप्रजुनुं स्नात्र करजे. वली तेज नदीनां कांठापर प्राणीउंनां सर्व पापोने हरनारुं, तथा पूर्वे सूर्ये बनावेलुं जिनमंदिर छे. वली ते पापोनी शांतिमाटे विधिपूर्वक त्रिकरणशुद्धिथी जिनपूजन करवुं, तथा

जीवोनी रक्षा करवी. वली त्यां रहीने शुद्ध मनथी, टाढतडका आदिकने सहन करीने छठ, अठम आदिक तप करजे. एम करतां थकां त्रण, चार, पांच अथवा छ मासमां ते तारा पुत्रो निरोगी थइने सुखी थशे. एवी रीते कुकर्मोथी मुकाइने देवसरखा शरीरवाला थइने तेउ पोतानुं राज्य जोगवशे, तथा छेवटे स्वर्गनुं राज्य पण जोगवशे. एवी रीतनां धरणेंद्रनां वचनो सांजलीने, ते राजाए स्त्री तथा पुत्रोसहित तेने नमस्कार कर्यो. पछी धरणेंद्रे तेने कह्युं के, हे राजन्! छ मास पछी ते नदीने किनारे तुं मारुं स्मरण करजे, जेथी हुं तारा शत्रुउने जीती तने तारुं राज्य अपावी देइश. एम कहीने धरणेंद्र गयो. पछी राजा पण त्यां प्रजुने नमीने, मनमां ते धरणेंद्रनुं वचन स्मरण करतो थको चालवा लाग्यो. पछी घणा देशोने उलंगीने ते सौराष्ट्र देशमां पहोंच्यो, तथा आश्चर्यसहित समताथी ते शत्रुंजयगिरिने जोवा लाग्यो. पछी त्यां ते शत्रुंजयी नदीने कांठे तृणनी कुटीर (ऊंपडी) करीने कुटुंबसहित समताथी रह्यो. हवे त्यां तेउ सघला ते नदीना किनारापरनां वृक्षोनां फलो खाता थका, तथा हमेशां त्रिकाल जिनस्नात्र करता थका, तथा प्रजुने नमता थका रहेवा लाग्या. त्यां एक मासमांज तेणे पोतानां पुत्रोने सुवर्णसरखी कांतिवाला जोया, तो पण धरणेंद्रनी आज्ञाथी ते त्यां छ माससुधी रह्यो. पछी छ मासने अंते धरणेंद्रनुं स्मरण करवाथी, तेणे विमानमां बेसाडी तेनां राज्यपर तेने बेसाड्यो. पछी ते शांतनु राजा त्यां पुत्रोसहित जिनमंदिरमां रहेली प्रजुनी पूजा करवा लाग्यो. एवी रीते चोसठ लाख वर्षोसुधि सुखमां रहीने, तेणे स्त्री तथा पुत्रोसहित संयम लीधुं. पछी शत्रुंजयपर अनशन करीने, तेउ सघला सर्व कर्मबंधोनो क्षय थवाथी केवलज्ञान पामी मोक्षे गया. एवी रीते अनेक प्रजावोवाली आ शत्रुंजयी नदी तेने सेववाथी राज्यभ्रष्टने राज्य, सुखभ्रष्टने सुख, विद्याभ्रष्टने विद्या, तथा कांति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी अने स्वर्ग सुख पण क्रीडामात्रमांज आपे छे. वली हे चक्री! जेम सघला देवोमां श्री युगादीश प्रजु मुख्य छे, तथा सघला तीर्थोमां जेम आ शत्रुंजय तीर्थ मुख्य छे, तेम सर्व तीर्थभूत नदीउमां आ शत्रुंजयी नदी मुख्य छे, एम श्री जिनेश्वर प्रजुए कहेलुं छे. तेम आ उत्तर दिशामां मनोहर अने पवित्र जलोथी

ज्ररेली, तथा संपूर्ण वैज्ञववाली आ "ऐंड्री" नदी देखाय छे. ते नदी इशानेंद्रनी स्पर्धाथी सौधर्मेंद्र जिनज्ञक्तिथी पद्मद्रहमांथी लावेला छे. जिनज्ञक्तिनी स्पर्धाथी आ नदी आणेली छे, माटे ते पण शत्रुंजयी सरखीज प्रज्ञाववाली, तथा दुष्ट दोषोने हरनारी छे. आ नदीनीज माटीना बनावेला कुंज्ञमां आनुंज पाणी ज्ररीने जे माणस जिननां अंगपर नाखे छे, तेने मुक्ति वश थाय छे. वली आ पूर्वदिशाने शणगार करनारी नदीने, जिनज्ञक्तिथी धरणेंद्र पातालनां मूलमांथी लाव्यो छे, ते नदी उत्तरदिशामांथी निकलीने सूर्योद्यानमां थइ दक्षिणमां जाय छे, ते नदीने जिनस्नात्रमाटे अहीं नागेंद्र लावेल छे, माटे ते सर्व पापोने हरनारी "नागेंद्री" नां नामथी प्रसिद्ध थएली छे. वली श्रीप्रथम प्रज्ञुनां स्नात्रमाटे सर्व सुरासुरोए मलीने, द्रहोथी शोज्ञिती आ यमलहृदा नदी बनावेली छे. जे माणसे आ नदीनां पाणीनां समूहोथी श्री जिनेश्वर प्रज्ञुनुं स्नात्र करेलुं छे, तेणे आ मनुष्यज्ञवरूपी वृक्षनां सर्व फलो मेलव्यां छे. हे चक्रींद्र! एवी रीते जिनस्नात्रमाटे बनावेली चौद मोटी नदीओ आ शत्रुंजयपासे शोज्ञे छे. ए सघली नदीओमांथी, तथा कुंडो, समुद्र अने द्रहोमांथी जल लेइने प्रज्ञुनुं स्नात्र करवुं, एवो संघपति श्रावकोनो हमेशनो आचार छे, तथा ते चक्रीनी अने इंद्रनी लक्ष्मी आपीने मोक्ष आपे छे. पवित्र जलवाली, कल्याण करनारी, नाना प्रकारना प्रज्ञावोथी ज्ररेली, तथा सर्व तीर्थोनां अंशथी ज्ञूषित थयेली आ सघली नदीओने जे प्राणी स्पर्श करे छे, तेने उत्तम कीर्ति, दुःखनो नाश, तथा शुज्ञनो उदय थाय छे, तेम स्वर्गादिकनी संपदा तो तेनी हथेलीमांज आवे छे तेम सघला निधानो तेनी समीपे आवे छे, तेना आंगणामां कामधेनु आवे छे, त्रणे लोको तेने वश थाय छे, तथा ते प्राणी पवित्र थाय छे; वली तेने ज्ञूत, प्रेत के पिशाचादिको पराज्ञव करी शकता नथी तेम कुष्टादिक दुष्ट दोषो पण तेने कोई पण वखते थता नथी वली स्नान अने (जिननां) स्नात्रादिकथी जे प्राणी तेओनुं आराधन करे छे, तेने देवो तो चाकररूप थाय छे, तथा तेने घेर सर्व संपदाओ आवे छे. वली हे ज्ररतेश्वर! आ जगोए चंद्र, सूर्य तथा व्यंतरेंद्रनां करेलां बीजां पण घणां जलाशयो छे. ते वचनो सांज्ञलीने हर्षित थएल

चक्रीए इंद्र सहित ते नदीउंमां स्नान कर्युं. वली ते नदीउंनां कांठा-रनां पुष्पो, तथा कमलो लेइने, अने तेना पाणीथी कलशो जरीने तेणे प्रजुनुं पूजन कर्युं. पढी त्यां तेणे पूर्व तथा दक्षिण दिशामां इंद्रनी नगरी सरखां नगरो वसाव्यां; तथा वार्धकीने कहीने तेणे त्यां अनेक तलावो, तथा बगीचाउंथी शोजितुं श्री युगादीश प्रजुनुं मोटुं मंदिर बंधाव्युं. ज्यां चक्रीनां पुत्र ब्रह्मर्षि मुनिउंनां समूहोनी साथे सिद्ध थया, तेथी ते "ब्रह्मगिरि" नामनुं महान तीर्थ प्रसिद्ध थयुं. वली त्यां पण चक्रीए पापोनुं नाश करनारूं "सुरविश्राम" नामनुं श्री युगादीश प्रजुनुं मंदिर बंधाव्युं. पढी चक्री दुंदुजि तथा वाजांउंनां मंगलध्वनि पूर्वक गुरूउंने अगाडी करीने, इंद्र तथा राजाउं सहित, तथा सघलां पायदल अने संघनां लोको सहित जुदां जुदां शिखरोनी जूमिपर चैत्यप्रवाडी माटे चाल्या. आ शिखरपर कपर्दीयक्ष अधिष्ठाता थनार ढे, माटे तेनां नामनां शिखरपर इंद्रे ते यक्षनी मूर्ति सहित प्रजुनुं मंदिर बनाव्युं. वली ते शिखरपर इंद्रनां वचनथी माहासुदि पुनेमने दिवसे चक्रीए श्री युगादीश प्रजुनी माता मरूदेवानी स्थापना करी; तेथी ते मरूदेवा नामनां शिखरपर लोको, नाम लीधाथी पण पापोने हरनारां मरूदेवा माताने पूजवा लाग्या. ते माहासुदी पुनेमने दिवसे जे माणसो प्रथम सिद्ध एवा श्री मरूदेवा मातानी पूजा करे ढे, तेउं स्वर्गनुं राज्य पामी मोक्ष जाय ढे. वली स्त्रीउं पण तेमनी पूजा करीने चक्री, तथा इंद्रनी पटराणीउं थइ, पुत्रवाली तथा सौजाग्यवंती थइने अनुक्रमे मोक्ष जाय ढे. पढी त्यांथी बे योजन ढेटे एक योजननां प्रमाणवालां, अने तीर्यंचोने पण देवसुख आपनारां स्वर्ग नामनां शिखरने चक्रीए नमस्कार कर्यो. तथा त्यां पण तेमणे अधिष्टायक सहित, महान जक्तिथी श्री युगादीश प्रजुनुं मंदिर बंधाव्युं. आ उत्कृष्ट शिखरपर ज्ञाननां समुद्र सरखा बाहुबलि मुनिराजे मुनिरूप थएला पोतानां एक हजारने आठ पुत्रोने कह्युं के, आ तीर्थनां माहात्म्यथी तमोने पुंडरिकजीनी पेठे केवलज्ञान थइ, कर्मोनां क्षयथी मोक्ष थाउं? माटे हे सुव्रतो! अहीं रही तमो निर्यामणा करो? ते सांजली तेउं तेमनी साथे त्यांज समाधिथी रह्या; पढी तेउं सघला अनुक्रमे केवलज्ञान पामी मोक्ष गया,

तेथी ते बाहुबली नामना शिखरपर पण जरते प्रासाद कराव्यो. पछी चक्रीए इंद्रने प्रीतिथी पूछयुंके, हे इंद्र! आ सघलो पर्वत तीर्थमय छे, माटे आ मुनिर्जनो अग्निसंस्कार क्यां करवो.? त्यारे तेणे पण पोतानां ज्ञानथी जाणीने, जाणे सर्व लोकोनी प्रवृत्ति करावबा माटेज होय नहीं, तेम कह्युं के, हे चक्री! मरूदेवाथी मांडीने पुंमरिकजी सुधि सिद्ध थएलार्जनां शरीरो में क्षीरसमुद्रमां पधराव्यां छे; केमके ते अमारो आचार छे. हवे आ तीर्थमां शत्रुंजयनुं शिखर मुख्य छे, केमके, ते सर्व तीर्थमय तथा युगादीश प्रजुनां चरणोथी सेवित थएलुं छे, तेम सर्व देवोनां समूहोथी ते शोजितुं थएलुं छे. माटे ते शिखरपर दाहादिक दुष्कार्य करवुं लायक नथी, केमके, तेथी तीर्थनो लोप तथा जिनाज्ञा खंडन थाय. माटे आ मुख्य तीर्थनी सर्व बाजुनी बे योजन जूमि छोडीने स्वर्ग नामनां शिखरपर अग्निसंस्कार करवो. तथा त्यां तेर्ज सर्वनी पत्थरमय मूर्तिर्ज करावबी, केमके तेम करवाथी हवे पछी बीजार्ज पण तेम करशे. एवी रीतनुं इंद्रनुं युक्तिवालुं वचन सांजलीने चक्रीए तेवी रीतना तेमनो पुण्यनां समूह सरखो अग्निसंस्कार कर्यो; तथा तेज शिखरपर तेमणे पूर्व दिशारूपी स्त्रीनां मुखपर रत्ननां तिलक सरखुं प्रजुनुं मंदिर बनाव्युं. वली त्यां वार्धकी मारफते सोमयशाए पण पोतानां पिता तथा बंधुर्जनां हर्षथी प्रासादो कराव्यां. पछी चक्रीए तालध्वजनां (ता लाजानां) शिखरपर, हाथमां खड्ग, ढाल, शूल, तथा सर्पवाला ताल ध्वज देवनी स्थापना करी. पछी कदंब गिरिपर जईने चक्रीए श्रीना गणधरजीने पूछयुं के, हे जगवन्! आ शिखरनो शुं प्रजाव छे.? त्यां गणधर महाराज पण कहेवा लाग्या के, हे चक्री! तेनी कथा तम सांजलो? गइ उत्सर्पिणीमां चोवीसमा संप्रति नामना तीर्थंकरना कदंब नामनां गणधर क्रोड मुनिर्ज सहित अहीं मोक्षे गएला छे, मा ते " कदंबगिरि " कहेवाय छे. अहीं महा प्रजाविक औषधिर्ज, रसकुं पिका, रत्ननी खाणो, तथा कल्पवृक्षो छे. दीवालीने दिवसे, शुजवारे, उ त्तरायन संक्रांत होते छते, अहीं मंडल करवाथी देवो प्रत्यक्ष थाय छे वली एवी कोइ पण औषधिर्ज, के रसकुंपिकार्ज, के सिद्धिर्ज आ पृथ्वीम नथी, के जे आ पर्वतपर न होय. जे सौराष्ट्र देशमां सिद्धनां स्थान

सरखो श्रा कदंबगिरि छे, त्यांना लाको ते दारिद्र्यथी पीडायज केम? वली जेनापर श्रा पर्वत तुष्टमान थएल छे, तेने कामधेनुं, कल्पवृक्षो, तथा चिंतामणि श्रादिक सर्वे तुष्टमान थएलां जाणवां. श्रहीं रात्रिए श्रौषधिउं पोतानी कांतिरूपी दीपकोनां समूहोथी, निर्नाग्यनां मंदिरथी जेम दारिद्रनो तेम श्रंधकारनो नाश करे छे. वली श्रहीं रूचकाद्रिनी पेठेज हमेशां कल्पवृक्षो बहु वांछित श्रर्थोने श्रापे छे. वली वर्षा ऋतुमां वादलांउथी ढवाएला सूर्यकिरणोनी पेठे हीन कालनां प्रसंगथी तेउं माणसोने गोचर थशे नहीं. वली मुख्य शिखरनी पेठे श्रा शिखर पण पापोने नाश करनारुं, तथा वन्ने नवोनो उपकार करनारुं होवाथी श्रत्यंत प्रख्याति पामशे. एवी रीतनो तेनो महिमा सांनलीने चक्रीए, ते श्रनेक वृक्षोवालां धर्मोद्यानमां, इंद्रनी सम्मति पूर्वक वार्धकी मारफते चोवीसमा नावि तीर्थंकर श्री वर्धमानस्वामीनुं मंदिर वनाव्युं. हवे ते कदंब गिरिथी पश्चिम दिशा तरफ शत्रुंजयी नदीने कांठे चक्रीए पोतानी सेनानो पडाव नांख्यो. त्यां केटलाक हाथी, घोडा, वलद विगेरे श्रविवेकी प्राणीउं पण रोगनी पीडावीनां तीर्थनां योगथी स्वर्गमां गया. पठी तेउं पण स्वर्गमांथी त्यां श्रावीने चक्रीने नमीने पोतानी स्वर्गप्राप्ति तुरत कहेवा लाग्या. तथा तेउंए त्यां पोतानी मूर्तिउंवाला प्रासादो वंधाव्या, श्रने त्यारथी ते "हस्तिसेना" (हस्तिगिरि) नामनो महान पर्वत प्रख्यात थयो. एवी रीते चक्रीए शत्रुंजय गिरिना सर्व शिखरोपर हर्षनां श्रावेशथी जिनालयो वंधाव्यां. वली मुख्य शिखरनी प्रदक्षिणा देइने चक्रीए पोताने स्थानके पाठा फरीने श्री युगादीश प्रज्जुने नमस्कार कर्यो. पठी चक्रीए मुख्य शिखरनी नीचे सुवर्ण गुफामां थएला, थनारा तथा विचरता तीर्थंकरोनी रत्नमय मूर्तिउं स्थापी.

हवे गिरनार प्रते जवानी तैयारी करता चक्रीने, नमि श्रने विनमि मुनिउंए मधुर वचनोथी कह्युं के, हे नृपेश! श्रमो वे क्रोड मुनिउं साथे श्रहींज रहीशुं. केम के, श्रहींज श्रमोने मोक्ष थवानो छे. ते सांनलीने चक्रीये तेउंने, तथा वीजा मुनिउंने नमस्कार कर्यो, त्यारे तेउं तरफथी तेने धर्मलाजनी श्राशिष मली. एवी रीते ते नमि विनमि, ते मुनिउंनी साथे फागणसुदी दशमीने दिवसे पुंडरिकजीनी पेठेज मोक्ष गया. माटे फागण-